

DUE DATE SLIP**GOVT. COLLEGE, LIBRARY**

KOTA (Raj.)

Students can retain library books only for two weeks at the most.

| BORROWER'S No. | DUE DTATE | SIGNATURE |
|-------------------|-----------|-----------|
| | | |

वंश भास्कर

(षष्ठम खण्ड)

[बारहठ श्री कृष्णसिंह विरचित उदधि-मंथिनी टीका सहित]

मूल लेखक :

सूर्य मल्ल मिश्रण

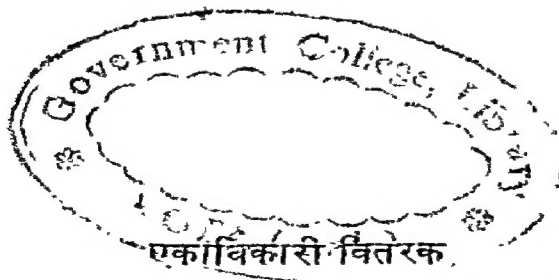
सम्पादक

स्वर्गीय पंडित रामकर्म आसोपा

भूतपूर्व प्राध्यापक

इतिहास विभाग

कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता



बाफना बुक डिपो

चौड़ा रास्ता, जयपुर-३

एकाधिकारी वितरक

बाफना बुक डिपो

चौड़ा रास्ता, जयपुर-३

॥ ओ३म् ॥

॥ भूमिका ॥

सूक्तं करोति वाचालं, पङ्गुं लघयते गिरीन् ॥

यत्कृपा तमहं वन्दे, परमानन्दसाधवम् ॥ १ ॥

क्या सहिष्णु है उस जगदाधार, सर्वशक्तिमान् परमेश्वर की कि जो अप-
नी कृपा से सूक्त (गूँगे) को वाचाल और पङ्गु (पांगले) को पर्वत लांघनेवाला
कर देता है, उस परमात्मा को नमस्कार करता हूँ. अन्य विद्वान् इसके उदाह-
रण में "वाल्मीकि मुनि" और सूर्य के सारथि "अरुण" को मानते हैं, पर-
न्तु इस स्थान पर मैं तो सुझाई को उदाहरण रूप मानता हूँ कि जिसकी कृ-
पा से पञ्चाषात जैसी असाध्य बीमारी आदि विघ्नों रूपी आमियों को लां-
घकर, इस वंशभास्कर रूपी ससुद्र के पार लगा चाहता हूँ, यह उसी सर्वश-
क्तिमान् दयालु परमेश्वर की दया का फल है कि मेरे जैसा अल्पज्ञ पुरुष ऐसे
कठिनतम ग्रन्थ की टीका में पार लगसकै, इसीकारण उपरोक्त श्लोक में मैंने
मेरे तर्ह उदाहरण माना है ॥

अभी इस ग्रन्थ के पांच चरित्र, जिनमें डेढ़ राशि पर टीका बनाना बाकी
है, इस अवस्था में अपने को कृतकार्य मान लेना अनुचित है, परन्तु साढ़े छ-
राशि पर टीका बन चुकी जिसमें अनेक विद्या विषय और अनेक भ्रमयुक्त
गूढ़ इतिहास आचुके, जिनका यथार्थ विवरण और उचित समालोचना कर-
के यथाशक्ति टीका कर दी गई, अब आगे के पांच चरित्रों में कोई कठिन वि-
षय नहीं है, केवल रामसिंह चरित्र में वेदान्तादि कुछ विद्या विषय अवश्य
हैं परन्तु वे अतिगहन नहीं हैं, और इतिहास में भी समीप का समय होने
के कारण भ्रम नहीं है, इसकारण से आगे की डेढ़ राशि को विद्वान् लोग सु-
गमता से समझ सकते हैं, इसीकारण मैंने अपने को कृतकार्य माना है. इसमें
इतना कथनीय अवश्य है कि आगे के पांच चरित्रों में "बुधसिंह चरित्र" औ-
र "उम्मेदसिंह चरित्र" इन दोनों में शब्दालंकार अधिक होने के कारण
शब्दार्थ में कठिनता अवश्य है, इसी शब्दालंकार के कारण राजपूताना भर
में ये दोनों चरित्र अधिक फैले हुए हैं, जिनके समझने की सब ही का उत्कंठा
है, परन्तु अनेक भाषाओं के अनेक अप्रचलित शब्दों के प्रयोग होने से उन-
के अर्थ समझने में पाठक फलसूत नहीं होते, और शब्दों का यमक अत्युत्त-
म होने के कारण ओत्ररसज्ञ होकर छोड़ना भी नहीं चाहते, इसकारण से ह-
जारा भी विचार है कि स्वास्थ्य ठीक रहा और कोई अन्य बड़ा विघ्न उप-
स्थित नहीं हुआ तो इस ग्रन्थ के अन्य भागों की अपेक्षा इन दो चरित्रों की
टीका विस्तार पूर्वक रचेंगे कि जिसके कारण किसी पाठक को किसी प्रकार

की काठिनता या की नहीं रहे, और काव्यरसज्ञों को पूर्णानन्द मिलाने के कारण हम भी अपने परिश्रम को फलीभूत मानें ॥

यहाँ पर हम को थोड़ी सी टीका स्वयं ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) की रची हुई मिल गई है जिसमें किसी प्रकार का हस्ताक्षेप नहीं करके ज्यों का त्यों यहाँ पर लिख देने हैं, इसमें किसी किसी शब्द के अर्थ को ग्रन्थकर्ता ने सुगम समझकर छोड़ दिया है, जिनके अर्थ लिखने की आवश्यकता दिखाई देती है परन्तु जितने शब्द इसमें रह गये हैं उनके अर्थ ऊपर की टीका में आ चुके हैं अथवा फिर आगे की टीका में आ जावेंगे, इस कारण इस टीका में किसी प्रकार का हस्ताक्षेप नहीं करना ही उचित समझकर “मल्लिकास्थाने मल्लिकां पातयतु” ही किया है। इस टीका के रचेजाने की कई किस्म दन्तियें प्रसिद्ध हैं, जिनमें प्रबल कथा यह मानी जाती है कि, जयपुर राज्य में पीपलिया नामक ग्राम के ठाकुर राजावत फूलसिंह ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) को अत्यन्त कृपापात्र था जिसने एक दिन ग्रन्थकर्ता से निवेदन किया कि, कनरसियापन से तो मुझको बुधसिंह चरित्र अत्यन्त प्यारा लगता है, परन्तु अर्थ में समझ नहीं पढ़ने के कारण आनन्द नहीं आता, इस कारण आप कृपा करके इस पर टीका बना दें, इसी कारण ग्रन्थकर्ता ने यह टीका बनाई है इस प्रसिद्धि का कुछ कारण भी मिलता है, अर्थात् जयपुर राज्य के हखूत्या नामक ग्राम के पालावत शाजा के चारख वालापलम को यह टीका पीपलिया के ठाकुर फूलसिंह राजावत के घर से ही मिली है जो कि स्वयं ग्रन्थकर्ता के घर में भी नहीं है, इस टीका के अपूर्ण रहने का कारण भी यही प्रतीत होता है कि जब तक फूलसिंह की प्रेरणा रही तभी तक ग्रन्थकर्ता ने यह टीका बनाई, और जब फूलसिंह की प्रेरणा निंदी तभी टीका का बनना छूट गया, इसीसे थोड़े से ग्रन्थ पर टीका बनकर अपूर्ण रह गई, यहाँ पर इतना सन्देह अवश्य होता है कि यदि टीका केवल फूलसिंह के कारण से ही बनती थी तो शब्दों के जितने प्रमाण इसमें दिये गये हैं उनके देने की क्या आवश्यकता थी और संस्कृत श्लोकों के अर्थ संस्कृत भाषा में लिखे गये हैं तो क्यों लिखे जाते क्यों कि फूलसिंह संस्कृत पढ़ा हुआ नहीं था सो हमारे इस सन्देह का समाधान अभी तक नहीं हुआ है उसके उपरान्त यदि संस्कृत में टीका बनाई भी गई थी तो उसके बीच फूलसिंह के समझने के लिये उसका भाषानुवाद भी कर देते सो नहीं है ॥

परन्तु हमने सन्देह नहीं कि यह टीका स्वयं ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) की बनाई हुई है, इस कारण सर्वथा माननीय है, इसी कारण इसमें किसी प्रकार का हस्ताक्षेप नहीं करके तनरी रची हुई टीका के बीच में इसको स्थान देने हैं, आगे जहाँ पर यह टीका समाप्त होगी वहाँ लिखा दिया जावेगा कि ग्रन्थकर्ता की रची

(३)

हुई टीका यहां पर समाप्त होती है, इस बुधसिंह चरित्र के मंगलाचरण के श्लोक की ग्रन्थकर्ता ने संस्कृत में टीका की है परन्तु फिर ग्रन्थकर्ता ने ही मूल श्लोक के शब्दों को बदलदिये इसकारण उक्त श्लोक की वह टीका छोड़कर इसका भाषानुवाद हमने किया है बाकी टीका ज्यों की त्यों लिखी जाती है यदि होसका तो संस्कृत श्लोकों की टीका संस्कृत में रची हुई है जिसका सुगम मतार्थ भाषानुवाद करदेवेंगे जिसको हस्ताक्षेप वहीं समझना चाहिये यह टीका हमको हणूत्या के पालावत चारण बालावल्लभ द्वारा मिली उस समय इस ग्रन्थ पर टीका करने का हमारा विचार नहीं था इसकारण उक्त टीका का पुस्तक देख कर पीछा बालावल्लभ के पास भेज दिया था परन्तु फिर आवश्यकता होने पर वही पुस्तक सीकरराज्य के चंदपुरा नामक ग्राम के रतनू शाखा के चारण रामनाथ द्वारा पुनः प्राप्त हुआ. इन दोनों महाशयों का अत्यन्त उपकार मानकर धन्यवाद के साथ इस टीका का लिखना प्रारम्भ करते हैं ॥
 विक्रमाब्द १९५८ द्वितीय आश्विन वादि २ शुक्रवार तारीख २ अगस्त सन् १९०१ ईसवी को प्रारम्भ किया ॥



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ बुधसिंहचरित्रप्रारम्भः ॥

॥ गीर्वाणभाषाशालिनी ॥

वन्देऽथोहं साञ्जलिः प्रीतिपूर्वं चण्डीदानं स्वीयवप्टारमार्यम् ॥
द्वैतारण्यप्रस्फुरद्दोरदावं तीव्राद्वैतं पण्डिताब्जद्युनाथम् ॥ १ ॥

प्रायोव्रजदेशीयप्राकृतमिश्रिता भाषा ॥

॥ दोहा ॥

जुगल वान मुनि इन्दु १७५२मित, विक्रम अब्द विवेक ॥

जराभीरु १३तिथि पोस १० बदि २, बुधसिंह अभिसेक ॥ २ ॥

॥ षट्पात् ॥

तीरथ सलिल संस्रुत उचित निज मस्तक सिंचिय ॥

औषध विहित उपेत निगम मंत्रन पवित्र क्रिय ॥

हवन वस्तु हविरसन मध्य आज्यादि उक्त हुत ॥

हुव सु गान गायकन विविध बंदीन विरुद रूत ॥

दिय दान द्विजन भूभर्ममुख लाखि सु रीति सुरपाति लाजिय ॥

बुंदिय वजंत प्रतिवादका खलनखंड खुरणाक बजिय ॥ ३ ॥

अब मैं हाथ जोड़कर प्रीति पूर्वक मेरे पिता आर्य चण्डीदान को नमस्कार करता हूँ, जो द्वैत मत रूपी (जीव और परमेश्वर में भेद माननेवाले) वन के प्रज्वलित घोर अग्नि और पंडित रूपी कमलों के सूर्य थे ॥ १ ॥

प्रायो व्रजदेशीयप्राकृतमिश्रितभाषा ॥

जुगलेति ॥ जुगल द्वै २. वान पंच ५. मुनि सप्त ७. इन्दु १ एक. तन्मितामग-
तिलो १७५२ सत्रह सो वावन में. विक्रमादित्य के अब्द वर्ष में. जराभीरु
काम. "कामो जराभीरुरनंगो मन्मथः" इति हेमचन्द्रसूरिः ॥ ताकी तिथि त्रयो-
दशी १३. बुदि कृष्ण पक्ष में ॥ २ ॥ तीरथेति ॥ उपेत युक्त. फेरि कैसो, निगम
वेद मंत्र. नकार तृतीया के बहुवचन में है ॥ हविरसन अग्नि. "धर्मजयो हव्य-
हविरसादानः" इति हेमचन्द्रसूरिः ॥ आज्य घृत. तदादि. बंदी बंदीजन. नकार
पष्ठी के बहुवचन में है ॥ विरुद उत्साहवर्जनी स्तुति. रूत शब्द. भर्म सुवर्ण
"तपनीयचामीकरचन्द्रभर्म" इति हेमचन्द्रः ॥ मुख आदि. प्रतिवादका संगल
यादन. खुरणक सुरदा के साथ वजये को वादन. 'खुरणकं नृतयाज्याया' मिति हेमः

॥ पञ्कटिका ॥

बुधसिंह१९७१भूप किय पंचपव्याह, सुत खट्वाह सुता दुवर्ल-
हिय लाह ॥

उम्मेदकुमारि१९७१पहिली१उमाहि, जयसिंहरान तनुजा विवाहि ४
रानी द्वितीय२जु अमरकुमारि१९७२, नृप कूर्म विष्णुधी दासु धारि
वेधमपति अनुपमसिंह धीय, फुल्लकुमारि१९७३चुंठाउति तृतीय३५।
चंद्रकुमारि१९७४चोथी४पुरभनाय, रठोर जगतनृपजा सुभाय ॥

आहाडी पंचम५गुनगरीय, अभिधा गुमानकुमरी१९७५तदीय॥६॥
जो वंसवहालापुर पधारि, क्रम व्यूढ अजंवराउल कुमारि ॥
सुत देव१९८१जोहि धौंकल१९८१दुरनाम, तिम भावतसिंह१९८१
२जु लाल१९८१रताम ॥ ७ ॥

तीजो३जु भवानीसिंह१९८१३पूत, संदिग्ध जाहि भाखत अभूत ॥
क्रम जेठे ए सुत त्रय३कहात, जे दूजी२रानी जठर जात ॥ ८ ॥
उम्मेदसिंह१९८१४चोथो४कुमार, अरु दीपसिंह१९८१६छठो उदार॥
तिम दीपकुमारि२दूजी२कनी सु, तिय तीर्जनै३त्रितयी३जनी सु॥९॥
सुतपंचम५चंद्र१९८१५जुपद्म१९८१५सोहि, क्रमपंचम५रानीजनितजोहि
कन्या बडी१जु सूरजकुमारि, लोथो४रानी भव जो विचारि ॥१०॥
व्याही जयसिंहहिं जनक बुद्ध१९७१, आमैर अधीसहि सबिधि सुद्ध
दूजी२कनी सु उम्मेद१९८१४त्रांत, मरूपति विजयहिं द्विय महमचात
बुध१९७१अनुज जोध१९७२क्रिय च्यार४व्याह, कन्या दुवर्लवि-
धिवस लहिय लाह ॥

जयसिंहरानको अनुज भीम, जो भूप वनदडा द्रंग सीम ॥ १२ ॥
कन्या तदीय जालमकुमारि, धव जोधसिंह१९७१श्वामांग धारि ॥
अग्रजके संगहि दुलह आप, परन्याँ सु उदैपुर मह अमाप ॥१३॥
गजाउति जमुनाकुमारि१९७१नाम, गजसिंहसुता दूजी२ललाम ॥
तीजो३गनाउति गढप्रताप, उढाकिय अभिजनकुमारि१९७३आप

चौथी४चंद्राउति गमदंग, इम चंद्रकुमारि१९७४परन्यौ अंग ॥
 इन४में पहिली१के इक१सुताहि, उम्मेदकुमारि१जग कहत जाहि१५
 थूहनिके रनबिच बुल्लि एह, बुधसिंह१९७११दयो जयसिंह गेह ॥
 चौथी४तियके दूजी२सुता सु, इह रूपकुमारि२मृत सिसुहि आसु१६
 इन चउ४न माँहि तीजी३निवारि, पतिसंग जरी पटु निखिल३नारि
 अनुजा दुव२दुव२खिल अनुज उक्त, हुव जे चउ४बालहि कालभुक्त
 ॥ दोहा ॥

अनुजा कुसलकुमारि१९७१अरु, कल्याणादि कुमारि१९७२ ॥
 अमर१९७३बिजय१६७४अंतिमनृप अनुज, चवे सिसुहि मृत च्यारि४
 भावी सानुज भूपकी, व्याह १ प्रजा२दिकवत्त ॥
 वर्तमान२पहराम२०३१४विधि, अब जानहु अनुरत्त ॥ १९ ॥

॥ पद्धतिका ॥

इम लियउ बुद्ध पट्टाभिषेक, थपि राज्यअंग वासि हुकम एक ॥
 सितरोमगुच्छं ढरि दुरदिस सीस, कनकातपत्र भूषित महीस २०
 आवाप१तंत२चिंतन उपेत, सुभ बल१विदग्ध२धीसख३समेत ॥
 पटुसंधि१यान२विग्रह३विलास, द्वैधा४ऽऽसन५आश्रय ६गुणप्रकास
 प्रभु१मंत्र२शक्ति उत्साह३पूर, सम चतु४रुपायसामर्थ्य मूर ॥

इमलियउ इति ॥ बुद्ध बुधसिंह. राज्यअंग राज्य के अंग. सित श्वेत. रोमगु-
 च्छ चामर ॥ “चासरो रोमगुच्छप्रकीर्णक” मितिहैमः ॥ द्विदिस दोऊ२ दि-
 शा. भूसित शोभित. महीस मही पृथ्वी ताको ईश ॥२०॥ आवापतंत्रवति ॥
 आवाप१शेष्ठे वश करिबे को चिन्तवन. तन्त्र२अपने देश की वृद्धि को चिन्त-
 वन ॥ “तन्त्रं स्वराष्ट्रचिन्ता स्यादावापस्त्वरिचिन्तन” मितिहैमः ॥ बल सेना.
 तामें धीसख मंत्री. तिन सहित. संधि१, यान२, विग्रह३, द्वैध४, आसन५, आ-
 श्रय१ ए छ गुण हैं । तिनके प्रकाश के विलास में पटु चतुर ॥२१॥ प्रभु इति ॥
 प्रभुशक्ति, मंत्रशक्ति, उत्साहशक्ति इनमें पूर पूर्ण. सम सहित । चतुरुपाय-
 साम१, दाम२, दंड३, भेद४, ए च्यारि उपाय तिन करिके. लुप्त तृतीया है ॥
 इन सहित. सामर्थ्य में मूर. सविचार विचार सहित. अयमन सप्तक७-
 सृगया१, स्त्रीसंग२, मयमान३, वाक्पारुष्य४, अर्थदृष्टि५, दंडपारुष्य६, वृत्त७

सविचार व्यसन सप्तक ७ निषेधि, बानैत गान बिन लेत वेधि २२
 विधि च्यारि हेति कोविद विनोद, चतुश्चरंग चक्र साधन समोद ॥
 जुत धर्म १ नीति २ अथर्वसर जमाय, लोकानुराग नयरीति लाय २३
 इत्यादि रागगुन जोर जगि, बुधसिंह बढिय जनु अनिल अगि
 हुव बिदित किति दिसदिसन हाक, अकिवकि अराति रुकि बद-
 न वाक ॥ २४ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी
 पतिबुधसिंहचरित्रे बुधसिंहबुन्दीपट्टाधिवेशन १ बुधसिंहविवाहत
 त्सन्ततिकथनं प्रथमो मयूखः ॥ १ ॥

आदित एकोनचत्वारिंशदुत्तरद्विशततमः ॥ २३९ ॥

॥ दोहा ॥

उदयनैर जयसिंह नृप, रानाँ अर्यमवंस ॥

तास बास तनुजा चतुर, भई इंदिरा अंस ॥ १ ॥

यह सप्त७॥ छुस द्वितीया कहता है। वान वाण, छुस तृतीया ता करिके। विन
 पत्नी, तिनकों, द्वितीया बहुवचन में नकार ॥ या प्रकार सर्वत्र बोध्यम् ॥ २२॥
 विधि च्यारि हेति ॥ विधि च्यारि ४ च्यार विधि के शस्त्र, मुक्त चक्रादि १,
 अमुक्त खड्गादि २, सुक्तामुक्त कुन्तादि ३, यन्त्रमुक्त बाणादि ४, ए च्यार वि-
 धि के, हेति शस्त्र ॥ “हेतिः प्रहरणं शस्त्र” मिति हैमः ॥ तिनके विनोद में कोवि-
 द चतुर ॥ प्राकृत में प्राय अविभक्तिके शब्द प्रयोग होते हैं। तहां अन्वय भोज-
 नी विभक्ति सर्वत्र कर लेनी ॥ चतुरंग ४-हस्ती १, हय २, रथ ३, पदाति ४, ए अंग ति-
 नवारी, चक्र सेना ताको साधन रहै, नय न्याय ॥ २३ ॥ राग इति ॥ राज राज्य,
 जगि चमत्कृति वहैकै, जनु मानों, अनिल पवन ताकरि, अगि अग्नि, किति
 कीर्ति ॥

अराति शत्रु, “अरातिमारातिमथ” द्विरूपकोशे ॥ वाक वाणी ॥ २४॥

श्रीवंशभास्कर-महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति
 बुधसिंह के चरित्र में बुधसिंह का बुन्दी के सिंहासन पर बैठना १ बुधसिंह के
 विवाह और सन्तानों के कथन का प्रथम १ मयूख समाप्त हुआ और आदि
 से दो सौ उनचालीस २३९ मयूख हुए ॥

नैर नगर, अर्यम सूर्य के वंश में, तास ताके दास, गेह तनुज पुत्री इंदिरा ल-

हुव मंजु सुता रानाँ निकेत, उम्मेदकुमारि सुभ गुनउपेत ॥
 बय रंच पंचहायन विधान, सौंदर्य रूप गुनगन समान ॥ २ ॥
 लखि ताहि भूप जयसिंह आप, उद्वाह करणा चिंतामवाप ॥
 लगिगय वर बिकखन सब निहारि, बिधिसहित कनी व्याहन बिचारि
 दिय दून देसदेसन पठाय, जंघाल चतुरमति चउउपाय ॥
 मरु१मालव२डाहल३शाल्व४अंग५, कट६ केरल७कुंतल८मगध९
 बंग१० ॥ ४ ॥
 जालंधर११तर्जिक१२कासमीर१३, कर्णाट१४दविड१५मैथिल१६
 सुवीर१७ ॥

इत्यादि बिषय उत्तम अपार, तिनमाँहिँ रान पठये स्व चार ॥ ५ ॥
 कहि हेरहु वर मम बच प्रमानि, जामातु वर्यपद योग्य जानि ॥
 भूपाल१तथा भूपतिकुमार२, इन सूर राजगुनजुत उदार ॥ ६ ॥
 दस१०अब्द ताव बय१रूप२देखि, वर वरन खवरि आनहु बिसेखि ॥
 अनिरुद्ध पट्ट बुंदिय सु थान, बुद्धहिँ सुनियत गुन रूपवान ॥ ७ ॥
 तासोंहु रूप१गुन२अधिक भूप, कोउ होय ताहि हेरहु अनूप ॥
 सुनि वानि चलिय दिसदिसन दूत, खोजिय असेस नृपकुल सपूता ॥
 कथितादि देस लखि नृप कुमार, बुंदीपुरीहु चरमय चचार ॥

स्त्री ॥ १ ॥ हुवइति ॥ मंजु सुन्दर. निकेत गेह. उपेत युक्त. रंच अल्प. हायन व-
 र्प. सौन्दर्य सुन्दरता. गन समूह ॥ २ ॥ लखिइति ॥ उद्वाह विवाह. करणा करि-
 वेकी. चिंतां चिन्ता. अवाप पात भयो. यहां संधि कर दीनी है. लखन देखन.
 वरहि वरकों. कनी कन्या ॥ ३ ॥ दिय दूतइति ॥ जंघाल वेगवान्. चउ उपाय
 चार उपायों में चतुर ॥ ४ ॥ इत्यादि इति ॥ बिषय देश. रान राना नें. स्व
 अपने. चार दूत ॥ ५ ॥ कहि इति ॥ बच बचन. जामातु जमाई तिनमें. वर्य
 श्रेष्ठ. ताके पद के योग्य ॥ ६ ॥ दसेति ॥ अब्द वर्ष. ताव तावत् "तातावौ जा-
 जावौ तावद्यावतौ" इति प्राकृतप्रकाशे ॥ विशेषि विशेष करिके ॥ ७ ॥ ता-
 सों इति ॥ सपूत पुत्रन सहित ॥ ८ ॥ कथितेति ॥ कथित कहे. तदादि देश
 देशन में. कुमार राजकुमार. चर दूत. चचार जात भये. प्रकृति राज्य के अ-
 न्त-रवासी १ अमात्य २ मंत्री ३ कोश ४ देश ५ दुर्ग ६ सेना ७ ए सप्त अंग,

लाखि प्रकृति सप्त७ अंति सावधान, बुधसिंह राज्यपति बंसमान९
 बुधधर्म२निपुन१खुरली२बिनोद, हय दत्ति चढन सह वह समोद॥
 रनबीर१दान उत्सव उदार२, लावण्य ललित मारावतार ॥ १० ॥

इम बुधसिंह लाखि बितार्जि बैर, सानंद गये चर उदयनैर ॥
 सब कहि उदंत प्रतिदेस देस, बुधसिंह किति पुनि किय बिसेस११
 कहि हमहु लाखिय जनपद अनेक, बुंदीस सम न अन्यत्र एक ॥

कुमरी वरत्व लायक स एव, तलैव रचहु संबंध देव ॥ १२ ॥

बुंदीद्र किति सबसों बिसेस, इग समुख भवन सुनि सुनि नरेस॥

संबंध चिंति तत्रहि बिचार, आत्मीय पुरोहित किय तयार ॥ १३ ॥

संतोखराम नामा सु विप्र, तिहिं कहिय तत्र गंतव्य छिप्र ॥

दिय संग भर्म लांगलि मढाय, सामज चतुष्क४हय सत१००सुभाय

वर विविध वस्त्र१रत्न२न समाज, मृगनाभि१चंद्र२खुरली३दि साज

इत्यादि तिलक मंगल असेस, द्विज संग दये लाखि काल १देस२

श्रीकृष्णनाम इक१गणकगज, समधीत लि३विधज्योतिष समाज

मान मानु (सूर्य) ॥ १ ॥ बुधेति ॥ खुरली शस्त्राभ्यास. हत्थी हस्ती. लावण्य

सुन्दरता ताकारे. मार मदन. "मदनो मन्मथो मारः" इत्यमरः॥ ताको अचना-

न ॥ १० ॥ इमेति ॥ नैर नगर. उदयपुर गये यह अर्थ. उदंत वृत्तान्त ॥ ११ ॥

कहीति ॥ जनपद देश. लायक योग्य. स सो. एव ही. यहां संबंध करी है. देव

संप्रोधन ॥ १२ ॥ बुन्दीन्द्रेति ॥ सखुख सुख संहित. आत्मीय अपनों ॥ १३ ॥

संतोखेति ॥ सु सो (पुरोहित). तिहं ता प्रति. गंतव्य जावता. छिप्र त्वरित "ल-

खु छिप्रमरं द्रुत" इत्यमरः॥ "सस्य म्रहः" इति प्राकृतसूत्रेण स्कर्त्ताः छः॥ "सं-

योगादेर्जापः" इति प्राकृतसूत्रेण कलोपः॥ भर्म सुवर्ण तामों. लांगली, नालि-

कोर. "नालिकोरस्तु लांगली" तिहमचन्द्रः॥ यहां इकारकों धिक्का बशमों नृश्व

कियो हे. सामज हस्ती. "खुंडालः सामजो नागः" इति धर्मजयः॥ चतुष्क च्या-

रि ४. सुभाय सु ३४. भाय भावनायारे ॥ १४ ॥ वरेति ॥ समाज समूह. मृ-

गनाभि कस्तूरी. "मृगनाभिर्मृगमदः" इति हैमः॥ चन्द्र कपूर. "वनसारः सि-

तामश्च चंद्रः" इति हैमः॥ सुख्य केसर. "कास्मीरजन्मा सुख्यः" इति हैमः॥

साज सामग्री. तिलक मंगल तिलक संबंधी मंगल वस्तु. अजोप संपूर्ण ॥ १५ ॥

श्रीकृष्णानि ॥ गणक ज्योतिषी तिनमें. राज राजा. समधीत सं अधीत. सं स-

राणाका बुधसिंहके पास संबंधको पुरोहित भेजना] लक्ष्मणराशि-द्वितीयमयूख (२६०३)

दाधीच जनन भव जो द्विजेन, दिय सोहि पुरोहित संग तेन ॥ १६ ॥
 अरु कहिय उभय रतुम बुद्धिमान, बुंदीदैनिकट विरचहु प्रयाग ॥
 मिलि भाखहु आसिख अस्मदीय, सबिन पउदंन पुनिकहि स्वकीय १७
 सब बस्तु सगज १ इय २ लाहि सुबेर ५, करि तिलक निवेदहु नालिकेर
 स्वीकार करहि जो तिलक विप्र, तो लखहु लग्न तत्रैव छिप्र १८
 जो लग्न प्रथम आगामि होइ, स्वीकार अत्र लिखि देहु सोइ ॥
 यह सुनि द्विज बुंदिय आजगाम, जाहिर किय आसिख पद ललाम १९
 सुनि सचिव द्विजागम सावधान, सनमानिय साधन खानपान ॥
 पुनि तदनु घस्य कतिपय बिहाय, बुंदीद रचिय सद बुद्धराय ॥ २० ॥
 संतोखराम लिय बुद्धि ताम, दाधीच बहुरि श्रीकृष्णनाम ॥
 तिन पूछि अनामय दिय असीस, इन्ह बंदिय दो २ ऊ विप्र ईसा २१
 लाहि मिसल बैठि कहि सवन सार, बिधि सुनहु सभा सगपन बिचार
 चीतोर मोर जयसिंहरान, तिन गेह लेह तनया सुजान ॥ २२ ॥

म्यक्, पठ्या. होरा १, गणित २, संहिता ३ ऐसे तीन भेद की ज्योतिष को स-
 म्राज. जनन वंश. "अन्वयो जननं वंशः" इति हैमः ॥ तामें. भव भये. जो वह.
 द्विजेन द्विजनमें इन स्वामी "स्वराणां स्वरे परे प्राकृतिलोपसंबंधः" इति प्रा-
 कृतसूत्रेण संधिः ॥ तेन वा राजानें ॥ १६ ॥ अरु कहेति ॥ आशिख वैभव वृ-
 द्धि को वचन. अस्मदीय हमारो. सबिनय विनय सहित. उदन्त वृत्तांत. स्व-
 कीय अपनों ॥ १७ ॥ सगज गज सहित. स्वीकार अंगीकार. विप्र संबोधन.
 लखहु देखहु. तत्रैव तहांही. छिप्र त्वरित ॥ १८ ॥ जो लग्नेति ॥ आगामि
 आयवेवारो. अत्र यहां. सोय सोही. आजगाम आयो. ललाम सुंदर ॥ १९ ॥
 सुनेति ॥ तदनु तापीछे. घस्य दिन. कतिपय कितेक. बिहाय व्यतीत करि. स-
 द सभा. "आदागमालुस्वारलोपा व्यञ्जनस्ये" ति प्राकृतसूत्रेण सकारलोपः ॥
 राय राजा. "क-ग-च-ज-त-द-प-य-वां प्रायो लुगि" ति प्राकृतसूत्रेण जलोपः ॥
 तर्तः "अवर्षपरोद्धतस्वरो यत्वमेती" ति प्राकृतसूत्रेण यकारः ॥ २० ॥ संतो-
 खेति ॥ बुद्धि बुलाम. ताम तहां. अनामय कुशल. असीस आशिष. इन्ह इन
 नें ॥ २१ ॥ लहीति ॥ मिसल बैठकेको स्थान. सवन सवसों. सार तत्व. सगप-
 न संबंध. लेह लेख. तारकर कुसवतीयाके. तनया पुत्री. सुजान सुजान ॥ २२ ॥

बुंदियनरेस कैंहँ वह विवाहि, संबंध रचन सीसोद चाहि ॥
 तुरकान सिंधु बिच जे सरोज, तिन गेह उचित संबंध मोज ॥२३॥
 भटसचिवसवन सुनि यह सुमंत, हिय हुलासि कह्यो उचितहि
 उदंत ॥

लवजनन वहै उज्वला लसात, ज्याँ जनन यहै चंडासि जात ॥२४॥
 स्वीकार सबहि बुल्लिय सुबानि, मानस अपुब्व आल्हाद मानि ॥
 संतोखराम इस लहि सुबेर, करि तिलक निवेदिय नालिकेर २५
 वर बरिय बहुरि निज अनुज जोधर, राणानुज कन्यार कहि सुबोध
 दुवबंधुन करि संबंध एम, देख्यो सुहूर्त सुभ प्रथित प्रेम ॥ २६ ॥
 संबत द्वि पंच ऋषि इंदु १७५२ मान, मेचक तपस्य नवमी बिधान ॥
 गणकन बिचारि सुभ लग्न तत्थ, इक मास अवधि अंतर समथ
 करि सीख तबहि द्विजवर सुजान, कोटाप्रति सत्वर किय प्रयान ॥
 चहुवान राम कोटाधि ईस, भुज भेटि वंदि तिन दिय असीस ॥२८॥
 अरु कहि लघुपुत्री हेत रान, तुमरो सुत मान्यौ संप्रदान ॥
 चहुवान राम यह सुनि सचाह, उपयम अपत्य कीनौ उछाह ॥२९॥

बुंदीति ॥ चाहि चाह्यो. सिंधु समुद्र. जेवे(राना).सरोज कमल. वा पानीसों अ-
 लिप्त यह अर्थ. मोज रीक ताकरि ॥ २३ ॥ भेटेति ॥ सुमंत सुमंत्र. उदंत वृ-
 त्तान्त. लवजनन लव को वंश. सूर्यवंश यह अर्थ. चंडासि चहुवाण. तज्जात
 तासों भयो ॥ २४ ॥ स्वीकारेति ॥ अपुब्व अपूर्व. "परस्य द्वित्व" मितिप्राकृ-
 तसूत्रेण रलोपः, बद्धित्वञ्च ॥ २५ ॥ वरेति ॥ निजवृषको अनुज लघुभ्राता. जो-
 ध जोधसिंह नामक. राणाऽनुजकन्या राणा के अनुज की कन्या ताको. दुव बं-
 धुन दोऊ भाईनको. प्रथित प्रत्येक प्रसिद्धि ॥२६॥ संबतंति ॥ ऋषि ७. इंदु १.
 सत्रहसे बावन १७५२. मान पराण. मेचक छुणपक्ष. तपस्य फाल्गुनमास, ता-
 की. गणकन ज्योतिपीनन. तत्थतहां. समथ समर्थ. ज्योमादि दोष रहित य-
 ह अर्थ ॥ २७ ॥ करीति ॥ सत्वर त्वरित. राम रामसिंह नामक. कोटाधिईस
 कोटापुर को अधिईश स्वामी ताको. भुजभेटि भुजन करिके, भेटि मिलि. वं-
 दि वंदित होयकें. तिन तिनन ॥ २८ ॥ अरु कह्योति ॥ हेत अर्थ. रान रानन.
 संप्रदान दानपात्र. उपयमअपत्य अपत्य पुत्र, ताको उपयस विवाह तामें

इस बुंदिय कोटा बरि उमंग, संतोखराम गय उदयदंग॥
 सब कहि उदंत सांगोपअंग, उपयम विधान निज कृत अभंग३०
 बुधसिंह बिबोढा अति उदार, विक्रांत सुभग पटु सबप्रकार ॥
 तिनसौं रचि उपयम नीतिबोध, दुवअनुज बरिय पुनि भीम जोध३१
 अब रचहु व्याह विधि जो अजात, अहैं त्रि३रूच्य सुख सजि बरात
 उत हुव बिबाह उपकरण एम, इत सजि बरात परिकर सप्रेम३२
 इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी
 पतिबुधसिंहचरित्रे बुधसिंहोदयपुरसंबन्धवर्णनं द्वितीयो मयूखः ॥२॥
 आदितश्चत्वारिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २४० ॥

॥ पट्टपाठ ॥

धमधमंकि घुघरन बाजि चल्लिय मग भंपत ॥
 धमधमंकि नउवात्ति बजत अतलादिन कंपत ॥
 तमतमंकि गजराज सुंडि सुरपथ फटकारत ॥
 क्लमभमंकि मूखनन रोचि रवि रोचि बिगारत ॥
 बानैत विहित खुरली रमत क्लमत बीर बिरुदन बल्लिय ॥

॥ २९ ॥ गय गया. उदयदंग उदयपुर. "संयुक्तपूर्वापि लघु कचित्स्यादि" तिवा-
 णीधूपणवचनात् सर्वत्र न छंदोभंगः॥ उदंत वृत्तान्त. सांगोपअंग सांगोपांग.
 उपयम विवाह ॥ ३० ॥ बुधसिंहेति ॥ बिबोढा बर. लोकमें दुल्लह. विक्रांत सू-
 रवीर. सुभग सुन्दर. उपयम विवाह. दुवअनुज बुधसिंह के छोटे भाई. बरिय
 बर. अंत के इकार-ईकार-एकार देशी प्राकृतमें हय होय. उकार-ऊकार-औ-
 कार उव होय. भीम भीमसिंह. कोटा के राजा को पुत्र. जोधजोधसिंह. बुं-
 दी के राजा को पुत्र. ए दोऊ बुधसिंह के अनुज भये ॥३१॥ अवेति ॥ अजा-
 त नहींभये ऐसे. अहैं आय हैं. त्रि तीन ३. रूच्य दुल्लहा. "रूच्यो वरयिता ध-
 वः" इतिहैमः ॥ उपकरण सामग्री. एम यों ॥ ३२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में बुन्दी के भूपति
 बुधसिंह के चरित्र में बुधसिंह के उदयपुर सम्बन्ध होने के वखान का दूसरा
 मयूख समाप्त हुआ ॥ और आदि से दो सौ चालीस २४० मयूख हुए ॥
 धमधमंकेति॥ मग मार्ग. नउवात्ति भेरी. अतल वितलादि लोक. ति-

बुधसिंह विदित बुंदिय नृपति सजि सानुज दुल्लह चलिय ॥१॥
॥ दोहा ॥

बुल्लि विदित कवि विबुध लिय, भूसुर चारन भट्ट ॥
अगुनहु त्याग उमंग धरि, अनाहूत चलि थट्ट ॥ २ ॥
सेवक जाति सिरोहिया, भाख्यो भट्ट प्रताप ॥
उदयनैर मम द्वेष नृप, लै न चलहु संग आप ॥ ३ ॥

॥ प्रट्टपात् ॥

कवि प्रताप यह कबहु पत्त कुल भट्ट उदैपुर ॥
राजसिंह १ जँहँ रान १ हीर १ दासहु धीसख २ धुर ॥
इक रानी अभिसाप पटकि पट्टप १ कुमारपर ॥
तदनु मरायो ताहि कुमति बहिकाइ रान कर ॥
तस अनुज कुमार सरदार २ तिम मंतुबिनुहि लै बिप मग्यो ॥
तिहिँ अघ प्रताप जावन तजि रु पुरहि उदैपुर परिहरयो ॥ ४ ॥
इकसमय यह भट्ट उदयपत्तन संपत्तो ॥
राजसिंह तिन दिनन रान राजत छक रत्तो ॥
पट्टप पुत्रहि रान रुडि मारन मन धार्यो ॥
मैहु जनक हनि भूप रहौ यहँ हेतु बिचार्यो ॥
अनई न यहँ जान्यो जनक तब कुमार तत्काल भजि ॥
सरनागत भट्ट प्रतापके अभय मंगि हुव प्रनति सजि ॥ ५ ॥

नको. कंपत कंपात. खुरपथ आकाश. रोचि क्रांति. खुरली शस्त्राभ्यास "खुर-
ली तु अमो योग्याभालः" इति हैमः ॥ क्रमत चलत. विरुद विरुदवंदीजन के
स्तुति करि ॥ १ ॥ बुल्लिइति ॥ भूसुर विप्र. भट्ट भाट. अनाहूत बिना खुलाये.
॥ २ ॥ सेवकोति ॥ प्रताप प्रताप नाथक. द्वेष छोरिबे योग्य. आप तुम ॥ ३ ॥
कवेति ॥ पत्त प्राप्त. धीसख मंत्री. अभिलाष मिथ्यादोष. तदनु तापीछे. मंतु
अपराध ॥ ४ ॥ इकैति ॥ भट्ट भाट. संपत्तो संप्राप्त भयो. रान रानाने. जनक
पिता, ताको. हेतु कारण. मै पिता को हनि राजा बन्यो ज्यो यहँहु राजा बनै

रान जानि यह बत्त आय हुत भट्ट पटालय ॥

जचिय पुत्र तब भट्ट कहिय यह देहु अनामय ॥

अंगीकृत करि भट्ट कथित निज सुत लै आयउ ॥

अनय बिरचि पुनि तनय अनामस मारि गिरायउ ॥

यह सुनि प्रताप अति सोक किय लिय संधा ताही छनक ॥

जो कबहु धरो मुख रानजल तो न भट्ट नामक जनक ॥ ६ ॥

(दोहा)

जलहु उदैपुरको तजन, बंदी जँहँ पन बंधि ॥

कहयो सत्य मम भट्ट कुल, सत्यबचन यह संधि ॥ ७ ॥

वह कथ चिति प्रताप तँहँ, न चलन अरज उचारि ॥

नृपति कहयो हम लै चलहि, आपुन देसज वारि ॥ ८ ॥

हठ पूरव यह हुकम करि, लिय निज संग प्रताप ॥

भरि सकटन निज देस भव, रिरि करीरन आप ॥ ९ ॥

कोटाकीहु वरात बनि, मिलि मग संक्रमि संग ॥

पहुँचे दुल्लह उदयपुर, महसह उदित उमंग ॥ १० ॥

(पद्यतिः)

अतिमोद रान सनमुख आवइ, विधिजुत जामाता लिय बधाइ ॥

दल उतरि द्रंग ढिग सर समीप, दुति बढिग आरती कलस दीप ॥

पधराय समय महलन सप्रेम, तनि सुचित उचित उपहार तेम ॥

बुधसिंह १९७।१३ दि व्याह्रिय रक्षिख रीति, बिंदा वय बाल्य सु प्रथित

यह अर्थ, अलई अन्याई ॥ ५ ॥ राजेति ॥ पटालय डेरा. यह याको. अनामय

कुशल. अनामस बिना अपराध. संधा प्रतिज्ञा. नामक मेरो ॥ ६ ॥ जलेति ॥

बंदी भाट. संधि प्रतिज्ञा ॥ ७ ॥ बहेति ॥ कथ कथा. आपुन देसज अपने देश

को. वारि जल ॥ ८ ॥ हटेति ॥ रिरि पीतल. "रिरि च रीति;" इति हैमः ॥ ता-

क करीर कलस. "कुटः कुम्भः करीरश्च" ति हैमः ॥ तिनमें आप जले ॥ ९ ॥

कोटेति ॥ संक्रमि चलकर. सह उत्सव ॥ १० ॥ अतिमोदेति ॥ जामाता लोके

जमाई. दल सेना. द्रंग नगर. सर तड़ाग. समीप निकट ॥ ११ ॥ पधरायइति ॥

प्रीति ॥ १२ ॥

परिनाइ सोदरहु जोधनाम, पुनि भीम पितृव्यक रामजाम ॥
मुहुकम्मवंस भट बंधुवर्ग, परिनाइ नाम सालम कुसर्ग ॥ १३ ॥
इत्यादि शान वर वरि अनेक, अठ्ठ ८ रु सत १०० व्याहे लग्न एक ॥
बुंदीन्द्र संग विधि उचित साजि, दुल्लह सप्तोत्तरसत १०७ बिराजि १४

(दोहा)

छप्पनदेस नरेसकी, तनया व्याही रान ॥
प्रेमरीति अंतरप्रिया, सोही रहिय सुजान ॥ १५ ॥
ताके उर सुंदर सुता, हुव उम्मेदकुमारि ॥
सो दुलहनि वामांग विधि, बुधसिंह अवधारि ॥ १६ ॥

(पट्टपात्)

कुमरी जेठो कुमर नाम उम्मेदसिंह १९८१ जिहैं ॥
प्रिय रानिय सुत जानि शान लागि राजदेन तिहैं ॥

उपहार सामग्री. विंदा लोके बाँद ॥ १२ ॥ परिनाइ इति ॥ सोदर अपनों स-
होदर भाई. लोके सगो भाई. भीम भीम नामक. पितृव्यकरामजाम पितृव्य-
क पिता को भाई लगतो होय ताहें काका बाबा कहैं है यातें हमनें कही ऐ-
सो कोन रामसिंह नामक कोटा को राजा ताको जाम जायो. यह अर्थ. मुहु-
कम्म कुमर जोपीनाथ को पुत्र, राव शत्रुशाल को भाई ताके वश में भयो ऐ-
सो सालमसिंह नामक कुमर्ग कुत्सित है प्रजा जाके. ऐनो याके पुत्र वहैं हैं जे
स्वामी बुधसिंह को शत्रु वहैं हैं यातें कुसर्ग कही ॥ १३ ॥ इत्यादीति ॥ सप्तोत्तर
सत १०७ एक सो सात और दुल्लह और एक बुंदी को इन्द्र ए एकसो आ-
ठ भये. या लग्न पर राना जयसिंह ने एक सो आठ १०८ कन्या अपनी अल
बंधु वर्गन की इकट्ठी करके व्याही तहां तीन दुलहा तो बुंदीसों गये दोऊ भाई
और एक सालमसिंह अठ एक कोटा सों ऐसे औरहु देशन के राजा तथा
राजकुमार तथा उमराव वा लग्न पर एक सो आठ १०८ विवाहे इत्यर्थः
॥ १४ ॥ छप्पनेति ॥ छप्पन वागड़ देश के समीप देश विशेष. ताको नरेस चहु-
वान यह शेष. ताको तनया पुत्री अंतर मन. तामे ॥ १५ ॥ ताकति ॥ अवधारि
धारी. ॥ १६ ॥ कुमरीति ॥ कुमरी जेठो. कुमरीसों जेठो. ज्येष्ठ बड़ो. यह अर्थ.

सत्रुसल्ल नंदिनिय नाम गंगा गुन गाई ॥

भावसिंह भगिनी सु पुब्ब रानहिं परिनाई ॥

अमरेस कुमार ताके उदर प्रथम भयो कुल पट्ट पति ॥

तुरकान तेज संगति प्रबल घरघर हिंदुन अनय रति ॥ १७ ॥

लाखि यह अमरकुमार राज लघुबंधव पावत ॥

कुप्पि अनय उप्फनिय जनक उप्पर भुव जावत ॥

हानि धरम हिंदून लाय घरघर इम लग्गें ॥

अणुके सम्मित अनय भिदुर गृह पब्बय भग्गें ॥

अमरेस उदित आहव रचन बल बिसेस धनबिनु कठिन ॥

यह सोचि आय मातुल निलय बुंदिय गढ तिहिं मंत्र खिन ॥ १८ ॥

यह भाऊ १९५।१ अधिराज देत अनई न कपर्दन ॥

तीनलक्ख ३०००००० तव दम्म पाय निठ्ठाहि मातुल सन ॥

अर कुमार अमरेस आय वेधमपुर ओसरि ॥

राउत अनुपमसिंह पग्घ पल्लटि रु धीसख करि ॥

बखसीस च्यारि ४ चामर बिरचि संगर उचित अनीक साजि ॥

यह कुमारों सों बहुत वर्ष पहिलैं भयो हो. जिह जाकों तिह ताकों. तब यह शेष. नंदिनिय पुत्री. पुब्ब पहिलैं ॥ १७ ॥ लखीति ॥ बंधव भाई. जनकउप्पर पिता उप्पर. भुव भू. अनय अन्याय. सोही भिदुर यज्ञ. ताकारिकें “कुलिशं भिदुरं पवि” रित्यमरः ॥ गृहपब्बय गृह घर. सोही पब्बय पर्वत. भग्गें नष्ट होत. आहव युद्ध. बल सेना. मातुलनिलय मातुल मांमा. ताको निलय स्थान. तिह मंत्रखिन वा युद्ध करिवेके मंत्र के. खिन क्षण में ॥ १८ ॥ यह ति ॥ भाऊ भावसिंह. अनई अन्याई. यानैं पितासों लखिवेकों मांमा य-ह अन्याय की यातें. कपर्द लोके कोडी. न नहीं. दम्म द्रम्म लोके रूपय्या. स-न सों. अर शत्रु. वेधम वेधम नामक नगर. ओसरि पीछो फिरकें. राउत है अ-नंदक पद जाको ऐसी अनुपमसिंह अनोपसिंह नाम करि वेधम को पति ताकों. सेवार के उमराव रावत बहुत बजै हैं. पग्घ शिरोपेष्टि लोके पाद्य. ताकों पल-टि बदालि. उनकी पाद्य इनने यह अर्थ. मूढ लोक याकों आधुनिक समय में मि-त्रताको चिन्ह गिनै हैं यातें. रु अरु. धीसख मंत्री. अनीक सेना. “चक्रं चानी-कमल्लिया” मित्यमरः ॥ पुरउदय उदयपुर. दंहित गजशब्द. हेसा हयशब्द.

पुरउदय जाय घेरिय प्रबल दंडित हेषा निनद बाजि ॥ १९ ॥

सु सुनि रांन जयसिंह पुत्र लघु सहित पलायो ॥

किल्ला कुंभिलमेरु बसि रु वह काल बितायो ॥

सुत हल्ला लखि सत्य मात गंगा सकोप मन ॥

खेटक खग्ग उचाय आय ठह्री गृह तोरन ॥

पठई कहि अनुपमसिंह पँहँ तुम भटवर धारत धरम ॥

समुझावहु कुतनय बिनयसन जो चौडाघर तुम जनम २०

यह सुनि अनुपमसिंह सुमिरि निज पुब्बपितामह ॥

प्रथम मिल्यो चलबुद्धि अब सु बदल्यो डर दुस्सह ॥

साजि अप्पनो अत्थ समुख प्रतिभट ठहै धायो ॥

चोसर चत्वर उदयनैर लुट्टन नहिँ पायो ॥

समुझाय कुमार अमरेसकहँ तुल्य सुभट एकल जुरि ॥

कुल धरम थंभि सुत जनककै सुनय साम किन्नो बहुरि २१

॥ दोहा ॥

रहै तखत जयसिंह नृप, तोलौ अमरहिँ अप्पि ॥

राजसमुद्र तड़ाग तट, राजनगर गढ थप्पि ॥ २२ ॥

इम गंगा पहिले समय, पुण्य पतिव्रत पाय ॥

भेदि सु अनुपमसिंह भट, लिय स्वपुत्र समुझाय ॥ २३ ॥

गंगासम गंगा कही, सुधरम सतिय सुजान ॥

भीखमसम कैसै कहाँ, अनई अमर अमान ॥ २४ ॥

निनद शब्द. ॥ १९ ॥ सुसुनेति ॥ सु सो. पुत्र उम्मेदसिंह नामक. सुत अपनों पु-
त्र अमरसिंह नामक ताकों. मात माता. खेटक ढाल. तोरन बाहिर को द्वार.
कुतनय कुपुत्र. पितासो लखि आयो यातं याकों. सन सों. हेतु में पंचमी. तुम
तुमारी. हतो यह शेष ॥ २० ॥ यह इति ॥ पुब्ब पूर्व. ताकों चौडा को. यह अर्थ.
समुख सामने. चोसर चार चार पंक्तिवारे चत्वर जामें ऐसो ॥ २१ ॥ रहे-
ति ॥ अमरसिंह कुमार को पंच उमरावनने यह शेष. अप्पि देकै. थप्पि थापो.
॥ २२ ॥ इमेति ॥ यह स्पष्ट ॥ २३ ॥ गंगा इति ॥ सतिय सती (पतिव्रता) यह

लाहि प्रसंग कह्यु यँहँ कहौं, चौडाकी नय बत्त ॥

जाहि सुमिरि अनुपम भयो, गंगाबच अनुरत्त ॥ २५ ॥

॥ षट्पात ॥

इक्कसमय चीतोर रान लखपति खेतल सुत ॥

तरुन कुमर इक तास नाम चौडा नय जय जुत ॥

नृप रनमल रठोर गेह तनया मंडोवर ॥

चौडासौ संबंध करन आये तस कग्गर ॥

सुनि पत्र रानलखपति कहिय तरुननकोँ हेरत जगत ॥

यह जनक बैन सुनि सुनि कुमर किय मन तिहिँ व्याहन बिरत ॥ २६ ॥

कहि चौडा करजोरि सुनहु मरुवर सुजाता ॥

व्याह पिताको रचहु वहै कन्या मम माता ॥

पहु सुनि मरुवासीन कहयो लिखिदेहु अप्प कर ॥

रठोरनको भागिनेय चीतोर पट्ट पर ॥

यह सुनत लिखित निजहत्थ करि मरुवासिन सौँप्यो कुमर

लखपतिहु रान वहै मंदमति व्याहलइय वह वृद्धवर ॥ २७ ॥

तुच्छ दिननके अंत गरभ रठोरि ग्रहन किय ॥

समय अंत सुत जनम नाम मुक्कल बिप्रन दिय ॥

लखपति अज तिनदिनन काल कंठीरव मारयो ॥

चौडासौ रठोरि रूठि पीहर बल धारयो ॥

बुलवाय तात रनमल पुनि जोधभ्रात चीतोरगढ ॥

वृत्तान्त बहुत वर्ष पहिलैको यहां कहि दीनों है ॥ २४ ॥ लाहि इति ॥ यँहँ यहाँ

॥ २५ ॥ इक्कइति ॥ तास ताको. कग्गर पत्र. तिहँ ताकोँ. व्याहन व्याहिवेकोँ

विरत बिरक्त (उदासीन) ॥ २६ ॥ कहि इति ॥ मरुवर मरुदेश के घर जेष्ट. म-

न्विवादि यह संवोधन. अप्पकर अपने करसौं. भागिनेय लोके भानेज. वह र-

ठोर राजा रनमलकी कन्या. वृद्धवर बूढ़े वरनं ॥ २७ ॥ तुच्छइति ॥ जनमि जन्मयो.

मुक्कल मोक्कल. लोके मोक्कल. अज बकरा. काल मृत्यु. सोही कंठीरव सिंह ताने.

तिन हत्थ द्वार कुंचिय अरपि किल्ला करिय प्रपंच दह २८
 नारिबुद्धि रठोरि समुझिनहिं परिग फलाफल ॥
 तब सुख रनमल कहिय तजै चौंटा जब यह थल ॥
 यह सुनि चौंदारान जुति निकस्यो भीसम धुर ॥
 मुलक छोरि मेवार गयो मालव मंडूपुर ॥
 मारवन दाव लाग्यो तबहि जोधा रनमल मंत्र जपि ॥
 करि भागिनेय मुकल कदन थिरहि लैन चीतोर थपि २९
 इकशरान अनुचरिय नेह मंडयो जोधासम ॥
 इकशदिन आसवपान जोध बुल्लयो मतिबिभ्रम ॥
 मुकलको अव मारि दुग दल देस कोस हरि ॥
 इकमासके अंत तोहि भजिहै रानी करि ॥
 यह वत डारि दासिय दई मुकलकी माता श्रवन ॥
 सुनि सोचि तबहि रठोरिकों चौंटा आयउ चितमन ॥३०॥
 पत्र मंडि प्रछन्न दूत मंडुव पठवायो ॥
 सुनि चौंटा सजि सेन अद्व रजनी गढ आयो ॥
 करि हल्ला चढि कोट धस्यो बीराधिबीर बल ॥
 कुमर जोध भजि कटिग मारिलिन्नों नृप रनमल ॥

तात पिता, जोधभ्राता जोधसिंह नामक भाई, द्वारकुंचिय दरवाजेनकी कुं-
 ची, अरपि दैकै, दह दह ॥२८॥ नारिबुद्धिरिति ॥ परिग परयो, थल स्थल (स्थान),
 रान राना, जुति लोके जुपिकै, भीसमधुर भीषमकी धुरकै, जा धुरकै भीषम
 जुप्यो ताके यह अर्थ, मारवन मरुवासीनके, कदन नाश, थपिको अन्यथ मंत्र
 सों है ॥ २९ ॥ इकइति ॥ अनुचरिय दासी, तानै, लब यासों, दासिय दासी
 नै, माताश्रवन माताके कान में ॥ ३० ॥ पत्रइति ॥ सेन सेना कों, बल सेना,
 मुकलहिं मुकल कों, अरपि दैकै, तदस्थ भिन्न, हिंदवान हिंदुस्थान, यहां वर्णा-
 श्रम धर्म वारे या कुमारिका क्षेत्र के वाली जन हैं तिनकों स्लेच्छ लोग तो
 हिन्दू कहैहैं, यह हिन्दू शब्द या क्षेत्र में जवननको राज्य भये पीछे बहुत प्र-
 कट व्हैकै देशीप्राकृत में गयो यातें देशीप्राकृत जानिकें हमने वर्तमान कार-
 नतें कस्यो है, अन्यथा या शब्द को अर्थ तो बुरो ही होत हैं; क्योंकि स्लेच्छ

मुकलहिं पट्टगादिय अरपि रहि तटस्थ जग जस लियउ ॥
हिंदवान बत्त धारहु हृदय करहु जेम चौंदा कियउ ॥३१॥

दोहा—वह चौंदा करि चिंतन, अनुपम धरम विचारि ॥

कियो साम सुत जनककैं, निज पुर लूट निवारि ॥३२॥

रान अनय मन ठानिकैं, राज दैनलागि जाहि ॥

ताकी वर सोदर स्वसा, बुद्ध नरेसहिं व्याहि ॥ ३३ ॥

तीजीइरानीकी सुता, भीमहिं दइय विचारि ॥

भात भीमकी नंदनी, जोधसिंह अवधारि ॥ ३४ ॥

सुहुकमहर सालम अरथ, सुभट सुता परिनाय ॥

बहुरि सीख डेरन दई, सवहिन मोद सुनाय ॥ ३५ ॥

दुल्लह डेरन आय किय, बिहित नित्य सुचि होय ॥

गोरन असन निमंतकों, रहे रान मग जोय ॥ ३६ ॥

रान कैफ मंडत बहुत, आतआत अलसाय ॥

गोरन दिवस अतीत व्है, समय निसीथ सु आयै ॥३७॥

॥ पट्टपात ॥

लोग तो इनकों अच्छे कहैं नहीं तिन मतालुकूल उत्तम आर्य जनों को अपम
करिकें कहनों परत है कि तिन हिंदुनको स्थान है..तांके अलुस्वार कों “अलु-
स्वारो बहुलं” या प्राकृतल्लत्रसों अनुनासिक कियो. जेम ज्यों ॥ ३१ ॥ वहइ-
ति ॥ साम प्रथम उपाय. निजपुर रानाको पुर (उदयपुर) ताकी ॥ ३२ ॥ राने-
ति ॥ स्वसा भगिनी. लोके यहिनि. “जामिस्तु भगिनी स्वसे” तिहैमः ॥ यह
यहिन भाईसों बहुत वर्ज पीछैं भई. व्याहि व्याही ॥ ३३ ॥ तीजीइति ॥ भी-
महिं कोटा के राजा को पुत्र भीमसिंह. ताकों. दइय दई. भातकी राना ज-
यसिंह को भाई भीमसिंह. ताकी. नान्दिनी पुत्री. अवधारि धारी ॥ ३४ ॥ सु-
हुकमेति ॥ हर देशीप्राकृत में वंश चारे कों कहत हैं. तातें सुहुकन वंशी यह
अर्थ भयो ॥ ३५ ॥ दुल्लहइति ॥ नित्य सन्ध्यादिक कर्म. सुचि पवित्र. गोरन
विवाह के दूजे दिन कों लोक में गोरन कहै. ताके. असन रोजन के. निमंत्र
बुलावाको. रानमग राना के मार्ग कों. जोय देखि. जोय को अन्वय रहे लों
है ॥ ३६ ॥ रानइति ॥ कैफ नरा. निसीथ अर्धरात्रि ॥ ३७ ॥ सुपट्टइति ॥ सु

सु पट्टरान जयसिंह मन्नि मादक सराग मन ॥
 भंगि अरक भुज्जै सु प्रमित दुव बीस २२ पहीसन ॥
 प्रिय रानिय छप्पनिय भौन पगधारि नित्य भल ॥
 असन अप्प अहरहिं मेर खट्ठरितुहि अंबफल ॥
 इम मत्त मातुलानिय अरक दसमी १० निस ससिके उदय ॥
 चहुवान सिबिर सीसोद चलि मानुहारि गोरन समय ॥ ३८ ॥
 मिलि उपेत सनमान राव रानाँ अनंद रजि ॥
 चढि गयंद चहुवान स्वसुर महलन प्रयान सजि ॥
 परिकर सह परि पंति असन किन्नाँ अधिराजन ॥
 अति सुख डेरन आय सयन मंडिय प्रमोदसन ॥
 जयसिंह रान तीजे ३ दिवस जनक दोस मेटन जहर ॥
 परताप भट्ट डेरानप्रति मुदित आय मंडिय महर ॥ ३९ ॥

(दाहा)

अगैँ रानाँ राजसाँ, रुट्टो भट्ट प्रताप ॥

अब जयसिंह प्रसन्न किय, आय पटालय आप ॥ ४० ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी
 पतिबुधसिंहचरित्रे सप्तोत्तरशतविन्दसहितबुधसिंहोदयपुरविवाह
 सो. पट्ट प्रभु राजा. मन्नि मानिके. मादक नशे की वस्तु. तासों. सरागमनरा-
 ग प्रीति. तासहित मनकों. भंगि अंगा. ताको. अरक सार. भुज्जै खावै. सु
 सो. प्रमित प्रमान. भोन गेह. पगधारि जायकै. अब आम्र. लोके आंवा. तिन
 के फलनसों रुचि बहुत ही यातैं बारह भास राखते. मातुलानिय अंगा. ताके
 चहुवान बुधसिंह के. सिबिर रचना विशेषसोंफोज के डेरा. तिनप्रति. सीसो-
 द रानों ॥ ३८ ॥ मिलिहति ॥ उपेत. युक्त. राव बुदीनृप. राजि शोभित वहैकै.
 सह सहित. असन भोजन. सन सों. जहर विष. महर कृपा ॥ ३९ ॥ अगेति ॥
 राजसाँ राजसिंह नामकसों. पटालय डेरा ॥ ४० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति
 बुधसिंह के चरित्र में उदयपुर में एक सौ सात दुलहों सहित बुधसिंह के वि-
 वाह के वर्णन का तीजा ३ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ इकता-

वर्णनं तृतीयो मयूखः ॥ ३ ॥

आदित एकचत्वारिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २४१ ॥

षट्पात—दिन चउत्थ४ दीवान बुद्धि रघुपतिय पुरोहित ॥

अरु चारन आनंद भट्ट परताप बुद्धबित ॥

च्यारिलकख४०००००निज चलन दम्म खज्जूर संगदिय ॥

हय बर इक्कहजार१०००दोयदस१२मत्ते दंतिय ॥

सिरुपाव उच्च द्वादस सहस्र१२०००कति बिधि भूखन संग क्रिय ॥

मंगनन भाग धनपति मनहुँ दैन त्याग इम हुकमदिय ॥ १ ॥

दिन पंचम२दुव२नृपन सजिय चीतोर समागम ॥

पिकरुयो दुग्ग सु प्रथित समर जहँ हुव अकबर सम ॥

पुण्णिम१५दिन करि गोठि फाग कोतुक किल्लापर ॥

होरिय उच्छव ठानि बहुरि आये पत्तन बर ॥

अतित्याग उभल सुनिसुनि सुजस हरखिरान जयसिंह जिय ॥

बिधिउचित पुज्जि बरबरनि छवि रहिरस बुंदिय सिकख दिया २ ॥

चलि बरात प्रतिपंथ भीम करजोरि भ्रात धुर ॥

लीस २४१ मयूख हुए ॥

दिनइति ॥ चउत्थ चतुर्थ. चौथे दिन यह अर्थ. दीवान बुधसिंह. बुद्धि बुढाय
कै. रघुपतिय रघुपति नामक. यहां स्वार्थ में क प्रत्यय आन्यों. ताके व्यंजनकों
लोप करिके प्राकृत के मतसों यकार कियो. यह रीति सर्वल. ऐसे प्रयोग आ-
वैं तहां जानलेनी. आनंद आनंदरास नामक. अपनी पोळि को चारण हरिखा
नाम ग्राम को स्वामी हमारे पितामह बदनसिंह को प्रपितामह यह शेष. भट्ट
भाट, बुद्धिबित बुद्धि परखये वारो. "विदुज्ञाने" धातु है. ताको बित् भयो. ताके
तकारकों प्राकृतसों सस्वर कियो. दम्म रूपैया. खज्जूर खर्जूर रूपा. ताके. क-
ति कितेक. धनपति कुबेर. त्याग दान. विवाह में मंगननकों दान होत ताकों
त्याग कहै हैं ॥ १ ॥ दिनइति ॥ पिकरुयो देख्यो. दुग्ग दुर्ग. किल्ला. सु सो.
(चित्तोर). हुव भयो. समा सों. पुण्यम पूर्णिमा. ताके दिन. गोठ रीति विशे-
षसों भोजन. पर ऊपर. होरिय यहां हुतासनि की. जाकों अग्नि में जारिये
सो लेनी ॥ पत्तन नगर. तिनमें बर श्रेष्ठ ॥ उदयपुर यह अर्थ भी होत है ॥ २ ॥

कोटाप्रति क्रिय सिक्ख अप्प आयउ बुन्दीपुर ॥
 दिय मिलान सब सैन जेतसागर तड़ाग तट ॥
 दइवजोग निस समय अग्गि लग्गिय डेरन पट ॥
 सर सेतु मध्य गृह पिहित इक१भजि रु तत्थ वर वरनि रहि ॥
 हुय छार हसम डेरन सहित मनुज तुरंगहु कछुक दहि ॥ ३ ॥
 इहिं दारुन उतपात दान सत्त दोय२०० सविधि दिय ॥
 सुख समय निज नगर द्वार उत्तर प्रवेस क्रिय ॥
 पुरजन मंगलपुब्ब विविध उच्छाह बधारे ॥
 दृष्टा चत्वर चौक सउध प्राकार सिंगारे ॥
 विधि निगम साधि वर वरनि इम नीराजित गृह गमन क्रिय ॥
 कछुदिनन अंत जवनेसके चरन आय फरमान दिय ॥ ४ ॥
 दिखियपति अवरंग४०३तपत इक१छत्र तीन३दिस ॥
 दक्खिन दब्बनकाज चट्ठिग अतिबल अतीव रिस ॥
 पहिलैं रेवापार नाम निज नगर वसायो ॥
 बहुत बरस रहि तत्थ कछुक अरि अमल उठायो ॥

अलिति॥भीम कोटानुपपुत्र.आतथुर भाइनमें मुख्य.सरसेतु तड़ागकी तट. लोके
 पाछि. पिहित गुप्त. तत्थ तहां. छार भस्म. हसम वैभव. यह हसम शब्द देशी प्रा
 कृतमें है. ताको उदाहरण. "हसम हय गाय देश अति"॥ यह दोहाको चरन पृ
 थ्वीराजरासेमें महुवा खंडमें है. अरु और ठोरहु रासे में बहुत प्रयोग हैं अरु
 सुसलमान कहै हैं कि हमारे वैभवको नाम हसमत् है ताको यह भयो है, पर
 न्तु यायें तकार नहीं है यातैं देशी प्राकृत ही मान्यो. मनुज मनुष्य. दहे ज
 रे ॥३॥ इहिं इति ॥ दारुन भयंकर. सविधि विधि सहित. उत्तर उत्तर दिशाके.
 दृष्टा पनिकन के विक्रयको स्थान. चत्वर चुहंटे. चौक बाजार. सउध देशी
 प्राकृतमें सउध, सौध. लोके महल ॥ "सौधोऽक्षीराजसदन" मित्यमरः ॥ प्रा
 कार लोके कोट. निगम वेद ताकी. नीराजित आरती उतारे अये. चरन दूत
 न. फरमान लिख्यो हुकम ॥ ४ ॥ दिखियपति इति ॥ रिस रोससों. मेकलजा
 नर्मदा "रेवा तु नर्मदा सोमोद्भवा मेकलकन्यके" त्यमरः॥ नाम निज अपने ना
 मको. तुरक सुसलमाननमें रुठ शब्द देशी प्राकृत है ॥ तहांके वासी ही तुरक

काबलकेलिये बुधसिंहको बुलाना] सप्तमराशि-चतुर्थमयूख (२९१७)

हाजरि समस्त हिंदुव तुरक जोन अवर दिस मुकल्यो॥
तुरकान तहर जालम जहर लोपिलहर काहुन कल्यो॥५॥

॥ दोहा ॥

काबल सूबा काल वस, सुनि अनिरुद्ध जरूर ॥
अब सेवन अंतर समुक्ति, बुल्लिय बुद्ध १९७१ हजूर ॥६॥
अहदी तब अवरंग ४०१३ के, अतिजव बुंदिय आय ॥
सिरधरि साहन बंदगी, चलहु कह्यो हित चाय ॥ ७ ॥
जाय समुख फरमानके, करि सलाम लिय झेलि ॥
उपज्यो चलन प्रपंच अब, देत हुकम को पेलि ॥ ८ ॥
सुनि कम्हार परिकर सबहि, मिलि इककत किय मंत ॥
स्वामि बाल सेवा कठिन, आलोचहु मतिअंत ॥ ९ ॥
इहिं अंतर अवरंग ४०१३ सुत, जैठो आलमसाह ४०१३ ॥
बंदीगृहतै कहिचल्यो, चिति आगरा चाह ॥ १० ॥

(पञ्चाटिका)

हुव पुन पंचप अवरंग धाम, सुलतानमुहुम्मद ४११ प्रथम जाम ॥
सुत दूजो आलमसाह ४११२ एह, सुत तीजो आजम ४०१३ पितु
सनेह ॥ ११ ॥
सुत चौथो अकबर ४११४ नामधार, हुव कामबखस ४११५ पंचम
कुमार ॥

जेठेसुत द्वैसनकरि उदास, बंदीगृह डारे विसम बास ॥१२॥

यजत हैं ते यहां नहीं लैने ॥ तहर मताप. जालम जुलम करिवेवारो. यह या-
वनीभाषा के शब्द हैं. लहर या जहरके असर को झोला. काहु काहुसों ॥५॥
कायलसूवेति ॥ जरूर त्वरित. अंतर विक्षेप. बुध बुधसिंह ॥ ६ ॥ अहदीति ॥
साहन पातसाहनकी ॥ ७ ॥ जायहति ॥ पेलि टारि ॥ ८ ॥ सुनिहति ॥ इककत
एकत्र. आलोचहु विचारहु. मतिअंत बुद्धिपर्यंत ॥ ९ ॥ ईहिहति ॥ चाह इ-
च्छा ॥१०॥ हुवहति ॥ जाम जन्म. एह यह. जो आगराको चलो सो ॥ पितुस-
नेह पिताके स्नेहवारो ॥ ११ ॥ सुतहति ॥ यह स्पष्ट ॥ १२ ॥ सुलतानहति ॥

सुलतानमुहुम्मद४१।१मरियततथ, आलमबच्योसु४।१२आयुहिसमतथ
याकैहुं पुत्र हुव प्रथम च्यारि४, आयै बय जुब्बन कैद डारि ॥१३॥
कैदहिमें पाये पलित केस, अपमानित दीनहुसों बिसेस ॥

बरसावधि पावै दगल इक्क१, परि दुसह दहैं जूका रु लिक्क १४
नहिं वपनन्हान नहिं असन इष्ट, जूकान जनित सहियत अरिष्ट ॥

इकसमय दुख अरजी कराय, जो महर नयो मिलि दगल जाय १५
अवरंग४०।३हुकम पठयो अनेह, उलटा करि धारहु दगल एह ॥

इक समय मिल्यो सरदा विसारि, तिहिं छेदन छुरिकाहित उचारि १६
पुनि कहिय साह भरि कोप भार, सिरसैं दै फोरहु नहिं हथ्यार ॥

इम कुपित साह सुत सीस आहि, इक समय सभासों कहिय चाहि १७
जो मिलहिं हमारे हुकम आज, तो पावहि आजम४०।३साह राज ॥

जो मिलहिं खुदाके हुकम पाय, लहिहैं तो आलम साह आय १८
सुनतहि इम आजम कहिय एहु, बंदीगृह बासी सोहि देहु ॥

यह सुनत साहहिय बढि बिखाद, कोपारुन आजम प्रति जगाद १९
सुत जेष्ट ममायस धरत सीस, वह कैदी अरु तुम तखत ईस ॥

यह कहि बुलाय आलम उदास, निकर्यो तजिकारागृह निवास २०
करि गुसल वपन मंजुल कराय, अति दिव्य वसन धरि आम आय ॥

लखि साह छिप्र हियसों लपेटि, भुज दुवर्गहिलीनों भुजन भेटि २१
तथ तहां (कारागृहमेंही) डारि डारयो ॥ १३ ॥ कैदहिमेंइति ॥ पलित

जरासूं स्वेत. जूका यूका. लोके जाँ. रु अरु. लिक्क लिक्का. लोके लीक ॥ १४ ॥
नहिंइति ॥ वपन जौरकर्म. इष्ट चाह्यो. महर कृपा होयतो ॥ १५ ॥ अवरं-

गेति ॥ अनेह बिना स्नेहसों. सरदा उष्णकालमें फल विशेष. विसरि भूलि-
कै. जानिकैं तो वाकौं कौन देतो एसो पिताको कोप हो. छेदन फारिकेकौं. उ-

चारि कही ॥ १६ ॥ पुनिइति ॥ हथ्यार शस्त्र. नहीं है ॥ १७ ॥ जोइति ॥ यह
स्पष्ट ॥ १८ ॥ सुनितेति ॥ एह यह. बिखाद खेद. जगाद कहतभयो. यह सं-

स्कृत शुरु क्रियापद है ॥ १९ ॥ सुतजेष्टेति ॥ ममायस मेरो हुकम ॥ २० ॥ क-
रीति ॥ गुसल स्नान. यह यावनी शब्द है. आम जामैं सय पहुंचै ऐसी बड़ी

घिरकाल कंठ गदगद बढ़ात, दुवघाँ हुव अश्रुन अधिक पात ॥
 तँहँ दियउ रीझि अवरंगसाह, अकबरपुर सूबा जुत उछाह ॥ २२ ॥
 बारहहजार १२००० मनसुब लिखाय, दिय सीख आगरा हित बढ़ाय
 लहि सीख चलन मन करि विचार, द्रुत चढिग साह आलम कुमार
 रेवा उलंघि अतिदल अमान, पुर आय अवंती दिय मिलान ॥
 अगँ अवंति सूबा पधारि, कछुकाम पीर अर्चन उचारि ॥ २४ ॥
 द्रुत कैद जोग वह रहिय सेस, अब करिय आय पूरन सुदेस ॥
 खैरात बंदि बसु बिबिध नाम, क्रमि मगग अगगरापुर जगाम ॥ २५ ॥
 नृप विष्णुसिंह आमैर नाथ, निज बंस सुभट हरिसिंह साथ ॥
 अवरंग हुकम जो लहि जरूर, हुव आय साह आलम हजूर ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

अगँ इक अवरंगको, सीम समीप विचारि ॥
 विष्णुसिंह नृपसौ हुकम, हुव मारन जटवारि ॥ २७ ॥
 विष्णुसिंह नृप सुभट निज, लिय हरिसिंह बुलाय ॥
 कियउ बिदा जटवारि पर, संगर सेन पठाय ॥ २८ ॥

॥ षट्पात् ॥

हरियसिंह कछवाह जाय जटवारि बिटिलिय ॥
 बहु जट्टन सिर कटि खनित खड्डन प्रविष्ट किय ॥
 वह लंबापुर नाथ बंस खंगार संग साजि ॥
 सेवन आलमसाह आय क्रूरम नरेस रजि ॥
 दै दल मिलान जमुना पुलिन संचरि आम सलाम करि ॥

समा तामै. यहहु यावनी शब्द है ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ रेवाइति ॥ रेवा नर्म-
 दा ताकों. पधारि पधारे हे तब ॥ २४ ॥ द्रुतकैदइति ॥ सुदेश वाही देशमें. खै-
 रात पुण्यदान. यावनी. बसु द्रव्य. क्रमि चलि. अगगर आगरा. जगाम जाव-
 तमयो ॥ २५ ॥ नृपइति ॥ स्पष्ट ॥ २६ ॥ अगँइति ॥ हुकम पदको अन्वय अ-
 वरंग पदसों है. जटवार जाटनको देश ॥ २७ ॥ २८ ॥ हरीति ॥ खनित खोदे-

हरिसिंह सहित ठहरे मिसल रचि अंजलि आदाव धरि ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

हरिसिंहहिं आलम दये, रीझि खिलत १ हयराय २ ॥

कूरम पतिके कथन करि, जट्ट कदन हित लाय ३ ॥ ३० ॥

इम आलम कछि कैदसन, अकबरपुर द्रुत आय ४ ॥

कूरम निज ताबीन करि, वासर कछुक बिहाय ५ ॥ ३१ ॥

यह उदंत भट सचिव सुनि, नृपहिं अलप वय जानि ६ ॥

अरु दकिखन अवरंगको, सेवन दूर प्रमानि ७ ॥ ३२ ॥

आलमप्रति पुरआगरा, पठई अरज लिखाय ८ ॥

लेहु हमहिं कहि साहसों, निजसेवन मन लाय ९ ॥ ३३ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी-
पतिबुधसिंहचरित्रे प्रत्नोदयपुरदानबुधसिंहबुन्द्यागमन १, बुधसिंहा-
व्दानावरंगालसदुर्जनप्रेषण २, अवरंगपुरपञ्चकालमशाहकारानि-
वसन ३, कारामुक्तालमशाहकबरपुराधिकारप्रापण ४, यवनेन्द्र-
सूनुनिदेशामैरराजविष्णुसिंहजट्टजनपदविजयनं चतुर्थो मयूखः ॥ ४ ॥

आदितो द्विचत्वारिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २४२ ॥

हुए. खड्डन खाहनमें. पुलिन तट ॥ २९ ॥ हरिसिंहेति ॥ आलम आलम शाह-
जादानें. खिलत सिरुपाव ॥ ३० ॥ इमहति ॥ वासर दिन ॥ ३१ ॥ यहइति ॥
उदंत वृत्तान्त ॥ ३२ ॥ आलमइति ॥ निजसेवन तुन्हारे सेवनमें ॥ ३३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति
बुधसिंह का उदयपुर में त्याग देकर बुन्दी में आना १ बुधसिंह के बुलाने को
अहदी भेजना २ औरंगजेब के पांच पुत्रों का और आलमशाह के कैद में र-
हने का वर्णन ३ आलमशाह का कैद से छूटकर आगरे के सूबे पर जाना ४
शाहजादे की आज्ञानुसार आमैर के राजा विष्णुसिंह का जाटों के देश को
विजय करने का चौथा ४ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ बियाली-
स २४२ मयूख हुए ॥

॥ मुक्तादाम ॥

यहै विनती सुनि आलम तत्त, पिताप्रति दै अरजी लिखि पत्त ॥

इहाँ नृप कूरम ज्यो भटभाव, रहै मम संगहि बुंदिय राव ॥ १ ॥

यहै सुनि साह पठाय निदेस, रहो तुम संगहि बुद्धनरेस ॥

दयो तब आलम पत्त पठाय, स्वसंग बलापति बुद्ध बुलाय ॥ २ ॥

भयो दल बंछि संमस्तन मोद, बढ्यो लखि लग्न प्रयान विनोद ॥

दये बहु दान विधानन रीति, प्रवासिन हेम तजे नय रीति ॥ ३ ॥

मनी कुलदेविय पूजन मोद, नमे हरि पायन लै चरनोद ॥

किये सबिधान प्रवासिक कर्म, लखे सुभ साकुन लग्न सधर्म ॥ ४ ॥

किते भट मंत्रिन आयस अप्पि, इहाँ गृह राज निवाहन थप्पि ॥

दये तिन्ह ग्राम पटा गज बाजि, दयो भुजभार विचार विराजि ॥ ५ ॥

सजी तब बुद्ध बलापति सेन, दिपै भट तारक अप्प द्विजेन ॥

रहे निज आलय सोदर जोध, चल्यो दल होत प्रभंजन रोध ॥ ६ ॥

खुले उडि कुंभिन कंध निसान, तिरोहित व्है रविरेणुबितान ॥

हरोलन हाक नकीबन छोह, बडे गज अँचत लंगर लोह ॥ ७ ॥

रही भुकि पीत पताकन पंति, मरातब माहिय भासिग मंति ॥

मुक्तादाम ॥ यहइति ॥ तत्त तहाँ. पत्त पत्र ॥ १ ॥ यहैइति ॥ निदेश हुकम. स्व-

संग अपने लग्न. बलापति बुद्धा को पर्वत. जो पारियात्र अचल ताको लोकमें

बला कहै हैं ॥ २ ॥ भयोइति ॥ दल पत्र. बंछि पढिकै. प्रवासिनहेय प्रवासी

जो प्रस्थान करिबेबारे तिनके छोरिबे योग्य तीनरात्रि पहिले जौरकर्म. रात्रि

पहिले हुग्य. ऐसे हेय त्याज्य होत ॥ ३ ॥ मनीइति ॥ मनी मनाई. चरनोद चर-

नको उद जल ॥ ४ ॥ कितेइति ॥ आयस हुकम. अप्प. दैकै. तिन तिनको.

विराजि शोभिन व्हैतै ॥ ५ ॥ सजीइति ॥ तारक नक्षत्र. द्विजेन द्विजनको द-

न स्वामी चंद्र. निजआलय अपने घर. प्रभंजन पदम ताको. रोध रुकनों ॥ ६ ॥

खुलेइति ॥ कुंभिन कुंभी हस्ती. तिनके. तिरोहित गुप्त ॥ ७ ॥ रहीइति ॥ मराति-

व माहिय, ए दोऊ बादशाहनें अपनी कृपा जनायबको दीनें ऐसे चिन्ह विशे-

षातिनमें मरातिव छोटे गडवाके आकार. अरु माही मत्सी के आकार. अकव-

अकव्वरपुत्र दयो लहि काज, बज्यो वह राजत हुंहुभिराज ॥८॥
 मलंगत फाँद तुरंगन जूह, चले उडि नोबति नाद दुरुह ॥
 चलयो दरकुंचन यों चहुवान, दये सथुरापुर जाय मिलान ॥ ९ ॥
 दई सतइक सअष्टक १०८ गाय, समानहि हाटक हून १०८ मिलाय ॥
 विधीरित यों बहुधा करि दत्त, अकव्वरपत्तन आय प्रपत्त ॥ १० ॥
 मिले क्रम आलम साह हजूर, कियो सनमान कहयो द्वित पूर ॥
 हन्यो हस कृष्ण अवंतिय जेन, रहयो तुमरो हममें हकं तेन ॥ ११ ॥
 करे पलटा हमहू तंसमात, लहो हमको भाजि रिद्धिन बात ॥
 करी सुनि थों अरजी नरनाह, भली करिहैं सब ज्यानपनाह ॥ १२ ॥

रनाह १ पनाह २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

परस्पर प्रीति उभै सनमान, रहे इम कूगम ओ चहुवान ॥
 उहाँ दिन वित्त के अवरंग, सुनी सुत आलम किति अभंग १३
 इते विच सौर सुन्यो मुलतान, बढे सिख लुप्यत साहन आन ॥
 तवै सुत आलमको जवनेस, दई मुलतान सम्हारि सु पेस ॥ १४ ॥
 यहै सुनि आयस आलम साह, सजे दल हिंदुव भिच्छ सिपाह ॥
 भयो विधिसे चतुरंग प्रयान, भये दरकुंच धरा मुलतान ॥ १५ ॥
 कुविग्रह मेदि रच्यो नय राज, भजे सिख तित्तिरि ज्यों डर बाज ॥
 दफँकरि देस प्रजा दुख दंद, रहैं इम आलम तत्त अनंद ॥ १६ ॥
जहें दुवश्मपनसों अति प्रीति, सबै दलकों सुख आदर नीति ॥

र लक्ष नृगया कतता है. पुष्प पहिले राघ सुजैन को दये हे. राजत रजत
 रुपा तत्संबंधी ॥८॥ ९ ॥ समान गायन के प्रमानहि. विधीरित विधिमें कथो
 दत्त दान. प्रपत्त प्राप्तभयो ॥ १० ॥ मिलेइति ॥ कृष्ण कृष्णसिंह कुसर लुम्हा-
 रा पिनामह. अवंतिय उर्जानमें. जेन जाकारनकों ॥ ११ ॥ करैइति ॥ प्राप्त म-
 सह. पनाह रजक. गायत्री ॥ १२ ॥ परस्परति ॥ उभै उभय. केक कितेका ॥ १३ ॥
 इतेइति ॥ मुलतान धेजायको देश नाकों. सिख यां देश के जभीदार. सु मो.
 पेस अभ्यास ॥ १४ ॥ यहैइति ॥ भिच्छ स्तेच्छ. ज्यों वे इनको हिंदू कहैं न्यों म-
 यार्थ उनको स्तेच्छ कहैं ॥ १५ ॥ कुविग्रहति ॥ दफँ नाश. गायत्री ॥ १६ ॥ र-

करैं दिन इक नदी जल कोलि, चले चढि नाव प्रवाहन पोलि १७
 रज्जु बुवभूषति सेवन लार, सजैं जलकुकुट वेधि सिकार ॥
 कही तैंहें कूरमसों सुतसाह, करो हमसों दुहिता निज व्याह १८
 कही तव कूरम यों करजोरि, वनैं दुहिता जब होय बहोरि ॥
 सुता इक आदि सु तो करि नेम, दई बुधसिंहहिं पुत्रक प्रेम १९
 कही बुधसिंहहिं आलम तत्त, करी तुमसों इन व्याहन वत्त ॥
 कही तव बुन्दिय राव सहांस, कही इन जो सु भई कथ तास २०
 यहै सुनि जंपिग आलमसाह, ततो हमही करिहैं तव व्याह ॥
 करी सुनि यों बुधसिंह सलाम, कछो निज आयस है सिरकाम २१
 यहै सक चौवन सत्रह १७५४ साल, नई कथ व्याह बनीवसि काल ॥
 भई वय द्वादस दायन १२ बुद्ध, सजैं खुरली नय साधन सुहा २२
 दयो लखि बुद्धहिं वीर सिपाह, परगन टोंक सु आलमसाह ॥
 कही तव यों करि बुद्ध सलाम, लहयो पुर टोंक बढयो मम नाम २३
 परंतु कढयो हमसों इक सेस, ततो करिये पुरपट्टनि पेस ॥
 गई यह पट्टनि पूरवकाल, बढयो जब जहन वर कगल ॥ २४ ॥
 सुनी अवंगह खून पुकार, कियो सुत आजमको सुत त्यार ॥
 दये सँग बुंदियतैं अनिरुद्ध, वन्यों समयो गुनगोरि प्रबुद्ध ॥ २५ ॥
 रहे निहिंकारन हैदिन गेह, न काबलपैं पहुँचे तियनेह ॥

हैशक्ति॥ योति कंवि ॥ १७ ॥ रज्जुहोति ॥ रज्जु अनुकूल. नावनी शब्द. दुहिता पु-
 त्री. निज आपनीतो ॥ १८ ॥ कहीनि॥ ग्राहि है. सु सो. नेम नियम. बुधसिंह-
 म प्रेम पूर्वक ॥ १९ ॥ कहीनि ॥ तव तवों. बहान बहान साहित. गान्ध वा रि-
 भावनी ॥ २० ॥ यहैइति ॥ जंपिग कही ॥ २१ ॥ यहैइति ॥ परट्ट ॥ २२ ॥ दयो-
 इति॥ टोंक टोंक नाम नगरको ॥ २३ ॥ परंतुहोति ॥ पेस अर्थात्. यावनी ॥ २४ ॥
 सुनीइति ॥ सुन साजस नूनपार कवनों दायो इत साजस नूनपार साजो न-
 गार आनी हन. सुनयोनि कैर जल सुनीया. प्रबुद्ध मर्याद जाग्यो. जो यों नगराज
 बुद्ध कहे ॥ २५ ॥ इतिहोति ॥ निजपावन या सुत भैंस के. काव्यसुग्गो जात. या

५६ई तुरसी इहिं कारन आय, समा सरवेद रु सत्रह १७४५ पाय २६
 लई तब पट्टनि साह उतागि, दई नृप रामहिं काम बिचारि ॥
 छुटी तबकी अब सेवन पाय, दई इन आयसे साह मँगाया २७।
 जम्हो निज टोंक परंगन राज, बच्यो मँहँदीपुर इक १ अकाज
 लरे मँहँदीपुरके कछवाह, तजी सुरतान पिनातिन राह ॥ २८ ॥
 ५६ई मँहँदीपुर तोपन मार, लये सब जीति कियो गढ छार ॥
 रजू इम टोंक जिला करवाय, रहै मुलतान सु बुंदियराया २९।
 ॥ दोहा ॥

दुव २ भूपनको वरस इक १, गयो रहत मुलतान ॥

सेवत आजमसाहको, इम कूरम चहुवान ॥ ३० ॥

इति श्री वंशभास्करे महाम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीप-
 तिबुधसिंहचरित्रे यवनेन्द्रकुमारालमसेवाबुधसिंहगमन १ औरंगजे-
 वाज्ञानुसृतिकुमारालममुलतानशिकखविजयन २ आलमशाहस्य टों
 कपट्टनिप्रान्तद्वयबुधसिंहप्रदानवर्णनं पञ्चमो मयूखः ॥ ५ ॥

आदितस्त्रिचत्वारिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २४३ ॥

वनी. सम वर्ष. "हायनोऽस्त्री समाधे" त्यमरः ॥ सर ५ पंच. वेद ४ चार. रु
 अरु. सत्रह १७ सप्तदश. सत्रहसै पैतालीस १७४५ यह अर्थ ॥ २६ ॥ लईइति ॥
 रामसिंह कोटा के राजाको. इन आलमशाहन. आयस आदेश. यावनी मैं.
 जम्होइति ॥ मँहँदीपुर मँहँदवास नामक नगर. सुरतानपिनातिन सुरतानके पि
 नाती वंश के सुरतानोत कछवाहे तिनमें. राह रीति ॥ २८ ॥ अईइति ॥ रजू
 अभीन. यावनी ॥ २९ ॥ दुव इति ॥ दुव बुंदी १ आमैर २ के दोऊ ॥ ३० ॥

श्रीवंशभास्कर महाम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुंदी के भूपति बु-
 धसिंह के चरित्र में बुधसिंह का शाहजादे आलम की सेवा में जाना १ औरंगजे-
 व की आज्ञा के अनुसार शाहजादे आलम का मुलतान के शिकखों को
 विजय कराना २ आलमशाह का बुधसिंह को टोंक और पट्टण दिलाने के व
 र्णन का पांचवाँ मयूख समाप्त हुआ ॥ ५ ॥ और आदि से दो सौ तियालीस
 मयूख हुए ॥ २४३ ॥

॥ दोहा ॥

इक़ानबाव अमीरखाँ, अग़मैँ कहि अवरंग ॥

थप्यो दै भुजभार निज, सूबा काबल संग ॥ १ ॥

॥ तोटकम् ॥

इतनैँ वह खान अमीर मरघो, अवरंग यहै सुनि सोक परघो ॥

कहि साह उमीर रह्यो जितनैँ, हम भोग लहे अब दुख घनैँ ॥

लाहि काबल साह यहै समयो, उत दिल्लिय राज सु दबि लयो

तब साह हिये तस त्रान बसी, धरकाबल आलमकोँ बखसी ॥

इनहूँ मुलतान जमाय जिला, लिय काबल काम कमान चिला

कतु सारद बारद नष्ट भये, सरिता समि पद्धति पंक गये ॥४॥

सरवान तुरंगम इक़ानबावसमा, सुत साह चढ्यो इसमास अमा

अति आरव भेरिनके गरजैँ, पविपात कि पव्वय दै दरजैँ ॥५॥

खुलि दंड पताकन पंति लसी, रसना जनु कालियकी निकसी

बहि कोसन फोज हरोल चली, बहु जंग उछाह सिपाह बली ॥

चहुवान रु कूरम संग चलैँ, बरबीर पठान गुमान भलैँ ॥

मनमैँ बल मोद रजूरनमैँ, उरझात सदागति सेलनमैँ ॥ ७ ॥

धनु पट्टिस खेटक खग कसैँ, अपुदान हिये तनमान बसैँ ॥

इम हिंदुव मिच्छ चले रनकोँ, छबि निंदत भदवके घनकोँ ॥८॥

दोहा ॥ इक़ानबाव ॥ अग़मैँ पहिले समयमें ॥ १ ॥ इतनैँ इति ॥ इतनैँ

इतने अंतरमें. कहि कह्यो ॥२॥ लाहिइति॥ त्रान रक्षा. धर धरा. आलम आ-

लमशाह (अपनों बडो पुत्र) ताकोँ. बखसी दर्ज ॥ ३ ॥ इनइति ॥ काम कार्य.

सोही कमान धनुष. ताकोँ चिला लोके पिनच. बारद मेघ. यहां बार शब्द

हलंत है ताकोँ प्राकृतसों सस्वर कियो. समि ससों समित भई. पद्धति मार्ग.

तिनके ॥ "सरणी पद्धती पथे"त्यमरः ॥ ४ ॥ सरइति सर५. वान६. तुरंग७. स-

मा वर्ष. इसमास लोके आसोज मास. अम अमावास्या. आरव शब्द. पवि व-

ज्र. ताके पात परिवेसों, कि किधों. दरजैँ दराजैँ ॥ ५ ॥ खुलि इति ॥ यहस्पष्ट

॥ ६ ॥ चहुवानेति ॥ गुमान गर्व. सदागति पवन ॥ ७ ॥ धनुइति ॥ पट्टिस कटा-

सननंकिय प्रोथन वात वैहैं, हननंकिय हींस दिगीस दहैं ॥
 रननंकिय कोच करी करकैं, फननंकिय नाग फटा लारकैं ॥९॥
 गननंकिय गैन धरा धमकैं, छननंकिय नेउर हेंछमकैं ॥
 भननंकिय पक्खर भार भिरैं, खननंकिय नालन अग्नि खिरैं १०
 ठननंकिय कुंभिन घंट घसैं, मननंकिय भेरिय हूर हसैं ॥
 वजि आरव आरव कूह चली, बहुभाँति अगीक रमैं खुरली ११
 भट केकें त्रिभागन दाव अरैं, कमनैत विहंगन वेध करैं ॥
 भूपटांय तुरंगन बाह वचैं, असि मग्ग उदग्ग कितेविरचैं १२
 भट केकें धँदूकन लच्छय लहैं, बहुवार कटार गदा निवहैं ॥
 करटीन नवीन घटा बहुधा, बरछीन अनीन अकास मुधा १३
 खुरतालन खेह वितान जुग्घो, नद तालन पंकिल नीर घुस्यो
 हुलसे इम कावलकी धरपैं, दल आलमके जय संगरपैं १४
 ॥ पट्पात ॥

अटक सरित उल्लंघि कटक आलम बहि धायो ॥

कावलपति प्रति पत्र प्रथम लिखवाय पठायो ॥

सरतहिं खान उमीर छिद्र तुम तकत निहार्यो ॥

र. खेदक डाल. हान त्याग ॥ ८ ॥ सननंकियइति ॥ सननंकिय यह घोर के रवा-
 सको अनुकरण है ॥ ऐमे आरहू लिखे ते अपनैं अपनैं शब्दन के अनुकरण जा-
 नों. प्रोध हयनामा. तिनमें. जान पवन. हींस हयजब्द दिगीस दिगीसाल. को
 य कषय. तिनकी. फटा फन ॥ ९ ॥ गननंकिय इति ॥ गैन गगन. हें हय तिन
 के. नाल खुरताल. तिनकरि ॥ १० ॥ ठननंकियइति ॥ आरव वाचविशेष. आरव
 शब्द. नाकी. कूह फोलाहलता ॥ ११ ॥ भटइति ॥ केकें कितेक. त्रिभागे भा-
 गे. तिनकरि. दाव शस्त्रके पार. तिनमें. असि लहू नाके. उदग्ग उदग्ग. उल्लं-
 कन हैं अग्रभाग जिनमें ऐमे. यह मानिको विशेषन है ॥ १२ ॥ भटइति ॥ ल
 लच्छय लच्छय. करटी हर्मी. तिनकी घटा समुदाय. अकास आकाश. मुधा धृधा.
 भयो यह शेष ॥ १३ ॥ खुरतालइति ॥ पंकिल पंकिलारी. दल फटक. संगर यु-
 य. नापें ॥ १४ ॥ पट्पदी ॥ अटकइति ॥ अटक अटक नामक. पहुनी पृथ्वी. ल-

दिल्लिय थानां खंडि अमल अप्पन उपचार्यो ॥

अब छोरि पहुमि अवरगको करन जोरि लगगहु चरन ॥

दिल्लीस सेन जानहु दुसह इक इक लखखन तरन ॥ १५ ॥

कावलपति दल बंघि समय बलवान सोधि मति ॥

रहि अप्पन निज गेह सेन पठयो आलम प्रति ॥

आय सेन अति वेग भिरन तुरकन मन बहे ॥

लटाबंध अभिधान अद्रि घांटा रुकि ठहे ॥

इत उमगि साह आलम चमू सीमा संगर सीम हुव ॥

तिन दिनन भाल दिल्लीसकै बिधि मंडयो जयपत्त ध्रुव ॥ १६ ॥

इत तोपन जुरि पंति इक १ तोपन उत रक्खै ॥

इत परिमित आहार इक १ वक्कर उत चक्खै ॥

इत लाखन बहुरंग उत सु अयुत १०००० हि इकरंगी ॥

इत बल बुद्धि अपार उत सु वपुजोर अभंगी ॥

दिल्लिय सुहाग इत भार परि उत गर लग्गी गज्जनिय ॥

दुवदलन जुद्ध जालम जुरिग परिग रोर पात कि पविय ॥ १७ ॥

गिरिन चूर हयखुरन मग्ग उव्वट धर पद्धर ॥

खुंदि कमठ खुप्परिय उरग फनमाल थरत्थर ॥

दिक्पालन उर संक कंक गिद्धन पर वज्जै ॥

गहकि चिल्ल गोमायु भार भीरुन गन भज्जै ॥

रन लरिवेवारे ॥ १५ ॥ कावलइति ॥ दल पल. अभिधान नाम. अद्रि पर्वत

ताको. सीमा अपनी अमलदारी की. तहां. संगर युद्ध. ताको. भाल ललाट

तापै. पत्त पत्र. ध्रुव ध्रुव निश्चय ॥ १६ ॥ इतइति ॥ इत दिल्लीकी सेनाकी तरफ.

उत कावल की सेना की तरफ. परिमित अल्प. अयुत १०००० दशहजार. सु-

हाग सौभाग्य. गजनविद्य यह पहले वा देशकी राजधानीको नगर. जालम

जुलम करिवेवारी. यावनी शब्द. पात परिवेसों. कि क्रियों. पवि वज्र. ताके

पविको अन्वय पात शब्दसों है ॥ १७ ॥ गिरन इति ॥ उव्वट विना मार्ग की.

धर धरा तामैं. पद्धर सीधे. यह मार्ग को विशेषन है. खुंदि मर्दित भई. उरग

सर्प. यहां सामान्य नाग नामके कछों. परन्तु फनमाल के योग से शेषही ले

दुव दलन बीर बत्थन विलासि मनहु मित्र चिरकाल मिलि॥

विधि च्यारि४हेति उद्धत विसम धारन धार प्रहार भिलि१८

बाजि आयुध रन रीठ फूटि हड्डन पल छुटै ॥

कवच खंड असि करकि तरकि अंत्रावलि तुटै ॥

सरन सोक समनंकि परत झरि डंड पताकन ॥

भुक्त बीर घनघाय मनहुँ पामर मद छाकिन ॥

इम विरचि मुक्त आयुध कलह अब अमुक्त गहि छोरि हय ॥

करि हल्ल दुदल गिरिसिर चढिग जुरि जुरि जंपत जयति जय१९

॥ दाहा ॥

बुंदिय पति आमैर पति, ठहै हय असवार ॥

आलम गज आरुहि रहयो, उत्तरि अवर अपार ॥२०॥

उत इततैं नहिं बढिसके, इत उततैं नहिं कम्म ॥

इक१पहर वह गिरि रहयो, बाजीगरको दम्म ॥ २१ ॥

॥ पट्टपात ॥

तव दुव२दिस तजि हयन चढिग गिरि सिखर महाभट ॥

कहि करीम रव तुरक होत हरि हर हिन्दुन रट ॥

बुद्ध नृपतिकों बंधु राजसिंहह कुल जायो ॥

नाम सु अनुपमसिंह तवहि मधुसुवन चलायो ॥

दससहस१००००सेन निज संग करि नृप पिल्लयो गिरि बिकट पर॥

मिलि वत्थ लुन्धि कटि कटि परत मनहुँ विशबंधव बंढि घर॥२२॥

नों. धरन्धर यह धूजिवेको अनुकरन है. कंक पत्नी विशेष लोके करगस्त. चिल्ल लोके चील्ह. गोमायु लोके स्याल. भीरु कातर तिनके. वन समूह. विधिच्यारि च्यार ४ विधिके. हेति शस्त्र ॥ १८ ॥ धजेति ॥ रीठ घने जोरको लगवो. मोक शब्द विशेष. कलह युद्ध. दुदल दोऊ दल ॥ १९ ॥ २० ॥ उतइति ॥ दम्म दम्म. लोके रुपय ॥ २१ ॥ पट्टपदी ॥ तवेति ॥ करीम और रव ए दोऊ यावनीमें परमेस्वर के नाम हैं. बंधुवर्ग लोके भाई कुटुंबी. राजसिंह राजसिंह. कुसर गोपीनाथ को पुत्र ताके हकार प्राकृतमें सर्व विभक्ति के स्थान में होत है. यहां प

॥ दोहा ॥

हुंदिय दल आमैर दल, पब्बय चढिग रिसाय ॥

कलह भिरे भट काबली, उततैं बढि अतिकाय ॥ २३ ॥

॥ षट्पात् ॥

पहर इक्क१दिन सेस बहुरि आलस दल पिल्लयो ॥

हुदिस छोह छकि लोह बीर बत्थन बल ठिल्लयो ॥

उडत फुट्टि नागोद जंत जावक सम लोहित ॥

धपि धावत बिनु मत्थ होत अच्छरिगन मोहित ॥

बाहुल सिरस्क कंकट कटत फटत मुंह भेजन भरकि ॥

खेलखिलत मिलत जुगिनि जटिय किलकिलात कालिय करकि

घटिय दोय२दिन रहत जोर दिल्लिय दल जित्यो ॥

कटयो कटक काबलिय बिसम प्रलयानल वित्यो ॥

ष्टी के अर्थमें जानिये ॥ २२ ॥ दोहा ॥ हुंदियइति॥ यह स्पष्ट ॥ २३ ॥ षट्पात्॥ पहरइति ॥ बल सेना. नागोद उदर की सिलह "नागोदमुदरत्राण" मितिहैमः॥ लोहित रुधिर. लोके लोही. बाहुल हाथकी सिलह. लोके दस्ताना "बाहुत्राणं बाहुलं स्या" हैमः ॥ सिरस्क मस्तक की सिलह. लोके टोप. "शिरस्कं शीर्षकं च त" हैमः ॥ कंकट कवच "सन्नाहो वर्म कंकटः" इतिहैमः॥ जटीय जटी(शि-
व) ॥ २४ ॥ घटिय दोय इति ॥ काबलिय काबल संबंधी. यहां काबली प्रयोग होय तो षट्पदी को लच्छन बनै नहीं क्योंकि षट्पदी के पूर्व में चार चरन हैं तिनमें एक एक चरन प्रति पहिले एक एक षट्कलगन. पीछे ४ चतुष्कलगन. पीछे एक द्विकलगन. ऐसे छै ६ गन होत हैं. तिनमें छठी सप्तमी दशमी ग्यारही बारही चौदही पंद्रही अठारही उनीसही बाईसही तेईसही मात्रा मिलकर दीर्घ होय नहीं ऐसे चौवीस २४ मात्रा के मिलकर दीर्घ होय नहीं. ऐसे षोवीस मात्रा के च्यारि४ चरन होय. पीछे सामान्य अठारहस मात्रा के दो-
न चरन उल्लास्य के होय तिनमें गन का नियम नहीं. तथाहि "षट्कलमादौ तदनु चतुस्तुरगं परिरन्तनु ॥ शेषे द्विकलं कलय. चतुष्पदमेवं संचिनु॥ छन्दः षट्पदनाम भवति ऋणिनायकगीतं ॥ रुद्रे ?? विरतिमुपैति नृपतिसुखकरमु-
पनीतम्॥ उल्लास्युगलमन्ते भवेदष्टाविंशतिकलमितं॥ शृणु पंचदशे विरतिस्थि-
तं पठिते पंडितजनहितम् ॥" इति नागराजानुगवाणीशृणु. यह यहां लि-
खिदीनों से सर्वत्र जानिये. प्राकृत के प्राचीन कविनैं ऐसे षट्पदी, दोहा-

गोपीनाथ वतंस परयो अनुपम मधुनंदन ॥

माधवहर गुम्मान दोय रहड़े हनि दुज्जन ॥

इत्यादि बहुत आलम चमू पब्बपर कटि कटि परिय ॥

करि तत्थ बहुरि अप्पन अमल काबल दल हनि बिजय किय २५

इम आलम लहि बिजय सीम काबल करि पहर ॥

बिष्णुसिंह बुधसिंह सहित रहि तँहँ बहु बच्छर ॥

सुनि सुतको जय सुजस साह अवरंग सुख किन्नो ॥

नाम बहादुरसाह रीभि आलमकँहँ दिन्नो ॥

इम जीति बहादुरसाह वह रमि काबल सूबा रहयो ॥

दिक छंदन के लच्छन किये ते बोध विनबनायेतँ अशुद्ध जानिये ॥ तथाहि “अंग-
द जिम अंकुरयो ॥” तथाहि “सूर मरन मंगली” ॥ तथाहि “सुतसेमेश्वर बडो” इत्या-
दि पृथ्वीराजरासे में बहुत हैं ॥ तथा “बचै न बडी सवीलहू ॥” तथा “लोयन बडी
बलाय” तथा “गाँठें भरी मिठांस” इत्यादि बिहारीसतसई में. ऐसे बहु ग्रंथन
में है ॥ अरु षट्पदी दोहा को शुद्ध लच्छन यह है सो जानिये ॥

SSS. S. S. S. S. SSS. S. ॥ आदि में षट्कल ताके तेरह १३ भेद ॥ पुनि
द्विकल ताके दोय २ भेद. पुनि त्रिकल ताके तीन ३ भेद. पुनि त्रिकल ताके
तीन ३ भेद. पुनि द्वि २ कल ताके दोय २ भेद. पुनि षट् ६ कल ताके तेरह
१३ भेद. पुनि द्विकल ताके दोय भेद. ऐसे एक १ चरनके भेद भये. शेष तीन
चरन भी याही प्रकार गिनिये ॥ अरु अंत में जलालय छंद के द्वै चरन होवें

S. SSS. S. S. I. S. SSS. S. S. I. S. ॥ ऐसे षट्पदी छंद को शुद्ध लच्छ-
न जानिये ॥ दोहा यथा ॥ SSS. S. S. I. S. SSS. S. S. I. आ-

दि षट्कल. पुनि द्विकल. पुनि द्विकल. पुनि लहुनेमिक. पुनि द्विकल. षट्क-
ल. पुनि द्विकल. पुनि गुरु. लहु नेमिक ॥ ऐसे दोहा के एक चरन को कम ॥ तदनु-
कारही द्वितीय २ चरन को जानिये ॥ प्रलयानल प्रलय को सो अनल अग्नि.
वा गुहमें भयो हो सो. गोपीनाथ वतंस गोपीनाथ के वंश को वतंस शिरको
भूषण विशेष ॥ “वतंसः शिरसः सजी” तिहैम ॥ माधवहर माधववंशी. माधव
सिंह कुमार गोपीनाथ को छोटी भाई. ताके वंश को गुमान नामक. अनुपम
सिंह अरु गुम्मानसिंह ए द्वै हाडे चणवानवा लराईमें. दुज्जन शत्रुओंको. इ-
नि मारिकें परे. इत्यादि इनको आदि लेकें अवरहु यह अर्थ ॥ २४ ॥ घटियइति ॥
यह स्पष्ट ॥ २५ ॥ हमइति ॥ लहि पाय. बच्छर बत्सर वर्ष. आलम आलम

जयसिंह और बुधसिंह का काबल में रहना] सप्तमराशि-षष्ठमयुख (२६३१)

चहुवान बहुरि कूरम दुहूँ प्रेम परस्पर निब्वहयो ॥ २६ ॥

खट रु पंच हय इक्के १७५६ साल आगम सक विक्रम ॥

भुकि जुबन कछु भलक बुद्ध भूपति बय उत्तम ॥

बुंदियतें बुलवाय अप्प अंतहपुर लिन्नौ ॥

साहबहादुर संग जंग जितन जस किन्नौ ॥

मुलतान सुता सगपन भयो तबतें नृप आमैरपति ॥

बुधसिंह हितु मंडत विनय गिनतसिद्ध जामात गति ॥ २७ ॥

(दोहा)

खरव कबंध सुताहु यह, व्याहयो पूरव काल ॥

संतति त्रिक ३ ताके भयो, हुंढाहर धरपाल ॥ २८ ॥

पुव्व प्रसव पुत्रिय प्रकटि, नाम सु अमरकुमारि ॥

जयसिंह २ सु दूजे २ प्रसव, तीजे विजय ३ बिचारि ॥ २९ ॥

कन्या अरु पट्टप कुमर, अंतर हायन तीन ॥

नृप आयस दोऊ २ रहत, पुर आमैर प्रवीन ॥ ३० ॥

विजयसिंह लघुपुत्र अरु, कछु पातरिगन संग ॥

इम काबल आमैरपति, रहत बुद्ध रस रंग ॥ ३१ ॥

शाहको. ॥ २६ ॥ खटइति ॥ हय ७ सप्त. खटइमै छप्पन १७५६ के सालके सक विक्रम राज के सकमें ॥ या ग्रंथमें सर्वत्र स्थल विक्रमादित्यको ही शक रा ह्यो है शालिवाहनको शक नहीं राख्यो ॥ अप्प अपनें. अंतहपुर जनाना. सगप न संबंध. हितु सों. सिद्धजामाता अवाहि अपनी पुत्री बुधसिंह को विवाही नाहीं तथापि जैसे विवाह किये पीछे गिनै तैसैं ॥ २७ ॥ दोहा ॥ खरव इति ॥ संत ति संतान ताको. त्रिक ३ त्रय हुंढाहर अपनी देश ताकी. धर धरा. ताके पा ल पालक. वे संतान. अथवा हुंढाहर धरा को पालक राजा विष्णुसिंह ता सों भये यह अर्थ करिये ॥ २८ ॥ पुव्व प्रसव इति ॥ पुव्व पहिलै. प्रसव प्रसूति काल में. विजय विजयसिंह नामक ॥ २९ ॥ कन्याइति ॥ कन्या के अरु पट्टप लोके पाटवी. बडो कुमर जयसिंह ताके. हायन वर्ष. लुपन पट्टीक. कन्या सों तीन वर्ष पीछे जयसिंह भयो यह अर्थ. नृप अपनी पिता. ताके. आयस इकस सों. दोऊ कन्या और बडो कुमर ॥ ३० ॥ विजयसिंहेति ॥ बुद्ध बुधसिंह सों. रसरंग अनुकूल ॥ ३१ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी
पतिबुधसिंहचरित्रे कावलाधिकारकुमारालमायतीभवन १, काव
लामरिसेनाविजयनदत्तालमशाहार्थयवनेन्द्रप्रसादबहादुरशाहनामप्रा
पणां षष्ठो मयूखः ॥ ६ ॥

आदितश्चतुश्चत्वारिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २४४ ॥

(पट्पात्)

प्रीति स्वसुर जामात साल जामिप मंडत अति॥

गृहविधि दुव अवनोस जात आवत डेरन प्रति॥

कूरम पतिके संग पान आसव नृप लग्गो॥

नञ्चन बादन गान मान तानन मन पग्गो॥

जिनदिनन पातसाहन सभा जात न सायुध इक्कजन ॥

लैजात सवहि केवल फलक बिनु बुंदिय हिंदुव जवन १

अग्गै अकवर बेर राव सुरजन यह रक्खी ॥

कसि कटार इहिहेतु रहै बुधसिंह समक्खी ॥

वसु सायक हय इंदु १०५८जेठ ग्रीखम रन रत्तो ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति
बुधसिंह के चरित्र में कावल का सूबा शाहजादे आलम के आधीन होना ?
कावल के शमीर की सेना से विजय पाने के कारण आलमशाह को बादशा
ह की ओर से बहादुरशाह नाम पाने का छटा १ मयूख समाप्त हुआ और
आज से दो सौ चवालीस २४४ मयूख हुए ॥

पट्पात् ॥ प्रीतिइति ॥ स्वसुर विष्णुसिंह, जामात बुधसिंह, साल
जालक, लोके साला, (विजयसिंह), जामिप जामि भगिनी ताको
पति बुधसिंह, लोके पहिनोई, "जामिस्तु भगिनी स्वसे" तिहैमः ॥ पग्गो
आमना भयो, सायुध आयुध सहित, फलक ढाल "फलकोस्त्री फलं चर्मैत्यमरः
बिनुबुंदिय यहां लच्छन लच्छनानां बुंदी के राजा बिना यह अर्थ करनो ॥ १ ॥
पग्गो, प्रति ॥ बेर समय, यह एक आयुध जाये की, हेतु कारन, नाकरि, मय
कयी समय, यावनी में स्वसु, वसु ८ अष्ट, सायक ९ पंच, हय ७ राप्प, इन्दु
१ एक, मयूख से अष्टावन १०५८के साल, जेठ ज्येष्ठमास, ग्रीखम ग्रामि अ

साह बहादुर धाम आम अवसर नृप पत्तो ॥
जवनिका द्वार लंघे जुगलरतीजे द्वार समीप भुव ॥
पहुँचत नरेस बुधसिंहप्रति जवन इक्कभटभर हुव ॥ २ ॥
वहै जवन अति दर्प साहआलमको किंकर ॥
सहसा भिरन प्रसंग बक्यो अप्रिय कुवाद पर ॥
सुनि कुबैन संभरिय कुप्पि मारिय कट्टारिय ॥
कालखंज हिय चकिख अधप पहुँची अनियारिय ॥
रीठक विदारि निकसी चुवत मनहुँ बिज्जु मानिक बमत ॥
कौ तिय सहीय परकीयको बातायन कर जावरत ॥ ३ ॥
पट बेणुक प्राकार अयुत १०००० हत्थन चतुरायत ॥
सात फेर संपुटित चित्र तोरन बनि चायत ॥
कृत विद्याति कुंकुमिय नीर जलजंत्रन नचै ॥
उडि उसीर आमोद राग गायक बहु रचै ॥

तुमैं, धाम स्थान, आम बडो दरीखानां ताके, अवसर समय, नृप बुधसिंह, पत्तो प्राप्तभयो, जवनिका लोके कनात, तथा सिरायचा, ताके, युगलरतीजे ॥ २ ॥ वहैहति ॥ दर्प अभिमान, सहसा अचानक, कुवाद खोटे वाद मै, पर तत्पर, संभरिय संभरी बुधसिंह तानै, राजा माणिक्यराज १३४ चहुवाननै बहूत वर्ष पहिले संभरनामक नगर जहां लोन की खान है तहां राज्य कियो हो यातैं वाके वंश के चहुवान संभर तथा संभरी तथा संभरीक कहे जाते हैं, कालखंज कलेजा, हिय हृदय, अधप बिना धापी (भूखी) यह अर्थ, रीठक पृष्ठिवंश, लोके वांसे को हाड ताको "रीठकः पृष्ठिवंशः स्या" दितिहैमः ॥ बिज्जु बिजुरी, बमत बमतन कर ते उगलने यह अर्थ, कै अथवा, तिय स्त्री, सहीय सुहृदया, चतुर ऐसी, परकीय परकीया नायिका को, बातायन गवाज, लोके भरांखा तामैं, कर हाथ, जाव जावक, ताकरिकैं रत्न रत्न, लोके लाल, जैसे रजखला परकीया अपने जारको अपनी दशा दिखायकैं संकेतसैं वाको जावनां बरजिबको चुवते जावक को हाथ बातायनमैं निकासैं तैमैं यह अर्थ, इहां चेटा जन्य ध्वनि है ॥ ३ ॥ पटबेणुहति ॥ वेणु वंश, लोके वांस, स्वार्थेकः ॥ तिनमय, प्राकार कांठ, बाहिर भेवासमें राजनके कनात को ही कोट रहतो हो सो कांठह कैलो, अयुतहत्थ दजहजार हाथ को, चतुरायत चोतरफ विस्तारित, तब एक दिशा को कोट ॥ अढाई ह-

मोहत गुलाब मल्लिय महाकि इंद बिभव सोहत अजब ॥
 दिल्लीस सुवन जहँ थित मुदित तहँ नृप यह डारिय गजवा ॥
 जहँ जमीन जोजनन सेन संकुलि नाहि सुजभत ॥
 तीन सहँस ३००० तुक्खार परिधिचोकिय बढि बुजभत ॥
 सहँस १००० तोप सावात जाल चहुँदिस जंजीरित ॥
 भंडन केतु भूपेट पौन क्रंदत पथ पीरित ॥
 असवार अहोनि स पंचसत ५०० प्रतितोरन जामिक रहिग ॥
 बुंदिय नरेस बुधसिंहकी तहँ प्रकुप्पि पट्टिस बहिग ॥ ५ ॥
 चूक चूक चहुँकोद कूक कट्टत कटार परि ॥
 बहत भीरु चलविचल गिरत तुरकान गरब गरि ॥
 मारि जवन इम राव चुवत पट्टिस ढकि ठट्टो ॥
 साहबदादुर संक गंजि चाहत रन गट्टो ॥

जार हाथ को भयो सां एक कोस के पौदशांश १६ सहित एक कोस के चतु-
 र्भांश ४ प्रमान भयो. यथा—“यचोदरैरंगुलमष्टसंख्यैर्हस्तोऽङ्गुलैः पङ्गुलिना-
 अनुभिः॥ हस्तश्चतुर्भिर्भवतीह दंडः क्रोशः सहस्राक्षितयेन तेषाम् ॥” इति भा-
 स्कराचार्यः ॥ चोद केसो सात के संपुदित ऐसे प्राकारके सात गिरद लगे
 तहां यह कागो ना प्रकारको कोट बाहर ही बाहरको जानिये. ताके गिरदके
 माहि उचित अंतराग यों है ६ प्राकार और जानिये ऐसे सात भये तब सात
 ती० गार जानिये. तोरन बाहिर को द्वार ॥ “बाहिरां तु तोरणा” सितिहैमः॥
 पायन बाघ(मोद). ताके बहायवेवारे. कुंकुमिय कुंकुम के रंगका. उसीर लोके
 गल ताके. “उशीरं वीरणीयून्” सितिहैमः ॥ आलोद अति मनोहर गंध.
 “आलोदः सोऽतिनिर्हारी” त्यमः॥ मल्लिय मल्ली. लोके मोगरा. अजब अद्भु-
 त ॥ ४ ॥ जहँहति ॥ जमान पृथ्वी. पावनीजन्द. तुक्खार. घोर. यहां उ टा-
 न लच्छनारं घोरन के असवार जानिये. परिधिचोली मेला की परिधि की चो-
 ली के पहरायन. लोके छपीनां. सायन बाहद ताके जालबारी. जंजीरित
 जानियेसो जंजीरन सहित. भंडन भंडाध्वजा. निनकी कन पताका. निनकी
 भंडेसों. पौन पवन. क्रंदन कलकलन. अहोनि स दिनराधि. प्रतितोरन तारन
 तारन प्रति. जामिक पहारायन पट्टिस कटारी ॥ ४ ॥
 चूकचूकहति ॥ पट्टन पट्टार के चट्टन. भीरु कानर. गिरत या जवन के गिरने.

सुत साह हितु भाखी सबन आनि अरज उप्पर अरज ॥

कुणपहि सदोस आलम कहयो गुनह अप्पि हेरिय गरज ६

(दोहा)

कहि आलम सागस हन्यौ, नहि बुंदियपति दोस ॥

खलक इलाही कुबच सुनि, को नहि रंगत रोस ॥ ७ ॥

(गीर्वाणभाषा)

(इन्द्रवज्रा)

औरङ्गिरेवम्प्रविचार्य कृत्यं बुन्दीन्द्रमाहूय समक्षमाशु ॥

आश्वास्य नीचाऽनुजतो जिगीषुर्दिल्लीभरम्भूपभुजे बबन्धाऽ

(शालिनी)

भोजाचारं रत्नसेवान्तथैव दिल्लीशत्रं शत्रुशल्यञ्च भावम् ॥

संकभय ताको. गंजि अनादर करिकै. सुतसाहहितु साह बादशाह औरंगजे-
व ताके सुत आलमशाहसो. कुणप मृतक. "कुणपः शयमस्त्रिया" मित्यमरः ॥ स-
दोस दोष सहित. गुनाह अपराध. यावनी शब्द ॥ ६ ॥ दोहा ॥ कहीति ॥ साग-
स आगस अपराध ता सहित. खलक संसार. इलाही परमेश्वर. यावनी ताकोह.
कुबच छोटे वचन. को कौन ॥ ७ ॥ गीर्वाणभाषा ॥ इन्द्रवज्रा ॥ औरंगि औरंग
पुत्रः "अत इत्" इतीत् ॥ जित्वा इवृद्धिः ॥ कृत्यम् निरपराधत्वात्प्रतिष्ठाकरणरूपं
समक्षं प्रत्यक्षं. आशु शीघ्र. आश्वास्य विश्वास्य. नीचाऽनुजतः नीचो यः पि-
तुः प्रेष्टत्वाद्वाज्यलिप्सुः स्वीयोऽनुजः आजममाहनामातं द्वितीयाथं तसिः ॥ भर
भारं बुधसिंहभुजे बन्ध बन्धितवान् ॥ ८ ॥ शालिनी ॥ भोजाचारमाति ॥
भोजः अकबरशाहसमये योऽभूत्स सुर्जनपुत्रस्तस्याचरणं सुरतिपुगाधिगजमा
रणार्थतः करणेनाकबरशाहसेवनम् । रत्नसेवा तद्भोजपुत्रा यो रत्नसिंहः तत्कृता
कबरशाहपुत्रजहांगीरशाहसेवनम् । दिल्लीशत्रं दिल्लीशो जहांगीरशाहसुनुः शा

॥ भाषानुवाद ॥

इन्द्रवज्रा ॥ नीच छोटे भाई को जीतने की इच्छावाले औरंगजेव के पुत्र (बहा-
दुरशाह) ने इसप्रकार कार्य का विचार कर बुन्दी के इन्द्र (बुधसिंह) को शीघ्र
स्वयं बुलाकर विश्वास देकर दिल्ली का भार राजा के सुजाँ में धाँपा ॥ ८ ॥
शालिनी ॥ राय भोज का आचार, इसीप्रकार रत्नसिंह की सेवा, दिल्ली का
रक्षा करनेवाले अनुजाल और भावसिंह, कुणसिंह को उज्जीन में छलधान
से मारने का स्मरण करके औरंगजेव के पुत्र (बहादुरशाह) ने बुद्धिमान धारण किया

कृष्णं हृद्याऽवन्तिकाप्राप्तमृत्युं स्मृत्यौरङ्गिः शुद्धभावन्दधार९
(प्रायः प्राकृती मिश्रितभाषा)

(दोहा)

यह उदंत दिसदिस उडिग, जस बुंदियपति जगि ॥
इम काबल सूबा अवनि, लगन स्वामि भट लगि ॥ १० ॥
कूरम पतिको लघु कुमर, विजयसिंह रुचि रंग ॥
जावत अवसर आमके, स्वजनक जामिप संग ॥ ११ ॥
बालबेस कोतुक बिरचि, लगि छोनिय कछु लाह ॥
प्रथक पाय हिंडोनिपुर, सेवत आलमसाह ॥ १२ ॥
कूरमपति तत्थहि मरिय, लघुसुत रहिय समीप ॥
पट्ट लहिय जयसिंह नृप, पुर आमैर प्रदीप ॥

(हरिगीतम्)

लाहि पट्ट नृप जयसिंह यौ बय अब्द द्वादस १२ में तहाँ ॥
भट मंत्रि बर्म बुलायकै कहि कोन मंत्र अबै यहाँ ॥
करिकै समस्तन मंत्र भाखिय काल देस प्रमानिये ॥
अवरंग साह समीप सेवनमें सबै सुख जानिये ॥ १४ ॥
यह थपिकै जयसिंह लै दल देस दक्खिनको गयो ॥
दरगाह साह सलाम कै मिलि थान अप्पनपै ठयो ॥

इज्यहांनामा तद्रत्नकमेतादृशं रत्नसिंहपौत्रं शत्रुशल्यनमानं च पुनः भावम्
औरंगशाहनिदेशेन खजुवानगरादियुद्धविजेतारं शत्रुशल्यपुत्रं भावसिंहनामा
नम्। कृष्णं कृष्णसिंहं भावसिंहप्रातृभीमसिंहपुत्रं। आत्मनैबालमशाहेन हृद्या-
ना कपटन अवन्तिकापूर्यां प्राप्ता मृत्युर्येन तं तादृशं शुद्धभावं चित्तशुद्धि कपट-
राहित्यामिति यानन्। द्वार धारयतिस्म ॥ ९ ॥ प्रा० दृ० प्रा० मि० ॥ दोहा ॥ यह
इति ॥ उदंत दृष्टांत, लगन प्रीति, स्वामी बहादुरशाह के, अरु भट उमराव
बुधसिंह ताके ॥ १० ॥ कूरमेति ॥ आम बडी सभा ताको, स्व अपने, जनक वि-
ष्णुसिंह, जामिप बुधसिंह, तिनके ॥ ११ ॥ बालबेसेति ॥ बेस अवस्था तामें
प्रथक जुदो, हिंडोनिपुर हिंडोनि नाम नगर ॥ १२ ॥ कूरमपतिरिति ॥ तत्थ त-
हाँ, काबल के सूबा में, प्रदीप दीपक ॥ १३ ॥ हरिगीत ॥ लाहिइति ॥ अब्द वर्ष-

बुलवाय साह समीप ओ दुवदहत्य अंजलि संग्रहयो ॥
 करिहैं कदा अब जेर तू इम व्याज कोपित व्है कहयो १५
 जयसिंह यह सुनि उच्चरयो मम भाग आज उदोतहैं ॥
 कर इक्क थंभत साह जो नर सर्व उप्पर होतहैं ॥
 अवरंग यह सुनि मोद मनि रु छोरि आयस अप्पयो ॥
 नृप मानके कुल मानसो जयसिंह भूपतिहू भयो ॥१६॥
 बय बाल अरु बच बृद्ध तो नृप मानसोंहु सिवायहैं ॥
 यह सिवाइजयसिंह नृप अब नाम एह कहायहैं ॥
 यह बत्त अंक रु वान सप्त रु इक्क १७५९ संवतमें भई ॥
 पहुमी न इक्कहिं रत्त अब कछु होत जात नई नई ॥ १७ ॥

(दोहा)

हिंदुनकी पहुमी प्रिया, भोगी तुरकन आय ॥
 ज्यहाँगीर जारहि मरत, रतिरस अब न अघाय ॥ १८ ॥
 कछु अवरंगहु तरुनपन, भोगी सकति निहारि ॥
 अब यह जरठ जईफ वो, नित्यनई यह नारि ॥ १९ ॥

(षट्पात्)

सर ससि हय इक्क १७१५ साल भात दारा हनि जिह्यो ॥

यहइति॥ यहधप्पि यह मंत्र करिकैं. धानअप्पनपैं अपनैं खरो राहिये के स्थानपैं.
 ठयो रख्यो. साह. आरैंगजेवनैं. ओ अरु. दुवदहत्यअंजलि दोऊ हाथनतैं अंजलि
 करि राख्यो सो. व्याजकोपित झूठैं ही कोप करिकैं ॥ १५ ॥ जयसिंह इति ॥
 या वृद्ध के दूजे चरख के वाच्यार्थ सों मेरे दोऊ हाथ गहे हैं, यातैं मैं सबनतैं
 विशेष बहिनैं यह व्यंग्यार्थ पायो. आयस हुकम. अप्पयो दीनों ॥ १६ ॥ यय
 भालइति ॥ यय अदस्था. यच यचन तासैं. वृद्ध बडो. अंक नव ९. वान पंच ५.
 सत्रह खे गुनसति १७५९ के संवत् में. इक्कहिं एकसों. रत्त आसवत् ॥ १७ ॥
 दोहा ॥ हिंदुनकीइति ॥ ज्यहाँगीरजारहि जहाँगीरशाह अकबरशाहको
 पुत्र राजनीतिमें झुगल होताके ॥ १८ ॥ कछुइति॥ जरठ वृद्ध. जईफ वृद्ध. या.
 बनी. वृद्धपदको प्रयोग है पर कियो यातैं अतिवृद्ध जानिये ॥ १९ ॥ षट्पात्॥
 सरइति ॥ सर पंच५. ससि एक १. हय सप्त ७. सत्रह खे पंद्रहके साल १७१५

जिति धोलपुर समर तखत अवरंग बइठो ॥

बसु रु वेद ४८मित बरस पातसाही निरबाही ॥

गुन खट हय ससि १७६३ साल आय अब समय इलाही ॥

इकदिन बुलाय सुत आजमहिँ करि रहस्य अवरंग कहि ॥

जंपत निमाज ममासिर अलग करहु पुल तरवारि गहि २०

॥ दोहा ॥

भुगि जरा बय साह अब, लयो मृत्यु निज जोय ॥

जान्योँ दिल खमैँ रहैँ, जो निमाज बध होय ॥ २१ ॥

॥ षट्पात् ॥

सुनि आजम यह सकुचि बत्त मन सोधि विचारिय ॥

इहिँ उद्यम संधान होत संदेह जियन हिय ॥

कहत साह कुछ ओर करत कुछ ओर दुरासय ॥

यह दृढ करि उच्चरिय होय मोसौँ न यहै नय ॥

जो चहत अप्प ममसुख जनक तो यह हुकम अलीक करि ॥

दिल्लिय समेत अकबरनगर सूबा अप्पहु महर धरि ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

सुनत साह अवरंग इम, प्रिय सुत आजम बैन ॥

अकबरपुर दिल्लिय अरपि, सूबा सुनसुब सैन ॥ २३ ॥

॥ षट्पात् ॥

बरस. यावनी. दारा दाराशाह नामक. जिह्वा ज्येष्ठ. (पड़ो). बसु अष्ट. अरु वेद च्यार ४. ऐसे ४८ अठतालीस तिनके. मिन प्रमानवारे. गुन तीन ३. खट ६. हय ७ सप्त. ससि १ एक. ऐसे सत्रह सै अस्त १७६३ के साल वर्ष. यावनी. तामै. रहस्य एकांत मंत्र. जंपत पढत. निमाज यावनी धर्मपुस्तक. अलग भिन्न ॥ २० ॥ दोहा ॥ भुगिइति ॥ भुगि भोगिकै. जोय देखि. दिल मन. यावनी. ख परमेश्वर. यावनी. मैं तामै ॥ २१ ॥ षट्पात् ॥ सुनिइति ॥ नंधान मुक्त करिथो. तासौं. दुरासय दुर्गम है आशय हृदय विचार जाको ये मो. नय न्याय. अलीक मिथ्या. अप्पहु देहु. महर कृपा. यावनी ॥ २२ ॥ दोहा ॥ सुनत इति ॥ अरपि दये. सैन सेना ॥ २३ ॥ षट्पात् ॥ कियइति ॥ संगर युद्ध

क्रिय आजम यह मंत्र साह मरिहै अब जीरन ॥

मैं दिल्लियपुर जाय बैठि गहिय प्रपंचपन ॥

साहबहादुर सुत अजीम संजुत हनि संगर ॥

कामबखस पुनि अनुज मारि इकछत्र तपो धर ॥

यह सोचि सीख दिल्लिय लई आजम उचित अनीक सजि

चाहि चलिय चाहि गहिय गरज तब अवरंगाबाद तजि २४

साहबहादुर सुत अजीम अभिधान नेक नर ॥

पूरव पुर पटना सु रहत हुकम अवरंग बर ॥

कछुक काज तिन दिनन साह बुल्लयो अजीम वह ॥

बंछि पितामह पत्र चलयो दक्खिन दरकुंचह ॥

खटमिजल रक्खि अकबर नगर मैंनपुरी सु अजीम रहि ॥

उत समय पाय आजम चलयो दिल्लिय आयस साह लहि २५

प्रथम साहकै पुत्र भयो सुरतान मुहुम्मद ॥

कारागृह संकटिय मरयो दुखपाय मितंबद ॥

दूजो आलमसाह २ सोहु कारागृह डारयो ॥

जब आजम जच्छयो सु तबहि द्रुत साह निकाश्चो ॥

आजम ३ यहै सु तीजो तनय ताहि साह हित करि चहै ॥

सुत कामबखस ४ चोथो सु पै साह हुकम अति निब्वहै २६

तुरकनकै नहि बरन अवाधि चंडाल इक लव ॥

तामैं. अनुज छोटी भाई ताको. दिल्लिय दिल्लोकी. अनीक सेना. गरज सुख इच्छा. देशीप्राकृत ॥ २४ ॥ साहबहादुरइति॥ अजीमअभिधान अजीम नामक. नेक वामिष्ट. यावनी. पूरवपुरपटना पूरव दिशाको सूबा पटना. बापुर को नाम. तहां. सु सो(अजीम). हुकम आज्ञा. यावनी. बुल्लयो बुल्लायो. दरकुंच नित्यही कुंच करिकै. हकार यहां तृतीयाके पदवचनमैं है. अकबरनगर आगरा. मैंनपुरी चहुवाननको नगर विशेष॥ २५ ॥ प्रथमेति ॥ साहकै अवरंगजेबकै. संकटिय संकटवान होचकै. मितंबद थोरो बोलियेवारो. कारागृह बंदीगाने. जच्छयो मांग्यो. सु सो (आलमसाह). तनय पुत्र ॥ २६ ॥ तुरकनकैइति ॥ अरन ब्रह्म चत्रियादि अवाधि चंडाल पर्यंत. लव अंश. गणिका वेश्या. ताके. पिचंड उदर

काम बखस यह कुमर भयो गाणिका पिचंड भव ॥
 याहि साह करि रीक धरा दक्खिन सूबा धुर ॥
 भागनगर अप्यो रु बहुरि दिन्नो बीजापुर ॥
 पंचमो पुत्र अकबर प्रकटि अति जुब्बन उद्धत बहयो ॥
 परघरन तक्कि मंडत अनय कुप्पि साह बध्यहि कहयो २७
 ॥ दोहा ॥

अकबर, मारक जनक सुनि, भजि मारवधर आय ॥
 रठोरन ठाकि रक्खयउ, पुनि भय गयउ पलाय ॥२८॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीप
 तिबुधसिंहचरित्रे आलमसाहप्रकोष्ठदुर्वचनभाषियवनबुधसिंह
 नन १ आमेराधीशविष्णुसिंहकनिष्ठसूनुविजयसिंहहिण्डोनपुर
 प्रापण २ आमेराधीशविष्णुसिंहस्वर्गवासपट्टपुत्रजयसिंहपट्टासा
 दनसमसवाईपदाधिगम ३ पितृवधास्वीकारिकुमाराजमार्थय-
 वनेन्द्रौरंगजेवदिल्लंपकंबरपुराधिकारद्वयवितरण ४ औरंगजेवसूनु
 पंचकंकनिष्ठाकबरस्य तातविरोधितया पलायनवर्णनं सप्तमो
 मयूखः ॥७॥ आदितः पञ्चचत्वारिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २४५ ॥

मैं “ पिचंडो जठरोदरे ” इतिहैमः ॥ भव भयो, ऐसो याही कामबखसकौ।
 साह अवरंगजेबनै, धुर मुख्य, अप्यो दयो, उद्धत निसंक, बध्य भारिवेयोगय,
 ॥ दोहा ॥ अकबरइति ॥ मारवधर मारवारी धरामें, ठकि छिपाय ॥२८॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति
 बुधसिंह के चरित्र में आलमशाह की ड्योढ़ी पर बुधसिंह का दुर्वचन कहने-
 वाले एक यवन को मारणा १ आमैर के राजा विष्णुसिंह के छोटे पुत्र विज-
 यसिंह को हिंडोनपुर मिलना २ आमैर के राजा विष्णुसिंह का देहांत होने
 पर पाटवी पुत्र जयसिंह का गद्दी बैठकर सवाई पद पाना ३ पिता को मारने
 का अस्वीकार करनेवाले शाहजादे आजम को बादशाह औरंगजेब का दि-
 ल्ली और आगरे के दो खूबों का देना ४ औरंगजेब के पांच पुत्रों में लघु पुत्र
 अकबर का पिता के विरुद्ध होकर भाग जाने के वर्णन का सातवां मयूख स
 जात हुआ ॥ ७ ॥ और आदि से दो सौ पैंतालीस मयूख हुए ॥ २४५ ॥

औरंगजेब कोत्र अकबरकामारवाड़ में जाना] सप्तमराशि--अष्टमसूत्र (२९४१)

(गीर्वाणभाषा)

अनुष्टुप्सुगमविपुला ॥

सिंहायलोकिनी गाथा प्रबन्धपुप्रवध्यते ॥

योजनीयोऽन्वयो वाक्यमहावाक्योऽवसानयोः ॥ १ ॥

द्रुतविलम्बितम् ॥

अथ तथा कथयामि न कोप्यऽभूज्जगति शाहनिदेशपराङ्मुख ॥

स्वशरणां सविचार्य यथा मनागकवरो गतवानपि धन्वनि ॥२॥

प्रायःप्राकृती मिश्रितभाषा ॥ पञ्कटिका

अगौ नरेस जसवंत नाम, उजैन जंग तजि भजिग धाम ॥

हुव जनक रुद्धि अवरंग साह, तव जाय मंद मंगयो गुनाह ॥ ३ ॥

गीर्वाणभाषा ॥ अनुष्टुप्सुगमविपुला ॥ सिंहायलोकिनी गाथा ॥ सिंहायलोकिनी

भूत्या पुनरवधिपृष्ठतान्त वक्तुं प्रवर्तनी गाथा वाग्विशेषः वाक्यं एकतिङ्

महावाक्यं वाक्य सप्तमः तयोरेवसानपारतयो रित्यत्रे तरेतरयोगो द्वन्द्वः ।

द्वन्द्वान्तः प्रथमाप्यं पदं प्रत्येकं संबध्यते इति संबन्धः ॥ १ ॥ द्रुतविलम्बि

तम् ॥ अथ इति ॥ अथ शब्दो वक्ष्यमाणवृत्तान्तप्रारंभ चोत्तरः तथा तेन प्रका

रेण कथयामि पश्यामि तथा कथं यथा शाहनिदेशपराङ्मुखः शाह औरं

गजेव स्वदाज्ञाविमुक्तः कोपि नाश्रूत् कश्चिदपि नासीत् तथा च मनाक ई

पत् स्वशरणां विचार्य ज्ञात्वा स शाहस्य पंचमपुत्रोऽकबरनामापि धन्वनि

मन्ददेशे "ममानौ सन्धन्याना" विलम्बितः गतवान् जगाम धन्वनीत्यधिकरण

विचाराणां सप्तमः कथिधातोरेतद्व्यक्तार्थकर्मकत्वं ज्ञेयम् ॥ २ ॥ पञ्कटिका ॥

खजुवापुर संगर साह कीन, सूजा भजाय निज भ्रात दीन ॥
 तत्थहु कबंध तजि स्वामि प्रीति, अवरंग हमम लुट्टिय अनोति ४
 धन कोम जनानन लूट ठानि, मरुधर भाजि आयउ ताम मानि
 तब साह मरुस्थल लियउतारि, जसवंत निमज्जिग विपति बारि
 बहु अब्द मरुस्थल बिनु बिहाय, पुनि दुखित आय लागि साहपाय
 सकुटुंब रचिय दिल्ली निवास, बहुकाल खंचि सेवा बिसास ॥ ६ ॥
 दै साह बहुरि धर धन्य राज, काबलधर पठयो तान कांज ॥
 नाहि सोहु सधी सूवा सन्धारि, बहुकाल रहयो उद्यम विसारि ॥ ७ ॥
 दिस बिदिस परन दब्बी जमीन, सुनि अलस कोप पुनि साह कीन
 रनवास हुतो दिल्ली सु साह, अटकयो जरि फोजन इहि गुनाह ॥ ८ ॥
 इक रानी धारत गर्भ आस, हुव अजितसिंह जनि जठर जास ॥
 दल साह हवेली फिगि दुरंत, अंतदपुर घेरयो न दुख अंत ॥ ९ ॥
 रानिन पँह पठयो हुकम साह, सुत जन्म सुन्यो नृपकै उछाह ॥
 सो देहु सौंपे जां मुलक चाह, लैहैं बिसासि अब वाहिं साह १०
 जसवंत जोधपुर जोग्य नाहि, सुत देहु भयो जो अत्र आहि ॥
 रनवास सबहि सुनि यह निदेश, उमराव बुलाये निज असेस ११
 आहूत सबहि रहोर आय, करि मंत्र तत्व रानिन कहाय ॥

वनी ॥ ३ ॥ खजुवापुर इति ॥ खजुवा नामक नगर को युद्ध. साह आरंगजेबनैन.
 सूजा भुजाशाह नामक. निज अपनों. तत्थ तहां. कबंध रहोर राजा जसवंत
 सिंहनैन. स्वामि जो आरंगजेब तासों. हमम वैभव. देशीप्राकृत ॥ ४ ॥ धनको
 सइति ॥ कोन भंडार. जनानन जनानेनकां. निमऽजग बूझो. बारि जल तामें.
 बहुअब्दइति ॥ अब्द वर्ष. बिहाय बिताय. खंचि काहि ॥ ६ ॥ दैसाहइति ॥ ध
 न्य अलस. आन राजा. संधी वनी ॥ ७ ॥ दिमदिसइति ॥ परन शत्रुन. अल-
 स आलाय. या जसवंतसिंहभों यह शेष. हुतो हो. सु सो. जरिफोजन जरि-
 के यांगसों फोजन के जंजीर रूप; वा कटक रूप जानिये ॥ ८ ॥ इकरानीइति
 जनि जन्म "जनिरूपत्तिकरुभवः" इत्यमरः ॥ जठर उदर जासों. जास वाके
 रानिनइति ॥ सो पुत्र. चाह चाहहैं तो ॥ १० ॥ जसवंतइति ॥ अत्र यहां. आ
 हि हैं. निदेश हुकम. असेस सब ॥ ११ ॥ आहूतइति ॥ आहूत बुलाये. तत्व

पठये नृप काबल दै स्वधाम, सोपै न सुधारत साह काम ॥१२॥
 सुत जो भयो सु नहि गुप्त अत्थ, अब ताहि साह मंगत समत्थ ॥
 भाखत इहिँ दैहौ धन्वराज, अरु कोप लखत दरसत अकाज ॥१३॥
 तत उचित नाहि तुरकन बिसास, छल होन लगे बहु आसपास ॥
 अब काढि कुमर जिहिँ तिहिँ उपाय, कछु वृत्ति जिवावहु धन्वजाय
 प्रछन्न जन्यो अप्पन अपत्य, तसमान कहहु भो यह असत्य ॥
 तँहँ भट्टिय भट गोइंददास, कापालिक बनि लिय कुमर पास ॥१५॥
 भट्टिय रघुनाथ सु पति लवेर, सजि दुर्गदास रठोर फर ॥
 ए बान सहाय दुवभट अमान, कुमरगह निकसि गय इष्ट थान ॥१६॥
 किय जंग अवर सुभटन अछेह, लरि हड्डि रानिय तजिय देह ॥
 इम भावसिंह भगिनी सुभाय, निरबाहि पतिव्रत स्वर्ग पाय ॥१७॥
 जसवंत कुमर कसि कंठदेस, लहि काल कढे वे बदलि बंस ॥
 तिन छत्र साहसौं धन्व जाय, इक बिप्रगेह रक्ख्यो छिपाय ॥१८॥
 मरुधर रहयो न रठोर राज, द्विजगेह कुमर बसि दुख दराज ॥
 दिल्लीसौं साहिन हुकम पाय, मरुधर रनवासहु अवर आय ॥१९॥
 नहिँ मिलत मात सुत बिपाति बास, तप उग्र सहत अवरंग त्रास ॥
 इहिँ अंतर नृप जसवंत अंत, बसि काल भयो काबल बसंत ॥२०॥
 जसवंत सुवन तबहु बुलाय, इन कुपित जान रक्ख्यो दुगाय ॥
 नृप अजितसिंह जसवंत जाम, प्रछन्न रहे इम बिप्र धाम ॥२१॥
 गजसिंह जनन यँहँ नास होत, भट दुर्गदास रक्ख्यो उदोत्त ॥

सिद्धांत. स्वधाम जोधपुर ॥ १२ ॥ सुतजोइति ॥ अत्थ यहाँ. लग्न देखतैं ॥ १३ ॥
 ततउचितेति ॥ तत ताकरनसों. कछुवृत्ति कोऊ जीविकासों. ध्वन्व मरुदेश
 ॥ १४ ॥ प्रछन्नइति ॥ अपत्य पुत्र. भट्टिय भाटी जातिको जत्रिय. कापालिक
 व्यालगाहक ॥ १५ ॥ भट्टियइति ॥ लवेर लवरा नामक आमका. इष्ट प्रिय
 धान स्थान ॥ १६ ॥ कियइति ॥ स्पष्ट ॥ १७ ॥ जसवंतइति ॥ वे दोऊ भाटी और
 रठोर तीनों ही ॥ १८ ॥ मरुधरइति ॥ दराज दडा. माहम बादशाहको. अवर
 हाडी रानी चिना ॥ १९ ॥ नहीनि ॥ बसिकाल ॥ कालवास ॥ २० ॥ जसवंतउ-
 त्ति ॥ जाम जन्मवारो ॥ २१ ॥ गजसिंहइति ॥ जनन वंश. सुन ३ तीन. सत्र-

नव गुन रु सप्त इक १७३९ अर्ब्द मान, जसवंत भूप किय देह हान
 तिन दिनन यहै अकबर कुमार, मरुदेस गयो भूप साह भार ॥
 रटोर नहिंन ऐसे समतथ, अवरंग खूनि रक्खैं सु अत्थ ॥ २३ ॥
 तब तिनहु दयो अकबर निकारि, ईगन गयो वह बल विचारि ॥
 अकबर सु मरयोपुर इस्पहान, सुतज्येष्ठ मरयो प्रथमहि सयान ॥
 अवरंग पुत्र अय जियत तीन३, घर कावल पट्टपके अधीन ॥
 हुव कामवखस दक्खिन नरस, पुर दिल्ली आजम लिन्न पेस ॥

॥ दोहा ॥

साहबहादुरके प्रथम, सोजदीन हुव पुत ॥

अनय ऐसे आलस निलय, जवनी जठर प्रसुत ॥ २६ ॥

रूप नगर रटोर नृप, तनया ताके गेह ॥

साह बहादुरको प्रथम, व्याही अवनि सनेह ॥ २७ ॥

ताके उदर अजीम भो, दूजो सुवन सिपाह ॥

पूरबधर पुर पट्टनां सूबा जिहिं दिय साह ॥ २८ ॥

सुत रफील आदिक कदर, यह तृतीय अभिधान ॥

अखतर आदि बुलंद पुनि, यहै चतुर्थ अमान ॥ २९ ॥

आलमके च्यागि४ सुन, तिनमें चतुर अजीम ॥

सोजदीन सबसौं बडो, दिल्ली तरुका दीम ॥ ३० ॥

तीन पुत्र निज जनक तट, पुर पट्टनां सु अजीम ॥

सो आवत हुत साह डिग, कछु विभेम लय नीम ॥ ३१ ॥

इ मे गुननाला ॥ १७३९ के. ज्ञान प्रमान के. अर्ब्द वर्ष में. हान त्याग ॥ २२ ॥
 निर्दिष्टेति ॥ रूम खूनी. यादगी. अत्य यदां. (या खमकमें) ॥ २३ ॥ तवति
 नर्तति ॥ नगर रटोर. जेष्ठ बडो. तुग्तान मुहम्मद नामक ॥ २४ ॥ २५ ॥ दो
 हा ॥ साहेति ॥ अजीम अजीमजाह नामक. जाह वितामह औरंगजेबनें
 ॥ २८ ॥ सुतइति ॥ रफीलके आदि कदर यह अर्थ. अखतरके आदि बुलंद
 अखतरखिलंद नामक ॥ २९ ॥ आलमके इति ॥ दीम लोके उदेई. (दीयलिं)
 ॥ ३० ॥ तीनपुत्रइति ॥ निज अपनों. जनक पिता आलमशाह ताके. तट काब

आजमकै इक सुत भयो, बखस अंत दीदार ॥

जो हाजरि निज जनक जुत, साह निकट गिनि सार ॥३१॥

आजम पुब्ब लिखी सु करि, दिखिय लोभ चलाय ॥

पुर अवरंगावादै, पंचकोसं परि आय ॥ ३३ ॥

इहिं अंतरं अब देखिये, करतं मदी नवरंग ॥

सक गुन खट ६३ फागुन असित, तजिग देह अवरंग ॥३४॥

॥ पट्टपात ॥

सत्रुसल्ल नृप समय साह अवरंग उपजिय ॥

हनि अग्रज पितु तरजि छिन्निलिन्नी निज गदिय ॥

मरहट्टन सुनि फैल गयो दक्खिनधर दब्बन ॥

बहुत बरस रहि तत्थ रच्यो निज नामक पत्तन ॥

गुन खट तुरंग ससि १७६३ साल बनि बिक्रम सक फगुन असित ॥

अवरंग मरिग दक्खिन अवनि अब मरहट्टन दिन उदित ॥३५॥

इति श्री वंशभास्कर महाचन्द्रके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीप-
तिबुधसिंहचरित्रे तातलासमरुगतौरंगजेवपञ्चमपुत्राकबरप्रसंगयो-
धपुरभूपयशवन्तसिंहपूर्वोदन्तस्मारणा १, बहादुरशाहपुत्रचतुष्कग-
णानान्तगौरंगजेवनिधनवर्णनपट्टमो मयूखः ॥ ८ ॥

लके लुवा. नीम मूल ताका ॥ ३१ ॥ आजमकैइति ॥ बखसअंतदीदार दीदार
बखस नामक ॥ ३२ ॥ आजमति ॥ पुब्ब पहिले ॥ ३३ ॥ इहिंइति ॥ गुन ३ ती-
न. खट ६ छै. ताके ६३ जेसठि भये तहां सत्रह अनुवृत्तिसौ सत्रह से जेसठि
१७६३ के साल यह अर्थ करिये. असित कृष्णपक्ष ॥ ३४ ॥ पट्टपात ॥ सत्रुस-
ल्लति ॥ अग्रज बडे भाई. पितु पिता ताकां. तरजि तरजनां करिकै. लोके दर्प-
दायकै. पत्तन नगर. गुन ३ तीन. खट ६ छै. तुरंग ७ सप्त. ससि १ एक. यातै
वही सत्रहसे जेसठि १७६३ को साल आयो. तामै ॥ ३५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचन्द्र के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के राजा
बुधसिंह के चरित्र में औरंगजेब के पांचवें पुत्र अकबर का पिता के आस से
मारवाड़ में जाने के प्रसंग से जोधपुर के राजा जशवंतसिंह की पूर्वकथा का
स्मरण कराना? बहादुरशाह के चार पुत्रों की गणना के अनंतर औरंगजेब के
मरने के वर्णन का आठवां ८ मयूख समाप्त हुआ और आदिसे दो सौ छि-

आदितः षट्चत्वारिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २४६ ॥

॥ दोहा ॥

साह मरत आजम सज्यो, यह सुनि बत्त अजीम ॥

मैनपुरीसौ आगरा, आयो व्है भट भीम ॥ १ ॥

आय कटकजुत आगरा, किल्ला सजिग. सम्हारि ॥

जनकहुसौ पहिलै रह्यो, आजमपै हक धारि ॥ २ ॥

उत आजम बुल्लयो उमंगि, साह मरन सुनि बत्त ॥

दिल्लीपर दावा रचन, मन्नि फिरयो मयमत्त ॥ ३ ॥

॥ षट्पात् ॥

साह मरन सुनि सजव फिर्यो आजम सुत संजुत ॥

पुर अवरंगाबाद जाय किन्नौ प्रपंच उत ॥

सब धर हसम सम्हारि खरच धन कोसं खुलाये ॥

नृप नवाव रचि आम विहित इतमाम बुलाये ॥

कहि इम पठाय सहस्रन पदग रेवा तट रुक्कहु सकल ॥

पहुँचै न बहादुरसाह प्रति साह मरन अब मंत बल ॥ ४ ॥

प्रतना इम पिछी रु सवहि रुक्के रेवा मग ॥

नृप नवाव बिसवासि कह्यो मंडहु प्रपंच पग ॥

अब दिल्लिय अप्पनिय इनहु रन साहबहादुर ॥

पाय पटा द्विगुनत रु अस मंडहु रस आतुर ॥

सुनि यहहि मिच्छ हिंदुन सबन धरिग लुब्धि गणिका धरम ॥

यालीस २४६ मयूख दुए ॥

॥ १ ॥ २ ॥ उतइति ॥ मय मद. ॥ ३ ॥ षट्पात् ॥ साहेति ॥ सुत दीदारबखस. उ
वा तरफ वा धितकमै. दसम वैमच. देगीप्राकृत. आम जडी सभा. विहित य
ग्य. इतमाम ॥ पदग पैदल सिपाह. रेवा नर्मदा. साहमरन साह के म
ने की ज्वरि ॥ ४ ॥ प्रतनाइति ॥ प्रतना सेना. "प्रतनानीकिनी चसु?" इत्य
रः ॥ पिछी बेजी. मग मार्ग. अस आराम. लुब्धि लोभ पायकै. गणिका
इया ताकौ. भुग्गवै भांगै. जाहि वा चेरयाकौ. स्वपंच चांडाल. सधन धन :

भुगवैं जाहि स्वपचहु सधन कुल न जास सुकृत न सरम ॥५॥

॥ दोहा ॥

कोटापति नृप रामसौं, कहि आजम कथ सुद्ध ॥

पुर पट्टन तुमसौं लयो, आलमके बल बुद्ध ॥ ६ ॥

अब तुमकों बुंदिय दई, रचहु जंग नृपराम ॥

मुनि यह हुकम किसोरसुत, किय करजोरि सलाम ॥७॥

बिनु बुंदिय अरु जोधपुर, लिय सब सेन सम्हारि ॥

इतर भूप हाजरि अखिल, इक उदैपुर टारि ॥ ८ ॥

॥ पद्धतिका ॥

आमैर भूप जयसिंह पेस, चहुवान राम कोटा नरेस ॥

दतिया पति दलपात नाम सजिज, नरउर नरेस गजसिंह गज्जि ॥९॥

सोपुर महीप गोडावतंस, सीसोद रामपुर चन्द्र वंस ॥

चहुवान सिरोही पति सु चंड, औंढिच्छ आदि बुंदेल खंड ॥१०॥

हाजरि हुव बीकानेर राय, मालव नरेस रठोर आय ॥

इम भट्टिय जैसलमेर ईस, इत ईडर छप्पन भुव अधीस ॥ ११ ॥

खिच्चिय भदोर जद्व बघेल, इत्यादि बहुत सजि मंत्र मेल ॥

निज भट समस्त हाजरि नवाब, हुव विविध फोज गंगाना हिसाब १२

सजि कटक लख सप्तक ७००००० सम्हारि, हुव लख २०००००

बाजि पक्षर प्रसारि ॥

सजिसहँसपंच ५००० मत्ते मतंग, पादातिलख पंचक ५००००० प्रसंग

हित, जास जा चांडाल के. सरम लज्जा ॥ ५ ॥ दोहा ॥ कोटेति ॥ मुद्ध सृद्ध.

पट्टनि वा पुर को नाम जो बुधसिंहनै आलय दयो हो ॥ ६ ॥ ७ ॥ बिनु बुंदि-

य इति ॥ इहां बुंदी जोधपुर को लच्छन लच्छना सैं करिकैं दोऊनके राजा.

ऐसैं सर्वत्र जानिये ॥ ८ ॥ ९ ॥ सोपुरइति ॥ चंद्रवंश चंद्रसिंह सीसोदिये के

वंशके चंद्रावत सूर्यवंशी. औंढिच्छ नाम नगर तदादिक दतियासों इतर औ-

रह बुंदेल जानिये ॥ १० ॥ हाजरि इति ॥ राय राज ॥ ११ ॥ खिच्चियइति ॥

छप्पन देश ईडर नगर. गंगना गिनती ॥ १२ ॥ सजिइति ॥ पादाति पयादे

दुवसहस्र २००० तोप जंगी दुरूह, सहस्रन निसान फहरत समूह॥
फाटि आसिन बाढ भरि सान फूल, दल रंगरंग बानां दुकूल॥१४॥

॥ सुक्तादाय ॥

सजी अब आजम संगर फोज, पटा गज बाजि करी हित मोज॥
खरे खुरसानन चुवत खग, चिरैफटि धारन बाढ उदग्ग ॥१५॥
ग्रहग्रह तंतनि सिंधुव सोर, घुरे भजि भोगिन भद्व घोर ॥
दये बहु आयुध आजम बंदि, समस्तन बंदि लये सिर सटि ॥१६॥
कसै बहु बाहुल कंकट टोप, कसीसन कंद कमानन रोप ॥
उदायुध केक घसै सिर गैन, नचै रनपै कहूँ आरुन नैन ॥१७॥
सनंकत सान अहो निस लोह, परै भरि फूल हुतासन छोह ॥
तपै असिधावक पावक ताव, मनौ तरु तिंदु चिनांगिय दाव ॥१८॥
करै बहु घोर विधानन दान, मनौ रन इष्ट वधावन मान ॥
भई रजसौं तमसौं मिलि संधि, रह्यो कहूँ सत्व विसैसन बांधि ॥१९॥
करै रन आगम वीर उछाह, मनौ नर नायकवेस विबाह ॥
रचै प्रति बासर आजम आम, रहै इक आहव आहव नाम ॥२०॥
बन्यौ दल द्वादसकोस १२विथार, भसी पहुसी नर बाजिन भार ॥
धरै उर अच्छरि संग उमंग, करै भट के भट कुंकुम रंग ॥ २१ ॥
बन्यौ नर आकर दक्खिन भाग, मनौ सुर दच्छ प्रजापति जाग ॥
शिपाही ॥ १३ ॥ दुवइति ॥ ऊह तक्त नामे न आवै निसान पताका. असि
खड्ग तिनको. सान खुरसान तिनतै. फूल लोके चिमगी. दुकूल वल्ल ॥ १४ ॥
सुक्तादाम ॥ सजीइति ॥ पटा आयनके. मोज रीझ ॥ १५ ॥ ग्रहग्रहइति ॥ घे
बाजे को अनुकरण. सिंधुव रागविशेष. भद्वके मेघकी घोर. बंदी बंदन करि
॥ १६ ॥ कसेति ॥ बाहुल दस्ताना. कंकट वकतर. रोप बान. "पत्री रोप इपुईयोः"
इत्यमरः ॥ ऊंचे क्रिये हैं आयुध जिननै. ऐसे सुभट ॥ १७ ॥ सनंकेति ॥ असिधा-
वक सिकलीगर "अस्यासक्तोऽसिधावकः" इति हैमः ॥ तिंदु वृक्षविशेष. ताकी
दाव वनमें अग्नि लगे तामें "दवा दावो वन्यवन्हि" रिति हैमः ॥ १८ ॥ करैइति ॥
मान सत्कार. बासर दिन. आहव युद्ध. रजरजोशुन. तम तमोशुन. तिनसौं दोउ
यह अर्थ. कहूँ कोऊक ठोर. सत्व सत्व शुन रह्यो ॥ १९ ॥ करैइति ॥ नायकवेस जो
वन अवस्था ॥ २० ॥ २१ ॥ बन्योइति ॥ आकर खानि. जाग याग (यज्ञ) "यज्ञे"

गये रुकि मेकलजा नदि मग्ग, चलयो अब आजम जंग उदग्ग २२
मही फटि नालन देत दरार, दबै भर भोगिय भोग हजार ॥

प्रकंपत चिक्कुरि दिग्गज अड्ड, मचक्कन घुम्मत कोल कमड्ड ॥ २३ ॥

मच्यो रव कल्प प्रमंजन मान, मनो पयसागर फेर मथान ॥

चली चलि संग चरक्खन तोप, लगै विरचै गढ पव्वय लोप ॥ २४ ॥

किती ठुक सिंह मुखी बिकराल, करी अहि नक्र मुखी अरिकाल
रजै लिपि नागज आनन रत्त, करै सिर छाँह पताकन छत्त ॥ २५ ॥

जुते वृष अँचत के करि हल्ल, बडे गज पिठि लगावत टल्ल ॥

गिलै अयपिंड घटा दुव घास, चरारत चक्र चरक्खन चास ॥ २६ ॥

रहै प्रतिइक बतीस ३२ जवान, परै लागि गोलेक कोस प्रमान ॥

ध्वरो सबो पागः" इत्यमरः ॥ मेकलजा नर्मदा. "मेकलकन्यके" त्यम-
रः ॥ २२ ॥ महीकटिइति ॥ भोगिय भोगी (सर्प). "उरगःपन्नगो भोगी" त्यम-
रः ॥ भोग फन. कोल पराड्ड ॥ २३ ॥ मच्योहनि ॥ रव शब्द. कल्प-प्रलयकाल

के. प्रमंजन पवन के. मान प्रमान. पय दुग्ध. चरक्ख शकटविशेष. देशी प्रा-
कृत ॥ २४ ॥ कितीइति ॥ ठुक वनकुत्ता "कोकस्तर्थाद्वायुको रुगः" इति हेमच-
रिः ॥ नक्र मुकर विशेष. रजै सोहै. लिपि चित्र रचना विशेष. नागज सिंदूर.

"सिंदूरं नागजं नागरत्तं" इति हेमः ॥ आनन मुख. रत्त लाल. छाँह छाया. छ-
त्त छत्र ॥ २५ ॥ जुतेइति ॥ जुते जुपेहये. वृष वृषभ. लोके बल. अँचत
खँचत. के केते ही. पिठ पृष्टि. टल्ल टल्ला. लोके धक्का. अयपिंड लोह के पिंड.

गोला यह अर्थ. धटी तोलविशेष. छै ६ गुंजाको एक १ मासक. अष्टादश १८
मासकको एक १ पईसा. चालीस पईसा को एक १ सेर. पंच ५ सेर की
१ एक धटी. तैसी दुव २ दोय धटीको. चरारत यह चक्रके शब्दको अनुकरण है.

चक्र लोके पहिया. चरक्ख तोप के आधार शकट विशेष. चास खबरि. चर-
क्खन के चक्र के शब्द ही साँ खबरि परै कि यह तोपन को ही शब्द है ऐसी
॥ २६ ॥ रहै इति ॥ प्रतिइक एक तोप प्रति. जवान चौवनवारे. ३२. यहां ज-

वान सामान्य अवस्था वाचक है परन्तु तोपन के योगसों पुरुष ही जानिये.
गोलेक गोला. लल्लखन चरक्खन के चक्र द्वारा ललकार करत. लार संग. ह-
ली चली. डाकिनि तोप. यहां साध्यवस्तानाओं आरोप विषय तोप तिनकी

निगरण करिकें आरोप्यमाण डाकिनि शब्द को प्रयोग कियो जातै डाकिनि
नके फड़े तोप जानिये. यहांहु तोप डाकिनि दोऊ शब्दनमें प्रथमा के जस

ललकृत आजमके दल लार, हली इम डाकिनि दोय हजार २०००
 चली गज पंचसहस्र ५००० न पति, भयंकर कज्जल पव्वयभंति
 लगेँ मग निहि करेणुन लोभ, डगेँ डग डाकन छकत छोभ ॥२८॥
 मरोरत साखिन जुत्थप मत्त, प्रीणात व्याल रिसावन रत्त ॥
 बडे वपु भद्र मृगादिक वंस, सज गुड साजन अंतक अंस ॥२९॥
 वहेँ फटकारत सुंड़िन व्योम, प्रभा परि पव्वक जुव्वन जोम ॥
 अहारत इच्छित पे न अघात, जनैँ जलपीवनको घटजात ॥३०॥
 उडैँ जिम कंदुक अंदुक पाय, जरे त्रिपदीन खुले सम जाय ॥
 घुमावत जे सिर बीतन घाव, पयप्रति मंडत अंगद पाव ॥३१॥
 कसे मखतूल कपालक कंध, वरत्तन नद्ध हवहन बंध ॥
 जरी कुथ जेवर जोति चमक्क, उयो असिताचलपैँ मनु अक्क ३२
 करैँ पथ पंकिल दान प्रवाह, लगेँ तन तोमर चुक्कत राह ॥

प्रत्यय का लोप जानिये ॥ २७ ॥ चलीइति ॥ पति पंक्ति. भंति तुल्य.
 मग मार्ग. निहि कष्टों. करेण हस्तिनी. तिनके. डगेँ चलै. डग एक ।
 पैँड. डाकन डाक. वाको कुड करिकैँ शस्त्रको अल्प प्रहार करनेँ तिनकरि.
 छकतछाँभ छोभ लोके छोभ. तामैँ. छकत तृप्त होत ॥२८॥ मरोरतंति ॥ साखी
 वृत्त. तिनको. जुत्थप जुत्थ [यूथ] घने हस्तीनके समूह. निनके पति. परिणत
 निरछी घात करियेपारे हस्ती. व्याल दुष्टहस्ती. "तिर्यग्घाती परिणतो गजो
 व्यालो दुष्टगजः" इति हैमः ॥ गुड हस्तीकी सिलह. निन करि "गुडकं हस्तिस्त्रा-
 ह" मिति मेदिनी ॥ अंतक जमराज. ताके. अंश श्यामतामैँ तथा क्रोध मैँ ॥२९॥
 यहैँइति ॥ यहैँ चलै. सुंड़िन सुंडादंडनतैँ. पव्वक हस्तीके जुव्वन अवस्थामैँ बिंदु
 निकसैँ ते "विन्दुजालं पुनः पद्म" मिति हैमः ॥ अहारत अहार करत. इच्छित
 चाखो. अघात तृप्त होत. जनैँ उत्पन्न किये. विघातानैँ यह शेष. घटजात अग-
 स्तप ॥ ३० ॥ उडैँइति ॥ अंदुक जंजीर "शृङ्खला निगडोऽन्दुकः" इति हैमचन्द्रः ॥
 त्रिपदी डगवेरी. तिन करि "त्रिपदी गात्रयोर्वन्धः" इति हैमः ॥ बीत महावत-
 नको पगनको हूलनों. तिनके ॥३१॥ कसेति ॥ मखतूल रेसम. कडाप कला-
 वे. वरत्तन रस्से. तिन करि. "नधी बंधी वरत्रा स्या" इति हैमः ॥ कुथ झूल.
 उयो उदय भयो. अक्क अर्क ॥ ३२ ॥ करैँइति ॥ पंकिल पंकवारे. दान मद. रा-
 ह चालिषेकी रीति. सिरी मस्तक को भूषण. देशीप्राकृत. हाटक सुवर्ण. भर्म

सिरी मनि हाटक मंडित सीस, मनौ ग्रह मंडल भर्म गिरीस ३३
करै नभचारन चंचल चोट, उडै फटि फेट कपाट रु कोट ॥
घटा घन भद्रवके अनुकार, हले गिरि जंगम पंचहजार ५००० ॥ ३४ ॥
जुरे हय भंपत जामल लख २०००००, तरारन निंदत मारुत तक्ख
जरे बर जेवर पक्खर तीन, तरोगति नीर कि मंडत मीन ॥ ३५ ॥
धपै धरि धोरित आदिक धाव, पुरै छिति पातुरिकी गति पाव ॥
प्रबज्जत लासन नासन पौन, बटा नटके जिम गुफत गोन ॥ ३६ ॥
बनावत नालन भुम्मि विभाग, मनोगति मप्पन मप्पत माग ॥
उडै गजगाह मलंगत अच्छ, प्ररोहिग जानि अपाकृत पच्छ ॥ ३७ ॥
चलै निज छाँह जभकृत चित्त, घलै वर घुस्मर मान समित्त ॥
पटीपर पूर लगावत लीह, मनौ मत गोतम पाठक जीह ॥ ३८ ॥
थरकृत घुस्मत नीर कि थाल, फलंगत चित्रकतै बढि फाल ॥
लसै गल यालन माल उदोत, सुचंदन चाप कि पन्नग पोत ३९
उठै झुकि नद्ध दुतंगन अंग, कमानन द्वारत कंठ कुरंग ॥
कडै छपि हत्थिनमै धपि धाव, बनै जनु वारिद बिज्जु सलाव ४०

सुपर्ण ताँके. गिरीस गिरिराज (सुमेरु) ताँपै ॥ ३३ ॥ करैइति ॥ नभचार प-
क्षी. तिनपै. घटा इस्तिनके समूह. जंगम चलते ॥ ३४ ॥ जुरेइति ॥ जामल दो-
य २. तरारे उडान. तिन करि. मारुत पवन. तक्ख ताक्ष्य (गरुड) ताको. तरोग-
ति वेगगति. कि मनौ ॥ ३५ ॥ धपै इति ॥ धोरित गति विशेष. धाव गति.
लास लास्य (नृत्य) तिनमै. नास नासिका. तिन करि. गोन गमन ॥ ३६ ॥
बनावतइति ॥ नाल खुरताल. तिन करि. मप्पन मापिधको. माग मार्ग. प्ररोहिग
अंकुरित मये. अपाकृत काटे ॥ ३७ ॥ चलैइति ॥ जभकृत यमकृत. घुस्मर मंडल नृ-
त्य. मान बल माफिक विशेष दोरनों. लीह लीक. मत गोतमको न्यायशास्त्र ता-
के पाठक की. जीह जिह्वा ॥ ३८ ॥ थरकृतइति ॥ याल चित्र विचित्रित गुंफि
त शिखाके केस तिनकी. सुचंदन श्रेष्ठ चंदन के. चाप धनुष ताँपै. कि मनौ. पोत बा-
लक. अच्छे चंदन के चाप के रूप घोरन के स्कंध कहै. सुचंदनसों पन्नगनकी प्री-
ति विशेष है. अरु चाप नहीं कहते तो स्कंधन की आकृति नहीं आवती. सु-
चंदनसों हेतु अलंकार ही जानिये ॥ ३९ ॥ उठै इति ॥ झुकि नमिनामिकै. नद्ध

बहैं छिति छेकत बत्थन घल्लि, कसीसत कंधर अँड उभल्लि ॥
 कुसानुग जे पटकैं जित जाय, रहैं लाखि लोभ पतंगहु पाय ४१
 घमंकिप पकसर घुघर नट्ट, छमंकिप नेउर भेककि भट्ट ॥
 दिसा बिदिसा बढि हिकूत हेस, सजैं जिन आसन आस सुरेस ४२
 दुरैं पलटैं कुलटा जिस दिडि, चलैं चरज्यौं परि पत्रिय पिडि ॥
 खलीनन लेहनमै अनुगत, सदा जपसूचक जे जव जत ॥ ४३ ॥
 बनें चकरी संकरी बिसिखान, सहागति द्रौपदिके पट मान ॥
 बडे तरु साखन छै कडिजात, बराछिनपैं उडि लांघत बात ॥ ४४ ॥
 भिरैं खुर भोगिय भू भटभेर, फिरैं गज फेटनतैं चकफेर ॥
 सजे इस आजमके दलसंग, तगोमय जामल लक्ष्म २०००००००००
 क्रमेलक जुवन वेग बिसस, बनें जिनतैं घर देस बिदेस ॥
 बजावत गल्लन हल्लन बितंड, चलैं धरि पव्वय पिडि प्रचंड ॥ ४६ ॥
 भरे सल जे दल डेरन भार, हल जुरि घुम्मत साडि हजार ६०००००
 सजे वर बेसर बीस सहस्र २०००००,
 तथा सकटावलि तीस सहस्र ३००००० ॥ ४७ ॥
 जनाननके जन बाहन जुत्त,
 सजे सिबिका रथ इक अयुत्त १००००० ॥

वंशे ॥ ४० ॥ बहैइति ॥ कंधर कांधे. अँड मगखरी. तामैं. कुसानुग कुसा बाग
 ताके. अनुग कछा करिवेवारे. पतंग सूर्य ॥ ४१ ॥ घमंकिपइति ॥ भेकं महुक लो-
 के सँडेक. भट्ट भाद्रपद. तामैं. हेस हींस. ताको. आस इच्छा ॥ ४२ ॥ दुरैंइति ॥
 चर दास. खलीन लक्ष्म तिनको. लेहन चाटनो तामैं. सूचक दिखायबेवारे. ज-
 व वेग. तामैं. जत वंशे ॥ ४३ ॥ बनेंइति ॥ बिसिखा गली तिनमें. बात पवन.
 ॥ ४४ ॥ भिरैंइति ॥ भोगिय सर्प. अरु भू पृथ्वी. यहां भू के योगसों सर्प शेष ही
 जानिये. तरोमय वेगमय. जामल दोय २ ॥ ४५ ॥ क्रमेलकइति ॥ क्रमेलक ऊं-
 र. गल्ल गाल तिनकों. बितंड वेतंड दस्ती ॥ ४६ ॥ भरेइति ॥ सल उष्ट्र. लोकें
 ऊँड. "मालोभोलिरुप्रियः" इति हैमः ॥ बेसर खच्चर. "बेसरोऽह्वतरो वेग-
 सरः" इति हैमः ॥ ४७ ॥ जनाननके बाहन निवाहिबेकों. जुत्त जुत्त. सिबिका पा-

चली भुव डोरिन मप्पत फोज, उदै हुव आय प्रवीरन ओज ॥४८॥

हजारन होरिय हेति समान, दिसा विदिसा फहराय निसान ॥

सहस्रकपंच ५००० नकीव जलेव,

चली पृतना रचि जेवर जेव ॥ ४९ ॥

समात न सेलनके गन गेन, छई भुव पकखर लकखन लैन ॥

विभागन बंटत सत्रुन वंस, उमीरन बीरन के अवतंस ॥५०॥

हरोलन चंड नकीवन हाक, करै मग लुटन बाक कजाक ॥

चले इम दिल्लियपै रचि दाव, उमंगन आजम ओ उमराव ॥ ५१ ॥

(दोहा)

इत आजम इम सजि कटक, प्रभु बनि किन्न प्रयान ॥

उत आत्म सुनि उज्जलपो, सावन मुदिर समान ॥५२॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी

पतिबुधसिंहचरित्रे दिल्लीपट्टाधिवेशनाभिप्रायोरंगजेवकनिष्ठपुत्राज

मशाहस्य दक्षिणादेशादिल्ल्यागमनवर्णनं नवमो मयूखः ॥ ९ ॥

आदितः सप्तचत्वारिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २४७ ॥

(पट्टपात)

आत्मसाह वकील हुते अवरंग निकट जिन ॥

समय साह अवसान पत्र लिखि छन्न प्रपंचिन ॥

जतु गुटिका विच रक्खि दूत करि बेस दिगंबर ॥

लकी. आजमेज ॥ ४८ ॥ हजारनहति ॥ हेति शिखा लोक-भार ॥ "अच्छिर्द-

तिः शिखा छिया" मिथ्यमरः ॥ जेव जोभरं यावनी ॥४९॥समातेति ॥ मन स-

मूढ. गेन गगन तामे. लैन पंक्ति. उमीर बडे वैभवके स्वामी. यावनी. अवतंस

भूषण विशेष ॥ ५० ॥ ५१ ॥दोहा॥ इतइति॥ मुदिरमेघ ॥ ५२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति

बुधसिंह के चरित्र में दिल्ली के पाट बैठने के अभिप्राय में ओरंगजेब के लघु

पुत्र आजमशाह का दक्षिण में सेना सभ्यकर दिल्ली पर जाने के बर्णन का

नवमा मयूख समाप्त हुआ और आदि में दो सी नैतानीम २७मयूख हुए॥

पट्टपात ॥ आजमसाहति॥ जतु लायकी. गुटिका गोली. ताके॥ "जतु शतघ्ना

काबल धर मुकलिय आनि अटंकि प रेवापर ॥
 उनमत्त होय सरिता उतरि गति सबेग काबल गयो ॥
 निद्रित जगाय अद्विय रजनि आलस प्रतिदल अप्पयो ॥१॥
 बुल्लो दे करगरहि छत्र भग्गत भुव भग्गी ॥
 अब निवारि निदरिय पिक्खि पब्बय दव लग्गी ॥
 घर फुट्टा जर फुट्टि फुट्टि हिंदुव मिलि आवत ॥
 आजम अनय सिचान पस्त दिल्लिय पारावत ॥
 बंधहु प्रपंच मंडहु विहित यह न बेर फिरि आयहै ॥
 बिन जतन गये लव लव बहुरि दूजे कलप दिखायहै ॥२॥

[निःश्राणी]

अब्दीके घरियारपै चर पत्र लगाया ॥
 धूजि थरुथर नाजरु अवरोध चलाया ॥
 साहबहादुर सैनसै वरजार जगाया ॥
 जिन खंधै सुख निद्र ते परलोक पलाया ॥ ३ ॥
 जिनकी बाहर चाहते तिन धाट बनाया ॥
 अब उठैही अप्पना नहि छत्र पराया ॥
 यौ सुनि बेगम अप्पनी कर अँचि उठाया ॥
 जाकौं कंत कहावते वह बासर आया ॥ ४ ॥
 लाय सिलगगी भक्खरौं तुम निद्र लुभाया ॥
 यौ सुनि आलस जगिकै अवरोध उठाया ॥
 कगर वँचि प्रपंचकौं बुधसिंह बुलाया ॥

कृमिजा इति हैमः ॥ रेखा नर्मदा, दल पत्र, अप्पयो दयो ॥१॥ बुल्लयो इति ॥ भ
 गगत नष्टहोत, निदरिय निद्रा, सिचान लोके वाज, पारावत कपात, "पाराव
 तः कलरवः" इति हैमः ॥ विहित योग्य ॥ २ ॥ निःश्राणी ॥ अब्दीके इति ॥ अ
 ब्दी अर्धरात्रि, देशी प्राकृत, ताके चर दूत, (नाजर) यावनी, अतः पुर में जायवे
 अप्प नरपेसधारी नपुंसक तिनमें, अवरोध अतः पुर तामें, "शुद्धान्त आवरोध
 अत्यः परः ॥ सैन सयन, तासां, निद्र निद्रा ॥३॥ जिनकी इति ॥ बाहर सहाय, धा
 ट लोके धा, बासर दिन ॥४॥ लाय सिलगगी इति ॥ भक्खर पर्वत, देशी प्राकृत,

नैन मिलाया नेहसँ भुज भार किलाया ॥ ५ ॥
 बंस सताके बीर तू कहि यौ बिरुदाया ॥
 हिंदू भूप हराम है सब फोरि मिलाया ॥
 दिल्लीके कुच कुंभपै कर आजम लाया ॥
 जोर जनानै जारका नहि जात पचाया ॥ ६ ॥
 अब तेरे भुजदंडपै रसबीर बढाया ॥
 बाजीमें और न रहया पण प्राण लगाया ॥
 हौरै भुग्नन हूर है जिनै जस माया ॥
 यौ सुनि राव उछाड़कै कर मुच्छ मिलाया ॥ ७ ॥
 मुठि सम्हारी संभरी रस सत्त ७ उढाया ॥
 थाई बीर रउडका इकै छक छाया ॥
 ज्यौ कंदल कनउज्जके भट संजमजाया ॥
 कै गोरी सुरतानपै सजि कन्ह धंकाया ॥ ८ ॥
 ज्यौ जंभासुर जंगपै सतसत्त सुहाया ॥
 कै दोगाचल लैनको कपिराज कसाया ॥
 पावन पारावार कै घटजात खुमाया ॥
 कै बन सुत्ता बिटिकै मृगराज जगाया ॥ ९ ॥
 कै काकोदर चंपतै फनफैल बनाया ॥

तिनमें, अक्षरोषउठाया दूर किया, कगर पत्र: कै कारकै, बुधसिंह बुद्धी के स्वा-
 मीको, भुलाया दिया ॥ ५ ॥ बंसहति ॥ सताके शत्रुशत्रुके, जोर पराक्रम, पचा-
 या पाचन किया, दिल्ली मेरे भोगने योग्य स्त्री रूप है; ताके कुच कुंभपै आजम
 हस्ताक्षेप कियो चाहत है याने जनानेके जार आजमका जार अरे पाचन नहीं
 होता ॥ ६ ॥ अबहति ॥ बाजी खेल सामें, पण दाघ, भुग्नन भोगियेको, हूर अ-
 प्सरा, यावनी, माया वैभव ॥ ७ ॥ मुठिहति ॥ खड्गकी यह शेष, सत्त सत्त ७,
 थाई स्थाई भाव, बीररउडका बीररस रौद्ररस का उत्साह अरु क्रोध यह अ-
 र्थ, गोरी सुलतानपै, कन्ह पृथ्वीराज चहुवानका काका ॥ ८ ॥ ज्यौइति ॥ स-
 तसत्त सतसत्त, (हन्द्र) शुद्धप्राकृत, कपिराज हनुमान, कसाया सजीभूत हुन्ना,
 पारावार समुद्र, ताकी, घट फलस, तासों, जात जन्में ऐसे अंगस्त्य, खुमाया
 उत्साह युक्त भया ॥ ९ ॥ कैहति ॥ काकोदर सर्प, ताको, सावात वारुद, तामें

सोर किधौ सावातमैं दंव दुंग मिलाया ॥
 जमका शंखल जानिकैं कहि पाव दवाया ॥
 यौ सुनि बत्तैं संभरी मन जंग लगाया ॥ १० ॥
 सोक सिलग्गा साहका कहि बैन समाया ॥
 सो सिर जोलों कंधपैं सुख अप्प कुमाया ॥
 गद्दी ज्यानपनाहकी हम वीर सिवाया ॥
 धर्महरामी सेर व्है कोऊ न कहाया ॥ ११ ॥
 अगगैं पंडव जितिकैं कुरुवंस नसाया ॥
 रावन किन्नी रामसौं सोही फल प्राया ॥
 पापन पक्की होनदै दल होहु सिवाया ॥
 अँचौ आजम कंठमैं धरि चाप अधाया ॥ १२ ॥
 यौ सुनि साह सिराहकैं तजबीज लगाया ॥
 सेनानी संभर किया चतुरंग सजाया ॥

॥

बड़े प्रात प्रयानकों फरमान चढाया ॥ १३ ॥
 जंग नगरोँ नद व्है धर काबल छाया ॥
 सिंधू राग रनंकिया चढि सोर सिवाया ॥
 डेरोँ डेरोँ सज्ज व्है नर बाजि कसाया ॥

जालग तीजे जामका घमियार वजाया ॥ १४ ॥

दुंग दमंग (घिनगी). जानि इच्छा पूर्वक ॥ १० ॥ सोकइति ॥ सिलग्गा प्रवृत्ति
 तभया. समाया समित किया. सोसिर मेरोमस्तक. कंधपैं कंधे पर. तोलों य-
 ह शेष. कुमाया संचय किया. ज्यान प्राण. सखनके तिनके. पनाह रक्तक. ऐसे
 आप. तिनकी है यहशेष. ज्यान पनाह ए दोऊयावनी लब्ज हैं. सिवाया सब
 सौं सिवाय. सेर सिंह. यावनी ॥ ११ ॥ अगगैंइति ॥ पक्की प्रारब्धकी सिद्धि.
 दल सेना. होहु यह भू धातु को बोंद लकार के प्रथम पुरुष के अवतु प्रयोग को
 प्राकृत है. अधाया क्षत ॥ १२ ॥ यौइति ॥ सिराह प्रशंसा ताकों. कै करिकैं.
 आस चही समा. तजबीज देशी प्राकृत. प्रारब्धकी रचना विशेष. सेनानी से-
 नापति. संभर बुधसिंह. फरमान हुकम ॥ १३ ॥ जंगइति ॥ रनंकिया यह शब्द
 को अनुकरण. कसाया सज्ज भया. जाम प्रहर ॥ १४ ॥ केइति ॥ डेरोँ डेरे इ-

के गज घेरों घल्लिकें चेरों गरदाया ॥
 काहू व्याज प्रपंचकें बिरुदाय मिलाया ॥
 अंग रुमालों मंजिकें रजरंग उडाया ॥
 द्वैद्वै मनके मानके संजाव खिलाया ॥ १५ ॥
 के जल देगों पायकें मुख लोभ लगाया ॥
 अगों रक्खि गजीनकों बिसवास बढ़ाया ॥
 भंपि महाउत कंधपै गति बंदर आया ॥
 जंगी हौदन मंडिकें गुड नख बनाया ॥ १६ ॥
 घाय घरघारी घोरज्यों घलि घंट किलाया ॥
 चाप तुपकों आदिकें सच हेति सजाया ॥
 बांधि बरतों सज्जकें बड बाक लगाया ॥
 फोजों नायक भार ए सिर तेरे आया ॥ १७ ॥
 यों कहि कंधा थप्पिकें रन रंग रचाया ॥
 जंगी अंदुक डारिकें आलान छुराया ॥
 बारी बाहिर बाकतें रचि डाक डगाया ॥
 केक मतंगों तुंगके धुजदंड झुकाया ॥ १८ ॥
 मेघाडंबर के कसे सिर अंबर लाया ॥
 केक हवहों सज्जवहै गल गज्ज मचाया ॥
 यों नभ अंबर अत्र भू १००० परिमान गिनाया ॥

स्त्री के अनुचर तिननें, व्याज कपट, रुमाल वस्त्र के खंड विशेष, तिनकरि, सं-
 जाव, सख्याव, लोके सीमा, तथा हलवा, खिलाया भक्षणकराया ॥ १५ ॥ केह
 ति॥ देग देशीप्राकृत, बहुत बड़े पात्र विशेष तिनकों, गजी हस्तिनी तिनकों,
 गति तरह, बंदर वानर ताकी, गुड हस्ती की सिलह तिनकरि, नख बंध ॥ १६ ॥
 घायहति ॥ हेति आयुध, चरत रस्से तिनकरि, बड बड़े, बाक बधन ॥ १७ ॥
 योंहति ॥ अंदुक जंजीर, आलान बंधयेकोखूटा, तथा खंभा "आलान बंधनस्त
 भः" इतिहैमः ॥ बारी हस्तीको ठान ताके "बारी तु गजबन्धु" रितिहैमः ॥
 तुंग जंघे ॥ १८ ॥ मेघहति ॥ मेघाडंबर छायाघारे होदा, लोके अबाबाही.

हत्थी आलमसाहके रन एह सजोया ॥ १९ ॥
 लकख १०००००० तुंगों लैनपै वर साज बनाया ॥
 देत खलीनों दोरपै नचि कंध नमाया ॥
 जंग पलानों डारिकै कभि तंग मिलाया ॥
 घोर घमंकी पकखरौ छोनीतल छाया ॥ २० ॥
 रंग विरंगे राह के गजगाह लगाया ॥
 छोरि दुवगों ठानतैं चर बाहिर लाया ॥
 तुक्कि मलंगों तुंगपै रवि रुक्कि लुभाया ॥
 तोप हजार १००० तीरकै चहकात चलाया ॥ २१ ॥
 डारि दवाली बीर जे सजि जंग लुभाया ॥
 साहबहादुर सज्ज व्है अंघ बाहिर आया ॥
 बारनपट्ट अरोहिकै फरमान लगाया ॥
 कुंच नकीबो बुल्लिकै हरवल्ल बढाया ॥
 एते मान विद्वानका घरियार बजाया ॥
 पाय रकाबों मंडिकै चढि बीर चलाया ॥
 छोनि मचककी भारकै फन नाग डगाया ॥
 चौंके दिग्गज चिक्करैं उर कल्प अमाया ॥ २३ ॥
 ध्यान समाधि छोरिकै मन बित्र बढाया ॥

के कितेकनपै. नभ शून्य०. अंवर शून्य०. अंभ्र शून्य०. भू एक१. ऐसे हजार १०००
 ॥ १९ ॥ लकख इति ॥ लैन पंक्ति. तिनपै. खलीन लगाय तिनकों ॥ २० ॥
 रंग इति ॥ राह रीति. तिनकरिकै. दुवागों दोऊ तरफ बंधके अगारी के रस्से
 तिनकों. तुक्कि तुल्लितुल्लिकै. तुंग ऊंचा. तिनपै. तोप हजार तोपनको हजार.
 हजार १००० तोप यह अर्थ. तीरकै तीर. उनको निवाला बादरुंकी धैली अरु
 गोला सो उनमें डारिकै. चहकात चहकनों. चरखनके शब्दको अनुकरना २१ ॥
 डारि इति ॥ दवाली सेखलाकों. देगी प्राकृतमें. बारनपट्ट मुख्य बारन. हस्ती ता-
 पै ॥ २२ ॥ एते इति ॥ कल्प प्रलयकाल ॥ २३ ॥ ध्यान इति ॥ समाधि. समाधि

तहिन धूरि बितानके घन भान पिधाया ॥
 सारद पुगिगामका ससी जिस बारद छाया ॥
 दब्बि धरिती पक्खरौ इक ओध लाखाया ॥ २४ ॥
 सेलौ अंबर ठांकिया नभचार रुकाया ॥
 अंडे बात रूपेटकै फीलों फहराया ॥
 तारा उत्तरि पोदकी सुभ सौन बताया ॥
 दक्खिन भारद्वाजनै द्रुत लाभ दिखाया ॥ २५ ॥
 यौं दरकुंच अनीकनै लाहोर निराया ॥
 पंजाबी दल बुल्लि कै कछु तथ मिलाया ॥
 आलमसाह सिपाह यौं सजि सेर सिवाया ॥
 दिल्लीके सिर दावपै करि चाव चलाया ॥ २६ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पुके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपति
 बुधसिंहचरिते दूतद्वारा बहादुरशाहान्तिकौरंगजेबपञ्चत्वादन्तप्रापणा
 १, सेनापतीकृतबुधसिंहसैन्यबहादुरशाहलखपुरागमनवर्णनं दश
 मो मयूखः ॥२०॥ आदितोऽष्टचत्वारिंशोत्तरद्विशततमः ॥२४८॥

वारे. तिननै. चित्र अशिरज. पिधाया अन्तर्धान हुआ. पुण्यम पूर्णिमा. वा दि
 पस. बारिद भेव. ओध मछूह ॥ २४ ॥ सेलौंइति ॥ नभचार पक्षी. यात पवन.
 फीलों फील[हस्ती]. यावनी. तिनपै. तारा नाम दिशसे दक्षिण दिशा काली चिरी
 आवै ताका कहिये. पोदकी काली चिरी. सौन शकुन. भारद्वाज लोके रूपारेल
 तथा बुजावहा सौनचिरी ॥ २५ ॥ यौंइति ॥ निराया निकटलिया. पंजाबी पं
 जावका. दल कटक. बुल्लि बुलाया. तथ तहां. सेर सिंह. यावनी. चाप चाह
 [उत्साह] ॥ २६ ॥

अविंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के राजा बु
 धसिंह के चरित्र में दूत द्वारा बहादुरशाह को औरंगजेब के मरने की खबर
 मिलना, बुधसिंह को सेनापति करके सेना सहित बहादुरशाह के लाहोर
 आने के वर्णन का दशवां १० मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ अठ
 तालीस २४८ मयूख हुए ॥

॥ गीर्वाणभाषा ॥

लाहोरनामपुरतोऽपि कृते प्रयाणे,
मेघानुकारकबहादुरशाहचम्बा ॥

आयातमाशु दलमीप्सितमागरातो
ऽजीमस्य भूतयुतभाविविदः स्वसूनोः ॥ १ ॥

[उपजातिः]

श्रुत्वाऽवरङ्गं कृतकायहानं, मया समागत्य मनोजपुर्ध्याः ॥
तत्रत्यभूतिर्द्रविणादिरात्ता दुर्गं च सज्जीकृतमागरायाः ॥ २ ॥
स्वास्थ्यं गृहाणोति विचार्य वपुर्जहीहि चाचार्यजितचक्रचिन्ताम् ॥

गीर्वाणभाषा ॥ वसंततिलका ॥ लाहोरेति ॥ मेघानुकारकबहादुरशाहचम्बा मेघा-
ऽनुकृतवत्या बहादुरशाहसेनया लाहोरनामकपुरीसकाशात् प्रयाणे कृत स-
ति आगरात आगरानामनगरसकाशात् भूतयुतभाविविदो अर्थावभवि-
ष्यद्भानवतः अजीमस्य रूपनगरराज्ञा भागिनेययाजीमनाम्नः स्वसूनोः स्व
शब्देन बहादुरशाहबोधयस्तस्य सूनोः पुत्रस्य संबंधि आत्मन ईप्सितं दलं पत्रं
आशु शीघ्रं आयातं प्राप्तम् ॥ १ ॥ उपजातिः ॥ श्रुत्वेति ॥ अवरंगं मत्पिता
महं कृतकायहानं त्यक्तशरीरं 'जह त्यागे' इत्यस्मात् भावेत्युद् ॥ 'युवोरनाका'
वित्यनोदेशः ॥ मया कर्त्रा मनोजपुरी लोके मैनपुरी तस्याः सकाशात् आगरापुरं
समागत्य संप्राप्य तत्रत्या तत्र अवा या द्रवणादिभूतिः द्रव्यादिकमैश्वर्य-आ-
त्ता गृहीता तस्या दुर्गं च सज्जीकृतं सज्जीकृतम् ॥ २ ॥ स्वास्थ्यमिति ॥ वमः
हेपितस्त्वं इति मल्लिखितं विचार्य स्वास्थ्यं स्वस्थातां गृहाण अङ्गीकुरु चाचार्यज
तचक्रचिन्तां चाचा लघुपितृव्यक आजमशाहनामा तेन अर्जितं संचितं यच्च
कं सेना तांचिन्तां । जहीहि त्यज । अत्र युद्धकार्यं मया अपि प्रयत्नो वि-

॥ भाषानुवाद ॥

लाहोर नाम नगर से मेघ का अनुकरण करनेवाली बहादुरशाह की सेना
प्रयाण करते ही आगरा नामक नगर से भूत भावि को जाननेवाले अपने पु-
त्र अजीम का चाहा हुआ पत्र शीघ्र आया ॥ १ ॥ अवरंग के शरीर की हा-
नि सुनकर मैंने मैनपुरी में आकर यहां का वैभव धन आदि लें लिया और
आगरा के गढ़ को भी सज्जीभूत कर लिया है ॥ २ ॥ हे पिता! इस मेरे लिखे
हुए को विचार कर निश्चितता धारण करो और मेरे काका आजमशाह की
एकज कीहुई सेना की चिन्ता को छोड़ो । यहां मैंने भी युद्ध का उपाय रच-

अहवा कुशावसरीरे अर्धो पद्मागया असुखो ॥ ७ ॥

प्रायोन्नजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

[पटपात]

किय उछाह इम साह वंचि कग्गर चरासम ॥

बुलि नृपति बुधसिंह कहयो तदुदंत बिहित क्रम ॥

इक्क१ इक्क२ संजोग होत जिहिबिधि एकादस१२ ॥

इम अजीम गढ लेत दइव दीसत अप्पन बस ॥

अल्लाह महर सूचक यहै अब न बीच अरि भय अटक ॥

आमग और पढ़ति उचित क्रम सबेग हंकहु कटक ॥ ८ ॥

यह प्रपंच अनुकूल पिदिख बुधसिंह चसूपति ॥

किय फोजन दरकुंच मंडि व्यूहन बिदग्ध मति ॥

सेन मध्य सुरतान हहु नरनाह हरोली ॥

सुवन साहके तीन श्वाम दक्खिन चंदोलो ॥

जयसिंह अनुज कूगम विजयलघुवय लखिनृपसंगलिय ॥

इहिं क्रम उपेत दव्वत अथनि चलि सबेग चतुरंगिनिय ॥ ९ ॥

काकोदर कलकलत फनन फुंकरि पलटावत ॥

कद्रु हिय अकुलात जखत पुतहिं लचकावत ॥

त्यो विनता उर तिक्ख पुव्व चिंतत दासीपन ॥

यह कोतुक अदभूत फैलि कस्यपघर फोजन ॥

संकर समाधि तजि तजि सहज कारन लखत विचार करि ॥

अथवा कुशावसरीरे अर्ध पद्मागता अमवः ॥ ७ ॥

प्रायोन्नजदेशीया प्राकृती मिश्रित भाषा ॥ पटपात ॥ कियशनि ॥ चरासम
साम सहित, बुलि बुलाय, तदुदंत वा अजीम का पृत्तान्त, और तरफ पढ़ति
मार्ग, "मरणी पढ़ती पचे" त्यमरः ॥ ८ ॥ यहइति ॥ व्यूह रचना विशेष, सु-

वन पुत्र, सोजदीन १ रफीलकदर २ अखतरविलंद ३, उपेत नहित ॥ ९ ॥ का-
कोदरइति ॥ काकोदर यहां जेप, कद्रु नाममाना, विनता गनइमाता, पुव्व प-
हिलो दासीपनो, कद्रुन याको दासी करीही वह भाय, नयमालेनु नयीन मुंड
भाखा को कारन, इनहिं इनको शिषको, गहकि सों पालिके, गघरि पार्षती १०

नवमाल हेतु कहि कहि इनहिं गहकि मोद बाढत गवरि ॥१०॥

मिजल इक्क१सादसन अगग चौकी लि३सदखन ॥

अरिन छन्न उपचार प्रबल बिस आदि परदखन ॥

निधि तून अन्न निवान मगग मैदान मुकामिक ॥

खग मृग तरु उद्यान जात सोधत इम जामिक ॥

प्रतिदिस जिहान खलभल परिग मनहुं वजू भुव फारिह ॥

पापिन निदान आय कि प्रलय छलि समुद्र हद छोरिह ॥११॥

कमठ भंग गिलि अंग प्रान नारिन परि बुडिय ॥

भिरि हमल्ल भुव भार पिडि पावक घसि उडिय ॥

भगि दमंग बढि आल जात कच्छप पतंग जरि ॥

दरित टारि दंतुलिय टिकत सूकर तुंडाकरि ॥

आतंक सुरन उतपात इहिं कंपत जय कारन कहिय ॥

बुधसिंह मनहुं आगम विजय अकूपार आहूति दिय ॥१२॥

अहि कच्छप भूदार दुहिन दिग्गज दिगपालक ॥

भूलोक रु तिम भुवर बहुरि सुरलोक विसालक ॥

इन समस्त अतलादि तिमहि सागर इत लासहि ॥

इक्कहिं परि आयास अवर आतंक उपासहि ॥

मिजलइति ॥ अगग अगारी. प्रिस्सदखन. तीन हजारन ३००० फी. अ-
रिन अग्रनके. छन्न शुभ. मैदान चोगान. यावनी. मुकामिक मुकाम संबंधी. ख-
ग पक्षी. मृग पशु. उद्यान बन. पापिननिदान पापी बहुत बड़े तिरकं कारन
सों. कि मनो. हद सीमा ॥ ११ ॥ कमठइति ॥ नारिन नाड़िनमें. पतंग कीट
पतंग तुल्य. यहाँ जात अमो वर्तमान प्रयोग कियो यातँ एक कच्छप जरत वि-
धाता वृजो बनायत सो जरत तीजो बनायत ऐसे जानिये. दरित भीत. "द-
रितश्चकितो भीतः" इतिहैमः ॥ सूकर वराह. अकूपार कच्छपराज. "अकूपारः कू-
र्मराजे मज्जोदधौ" इतिमेदिनी ॥ १२ ॥ अहिकच्छपइति ॥ अहि शेष. कच्छप
शुनित्वंभक. भूदार वराह. "कोडो भूदार इत्यपि" इत्यमरः ॥ इक्षिण ब्रह्मा.
"धातावृजयोनिर्दक्षिणः" इत्यमरः ॥ भुवर भुवरलोक. अतलादि अतलको आ-
दि दैवै सातों ही तैले लोक. इक्कहिं इनमैंसों एकको ब्रह्माको तों. आयास भ-

संकिन विनास धुज्जत सकल चकित चेत भूतन भजिय ॥

प्रिय जिय इतेन नागिन परिग भटन नेह नारिन तजिय ॥ १३ ॥

इम अनीक दगकुंच आय उत्तरि वृंदावन ॥

संभरपति बुधमिंह मंत्र भंडिय प्रपंच मन ॥

रागिय गनाउति आदि अप्पन अंतउर ॥

कामविपिन ज्ञज्ञ बीच तथ रक्षिखय जुद्धातुर ॥

सजि कुंच बहुरि आलम सहित नृपति आय अकदर नगर ॥

गिलतहि अजीम संबोधि मुद जटित पिदिख बीरन जगर ॥ १४ ॥

तेरीबेर अजीम न्याय रठोरि नहिय दुख ॥

तेरीबेर अजीम आल बज्जयो सु सबन सुख ॥

तेरीबेर अजीम पद दिछिय चढिपानी ॥

तेरीबेर अजीम जन्यो ओग न तुरकार्ना ॥

इगं डहिं मिराहि बुंदिय अग्रिप सब दल दुग्ग सम्दागि लिय ॥

मिलि सुतहिं साह मांडय गहर कहि तुम विजय प्रपंचकिय ॥ १५ ॥

कछुक काल रहि तथ सेन पिदिखय सेनापति ॥

दल सारथ दुवलकस २५०००० तोप हज्जार १००० विविध तति ॥

सवालकस १२५००० तुक्खार जंग पक्खर जिन्ह डारिय ॥

दुवर्दीनन वर वीर दससि गज गाग बढारिय ॥

म. प्रजा केर पनाचरेको. अकर ओर. (जल्मा विना). भूतन देहभागीनके. भजिय भाजे. जिय जीव. इतने डंत. ये कहें निनके. नारिन न'डनमें. परिग परे. नारीन नारी स्त्री. तिम संबधी ॥ १३ ॥ इमइति ॥ अंतउर अंतपुर. कामविपिन कामवन. जुद्धातुर अंतउरको विजेपन. संबोधो. बुद भौदमों. जटित जंग. जगर कवच. "जगरः कवचोऽस्त्रिया" शित्यमरः ॥ १४ ॥ तेरीइति ॥ रठोरि रूप नगरके राजा मानसिंहर्षा बेटी. तेरी जाता तानें. दुग्ग गर्भ संबंधी. चढि चढ्यो. वही रठोरि तुक्खों, दई. तानें कस्यो. गहर कृपा. धावनी ॥ १५ ॥ पछुकइति ॥ सेनापति बुधमिंहनै. सारथ (सार्ध) अध सहित दुव लकस २५०००० अढाई लाख यह अर्थ. विविध अनेक प्रकार. तति पंक्ति. तुक्खार घोर. जिन्ह

इम सहस्र इज १००० चैत्र निगड बहु निसान फहरानि वनि ॥

इम सब सप्हारि बुंदिय नृपति प्रति जवनेस प्रयान भनि ॥१६॥

॥ दोहा ॥

अंतहपुर धन आदि सब, राज बिभव रखि तथ ॥

मेचक डक बजिग बहुल, संगर पढत समथ ॥ १७ ॥

अपन दल के अजीम दल, सब एकत सप्हारि ॥

काम्य कुंच तजि आगम, गपन जाजवगारि ॥ १८ ॥

इति श्री वंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरांशो सप्तमराशो बुन्दी-
पतिबुधसिंहचमित्रे अध्वर्याक्षतवृन्दावनबुधसिंहादराधदहादुरशा-
हाकबरपुरागमनमेकादशो मयूखः ॥ १९ ॥

आदिन एकोनपञ्चाशोत्तरद्विशततमः ॥ २० ॥

दोहा—मेचक कृष्ण साह गरि, इन सुनि मधु अवदात ॥

आवत विने मास दुवर, अब आपाठ प्रभात ॥ १ ॥

आजम कलुक विलंब किय, साहबहादुर भाग ॥

दल निवाहि आनप दिनन, आवत सुव अनुगम ॥ २ ॥

तपन अठ दिनकर दुमह, आजम कटक दुरंत ॥

जिगपै, बुवदीनन दोऊ दीन हिंदू सुमलमान, तिनके, इम हस्ता, जिगड जं-
जीर, फहरान फरकनो ॥ १६ ॥ दोहा ॥ अंतहपुरडति ॥ तथ तहां [आगममै]

मेचक, बाह्यविशेष, बहुल घने, संगर युद्ध ताको ॥ १७ ॥ अपनइति ॥ स्पष्ट ॥ १८ ॥

आविगभास्कर महाचम्पू के उत्तरांश के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति
बुधसिंह के चरित्र में मर्ग में बुधसिंह के जनाने का वृन्दावन में रखकर पहा-
दुरशाह के आगर आने के वर्णन का ग्यारहवां ११ मयूख समाप्त हुआ और
आदि ने दो सौ उनचास २५६ मयूख हुए ॥

मेचकइति ॥ मेचक कृष्णपक्ष, कृष्ण कृष्ण मास संबधी तामें, साह और-
गजेव, गरि मर्या, इन या आलमशाहमें, सुनि सुन्यो, मधु चैत्रमास ताके
अवदात गुरु पक्षमें ॥ १ ॥ २ ॥ तपनइति ॥ दुरंत कटसों मरणाको अंत आवै
ऐसा, पंथु जयचंद्र, बरगुदज नगरकां राजा राठौर, इधरीगज चोहानकां प्रति
पदी, अगैं पारहसै अष्टचालीस १२५८ के साल विद्यमान हो सो जानिये

चलत पंगु जयचंद्र जिम, वसुधातला दब्बंत ॥ ३ ॥

इम पत्तो ग्वालोरपुर, आजम विभव उपेत ॥

सजि-किल्ला बनितादि सब, रक्खिय तत्थ निकेत ॥

॥ पट्पात ॥

अग्रज अवरंगीय साहदारा अभिधानी ॥

ताकी तनया व्याहि लई आजम अभिमानी ॥

यह अगँ ईकवेर पकरि बंधी मरहट्टन ॥

तब अनिरुद्ध नरस जिनि आनी भुजदंडन ॥

दीदारुबखस जाके उदर ताहि नगर ग्वालोर धरि ॥

उततै उफान सागर उपम आयो आजम कोपकरि ॥ ५ ॥

अकबरपुर इन तजिय तजिय ग्वालोरनगर उन ॥

ए दक्खिन सम्मुह रु वेसु उत्तरपर आरुन ॥

इम आवत दुव कटक मिले जाजव दिन अत्थै ॥

रहि मुकाम यह राति कलह उगतरवि कत्थै ॥

दुव २ दल प्रपात सोहत सहज मनहुँ सिंधु बीचिन भारिग ॥

बहल उदीचि आवाचिके प्रबल बात भेट कि परिग ॥ ६ ॥

बाकें सेन बहुतही. अस्सी लाख घोर है, यानें सेना के बाहुज्यमें बाकी उपमा दीनी. दब्बंत दाबंत ॥ ३ ॥ उमइति ॥ पत्तो प्राप्त भयो. उपेत सहित. किल्ला ग्वालोरपुरको. बनिता स्त्री. निनकां आदि दैकें सब वैभव. निकेत स्थान ॥ ४ ॥ पट्पात ॥ अग्रजइति ॥ अग्रज बडा भाई. अवरंगीय अवरंगशाहको. साहदारा अभिधानी दाराशाह नामक. तनया पुत्री. यह आजमकी स्त्री. अनिरुद्ध बुंदी का राजा बुधसिंहको पिता तानें. ताहि बाअपनी स्त्रीको ॥ ५ ॥ अकबरइति ॥ अकबरपुर आगरा. इन बहादुरशाहनं. उन आलमशाहनं. ए बहादुरशाहकी सेनाबारे. रु अरु वे आजमशाहकी सेनाबारे. सु पादपूरार्थि है. आरुन संसार. जाजव आगरा अरु ग्वालोरके बीचमें ग्राम विशेष तहां. कलह युद्ध. कत्थै कहै. प्रपात पडाव, बीचिन बीची (तरंग) तिनकरि. भारिग भारधा. बहल मेघ. उदीचि उदीचा (उत्तरदिशा) ताके. आवाचिके दक्षिण दिशा ताके. बात पवन ताकरि. कि मनो ॥ ६ ॥ दाहा ॥ सकइति ॥ जुग च्यार ४. खट है १०. सत्रहसै चौसठि १७६४. असित कृष्ण पक्षकी ॥ ७ ॥ पद्धतिका ॥ दैदलइ

जाजवसे दोरो सेनाओंका मिछना] सप्तमराशि-द्वादशमयुख (२९६७)

॥ दोहा ॥

सक चउखट सत्रह१७६४समय, असित तीज३आपाठ ॥

दिय मुकाम दुव दलन इम, मिलि जाजव गहि गाढा॥५॥

(पद्धतिका)

दैं दल मुकाम बुंदिय नरेस, किय मंत्र पिक्खि अरि दल बिसेस
रतिवाह वाह गोकन विचारि, निज दल प्रबंध बंधिय निहारि ॥८॥
पखरैत सहैस द्वादस१२०००प्रवार, सजि धपि सैन बाहिर सधीर
निज भट रनपंडित जैत नाम, तिनसांहिं मुख्य करि गिखताम ॥९॥

यह बैरिसल कुल भव अभंग, निज बंधु जैत दिय सोधि संग ॥
कहि नेह बचन सनमानकीन, अब काका दिल्ली तव अधीन १०
जो रचहिं मन्त्र रतिवाह जाल, तो ओलि चास भेजहु उताल ॥

इम भाखि छरीनाँ किय तयार, हय जैतसंग द्वादसहजार१२०००
दल परिधि जाय तिन चक्र दिन, क्रम इम प्रबंध चहुवान किन्न ॥
पुनि बाहिय नीति साहहिं प्रबाधि, सुख सैन करहु अब काल
सोधि ॥ १२ ॥

निस जाम रहत निंदहिं निवारि, पिक्खहु विहान रन भटप्रचारि ॥
सुनि साह सैन मंडिय सतोस, भूगल बुद्ध भुज दुव भरोस ॥१३॥
सत्र साह हसम डरन सम्हालि, नृप भिविअ आय कटिपट निवारि

ति ॥ रतिवाह रात्रि समय अचानक आय लैं सो युद्ध ताके. वाह चार त-
था प्रहार. प्रबंध रचना विशेषसां फोजको राखनों. बंधिय बंध्यो. निहारि दे-
खिकैं ॥ ८ ॥ पखरैतइति ॥ जैतनाम जैतमिह नामक. बैरीशह्लांत हाडा फलो-
धी नगरको अधिपति. तिनसांहिं वे छरीनांक चारह हजार १२००० पखरैत
सेनाके बाहिर गिरदी की चाकी फिरबेका भेजे तिनसे. ताम तहां ॥ ९ ॥ यहइ-
ति ॥ यह जैतसिंह. अब संयो. बंधु सपिंड कुलमें. सोधि विचारिकैं ॥ १० ॥
जोरचहिंइति ॥ रतिवाह रात्रिका युद्ध. ताको. चास खबर ॥ ११ ॥ दलइति ॥
परिधि गाढ़ [चक्र मंडल फिनां]. सैन सयन [सोचनों] ॥ १२ ॥ निसइति ।
जाम एक प्रहर. निंदहिं निद्राको. विहान प्रातःकाल. सैन सयन. सतोस तो
स प्रसन्नता ता सहित ॥ १३ ॥ सयइति ॥ हसम वैभव. देशीप्राकृत. सिधर

लिय सबहि फोज नायब बुलाय, सहभाय कहिय आगम सुनाय ॥ १४ ॥
अगों प्रमाद समुपन सुत, पांडव दल मान्यो दोग पुत ॥

निस सुत साह गोरिय अनोक, कइमास इक किय कांदिगी क ॥ १५ ॥
तसमात असन अल्पहि विधाय, गजजहि समस्त सोदहु सुभाय ॥
करि तोन ३ स्वस्व परिकर बिभाग, कहुहु त्रि ३ जाम जय राखिख
गज ॥ १६ ॥

गज हयन देहु विश्राम पंथि, श्रम पिक्खि अल्प आहार संधि ॥
बधु गांजे सजहु हय गज बहारि, जंगा पजान संधान जोरि ॥ १७ ॥
निस रगत जाम ताजे तजि निकाय, पुनना सु रकावन देहु पाय ॥
बुल्लिख विदग्ध तोपन चलाक, कांदि बिटि दलहि मंडहु कजाक ॥
पंद्रहहजार १५००० पायक तुंग, आगोपि साह तोंगन अभंग ॥
इम मंडि व्यूह जामिक अनूर, बहुवान असन दान्नों चरुप ॥ १८ ॥
हुन पुनि अगेहि हैबर दिवान, सबडिग फिरि किन्नें यावधान ॥
इम सिद्धि परिक्रिख निज थान आय, मुख्य समन किन्न नय बल
सुभाय ॥ १९ ॥

रचना विजेय में आनी सेवा कां डेरानहीं. कटि मट कमरबन्ध. पुनजा-स्वान
करि. नायब साजिन. पावनी. आगम आञ्ज ॥ १४ ॥ अगोंइति ॥ प्रमाद गा-
फिलता करि. समुपन मद्रित. सुत सुत. लोंक सुता. दोगपुन अम-तयसा ता-
नै. साहगांयि गांजा जाति को पठान गननवीको बावशाह लखहुदान नाम-
क ताको. कयमास पुष्टीमाज बहुवानों सेरी ताँ. कांदिजीत अयनों भा-
जियेका ॥ "कांदिशीको मयद्रुन." इतिहैमः ॥ १५ ॥ तसमातइति ॥ असन
भोजन. अलपहि थोरोही. थिय य कांदि. मज्जाइ मज्जी पुाई. स्वस्व अपने
अपने परिक्रमिके. त्रिजाम तान प्रहर. जय चित्रय ताँ. राज प्राति ॥ १६ ॥
॥ १७ ॥ निसउति ॥ जाम इक प्रहर. निजाय स्वान "निकायों अरजे दूरः"
इतिहैमः ॥ बुल्लिख सुभाय. विदग्ध चरुर ॥ १८ ॥ पंद्रहहति ॥ पायक पग. दे.
तुंग अस गार. यहाँ उपादान ललगावों यह अर्थ जानिये. आरापि स्व र-
खने. तोरन बाहिरीको दरबजा तहाँ. व्यूह रचनाविशेष. ताकारिकें. जामिक प-
हराभन. असन भोजन. चरुर सेनापति. यहाँ बहुवानको विजेपन ॥ १९ ॥
हैबर हय. दिवान बुधसिंहको उपपद ॥ १९ ॥ यहइति ॥ थपि थापि. निसान

यह सुनि अनीक व्यूहन विवेक, आजमहु थपि जामिक अनेक
इम क्रिय मुकाम दुवदल अमान, दुवघाँ निघात वज्जत निसान२२
रन माहताव उदित दुर्ओर, चकि चौंकिपगत जिन लखि चकोर
बहि दुर्दल चंद्रजातिनविकास, पुशिया म मयंक बहुविफुरिपास२२
दुहुँओर बाजि गज रव दुरंत, दुवसेन उच्च डेरन दिपंच ॥

दुहुँओर सूर जामिक दुरूह, सजिसजि अनेक विचरत समूहा२३
दुहुँओर लखत प्रछन्न दूत, दुव दल नकीव आरव अभूत ॥

भंडन अपट मच्चत दुर्ओरे, सिंधुव अलाप दुवदिस सजोर॥२४॥

दुहुँओर करत जामिक दुगाव, दुहुँओर छवीनाँ लखत दाव ॥

दुहुँओर बाजि फाँदत दुर्वंध, दुहुँओर दंति गज्जत मदंध ॥ २५ ॥

दुहुँओर सुद्ध खेलन चमक, दुहुँओर घंट पक्खर घमक ॥

दुहुँओर मूग हूरन उछाह, दुहुँओर होत हरि हर इलाह ॥ २६ ॥

दुहुँओर सुतर जंघाल जात, दुहुँओर चास पल पल दिखात ॥

दुहुँओर करत बहुरीति दान, दुहुँओर होत विधिजुत विधान॥२७॥

गुन३ जाम रति हुव इम अतीत, गहक्रिय सु जंग आरंभ गीत ॥

निंदहिँ निवारि बुंदिय नरेस, करि नित्य बंदि प्रभु द्वारिकेस ॥२८॥

वाधाविशेष ॥ २१ ॥ रनइति ॥ माहताव यावनी. हवाई विशेष. जाको प्रका-
श चंद्रिका के साफेक होत है सो. दुओर दोऊ तरफ. दुदल दोऊ दलनजै.
चंद्र जातिन चंद्रज्योति नामक हू हवाई विशेष होत है. तिनका विशेष प्रकाश.
पुशियाम पूर्णिमासी ताक. मयंक खगांकचंद्रमा). विफुरि विस्फुरित भूये. पा-
स लमीप ॥ २२ ॥ दुहुँओरेति ॥ रव शब्द. दिपत सोहत. दुरूह ऊहा तर्कना
तालें दुवसों आँखें ऐसे ॥ २३ ॥ दुहुँलखतइति ॥ प्रछन्न गुप्त. आरव शब्द.
अभूत अदृष्ट॥२४॥दुहुँकरतइति॥दुराय पैलेनको न दीखें ऐसो गुप्त चौकीसैं
छिपनों. बाजी घोर. फाँदत छूदत. दुर्वंध दोऊ अगारी पिछारीके बंधन छतैंह.
दंति दंताः[दस्ती]॥२५॥ २६ ॥ दुहुँसुतरइति ॥ सुतर ऊँट. यावनी.जंघाल आति
वेगवान्. "जंघालांनिजवस्तुन्य"इत्यमरः ॥चास खवरि ॥२७॥ गुनइति ॥ गुन
तीन३. जाम प्रहर. रतिरात्री. अतीत व्यतीत ॥ २८ ॥२९॥ सुनिइति ॥ उवाच

जामिकन साह आलम जगाय, बुधसिंह तबहि द्रुत लिय बुलाम
 कहि उचित मंत्र मंडहु नरेस, अब नहि किलंबहुव सब असेस ॥ १९ ॥
 सुनि नृप उवाच नय कछु सनर्म, अब होत जंग विधि विधि अधर्म
 वहु तोष करत दुर्गाह विनास, बीरहु सकैं न यह टारि लास ॥ २० ॥
 लैजात सवन धरि सिम्त घोर, मनमौहिं रदत सुभटन मगोर ॥
 तसमात अप्प दल पिछि दूर, गहि छत्र काल कहहु जरूर ॥ २१ ॥
 हम सुभट जुद्ध पंडित हगेल, विधि संव निवाहि नय धर्म बोल ॥
 गधि दल समुद्र भुज मंदराग, निज बल कृपान गचि चंड नागादर
 जपरतन कहि जतन जरूर, व्है ख्यात निवेदहिं निज हजूर ॥
 इन्हिनीति छन्नमाहहिं निकामि, बल सजिय अप्पहिय जय बिकासि
 दल चढन बेग दै निज निदेश, विधि करि बिधान संध्या विसैस
 सजि उनहु चढन आपस प्रसाहि, नरगज तुरंग कलकलनिहारि ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

दुवदल हम खलभल परिग, गहकि नफीरिय गान ॥

किलक नकीवन हुव कहग, पहर पलान पलान ॥ २५ ॥

॥ भुजंगप्रयातम् ॥

जगी सेन दोऊ रही जाम रती, बजे वंघ भोरी वंडी हल्ल बन्ती ॥

दुहूँ ओर व्है सुद्ध के नित्य मंडै, दुहूँ ओर संसारतैं प्यार छंडै ॥ २६ ॥

दुहूँ ओर गंगोद कै अंग मंजै, दुहूँ ओर मातादि गातादि रंजै ॥

दुहूँ ओर बानंत नागोद वंघै, दुहूँ ओर के टोप मन्नाइ संधै ॥ २७ ॥

कहत मयो. सनर्म नर्म लोक ठट्टा. तान्नाहत ॥ २० ॥ लैजातइति ॥ सिस्त ता-
 के ॥ २१ ॥ हमइति ॥ मंदराग मंदर नामक अंग पर्वत. ताकारि. नाग वासुकि.
 ॥ २२ ॥ जयइति ॥ यहनीति या नीतिमों. बल सेन ॥ २३ ॥ दलइति ॥ निदेश
 हुकम. उन आजतशाहनै. कलकल कोलाहल ॥ २४ ॥ दोहा ॥ दुवइति ॥ नफीरी
 वाच विशेष. वेशोप्राकृत ॥ २५ ॥ भुजंगप्रयात ॥ जगोइति ॥ स्पष्ट ॥ २६ ॥ दुहूँ
 गंगोद इति ॥ गंगोद गंगाजल. ताकारि. गातादि भगवद्गीतादिक. पुनः गीतादि
 गान तदादि करि. नागोद लोके पेटी ॥ २७ ॥ दुहूँ जालीइति ॥ जाली लोके

दुहूँओर जाली दवालीन डारें, दुहूँओर धाराल धाराल धारें ॥
 दुहूँओर सिंधून उच्छाह जग्गें, दुहूँओर बाजीनपैं जीन लग्गें ॥४८॥
 दुहूँओर झंडाल सुंडाल गज्जें, दुहूँओर हिंजीर जंजीर बज्जें ॥
 दुहूँओर उच्चूल नेजा फरक्कें, दुहूँओर के जोर छोनी मचक्कें ॥४९॥
 दुहूँओर धानुक्ख टंकार पूरें, दुहूँओर देखें लगो लोभ हूरें ॥
 दुहूँओरमें दूत व्है भूत भिल्लें, दुहूँओर बेताल खेताल खिल्लें ॥५०॥
 दुहूँओरके भीरु उद्राव मंडें, दुहूँओरके वीर बानैत तंडें ॥
 दुहूँओर वंशीनको सोर वड्डें, दुहूँओर तोपें दरावीन चड्डें ॥४१॥
 धरें कुंत बंदूक तुल्लें वरच्छी, हल्लें हंकि हत्थी खुल्लें सज्ज कच्छी
 चढा सैन दोरु बढा जंगचाहें, अवाची उदीची घटा ज्यों उमाहें ॥४२॥
 ॥ दोहा ॥

बुंदियपति सन्नद्ध बनि, नय निकालि निज साह ॥

दल सारध दुवलक्ख २५००००लै, चढ्यो तुरग जय चाहा ॥४५॥

उत आजम आरोहि गज, लै दल सम्मुह आय ॥

मुलक प्रलय आगम मनहुँ, उदधि सत्त उफनाय ॥ ४६ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी-
 पतिबुधसिंहचरित्रे अकबरपुरप्रस्थितवहादुरशाहगोपाद्रिपुत्रप्रस्थि-
 त्तिग्रह, "जालिका त्वंगमल्लर्णा" निहैनः ॥ धाराल अच्छी धारावाले. धाराल
 लज्ज ॥ ४८ ॥ दुहूँ-सुंडालइति ॥ झंडाल झंडोंवाले. सुंडाल हस्ती. ॥ 'सुंडालः
 सोमजो नागः' इतिवर्णनम् ॥ हिंजीर हस्तीके जंजीर. जंजीर हस्ती बिना और
 पालर तोप आदिने जानिये. उच्चूल ऊपर लुत्त बड़े झुंदावारे ॥ 'असोच्चूला-
 वचूलारव्यः बुद्धिबोद्धुनकूर्चता' विनिहैनः ॥ ४९ ॥ दुहूँ-धानुक्खइति ॥ धानु-
 क्ख धानुपत्त. कमनैव ॥ 'लूर्णा धनुपमान् धानुपत्तः' इत्यमरः ॥ भिल्लें मिलें. बेता-
 ल खेतरपाल ॥ ४० ॥ दुहूँ-केभीरु ॥ उद्राव भाजनों. तंडे गर्जनाकरे ॥४१॥४२॥
 ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूयति
 बुधसिंह के चरित्र में आगरा से वहादुरशाह और ग्वालेर से आजमशाह का

ताजमशाहरणाहेतुजाजवनगरान्तिकस्कन्धावारनिवेशनं द्वादशो
मयूखः ॥ १२ ॥

आदितः पञ्चाशोत्तरद्विशततमः ॥ २५० ॥

(दोहा)

सक चउ खट सत्रह१७६४समय, मिलि चउत्थि सुचि मास ॥

असित पक्ख उग्गत अरक, बढि दल बिजय बिलास ॥१॥

(मुक्तादाम)

बढे दल तोपनकोँ करि अगग, मिले भट उद्धत संगर मगग ॥

इतेविच कोतुक जंग अछक, उयो उदयाचलके सिर अक ॥२॥

लख्यो रवि दोउन बंदि बिसेस, भयो तब तोपन पुब्ब निदेस ॥

पलट्टनि पिक्खि रुमात्तन सौँन, लगी दुहुँओर अलातन देंन ॥ ३ ॥

मिली तँदँ तीनहजार३०००न अगि, बढी अफलेत दुहुँदिसदगि

भयो नभ धूमित धुंधरि भान, लगे दग मीचन देव बिमान ॥४॥

परे अष मोलक बिद्युत पात, जुरे नर गँवर है उडिजात ॥

उगल्लत फेरहि फेर अखंड, चलै चटका रिनके मित चंड ॥ ५ ॥

भुजंगमके सिर नच्चत भुम्मि, धरै फनतै फन घायन घुम्मि ॥

नचे जिम कन्हर कालिय कंध, बनै इम छोनिय तंडव बंध ॥६॥

लगे डगमगगन अद्रिन सृंग, गिरै जिनतै मृग भ्रामित भृंग ॥

चलकर युद्ध के अर्थ जाजव नामक नगर के पास मुकाम करने के वर्णन का
बारहवाँ १२ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ पचास २५० मयूख
हुए ॥

सकइति॥ चउत्थि अतुर्थी, ४ सुचि आपाद. असित कृष्ण॥मुक्तादाम॥बढेइति॥

अछक अतृप्त. उयो उदयभयो. अक अर्क (सूर्य) ॥ २ ॥ लख्यो ॥ पलट्टनि पया

दे सिपाहनकी पंक्ति ॥ ३ ॥ मिलीइति ॥ अफलेत तोपनके तार करायबे की

क्रिया विशेष ॥ ४ ॥ परंइति ॥ फेरहि फेर अवाज प्रति अवाज. मित प्रमान.

भुजंगमइति ॥ भुजंगम शय. ताकं. कन्ह कृष्णावतार. कालिय कालानाम

निवानन आकुलि तुह्यत नीर, पश्यो इक आंतप ग्रीखम पीर । ७।
 तेजै बहि बाधिन सागर सीम, भ्रमै प्रलगानिलमै जिम भीम ॥
 जुग्यो दिन दबि कुहू तम जगि, अलात लगै जनु प्रेतनअगि ८
 परै दृग वे उत मोर प्रकास, लखै इनहु इन फैर उजास ॥
 दुहूँदेम यौ लखि पारन दाव, भयो दुहुँघाँ डम मोर भ्रमाव ॥ ९ ॥
 सज्यो बहि घूम सुरालय संग, अजौ नभ बहल राजिहि रंग ॥
 गिरै विच गोलक गोलक फेट, मनौ पावतै पवि चंडचपेट ॥ १० ॥
 गिरै गजमथ छिनच्छिन लूट, कटै पवि पात कि अद्रिन कूट ॥
 गिरै गज अंडहु गोलन गोन, गिरै तरु ताल कि पवय पोन ११
 लख्यो रवि उग्रत ज्यौ तम लाल, किते अब भुल्लत आन्हिक
 काल ॥

विहानहु कोकन लखि वियोग, विनाँ नर जानत जामिनि जोग
 परै गज गंडन गोलक पात, करै जनु भद्रक जातिन ख्यात ॥
 परै दुहुँ ओर तुपकन पंथ, मच्यो गव भाष्टूक ज्यौ हरिमंथ ॥ १३ ॥
 चहुँदिस चंड चढ्यो गज चूर, पश्यो रजताचललौ उडि पूग ॥

ताके ॥ ६ ॥ ७ ॥ तजइनि ॥ भाम भयंकर, कुहू चंद्रकला रहित अमावास्या
 की रात्रि ताके, भाँ तख अंधकार ॥ ८ ॥ परैइति ॥ वे पेली सेनाके, उत बात-
 रफरे, मोर बालद, ताके प्रकाशतै दीसै, इन ओली सेनाचारनको, इत यातर
 फने, लखै देखै ॥ ९ ॥ सज्योइति ॥ सुरालय सुरलोक, ताको, अजौ अबभी
 नभ आकाश, बहल मंथ, ११ स्याम, जिहरंग वा धुंवाँके रंगसाँ है, पहले पार-
 गक न हे, गोलक गोलामों, पवि बज्र ॥ १० ॥ गिरैइति ॥ गोन गमन,
 तामों, तरुनाल तालवृक्ष, कि अनौ, पवय पवंतमों, पोन, पवन करिकै ॥ ११
 लख्योइति ॥ तम अंधकार, तामै, लाल मणिक्कय, विनानर मनुष्य राहत, और
 प्राणीमात्र, जामिनि रात्रि, ताको ॥ १२ ॥ परैइति ॥ भद्रकजातिन भद्रजाति
 चारनके, ख्यात प्रकट, भद्रजाति दक्षिणके मस्तकमों मोती निकसै हैं यातै, रव
 शब्द, आष्टक लोक भाइ, तामै, हरिमंथ बना ॥ “चणको हरिमंथकः” इति हेमः ॥
 चहुँदिसइति ॥ रजताचललौ रजताचल कैलास पर्वत तहां लगि, जदी शिव

जटी जटजूटहु पंकिलजात, लगे कुच कंजन पुंज लसात ॥१४॥
 भज्यो ससि भीरुक भालहि छोरि; रहैं रज लेत सुधा सम चोरि।
 अकंज सकंज भये इस इस, समात न खाद भयो भर सीस ॥१५॥
 महानट पौलहि खेद समाज, निमीलत नैन समाधिक व्याज ॥
 जलंधर बंचित चंडिय अग, लखैं धव संकि महाभय लग्ग ॥१६॥
 भयो यह विग्रह संकरभान, गिरैं घनना इत गोलन गोन ॥
 थरथर भुमि जथा जल थाल, वन्यो रन तोषन यौ विकरात ॥१७॥
 सिलगगहिं तज्जहिं गज्जहिं सार, लरज्जहिं वज्जहिं सिंधु हिलोर ॥
 भजैं गज संगर लंगर तोरि, महावत गवत लावत सारि ॥ १८ ॥
 दिसाविदिसा जगि जारत ज्वाल, सनौं कुहु उज्ज दमंधन माल ॥
 चलैं उडि सोर सिखा चमकात, परैं जिम अह्व विज्जुव पात ॥१९॥
 अमैं कडि मुंडि गिरैं उडि भाग, सनौं जनभेजय अध्वर नाग ॥
 पगवलि गिह्नकी प्रजरात, जटायुक अग्रज ज्यो गिरिजात ॥२०॥
 उडैं ध्वजदंडन खंड अकास, रहैं जिम उडहि केकिय रास ॥
 जरैं गज पिडि पताकन जूट, किधौं दव लुगिय अद्रिन कूट ॥२१॥

तिनकी. जट जटा ताको. जूट जूटा. पंकिल पंकवाता. जात भयो. कुचकंज कुच
 कुचलय. लगे गहूल. कंज कमल तिनके. "कुहेलें कुचलें कुचें" इति हैमः ॥ १४ ॥
 भज्योससिइति ॥ भालहि शिवके ललाटको. छोरि भ्यासिकै. अकंज कंज चं-
 द्रमा तावित्वा. कंज कलन. तिनजहित. खाद पंक. "कंदेशच निपकाः खादः"
 इति हैमः ॥ १५ ॥ महानटइति ॥ महानट शिव. "महापरादेवनटेश्वर हरः" इ-
 ति हैमः ॥ व्याज निसर्गो. जलंधर धंजिल जलंधर दैत्यकी लगी. चंडिय पार्वती.
 धव अपनी पति. नाको. लग्न लग्न. लोके लग्यो ॥१६॥ १७ ॥ सिलगगहिइति ॥
 तज्जहिं तर्जना करै. लोर बाहू. हिलोर अहातरंग ॥ १८ ॥ दिसाहति ॥ कुहु
 चंद्रकला रहित अमावास्या की रात्रि तासै. "मा नष्टेन्द्रकला कुहुः" इति हैमः ॥
 उज्ज कार्तिकमास तामें. "बाहुलोर्जो कार्तिकः" इत्यपरः ॥ दमंधन ही-
 पर. तिनको माल. "दमन्वनो गृहमणि" इति हैमः ॥ १९ ॥ अमैं इति ॥ अ-
 ध्वर राजः तामें. "चितानि बर्हिध्वरः" इति हैमः ॥ जटायुकअग्रजज्यो संपाति
 गृध्रके समान ॥ २० ॥ उडैंइति ॥ उडहि ऊपरही. केकिय मयूर. रास नृत्य ॥२१॥

कहैं पुर जाजव हो अधकोस, दण्यो चहुँघाँ तउ संगति दोस ॥
तप्यो समरंगन तोपन ताप, चहघाँ नभ जसलरजाम दिवाप ॥२२॥
॥ दोहा ॥

इम तोपन रन होत इत, इत कोतूहल आम ॥
रवि दुगहरयो चहुँ रुक्यो, तऊन तुमुल तसास ॥ २३ ॥
इहिं अंतर दुबदिम अतुल, युगत तोप निर्घात ॥
साहबहादुर भास सन, बज्ज्या उत्तर वात ॥ २४ ॥

॥ पदपात् ॥

पलटत उत्तर पवन दाह तोपन इत दग्गिय ॥
उछुत पिक्खि अनीक लाघ सधुन उर लगिय ॥
आजम गज आशूह हुतो निज कटक हरोली ॥
गोला लागि लैगयउ पारि दल मध्य प्रतोली ॥
इम तोप जनक आजस उछत निज दल लखिपर भर नयो
दीदारबखस तस सुत दुसह व्है नायक हरवल भयो ॥५२॥
आजसतुत इम कहिय भगन संगल भट संगर ॥
करहु सोक जिन बीर धरहु पायन लज लंगर ॥
इम विमोक्षि सब सेन अगग ठहो आजमसुत ॥
गति अंगद पय गहि सरन मंड्यो जनुँन जुत ॥
दैं पुनि निदेम तोपन दगन नृप नवाव हलकारि सब ॥
दीदारबखस सज्ज्यो दुजन गुमर टेक मंडत गजव ॥ २६ ॥

कहैं पुरइति ॥ जसल उभय. दिवाप दिवापति (सूर्य) ॥ २२ ॥ दोहा ॥ इमह-
ति ॥ तऊन देखत. तुसल संकलितशुद्ध ताको ॥ २३ ॥ इहिंअंतरइति ॥ वात
पवन ॥ २४ ॥ पदपात् ॥ पलटतइति ॥ हरोली फाँजके अग्रभाग. प्रतोली घा-
धी. मोके नली. "रथवा प्रतोली विमिच्छा" इतिहैमः ॥ तस ताको ॥ २५ ॥ आ-
जमसुतइति ॥ संगर युद्धमें रहेहुं. भट नृपवीर को. मंगल उत्सव होतहैं ता-
तैं. जनुन. यावनी. क्रोध ॥ २६ ॥ दतिपापतिइति ॥ इतन इतनैं सहित. इनमंत्र

दतियापति राउत नाम दलपति बुंदेलद ॥
 नरउरपति गजसिंह बंस कछवाह ममेलाह ॥
 रामसिंह चहुवान अनय आकर कोटापति ॥
 लागि बुंदियधर लोभ गिनत भोरो न कालगति ॥
 सचिवन इतेन आजमसुवन गजारुढ दरदल्ल गहि ॥
 इनमंत्र अवहि आजम उडयो सुवन ग्वास अघरोस गहि ॥२५॥
 इम आजम उडतहि सुवन ठडो चडि भिंधुर ॥
 दगत तोप दुहुँओर उवन बीरन रस अंकुर ॥
 इहिँ अंतर जयसिंह नगर आमैर नरैसुर ॥
 निज नकीव मुकलिय बुद्ध भूपति प्रति आतुर ॥
 गृहविधि कहाय प्रछन्न गय जाभिप तुम ए खल जवन ॥
 कुल स्वसुर टारि मंडहु कलह होत तोप सालक हवन ॥२८॥

[दोहा]

बुंदियपति यह सुनि बिनय, प्रतिउतर पठवाय ॥
 घर अप्पन संबंध घन, यँहँ रन दंड उपाय ॥ २९ ॥
 ताँतैं तुम साहस तजहु, बय नय समर बिचारि ॥
 बचहु बाम दक्खिन बदलि, तोपनको मग टारि ॥ ३० ॥
 इम कहाय बुंदिय अधिप मंडयो तोपन जंग ॥
 इहिँ अंतर दूतन कहायो, भो आजम असु भंग ॥ ३१ ॥
 बलहिँ प्रचागत भटन विच, हो हत्थिय आरुढ ॥
 गोला लागि दोजख गयो, मदा अनय रत मृद ॥
 तब ताको सुत सज्जहुव, तथा सचिव नृप तीन ॥

ए तीन सचिव कहे तिनके मंत्रमों ॥ २५ ॥ इमइति ॥ उवन उडवाहन. रम
 बीररस ताको. हवन होम ॥ २८ ॥ दोहा ॥ बुंदियइति ॥ अप्पन अपन ॥ २९ ॥
 ताँतैंतुमइति ॥ साहस हठ ॥ ३० ॥ इमइति ॥ असु भंग प्राप्तभंग ॥ ३१ ॥ बल
 हिइति ॥ दोजख. यावनी. नरक ॥ ३२ ॥

नरउरपति दतिया नृपति, कोटा पति ईक कीन ॥३३॥

[पट्पात]

सुनत एह बुंदीस मंत्र निजदल सह मंडिय ॥

अरि आजम उडुतहि लारन तससुत हरांल लिय ॥

अरक जाम अवसेस तोष चल्लत त्रिजाम गय ॥

अव हय देहु उठाय जानि हरिहत्य जयाजय ॥

इम कहि नरेस सुभटन उचित हंयन हंकि सम्मुह हलिय ॥

नीगद उदीचि दिसैत मनहु चंड पवन दक्खिन चलिय ॥३४॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तमायणो सप्तमराशो बुन्दीप-
तिबुधसिंहचरित्रे जाजवनगरान्तिकबहादुर [आलम] शाहाजमशा-
हनालीपत्रद्विषामरणाजमशाह१ पितृस्थानस्थिताजमसूनुदीदारव-
केसरणावर्णनं त्रयोदशो मयूखः ॥१३॥

[नाराचम्पू] उठाय जंग पौ तुरंग बुद्धसिंह उप्पग्यो ॥

मची कजाक हड्ड हाक वीर वाक वित्थम्यो ॥

महा गभीर धीर वीर नीर छीर ज्यौ गिल्ल ॥

हमल्ल भोक भुम्मिल्लोक खंड खंड ठहै खिल्ले ॥ १ ॥

अनंकिंतति सिंधवी अलाप राग भुक्कपो ॥

रनंकि जीन पक्खरीन पौन गौन रुक्कपो ॥

खनंकि धार ठहै प्रहार अंग भंग उल्लटै ॥

सनंकि ग्वास सेसकी फनालि फुंकरै फटै ॥ २ ॥

॥ ३३ ॥ ३४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तमायण के सप्तम राशि में बुन्दी के नृपति बुध
सिंह के चरित्र में जाजवनगर के समीप बहादुरशाह[आलमशाह] और आ-
जमशाह से दुपहर तक तोपों का युद्ध होकर आजमशाह का सारा जाना ?
आजम के पुत्र दीदारवखस का पिता के स्थान में स्वामी होकर लड़ने के वर्णन
का तेरहवां १३ मयूख समाप्त हुआ और आदिसे दो सौ इकावन २५ मयूख हुए ॥
नाराच ॥ यह स्पष्ट ॥ १ ॥ अनंकिइति ॥ यह स्पष्ट ॥ २ ॥ अनंकिइति ॥ छदियो

छनंकि बान लौ उडान आसमान छदयो ॥
 ठनंकि घंट जंग जाम नाग तोम नदयो ॥
 तनंकि रंच खंचरौ प्रतंच चाप टंकरौ ॥
 मनंकि पच्छ भूरि भच्छ गिद्धनी भरप्फरौ ॥ ३ ॥
 चली भली कृपान सानसुद्ध राव बुद्धकी ॥
 अरीन जुद्धकी उमंग राज रंग रुद्धकी ॥
 मय्या अनीक संभगक आजमीक अंगम्यो ॥
 चलै कु चक्र भोगि भोगभोगपै भ्रम्यो ध्रम्यो ॥ ४ ॥
 प्रहार खरगधार मारू लुत्थि लुत्थिपै परै ॥
 चिरै बितंड गंड अंड खंड खंड ठहै भरै ॥
 दिसादिसानमें कृपान विज्जुमान निक्खसी ॥
 धिरै गरूर पूर सूर पिकिख हूर हुल्लसी ॥ ५ ॥
 सुबाजि सोक ओकओक भीरु लोक भगगये ॥
 लरै निघान सखपात इक्करीठ लगगये ॥
 भरै ससुंड गै सुसुंड कंध बंधतै कटै ॥
 अटै सु रुंड गोलकुंड फाटि मुंड उच्छटै ॥ ६ ॥
 छिकै बिछेक बान कं पलान हान बित्थरै ॥
 गिरै उलट्टि सूर पिकिख हूर भरू भरगरै ॥
 जमाति जुगिर्नानकी पिबंत पेय पत्तकै ॥

आच्छादित रस्यो. नागतोम नाग हस्ता तिनको. तोम समूह. भूरि बहुत ॥ ३ ॥
 चलीइति ॥ सानसुद्ध सान खुरसान. तावरिकै नयार. अरीन अरिनकी. राज-
 रंग राजनके लरिषं योग्य रंग संज्ञाम भूमि तामै. रुद्धकी रोकती. आजमी आ-
 जमका पुत्र. कुचक्र भूमिचक्र. भोगि भोगभोगपै भोगी शेष ताके भोग फन
 फनपै ॥ ४ ॥ प्रहारइति ॥ बितंड वेतंड [हाथी] तिनके. गंड कण्ठ. विज्जुमान विज्जु
 प्रमान ॥ ५ ॥ सुबाजिइति ॥ सुबाजि अच्छेबाजी तिनकी सोकसों. ससुंड सुडादंड स-
 हित. गै सुसुंड गै हस्ता तिनके सुसुंड दंतन सहित मुख. कंधबंधतै कलावाके बंधक
 स्थानतै ॥ ६ ॥ छिकैइति ॥ हान त्याग. झूर रुंड. पेय उनके पीये योग्य रुधिर.

किलाकि वीर बावनी ५२ फिरै उमत्त रत्तकै ॥ ७ ॥
 चलै समग खग के कटार पार निकखसै ॥
 सुवीर सीस संचयी गिरीस हुल्लसै हसै ॥
 दरारि वारिजंत्र ज्यों छुलाकि घाय उब्बकै ॥
 अनीक नारि के छइल छोह छाकमैं छकै ॥ ८ ॥
 डुरै विभान सुक्कि दान कुक्कि भुक्कि के करी ॥
 बजंत हेति हेतिकै मनो कि दंड चच्चरी ॥
 जरै बितंड पिठि अंड अद्रिकूट तालज्यों ॥
 बहंत रत्त खाल के बिसाल ताल नालज्यों ॥ ९ ॥
 सिलगि सोर ओरओर ज्वाल जोर संक्रय्यौ ॥
 भयो निसान ध्वान जो दिसा दिसानमैं भ्रम्यौ ॥
 विधाय भानु रेनुको बितान व्योम बित्थरयो ॥
 लखे परै न अप्प पार अंधकार यौ भरयो ॥ १० ॥
 चलचल्ली मही रु सेन आजमी खलभली ॥
 कलकल्ली किलकक भाल ज्वालीकी भलभली ॥
 गिलंत गूद गिहनी फिकारि फिकरी फिरै ॥
 खिलंत कंक स्यार खग धार धारतैं खिरै ॥ ११ ॥
 उडै दुआर वीर यौ तुपकक तोप त्यों चलै ॥
 जरै दुकूल के हठी हकारि सम्मुहे हलै ॥

वीरबावनी धारनकी बावनी ५२ ॥ ७ ॥ चलैइति ॥ सुवीर अच्छे वीर ति-
 नके शीसनके संचयवारे. गिरीस शिव ॥ ८ ॥ डुरैइति ॥ विभान सुधिविना.
 दान भदके कितेक हेति हेतिनके शत्रुशत्रु करिकै. दंडचच्चरी चर्चरीके दंड. पा-
 मरलोग फागनमें लगावैतैं ते. ताल तड़ाग लोक तलाव ताके ॥ ९ ॥ सिलगि
 इति ॥ ध्वान शब्द "ध्वनिध्वानरवस्वनाः" इत्यमरः ॥ विधाय अंतर्धान क-
 रिकै. भानु सूर्यको ॥ १० ॥ चलचल्लीइति ॥ फिकरी अंगाली ॥ ११ ॥ उडैइ-
 ति ॥ दुआर दोऊ तरफ. तुपकक बंदक. दुकूल बख. कालखंड कलजा ॥ १२ ॥

वरखत बानन बिंदु निविड नीरद बनि आयो ॥

सुंडि बीच इहिँ समय घाय गोला लागि घल्ल्यो ॥

इभ पोगर उडिजात चकित चिक्करी भजि चल्ल्यो ॥

गज भजत कुट्टि बरबारगति कट्टि असिय दारुन कलह ॥

हयमेध चरन डारत हलिय सान संडि अति कोप मह ॥१७॥

[तिभंगी]

कोटैस कृपानी चंडचल्लानी घंग घल्लानी सेर घटा ॥

तंडै रचि ताली जुगिगनि जाला भूरि भटाली करत कटा ॥

काली किलकारैँ बाग बकारैँ चंडचिकारैँ कुंभी करैँ ॥

अति पान इसारैँ बांध दिसारैँ मुंडन मारैँ प्रेत परैँ ॥ १८ ॥

असवार उल्लैँ कंकट कटैँ पूर पल्लैँ सूर सजैँ ॥

पन्नग फन फटैँ अवनि उल्लैँ बंव बिकटैँ बंव बजैँ ॥

बुंदीपतिवारी काल कशगी तेग दुधारी वेग चली ॥

कोटैस अवाहन उग्र उछाहन मांड मदारन बीर बली ॥१९॥

गिद्धी गहि अंती अग्रभ उडंती झोक झिलंती चंग निभा ॥

सूगन सिर छाया रचन रचाया बेस बनाया छत्र विभा ॥

सुंडिन भरि कुंकेँ गोरव मुंकेँ चोसठि चुंकेँ नख नसा ॥

हल्लीसक मंडैँ तालिन तंडैँ खाय अखंडैँ बीर वमा ॥ २० ॥

सवन. नीरद मेध. डभ हस्ती. पोगर लुहाको अग्र. चकित भीत. चिक्करी चि-
कारी करिकै. अतिकोपमह अति बहुतहै कोप कांथ अज मह उत्साह वा तं-
ज ताता. ऐसा 'बहत्तजल्लुत्सवं चे' तिहैमः ॥ १७ ॥ त्रिभंगी ॥ कोटैसइति ॥
कोटैस कोटापुरतो ईश ताकी. भटाली भटनकी आली पांक्त. कुंभी कुंभी
[गज]. अतिपानइमारैँ पान पीवतो रुधिरको ताके इसारेसे ॥ १८ ॥ असवारैति ॥
कंकट शवच. बिकटैँ धा बिकट. यहां बहुवचनमें ऐकाहै ॥ १८ ॥ गिद्धीइति ॥
अंती अग्र. लांके अंत. चंग निभा चंग दागजको पची. जाक डोर बांधिकै वा
लक डहाधै ताले. निभ आकार. छत्रपिमा छत्रकी तरह. कुंकेँ यहां बहुवच-
नमें ऐकाहै. चुंकेँ चोकरै. हल्लीसक स्त्री जननको मटलाकार कृत्य ॥ 'मंड-
लेन तु यन्मृत्यं स्त्रीषां हल्लीसकं तु तत्' इतिहैमः ॥ यसां हृदयको गूद. 'हृन्मेद-

गहुगहु बढि बानी भटन भयानी धार धपानी मार मचै ॥

ढालन लागि ढल्लरि के असि कल्लरि राव सु झल्लरि भाव रचै ॥

कटि हड्ड करकैं फिप्फ फरकैं तेग तरकैं एक उडैं ॥

चाटन असि चडैं खंडैं खंडैं छारि चितैं गिरत गुडैं ॥ २१ ॥

बिनु मत्थ दुवाहे संभु सिराहे चांडिय चाह उडि अरैं ॥

ढोलैं गज डारे फुटि नगारे पत्थ हठारे वत्थ परैं ॥

गजदंत उपारैं कोप करारैं मीरन मारैं वार बढैं ॥

कटि धार कृपानन गात सु गानन वीर विमानन केक चढैं ॥ २२ ॥

जुगिनि जय जपैं कासर कपैं बाजि बिभ्रपैं बेग बली ॥

लुत्थिन भुव छावैं वीर बढावैं मिच्छु न मावैं छोह छली ॥

कोटेस विनाँ हय छंडि महा गय रुडि बडे रय रागि रूप्यो ॥

गज बाजि गहम्मह कूह कढक्कह ब्रंब ब्रह्मह लोक लुप्यो ॥ २३ ॥

[दोहा]

कोटापति किलकत परथो, आलम दल सिर आय ॥

करि सु संध चंडासि कुल, तुट्यो असिन अघाय ॥ २४ ॥

स्तु बपा वसे' त्यमगः ॥ २० ॥ गहुगहुइति ॥ धपानी धपायवेवारी. केकितेक. असि खड्ग. कल्लरि कालरेवहैकैं. राव शब्द. झल्लरिभाव देवालयभैं वाद्य विशेष ताकी तरह. फिफ लोके फेफरा. तेग खड्ग. तरकके तडाकैं. एक केवल 'एक संख्यातरे श्रेष्ठ केवल तरयात्रिचि' तिमेदिनी ॥ चितैं चेतनोके. गुडैं गुड हस्ती की सिलह. तहां बहुवचनमें अंकार है ॥ 'गुडकं हस्तिस्त्राहः' इतिमेदिनी ॥ ॥ २१ ॥ चिनुइति ॥ दुवाहे दोऊ हस्तों से लुप्य प्रहार करैं ते. गजडारे गजन के पटके. पत्थहठारे पत्थ पार्थ ताकी तरह हठवारे. मीरन मीर जवन विशेष तिनकों. गात गवत. सुगानन अच्छे गाननों ॥ ॥ २२ ॥ जुगिनिइति ॥ जपैं कहैं. बिभ्रपैं विशेष करिकैं भ्रपैं. वीर वीर रस. मिच्छु मृत्यु. नमावैं नहीं मावैं. छोहछली जोभसों उफनी हुई. यहां देशरूढियों मिच्छुको खालिंग कियो. गय गज. रय बग. गहम्मह धनी भीर. मरुदेशीय प्राकृत. लुप्यो लुप्तभयो ॥ २३ ॥ दोहा ॥ कोटाइति ॥ सुसंध श्रेष्ठ है संधा प्रतिज्ञा जाकै एसो ॥ २४ ॥ पट्पा-

(पट्टपात)

तजि मतंग भुव कुहि कहि आसि बर धकि कुप्यो ॥

नट मलंग नचि अंग रंग अंगद जिम रूप्यो ॥

रतन भोज रयिमल मग्ग उज्जल करि मानी ॥

तिलतिल धागन तुट्टि भयो अमरन अगवानी ॥

पैंतीसशृंगंम सिखवत प्रकट धारत तदपि न धर्म धर ॥

चंडासि बंस रन भजि चलन नन सिक्खो पिकखो निडर ॥२५॥

चक्ख्यो कछु चितहनिन कछुक गिद्धेन निज किन्नो ॥

कछुक लदयो बिसकंठ कछुक कालिय लागि लिन्नो ॥

खाय कछुक खित्ताल डमरुधर ताल डकारयो ॥

भन्वि जुगिनि कछु भाग बहुत अनुराग बढारयो ॥

अटि अटि हट्टुहु फग्गुन उपस फटि फटि फोजन उप्फन्यो ॥

कोटा नरेस कटिकटि असिन बटिबटि बहु पोसक बन्यो ॥२६॥

(दोहा)

कोटापति अरि भुव परत, आजम सुत अकुलाय ॥

पट्ट मतंगज पिछिकै, आयो बलहि बढाय ॥ २७ ॥

इतिश्री वंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायण सप्तमराशौ बुन्दीप-
तिबुधसिंहचरित्रे निगूढनालीयन्त्ररत्नोत्थापिताब्जवहादुरशाहसै-त ॥ नजिहात ॥ पैंतीसशृंगंम सिखवत चहुवान विना और क्षत्रियनके पुगतन
और लूनन मय आधुनिक लोक गणनामें पैंतीस ३५ वंश हैं ते. युद्धमें बहुत
ठोर भजि जावत हैं योही उनको भजियो सिखावनों है ॥ २५ ॥ चक्ख्यो
हन्ति ॥ बिसकंठ शिख तिनमें. खित्ताल क्षेत्रपाल. अटिअटि अटन करिकरिकै.
फटिफटि जुग वट्टवट्टैकै. अथवा फाटि फाटि बटि बटि सधनको वट्टैकै. पोषक
पोषिववागो ॥ २६ ॥ कोटाइति ॥ पट्टमतंगज मुख्य हस्ती ॥ २७ ॥श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायण के सानवें राशि में बुन्दी के स्वामी
बुधसिंह के चरित्र में, तोषों का युद्ध रोक कर बहादुरशाह का सेना के घाँड़े
उठाने में तरवारों से युद्ध होकर कोटाकेरज/राससिंह के काम आने का

न्यासिसमरकोटाधीशरावरासिंहमरणां चतुर्दशो मयूखः ॥ १४ ॥

आदितां द्विपञ्चाशोत्तरद्विशततमः ॥ २५२ ॥

॥ पट्टपात् ॥

घटिय पंच दिन रहत परत उदत कोटापति ॥

आजमसुत इभ पिछि गुमर मंडत रावन गति ॥

आपो आहि जिम विसिख विसिख बरसत कुंकारव ॥

नरउर दतिया नृपति वाम दक्खिन सजि संजव ॥

दब्बत उभीर बीरन दुसह बुद्धियपति उप्पर बडिग ॥

मानहुं अवाचि धुंमडत सुदिर चंड अनिल उत्तर चडिग ॥ १ ॥

डक त्रंयक डकडकत घान लकलकत सल्लभ सम ॥

छिछि रुदिर छकछकत घाय धकधकत दमद दम ॥

वेतालक बकबकत धकत अच्छि हठि हेरत ॥

उवर कुट्टि फकककत गिद्ध सकसकत लोभ गत ॥

कोसन दुरंत दारुन कलाह मार मंडलग्गन मचिग ॥

मानहुं विगंचि नूतन मनुज रस अचिज्ज मोहित रचिग ॥ २ ॥

धगनि धुज्जि धममसत सम कसममत कमठ सम ॥

हर दिग्गज हिय डुलि भुलि थहगत प्रलय भ्रम ॥

कटि कंकट नागोद टोप बाहुल अरि दूकन ॥

रथया दिसदिस रचत वेध विमिखन बंदूकन ॥

बनि दूत भूत दुह्मादेम विविध रिम रचाय लावत जुरन ॥

चउदहवां १४ मयूख हुआ और आदि से दो सौ बावन २५२ मयूख हुए ॥
पट्टपात् ॥ घाटियपंचडानि ॥ विमिख विना मिखाकां न्नेच्छ गह अर्थ. विसि-
ख नीर, सजव मयूख है जय बेग जाकां ऐमां. सुदिर मेघ 'वनजीधनसुदिर'
इतिहैमः ॥ अनिल पवन ॥ १ ॥ डकत्रंयकइति ॥ सल्लभ कीटचिह्न. लोके टोडी.
दम स्वाम. घायनी. उवर उदर. मंडलग्ग मंडल; अ म्वद्ध. तिन करिकें. विगंचि
ब्रह्मा. "बुद्धिगो विरिचिर्द्धयणां विरिचः" इतिहैमः ॥ रसअचिज्ज अक्षुभनरस.
लाकरिकें ॥ २ ॥ धरनिइति ॥ सम सहित. रथया गली. रिम क्रोध, जुरन ल-

छल इहिँ अनेक कटि भट छकत मिच्चु चहत न चहत सुरन ।३।
 गज पय खंडन जोरि रचत उप्पर नर रुंडन ॥
 सजि सुंडिन उच्छीस मंजु कंदुक नृप मुंडन ॥
 गुड पक्खर गद्दी रु बंधि बहु अंत बरत्तन ॥
 इहिँ मंचक आरूढ भात कालिय अधप्प मन ॥
 लौ तिहिँ पिसाच बाहक महत चहत उछाहक महमहत ॥
 जित तित सुगंधि तित ते सजव रुहिर मिष्ठ हेरत रहत ।४।
 भटन भूत कहूँ भिरत कहूँक कातर आक्रंदत ॥
 करभ कहूँक कल्लरत गिरत गज कहूँक चिक्करत ॥
 कहूँक अश्व कटि परत कहूँक घायल भट घुम्मत ॥
 कहूँ कबंध उठि लरत कुहु कुणपन कहूँ भुम्मत ॥
 कहूँ कंक मेद कवलन करत कहूँ सिचान भारत अपट ॥
 ॥ ५ ॥

कहूँक नैन कटि परत कहूँक कटि भौह फदकत ॥
 उत्तमंग कहूँ उडत गहत हर उड मोदगत ॥
 कालखंज कहूँ कटत बुडि बुक्कन कहूँ बुडत ॥
 कहूँ फुल्लत हिय कंज मधुप मानस उडि उडत ॥

कर पय विभिन्न तरफत कहूँक मनहु मीन जल तुच्छ मत ॥

तसरिपेको. छलयह या भूतनके छलसों. मिच्चु सृष्ट्यु. सुरन सुरयो॥३॥ गजप-
 षड्ति ॥ पय पद. उच्छीस उसीसा. कंदुक छोटे तकिया. गुड गजनिलह. गद्दी
 बिछोना. तिहँ वाकालीकों. महमहत महकत. सुगंध सीठे रुहिरको जानिये
 ॥ ४ ॥ भटनइति॥ करभ ऊंट. कबंध बिना मस्तक क्रियावंत लूनीर. कुहु कु-
 ष्ट. लोके खाल. कुणपम कुणप सृष्टक तिनके ॥ ५ ॥ कहूँकइति ॥ उड ऊर्ध्व ऊप
 रही. मोदगत मोदप्राप्त. कालखंज कलेजा. 'कालखंजं कालखंडं कालेयं कालि-
 यं पकुदि' तिहैसः ॥ मधुप अमर. सोही मानस मन. उडिउडत वा हियकंजहिं
 सों. यामैं कत गत, छमत रमत, ए अंत्याऽनुप्रास राखे. या रीति सर्वत्र एकसों
 लौकें जितनैं अक्षरनको छन्त्याऽनुप्रास खदायैं तितनैं अक्षरनको पद जुदो क-
 रिलेनों. प्राचीन भाषा के ग्रंथनमें

दीदारवस्त्रस बुधसिंह दुव २ रसिक प्रान बाजिय रमत । ६ ।

रुहिर रंग बढि बहत छेद छत्तिय पिचकारिन ॥

डफ मटल हिंडिमिय तान मंडन सिव तारिन ॥

पात गुग्ज पुट्टलिय पुट्टप अंगार प्रकासत ॥

खग्ग खग्ग मिलि खिगत बूग अर्वाँर विभासत ॥

जुगिनि जमानि पननारि जिम आलापन झुकि उच्चरत ॥

दीदारवस्त्रस बुधसिंह दुव २ कलह फग्ग कोतुक करत । ७ ।

पहुमि छत्र कटि परत जरत चामर ज्वालानल ॥

वगत वार अछछरिय भगत हेतिन कृसानु झल ॥

कोसन कलह दुगंत बाढ असि वर इक वज्जत ॥

बहु निखंग विकखरत चाप तुटत सर सज्जत ॥

तरफन प्रमत्त हिंदुव तुग्ग आलम बल जालम जन्यो ॥

नवत्रय खिलहार बुंदिय नृपति आजमसुत बढि अंगम्यो ॥ ८ ॥

॥ तौटकम् ॥

धर संगर आजम पुत्त धक्यो, गज उप्पर लौहन छाक छक्यो ॥

दतियापति आदि कगीन चढे, बहु अग्ग प्रवीर उमर बढे । ९ ।

रसघोर निमानन ध्यान रच्यो, विदिसान दिसान कुमानु मच्यो ॥

धिन मत्त, सत्तान पत्तान, समीर उमीर, हम्पादित अनुवास रागो सो लच्छ-
न पीन जानिये ॥ १ ॥ "अथ जने के भयावश्यं लक्षाघने स्पर्शेण तु ॥ आगर्हणेऽन्व
योऽवस्थाद्वयानुमान एव गत ॥" इति सारिण्यदर्पणे ॥ ६ ॥ रुहिर रंगरुणि ॥
पातस्यो न्यसनेन, मटल, रुहिर रंग, हिंडिमिय पिचकारिन छान्नी
नये धारदने, छेद मेरी पल्लवार्थ निन पानिके, मटल मटल, पाचविशेष, ता-
मिन गान्धन हि, पुट्टप पुट्टप, पननारि मेरगा ॥ ७ ॥ पहुमिछत्र ॥ हेतिन द्वा-
रजन, कृसानु रजिनि, निपेण नरकत, सखसखस पानको संधान करत, जाध-
न पानको, पल्लव रजिनिपानिक, नरकय नर नरकयार्थ, अंगम्यो लपके सोररी
रिथो ॥ ८ ॥ तौटकम् ॥ धारदनि ॥ धारदने झुपिन भयो ॥ ९ ॥ रुहिर ॥ रंग
नयनत, पत्तनि धारद, रागो, भरी रीति कोट मरे, वर धारतु, पै मट, एकपेठ न-
यद नये धारद मरी भरी, मरिण्य कारिण, बढे न्यायदात्र रागो पाद ॥

मिलि सूर झरें पर पै न मुरें, जिम तक्किय सहिय बाद जुरें ॥१०॥
 खग धारन धार समार खिरें, पलभोजन चोसठि संग फिरें ॥
 नटके बट वहे भट के लटके, झटकेन झरें बटके बटके ॥ ११ ॥
 किलकारत भै करि भूत भिलैं, हलकारत खित्तरपाल खिलैं ॥
 उमडे असि बिज्जुव अंकनसे, घुमडे दल भट्टवके घनसे ॥ १२ ॥
 गहि भैरव नर्तककी गतिकों, मिलि बंचत कालियकी मतिकों ॥
 करितुंड ससुंड स्वसुंड कसैं, बनि आखुग संकर अंक वसैं ॥१३॥
 सुत जानि प्रचुंबन ईस सजैं, भय धारि तबैं किलकारि भजैं ॥
 छह्दजोजन फोजन भुम्भि छई, अति पाउस जानि घटा उनई ॥१४॥
 पवमान दिगुत्तरको प्रसरयो, सु मनौं घन पौसक होय सरयो ॥
 चहुधौं तरवारिनकी बमकैं, ति दिपैं मनु बिज्जुवकी दमकैं ॥१५॥
 मिलि भूखन ओज इरम्मदलों, लागि सिंजित दहुरके नदलों ॥
 बहु झंड सु रोहित चाप बनैं, तनितारव दुंदुभि ढाल तनैं ॥ १६ ॥

सहिय शाब्दिक. (शब्दशास्त्र व्याकरण ताकं पाठक ॥१०॥खगधारइति ॥ सुमा-
 र देशीप्राकृत. अतिशय करिकैं. चोसठि यहां युद्धमें १४ जोगनी ऐसे सर्वत्र
 जानिये. बट मार्ग. झटकेन झटके, देशीप्राकृत, खझाऽऽघात तिन करिकैं ॥११॥
 किलकारतइति ॥ भै भय. असि खड्ग. अंकनसे अंक चिन्ह तिनसों. बिज्जुरी
 के चिन्हनसे यह अर्थ ॥ १२ ॥ ॥ गहिइति ॥ नर्तककी नर्तक बहुरूप स्वांग आ-
 नित्येवारो ताकी. बंचत ठगत. करितुंड करि हस्ती तिनके तुंड मुख. "तुंडमा-
 स्यं मुखं वक्त्रं" मितिहैमः ॥ ससुंड सुंडा सहित. स्वसुंड अपने छुटमें. आखुग
 गणेश. आखु उंदर ताकरिकैं चलियेवारे. "द्वैमातुरो गजास्यैकदंतौ लंबोदरा-
 खुगौ" इतिहैमः ॥ अंग लोके गोद तामें ॥ १३ ॥ १४ ॥ पवमानइति ॥ पवमा-
 न पवन. दिगुत्तरको उत्तर हिमाख्यकी तरफकी दिशा ताको. आजमशाह गो-
 लासों उख्यो ताके पहिलेही पलख्यो हो स्यो. सरयो चरयो. यहां प्रसरयो यस्-
 रयो ए अंत्यानुप्रास हैं. ति ते ॥ १५ ॥ मिलिइति ॥ इरम्मदलों इरम्मद मेघकी
 प्रभा ताके तुल्य 'मेघज्योतिरिरम्मदः' इत्यमरः ॥ सिंजित सुषणको शब्द. "सू-
 षणानां तु सिंजित" मित्यमरः ॥ झंड झंडे. रोहित सीधे उंद्रधनुष. 'तदेव शत्रु
 रोहित' मित्यमरः ॥ तनितारव तनित स्तनित्र मेघको निर्घोष ताके तुल्य आ-
 रव शब्द 'स्तनितं गर्जितं मेघनिर्घोष' मित्यमरः ॥ १६ ॥ करकावलिइति ॥

करकावलि हड्डन खंड किरैं, फटि टोप उडे बकपंति फिरैं ॥
 चक्कैं जो इरिंगखालों चिनगी, उद सोनित बुद्धि भरैं उमगी ॥१७॥
 रन जाजव पाउस यों बिरच्यो, सुगलान चुहानन दाव मच्यो ॥
 भट खगन के कटि सुंढि भ्रमैं, अहि ज्यौं जनमेजय अध्वरमैं ॥१८॥
 करकैं कटकावलि कोच कटैं, फरकैं कटि कालिक बल फटैं ॥
 तरकैं तरवारिन हड्ड तुटैं, छरकैं छिति छिंछिन रत्त छुटैं ॥१९॥
 लटकैं असवार तुखार लरैं, पटकैं गहि इक्कहिं इक्क परैं ॥
 चटकैं कटि टोपनकी चटकैं, छटकैं भट बाजिन लोह छकैं ॥२०॥
 गटकैं पल गिद्धनि प्रेत गिलैं, खटकैं असि खुप्परि खंड खिलैं ॥
 अटकैं कि रकावन पाप अगे, भटकैं भट गज्जहि छोह भरे ॥२१॥
 लागि कोसन जंगनकी लरसैं, बरखा नरअंगनकी बरसैं ॥
 सननंकत प्रोथन प्रान सरैं, अननंकत आयुध अगि भरैं ॥२२॥
 तननंकत तेगनकी तरकैं, थरकैं रननंकत लोह थकैं ॥
 रन होत सुहूरत भान रह्यो, बलतैं बल लोह सुमार बह्यो ॥२३॥

[दोहा]

बल बल लोह सुमार बढि, घोर मचिग धमसान ॥

करका लोके गड़ा तिनकी. आवली पंक्ति. किरैं बिखरैं. जु इरिंगख खंचोत.
 लोके जिगनियाँके तुख्य. 'खंचोतो ज्योतिरिंगखः' इतिहैमः ॥ यहाँ जकार
 विशिष्ट ओकारको प्राकृत तात्पर्य जानिये. यातैं खगनको ग्रास भयो नहीं
 यथा ॥ 'इहिआरा बिहुजुआरा ओदुद्धा. अयखामिलिआवि लहुलहवजणसंजो-
 ये परे असेलं पिसबिहास' सितिपिंगलो नागराजः ॥ उद जल. यहाँ नगी
 जगी अंत्याऽनुप्रास ॥ १७ ॥ रनेति ॥ अध्वर 'यज'तामैं ॥ १८ ॥ करकैंइति ॥
 कालिक कलेजा. बल लोके छाती. रत्त रक्त ॥ १९ ॥ लटकेइति ॥ तुखार उत्तम
 हय विशेष. "ताजिकाश्च खुरासाणास्तुपाराश्चोत्तमा हयाः" इति नकुलपांडवः ॥
 चटकैं चटक खंड ताके बहुवचनमैं ऐकार है ॥ २० ॥ गटकैंइति ॥ कि कितेक.
 ॥ २१ ॥ लागिइति ॥ लरसैं लरस. पंक्तिको पाचक. देशीप्राकृत ताके बहुवचनमें
 ऐकार. प्रान हृदयमैं रहिबेवारे प्रान विशेष. सरैं चलैं ॥ २२ ॥ २३ ॥ दोहा ॥

आजमसुत अंधार भो, चंडकिरन चहुवान ॥ २४ ॥

(पट्टपात)

घटिय दोय २ गवि गहत प्रथित आजम सुत पिल्लयो ॥

नरउर दतिया नृपति ठानि हरवल दल ठिल्लयो ॥

कुक्क परिग चहुँकोद टुकक टुककन दल तुट्टत ॥

हग्न मोह हुलाम छोह सूरन असु छुट्टत ॥

निज साह भाग रनगति नव प्रवल नीति फल पक्कयो ॥

बुंदिय नरस पावक विसम तून आजम दल तक्कयो ॥ २५ ॥

(मुक्तादाम)

घटानिभ फोजन भो घममान, उतैं जवनेस इतैं चहुवान ॥

वजैं अमि हड्डन अड्ड विदारि, किधौ तरु कट्टहिँ कूर कबारि ॥ २६ ॥

अग्यो दतियापनि सम्मुह आय, पग्यो भरि वीर लयो फल पाय ॥

रुप्यो गजनिहहु कूरमगज, सज्यो इत हड्डनको सिरताज ॥ २७ ॥

बढी बुध भूपतिर्का हतबाह, कटे भट और भज्यो कछवाह ॥

धग नभ गंगर गंकुलि धुंधि, लयो नृप आजमको सुत रुंधि ॥ २८ ॥

रुपैं इम जाजव ह्ने दल गरि, अतैं असि अल्लरिल्लौं अनकारि ॥

गडानट नञ्जन मुंडन मोह, करैं किलकारत कालिय कोह ॥ २९ ॥

अकैं विहसैं चउसट्टिहदन अुंड, गचैं अभिवार नचैं बहु रुंड ॥

अौं इकतैं इक वत्थन आय, पैं गज पव्वय ज्यौं पवि पाय ॥ ३० ॥

थरत्थर सुम्मि नलञ्जन थान, लग्यो अहिभोगनको लचकान ॥

कुलालक अक भयो भमि कच्छ, वाञ्छत सूकर दह्व विलच्छ ॥ ३१ ॥

चलहान ॥ अंधार अंधार, चंडकिरन सुरी ॥ २४ ॥ चहुवान ॥ घटियडनि ॥ प्र-

थित विल्लपात ॥ २५ ॥ मुक्तादाम ॥ घडाडनि ॥ गवारि कबारी चनकटे ॥ २६ ॥

॥ २७ ॥ २८ ॥ कोडराडान ॥ लहानट जिय, कोह कोलाहल ॥ २९ ॥ कुहैंडति ॥

असि अड्डन नाके, वाग प्रहार, रुंड विना नस्तमके क्रियावान गुभट 'लंडकवन्धौ

त्वदर्शीपे क्रियायुजि' इतिहेल ॥ पवि नल नाको ॥ ३० ॥ थरत्थरइति ॥ भो-

न फल निनको, कच्छ कच्छय ॥ ३१ ॥ खगइति ॥ विविष्टय स्वर्ग, सूचत-सूच-

लगे अतलादिक कंपत लोक, इतैं अकुलात त्रिविष्टप ओक ॥
 रमें पलचारहु आरुन रंग, सबै इम सूचत सोनत संग ॥ ३२ ॥
 चढयो गज आजमपुन सचाव, धप्यो नृप सम्मुह उद्धत धाव ॥
 कमानन अँचत कानन कानि, तक्षयो इम मारत वानन तानि ॥ ३३ ॥
 लगेँ सर छत्तिन व्है इम लीन, मनौँ बिल सप्प कि संवर मीन ॥
 सजैँ वजि पवन सायक सोक, उडैँ सलभा जिम अँवर ओका ॥ ३४ ॥
 चलैँ असि कुंत बरछिछन चौट, अमूर दुँ बहु हत्थिन आट ॥
 उडैँ बहु अँवर अग्नि अलात, जरी गिरि गिद्वनि चिल्दनि जात ॥ ३५ ॥
 फिरैँ रत्नि फेरव फेन फाल, विबुल्लत कंक उडैँ बिकराल ॥
 कमान फटैँ रु दटैँ कमनैत, पलान कटैँ उलटैँ पखगैत ॥ ३६ ॥
 हरैँ कहूँ पान लरैँ कहूँ दक्कि, जरैँ कहूँ मुच्छ परैँ कहूँ जक्कि ॥
 बरैँ कहूँ हूर भरैँ कहूँ बाढ, गिरैँ कहूँ भात धरैँ कहूँ गाढ ॥ ३७ ॥
 रुलैँ कहूँ मत्त खुलैँ कहूँ रांस, हुलैँ कहूँ हत्थि डुलैँ कहूँ होस ॥
 वकैँ कहूँ पेत छकैँ कहूँ वीर, धकैँ कहूँ ज्वाल दकैँ कहूँ धार ॥ ३८ ॥
 घटैँ कहूँ वाजि बढैँ कहूँ चाव, पढैँ कहूँ वंदि कढैँ कहूँ पाव ॥
 धमैँ कहूँ स्वास नमैँ कहूँ धून, अमैँ कहूँ गिद्व रमैँ कहूँ भूत ॥ ३९ ॥
 रुचैँ कहूँ गीठ जचैँ कहूँ मुंड, रचैँ कहूँ माम नचैँ कहूँ रुंड ॥
 वजैँ कहूँ प्राथ सजैँ कहूँ बाह, लजैँ कहूँ भीत भजैँ कहूँ लाह ॥ ४० ॥
 स्वसैँ कहूँ घुस्मि हसैँ यट संग, वसैँ कहूँ गोय कसैँ कहूँ संग ॥

ना करत. सोनितलंग रुधिरके संगकी ॥ ३२ ॥ चढ्योगजइति ॥ कानि अवाधि
 ॥ ३३ ॥ लगेँसरइति ॥ संगर जल नामै. पत्त्रन अपनै पचन करिकै ॥ ३४ ॥
 चलैँइति ॥ अमूर कातर. अलात अंगारे. जरी दग्ध भई. ॥ ३५ ॥ फिरैँइति ॥
 फेरव अलात. 'फेरांडा फेरच' शिवा' इतिहैमः ॥ फेरन फेरफिरके ॥ ३६ ॥ ३७ ॥
 रुलैँकहुँइति ॥ रुलैँ रचैँ. हत्थि हस्ती लाको. होम ज्ञान ॥ ३८ ॥ चढैँकहुँइति ॥
 यदि धदीज्जत. धमैँ धमन करै ॥ ३९ ॥ मचैँकहुँइति ॥ जचैँ नागैँ. साम उपाय
 विशेष. प्राथ दयमासा. बाह प्रहार. लाह जाय ॥ ४० ॥ स्वसैँकहुँइति ॥ वसैँ

चटै कहुँ सोन घटै कहुँ चेत हटै कहुँ पिक्खि गटै कहुँ हेत ॥४१॥

वहै कहुँ संगि रहै कहुँ धेर, खहै कहुँ भिटि चहै कहुँ खेर ॥

चवै कहुँ उठु फवै कहुँ चाट, अत्रै कहुँ मिच्छु ठवै कहुँ ओट ॥४२॥

भिल्लै कहुँ वार खिल्लै कहुँ भुम्मि, भिल्लै कहुँ घुम्मि भिल्लै कहुँ भुम्मि ॥

लगै कहुँ मोह वगै कहुँ लोह, दगै कहुँ नोप जगै कहुँ दोह ॥ ४३ ॥

गिनै कहुँ घाय बनै कहुँ गाय, हनै कहुँ दोगि भनै कहुँ हाय ॥

चिपै कहुँ सोन लिपै कहुँ चेल, छिपै कहुँ भाजि दिपै कहुँ छेल ॥४४॥

तनंकत चाप प्रपंचन तुष्टि, खनंकत खगग सु मुष्टिन खुष्टि ॥

सनंकत वानन प्रानन संकि, भनंकत पक्षर रोचि भ्रमंकि ॥४५॥

बढे पणवानक नह विहह, महाबल बुद्ध रच्यो अवमह ॥

परयो अरि सेन उपक्रम पूर, सज्यो डम संभर पुंगव सूर ॥ ४६ ॥

थेइथेइ नच्चहिँ उष्टि कबंध, मलप्पहिँ दै कर ताल मदंध ॥

निसादिन जादिन हिन्न अनंत, भिरै गजतैगज मत्त भ्रमंत ॥४७॥

अटै बहु बोति विनाँ अगवार, उलट्टहिँ खुट्टहिँ जान अपार ॥

गिरै इभपालक दारित गत्त, गनौ तरुनै कपि निंद प्रमत्त ॥ ४८ ॥

प्राप्त पावै. मान रुधिरा ॥४१॥ वरुँ कहति ॥ वहै यह मज्जदगीय प्राकृत. उद्धत तासों

लरै. भिटि भिल्लिकै. धेर-धायनी. कुशल. उठु आठ. लांके होठ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥

गिनै कहति ॥ घाय घाय तिनको. सोन रुधिर. चैल बज्ज, 'चेल चेल चतुश्चमू'

रितिठिरूपकोणकारः ॥ छेल यहाँ मेनासुद्धीके शलिक जानिये ॥ ४४ ॥ ४५ ॥

बढेइति ॥ पणवानक पणव वाच विशेष, वानक दानु तिनके. विहह वने अष्ट.

अवमह अवमह. लांके कचरघाण ॥ "अवमहस्तु पीडन" इतिहैमः ॥ उपक्रम

पलायन. "उपक्रमस्तुप्रेभ्योद्राव" इतिहैमः ॥ संभरपुंगव संभर नायक चतु-

वाननमें अष्ट ॥ ४६ ॥ थेइथेइइति ॥ ए दोऊ हृत्यके अनुकार अवह है ॥ यहाँ

थकार विशिष्ट दोऊ प्रकारनको प्राकृत तासों पहिले लिख्यो, या नागराजके

घचनसों पहलव जानिये. निसादिन निसादी हार्थीनके असवार तिन कारिकै.

"हस्तपारोहं सादियन्ता महामात्रनिसादिनः" इतिहैमः ॥ जादिन वादियनमें.

हज हीन. अनंत अगारिभिन ॥ ४७ ॥ अटैइति ॥ बोति अथ. "गंवर्वो वा स-

सर्वाति" गिनिहैमः ॥ इभपाल लांके महावन. "गजाजी इभपालकाः" इतिहै-

मः ॥ दारितगत दारित फाट गत्त गात्र जिनके पेसे, निंद निद्रा ॥ ४८ ॥ पतर-

पताकिन होत सदेड प्रपात, बड़े तरु ताल सकीस कि बांत ॥
 किरैं बहु मस्तक लस्तक कटि, गिरैं गुन तुष्टि फिरें धनु फट्टि ॥ ४९ ॥
 खिरैं बिखरैं सर छोरि निखंग, जथा विलतैं बहु भौम भुजंग ॥
 इली असिधेनुन बुढि अपांग, किधौ मलयाचल नागकुमार ॥ ५० ॥
 बहैं परिघातन कुंत सबेग, त्रिसीमक संगि रु पट्टिस तेग ॥
 अरैं कति अश्वन मंडि निघुह, करैं तुमुलाहव के नट कूढ़ा ॥ ५१ ॥
 परैं फटि दुंदुभि भेरिन पूर, गरज्जहि के नर मंडि गरूर ॥
 परैं भरि बग कबी रुलपान, कटैं खुर प्रोथ हयच्छद कान ॥ ५२ ॥
 रची इम संभर जाजव रारि, हनी आरे सेन घनी हलकरि ॥
 घटा गज मध्य सु दै घन घाय, लयो नृप आजम पुत निराय ॥ ५३ ॥
 भयो जवही असु आजम भंग, सबै नृप तथ टुटै तजि संग ॥
 भज्यो इक १ भूप रु द्वे २ हनि भिटि, लयो अत्र भौजमको सुत
 • • • बिटि ॥ ५४ ॥

किनइति ॥ पताकिन पताकी पताका रसवेवारे: लोके निहौ निचरदार. तिन
 के. सदेड ध्वजा दंड सहित. तरुताल तालवृक्ष सकीस भीम बानर तासहित
 "कपि: कीम: पञ्चभंगल:" इतिहैम: ॥ कि जनां. अतंभवम. गौ: किरैं बिखरैं.
 लस्तक धनुषकी सुप्री. "डांलासो लस्कीस्योति" इतिहैम: ॥ गुन प्रत्यंचा.
 ॥ ४९ ॥ खिरैंबिखरैंइति ॥ सर तीर. भीम भयुकर. इली लोके कुशी ॥ "स्यादि-
 ली करवानिके" तिहैम: ॥ असिधेनु खुरी. "छुरिका चासिधेनुका" इत्यमर: ॥
 ॥ ५० ॥ बहैंइति ॥ परिघातन परिघ लोके लोहांगी. "पघि: परिघातन" इत्य-
 मर: ॥ त्रिसीमक त्रिसूल. "सर्वदा तोमरे अखं शंखौ लूल त्रिशीर्षक" इति
 हैम: ॥ अरैं लरैं. अश्व घोरेनकां. निघुह सुजघुह. "निघुहं वाह्युहं स्या" दि-
 त्यमर: ॥ तुमुलाहव संकुलित युद्ध ॥ ५१ ॥ परैंफट्टिइति ॥ पूर मसूह. गरूर
 देशीप्राकृत गर्व. बग घोरनकी बाग. कबी लंगाम. हयच्छद घोरेनके स्कंध.
 "हयस्कंधो हयच्छद" तिहारानली ॥ ५२ ॥ रचीइमइति ॥ घटागजमध्य हस्ती.
 नही घटाके बीच. "बहुनां घटना घटे" तिहैम: ॥ सु सो ॥ ५३ ॥ भयोइति ॥
 अनु प्राण. आजम लुप्तपट्टीक. नृप अगिराज. इक नरवरको राजा भोजसिंह
 कलवाह भज्यो. ल अर. द्वे २ कोटाकां महाराच रामसिंह अरु दत्तियाको राजा
 दलपतिभिद् कुंदला २ ए दोऊ तिनकां. भिटि मिलिकैं. भिटि घेरि ॥ ५४ ॥

चढ्यो गजहो अब द्वारि बिचारि, रची सुत आजम बानन रारि ॥
 सु संभर हेति सचै वरसाय, दयो अरि निबल पारि दयाय ॥ ५५ ॥
 हुती हय ७ लख चमू हमगीर, भयो अवसान न इच्छु भीर ॥
 रच्यो जिहिं बिग्रह भुगन राज, वचै वह तित्तिरि क्यौं लहि बाज ॥ ५६ ॥
 फितूर दफै करि मंडल केरि, घनी निज सेन लयो गज धेरि ॥
 कियो तउ बानन जंग कराल, कहौं लग जोर करै लहि काल ॥ ५७ ॥
 अधर्म न होत सहायक अंत, लगे बुध आयुध मर्म मिलंत ॥
 भयो सुत आजम मोहि बिमान, चलयो समतंगहि लौं चहुवान ॥ ५८ ॥
 (दोहा)

घटिय इक खिल रवि रहत, घल्लिय संभर घत्त ॥

आजमसुत इभपाल सह, मोहित भयउ प्रमत्त ॥ ५९ ॥

इभ समेत लौं तिहिं अधिप, उमडि मुकामन आय ॥

साहवहादुर डिग सजव, पत्र बिजय पठवाय ॥ ६० ॥

सरिता इक डिग सजतहो, सफरन बडिस सिकार ॥

आयो डेरन बिजय सुनि, कहत बुद्ध जयकार ॥ ६१ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी-
 पतिबुधसिंहचरित्रे आजमप्रधानान्तरमनेकार्यराजाजमसेनापृथ-

चढ्योइति ॥ सु सो (दीदारबख्श). संभर बुधसिंहनें. हेति शब्द ॥ ५५ ॥ हुती
 इति ॥ हय सात ७ लाख. अवसान अंत समय. भीर सहाय. भुगन भोगिबे
 को ॥ ५६ ॥ फितूरइति ॥ फितूर यावनी. झूठो गर्व. लुप्तद्वितीयाक. दफै याव
 नी नष्ट. तउ तथापि. काल सृष्ट्यु ताहि ॥ ५७ ॥ अधर्मइति ॥ अंत अवसान
 तामें. मोहि स्मृति वहैकें. बिमान बिना भान. समतंग मतंग मातंग वाको ह-
 स्ती तासहित ॥ ५८ ॥ दोहा ॥ घटियइति ॥ खिल शेष. लोके बाकी. घत्त घात.
 इभपालसह महाबत सहित ॥ ५९ ॥ इभसमेतइति ॥ अधिप राजा (बुधसिंह).
 सजव बेग सहित ॥ ६० ॥ सरितेति ॥ सफरन सफर मत्स्य तिनकी. बडिस
 बनसी लोके बालिया ताकरिकें ॥ ६१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुन्दी के पति बुध-
 सिंह के चरित्र में आजम के मरे पीछे अनेक आर्य राजाओं का आजम की

गभवन १ नरवरनृपकूर्मगजसिंहरत्नपलायन २ दत्तियाभूपदत्तपति
सिंहमरणा ३ आजमात्मजदीदारवखसमूर्छितदशाग्रहर्षा पञ्चदशो
मयूखः ॥ १५ ॥

आदितस्त्रिपञ्चाशोत्तरदिशततमः ॥ २५३ ॥

(दोहा)

आजम दत्त अवलन वज्यो, पुथक लोभगति पाय ॥

अब टरिटरि रत्न उत्तरे, आत्मन दत्त विच आय ॥ १ ॥

(पट्टपात्)

चरमाचल रवि चतुत चित्त प्रमुदित नित्यचारन ॥

आजम सुत तजि मोह बहुरि बुल्लयो थित बारन ॥

को जिरयो दत्त कोन सु सुनि इन कहिय कुसीलित ॥

जिरयो आत्मनसाह कटक वाको तुम कीलित ॥

दीदारवखस यह सुनि दुचित होदासौ सिर हनिमरिय ॥

अति लोह छदित दूधपाकहू परि प्रमत्त असु परिहरिय ॥ २ ॥

[दोहा]

जिहिँ उपपर आजम सुवन, मरिग फोरि उतमंग ॥

बारन वह सोनित दमत, आयुध भेदित अंग ॥ ३ ॥

लेना से जुदा होना १ नरवर के राजा नजसिंह फंछवाहे का बुद्ध से भागना
२ दत्तिया के राजा दत्तपतिसिंह बुंदेजे का मारा जाना ३ आजम के पुत्र दी-
दारवखस का मूर्छित दशा में पकड़ेजाने का पन्द्रहवाँ १५ मयूख समाप्त हुआ
और आदि से दोसौ प्रेषन २५१ मयूख हुए ॥

दोहा ॥ आजमइति ॥ अवलन अथावधि. पुथक् जुदो ॥ १ ॥ पट्टपात् ॥ चरमे-
ति ॥ चरमाचल अस्ताचल ताके ऊपर. "अस्तस्तु चरमदमाभू" दित्यसरः ॥
प्रमुदित प्रमोदित लोभकरि. मोह लूच्छाकों. सु सो. इन बुधसिंह के सुभटों
नें. कुसीलित यह संवोधन है. छोटे सीतवारे ते. कीलित बद्ध. लोके कैदी
प्रमत्त मोहित. असु प्रान. परिहरिय तजिय ॥ २ ॥ दोहा ॥ जिहँ उपपरइति ॥
सोनित रुधिर. दमत उगदात ॥ ३ ॥ आजमइति ॥ जेदर दावनी आभूषण.

बिबुधालय झल्लरि घंट बजे, सुरभीन स्ववच्छन मेलसजे ॥ १०॥
 दिन सूकन धूकन हूक दई, चित चकन चौंकि तजी चकई ॥
 चिलकारिन पिंगलिका चहकी, निधिसी निसचारन धारनकी ॥ ११॥
 चहुँमोरन चोरन चाय चढे, बहु जारन दारन मोद बढे ॥
 दिनचार भपार अगार दुरे, फवि ब्योम नछत्रन चित्र फुरे ॥ १२ ॥
 जुरि दीप निवासन भास जगी, दहनोदय चुलिहन हेति दगी ॥
 रचि गायक गोरिय गान रहे, गनिकान उमंगि भुजंग गहे ॥ १३॥
 रस पीय स्वकीयन हीय रजे, परकीयन तीयन पीय तजे ॥
 भय मुद्ध नबोढन चित भरघो, हिय हृच्छय मध्यन बोध हरघो ॥ १४॥
 बसि प्रोढन केलि त्रपा बिसरी, क्रुध धारि अधीरन रारि करी ॥
 छमि आगस धीरन नाह छले, चढि चाव बिदग्धन दाव चले ॥ १५॥

चावनी संतारमें. विरंज बिना रंज. बिबुधालय देवालयमें ॥ १० ॥ दिनसूक-
 इति॥ चिलकारिन चीत्कारी वाके शब्दको अनुकरण है. "चिलीतिसान्ते बि-
 लीलिते" दीप्तवसंतराजः ॥ पिंगलिका कोचरी. की करी. कहीं नहीं अन्त्यानु-
 प्रास है ॥ ११ "चहुँइति ॥ भपार भगवारे ॥ १२ ॥ जुरिदीपइति ॥ जुरि ज्व-
 लित वहैकै. दीप दीपक. निवासन घरमें. भास कांति. "भाहृच्छविद्युतिदीप्तयः"
 इत्यमरः ॥ दहनोदय दहन अग्नि ताके उदय करिकै. चुलिहन चुल्ही चुल्ही लोके
 चूल्हा. रसोई पकायधेके तिनमें. हेति श्ताल. "अर्चिहेतिः शिखा लिया" मि-
 त्यमरः ॥ गोरियगान गोड़ी रागिनीको गान. दनुमान कपिराजके मतमें तथा
 आधुनिक गायकनके मतमें गोड़ीको समय सायंकाल है. भुजंगगहे भुजंगम
 अपने पति ॥ "भुजंगो नखिरापति" रितिहैमः ॥ १३ ॥ रसपीयइति ॥ पीय
 प्रिय. अपनी परिणीत. अपनी परिणीत नायक. तत्संबंधी रस शृंगार तानें.
 स्वकीयन स्वकीया नायिकानको. हीय हृदय. रजे रंजित भये. मुद्धनबोढन मुद्ध
 सुग्धा. नबोढन नबोढा तिनके. चिह्न नहीं लज्जा तानें. "मंदाक्षं नहील्लपा त्री-
 ष्ठा" इत्यमरः ॥ हृच्छय काम तानें "विषमायुधो दर्पककामहृच्छयाः" इतिहै-
 मः ॥ मध्यन मध्या नायिकानके ॥ १४ ॥ बसिप्रोढनइति ॥ प्रोढन प्रोढा नायि-
 कानमें. केलिसवहैकै. त्रपा लज्जा कां. क्रुध क्रोध कां. अधीरन अधीरा नायि-
 कानमें. छमिआगस आगस अपराध ताकां. छमि क्षमाकरिकै. धीरन धीरा
 नायिकानमें. नाह नायक. बिदग्धन बिदग्धा परकीया नायिका विशेष तिनमें.
 वाच्यबिदग्धा १, क्रियाबिदग्धा २ ॥ दोऊ तिनके. दाव चातुर्यसों नायकको

रस भूति स्वदूतिन ऊति रची, वयवारिन लच्छितिकान बची ॥
 कुलटा तजि गेह सनेह कमी, जियमें सुदितान सु प्रीति जमी ॥ १६ ॥
 अनुपुब्बसयानन भीति अरी, पिय संग सहेट न भेट परी ॥
 परभोगदुखीन सखीपरखी, हिय रूप रु प्रेमवती हरखी ॥ १७ ॥
 पतिप्रोषितकान बिलाप पाथो, क्रुध मानस खंडितिकान करथो ॥
 दिन टेक निबाहि अवेँ दरिता, तजि मान उठी कलहंतरिता ॥ १८ ॥
 ऋगि विप्रसलब्धन सोक झिलयो, मन सेट सहेट न आनि मिलयो ॥
 उत्कंठिनि पुच्छि निदान अली, लखयो मग बासकसज्जलली ॥ १९ ॥
 भर दर्प अधीनइनान भज्यो, अभिसारिनि वेस नयो उपज्यो ॥
 बहु गंध कुबेलनको बिकर्यो, ससिहू ब उदैगिरितैँ निकर्यो ॥ २० ॥
 ससिके बसि ओषधि पोष लहयो, गहकाय चकोरन मोद गहयो ॥
 संकेतादि सूचना करिथेके ॥ १५ ॥ रसभूतिइति ॥ रसभूति रसहीमें भूति वै-
 भव जिनकै ऐसी. स्वदूति स्वयंदूतिकाननैँ. यह नायिका प्राचीनननैँ लिखी
 नहीं. अरु चमत्कार विशेष हू नहीं तथापि आधुनिक भाषाकविनके मतानु-
 सार लिखिदीनी है. ऊति क्रीड़ा. वयवारिन वयवारी अपने समान अवस्था-
 वारी सखी तिनसों. लच्छितिका लक्षिता नायिका. नवखी नहीं छिपी रही.
 सनेह नेह सहित. कमी खली. सुदिता सुदिता नायिकानकै ॥ १६ ॥ अनुपुब्बइति ॥
 अनुपुब्बसयानन अनु है पूर्वमें जिसकै ऐसी सयानन सयाना जे अनुसयाना
 तिनके. भीति बास संकेतके नासादिककी. सहेट संकेत तहां. भेट मिलाप.
 परभोगदुखीन अन्यसंभोगदुखितता तिननैँ. सखीपरखी यहां विपरीत लच्छ-
 नासों याकी शत्रु जो नायकसों संभोग करिआई सो दूती जानिये. रूपरुप्रेम.
 वती रूपगर्विता प्रेमगर्विता ए दोऊ ॥ १७ ॥ पतिप्रोषतिकानइति ॥ पतिप्रोषतिका
 प्रोषितपतिका तिनके. क्रुध क्रोध. मानस मन. खंडितिकान खंडिताननैँ. दरिता
 डरी हुई ॥ १८ ॥ ऋगिविप्रइति ॥ ऋगि दूती प्रकुपित व्हैकै. विप्रसलब्धन वि-
 प्र सहित लब्धा जे विप्रलब्धा तिनकै. मनसेट मनस इट, मन ताको इट स्वा-
 मी ऐसो नायक. उत्कंठिनि उत्कंठिता तिननैँ. पुच्छि पूछयो. निदान आदि-
 कारन नायकके अनागमको. लखयो लखयो. मग मार्ग. बासकसज्जलली वा-
 सकसज्जा ललनानैँ ॥ १९ ॥ भरदर्पइति ॥ भर भार. दर्प गर्व ताको. अधीन
 इन अधीन वशीभूत है इन पति जिनकै ऐसी जे स्वाधीनपतिका तिननैँ. अ-
 भिसारिन अभिसारिका तिननैँ. कुबेलनको कुबेल कुबलय लोके गहूल तिन-

भुवर्षेँ इम होत । नसीध भयो, रस मीतन साध नयो रखयो ॥२१॥
 थित निंद प्रजा व्यवहार धके, जिम संजम द्वंद्विय जोगिनके ॥
 गति या भति रति सु विरति नई, भल प्रसाधुदूरत बेर भई ॥२२॥
 बिरुदारन बंदिनको बिथरणो, क्रम अणिग तहाँ नृप नित्य करयो ॥
 छकतैं कसि आयुध जोम छल्यो, चढि बाहू रुसाह हजूर चलयो ॥२३॥
 इत आगम प्रात लुभे अहके, चटकी चरनायुधहू चढके ॥
 दिक प्राचिय आरुन रंग दिखी, लागि अंबर सुनि ए रोचि लिपी ॥२४॥
 लघु विष्टि नछत्रन निष्टि लहैं, चित ज्यों ताज भोगन ग्यान चहैं ॥
 भजिकैं तम अदि सुफान भरयो, जिम तत्प लहैं पुन पद अरयो ॥२५॥
 दुति पूर जरूर इतैं दमकयो, बढि अक उदैगिरिपैं चढयो ॥
 छकमैं तिहैं बेर नरेस छयो, नति अर्जुन साह समीन भयो ॥२६॥

(दोहा)

साहबहादुर तिहैं समय, बैठो आम बनाय ॥
 नजरि निछावरि खेत निज, परिकरतैं अय पाय ॥ २७ ॥
 सुनि आगम हुंदीसको, दाह अटा बढि देखि ॥
 प्रमुदित आयो तखत पुनि, लोभ विजय द्विज लेखि ॥२८॥

(मनोहरम्)

एतेमैं नरेस आय अंदर प्रवेस होत,
 उमडि नवीन कीनी सूचना अछूती है ॥
 जाय कारि नजरि निछावरि मिसल खेत,

को. व अय ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ इतआमहति ॥ अहके दिनके. चटकी
 चिरी. चरनायुध झुझुड. दिक दिशा. प्राचिय प्रानी पूर्व. आरुन अरुन लाल
 रंगकी. सु सो. रोचि कांति ॥ २४ ॥ लघुविष्टिहति ॥ भोगन आनंद स्पर्शादि
 विषयनको. तम अंधकार. तत्पलहैं तत्त्वज्ञान अर्थ ॥ २५ ॥ दुतिपूरहति ॥ दुति
 कांति. ताको पूर समूह. अक अर्क सूर्य ॥ २६ ॥ दोहा ॥ साहबहादुरहति ॥
 आम बही सभा ॥ २७ ॥ सुनिआगमहति ॥ दाहअटा काठकी घुरज. प्रमुदित
 अधिक प्रसन्न. पुनि फिरि. लेखि देखिकैं ॥ २८ ॥ मनोहरम् ॥ एतेमैंहति ॥ नरे-

पादशाहका बुर्जसहको पखशीस देना] सप्तमराशि-पोहसमयख (२९९९)

निकट बुलाय साह बखसी बिभूतीहै ॥
दोऊहाथ हियसों लमाय सुसिकाय कह्यो,
बरद दर्दा तैं रखी खूब बजवूतीहै ॥
बिलीपुर वादी मैं लही जो यह बादी वीर,
मेरे महाराजराजा रावरी लपूतीहै ॥ २९ ॥
(पादाञ्जलकम्)

महाराजराजा इस अकरुया, भूपहिं छिनक लाय हिय रख्यो ॥
पुनि बखसीस करी बिलि उपति, रामनृपति यह सुनहु रफिख रति ३०
कोटादिक नोबन ५४जल नैन, कहत नाम कछु कछु हम चीन ॥
कोटा १५पुरि आहारापटनि २, मागरोनि इतीजो दुर्गम मनि ॥ ३१ ॥
साहाबाद ४४सेरपट ५थानक, अरु बडोद ३५जेनत ५अगिथानक ॥
छवडा ८अरु गूगेर ९दुर्गबर, पंचपडा ७१०पडा ५११डग १२नगर ॥ ३२ ॥

॥

॥ ३३ ॥

॥

॥ ३४ ॥

॥

॥ ३५ ॥

रा बुनसिक. पंद्र गिरायवेके पध. लुचगा जागहारी. अछती और काहूके
आवयेसों री गुमना बरी बरी ऐली. आगमनाके मारियेबारे अरु दीदार-
पखश को सुछित समयेमल जीलित गरि मयावनेबारे दुर्गसके आययेतैं नकी-
ममें कीनहीं. विश्वीरि मित्रो: कैरम ॥ ३२ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

भयं प्रत्यकर्ता [सुर्वगत] की रक्षा: दीक्षा यत्नं तत्र ही लज्जते किंही तो हमने प्रत्यकर्ता के रखेहुए
जम के अनुसार यों की त्यों यत्नं किम ही है. अरु बला के आगे हम [चाकठ कृष्णसिंह] अपने रखे
हुए मम के अनुसार. मूल कठिन स्थलों पर यत्नं केरु नीचे दीक्षा लिखते हैं.

॥

॥ ३६ ॥

॥

॥ ३७ ॥

साह सिक्ख डेगन दिन्नी जब, विन्नति नृप करजोरि करीं तब ॥
 कूरम नृप जयसिंह हगगिय, पै सेवक मंगी तस जागिय ॥ ३८ ॥
 ताते तिहि संबंध अरज यह, आजम दोस आदि जखसी वह ॥
 जो आर्यस तिहि ढिग तो जाऊँ, सेवक करि अप्पन समुक्ताऊँ ॥ ३९ ॥
 सुनि यह अरज साह कछु अकखैं, तव संबंध महर हम रक्खैं ॥
 पुर आमैर सु तो फिरि पावहु, अब तव संग भलैं ढिग आवहु ॥ ४० ॥
 यह सुनि नृप कूरम ढिग आयो, प्रदेर घाय सिक्खत वह पायो ॥
 तीर एक शुज सव्य लग्यो तस, जाजवरन इक कंठ लाइन जस ॥ ४१ ॥
 सो जम भया बुद्ध सरनागत, छकि कूरम पाये केवल छत ॥
 तिन सिक्खत जायरु नृप तक्कयो, करि मनुहारि माद हिय छक्यो ॥ ४२ ॥
 कही बहुरि नृप नेह कहाई, आजग बसि आमैर विहाई ॥
 आलम सेवा अबहि अराधहु, स्वर्स्व जोर दुल्लभ सुख साधहु ॥ ४३ ॥
 ठेरा अब आलम दत्त मंडहु, खगि कछु दिनन विपति दुखखंडहु ॥
 कूरमकों लौ संग यहै कहि, चाहवान निज दत्त आयां चहि ॥ ४४ ॥
 अप्पन ढिग कछुवाह उतारै, सालक जागिय विनय सम्हारै ॥
 विधि इहि कदेन अपूरव वित्तयो, जाजवरन दुल्लभ नृप जित्यो ॥ ४५ ॥

१. उनकी पहिल की मुक्त से मगाई (मंगनी) हुई है ॥ ३८ ॥ २. आजम के पक्ष में होने के अपराध से ३ पावल है ४ काजा होवे तो ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ५. तीर के घाय को तपाता छुआ ६ पाग शुज पर ॥ ४१ ॥ ७. घाय हो पाया, चज नहीं पाया ॥ ४२ ॥ ८. पहिल के पक्ष (पक्षि) बुधसिंह के बल से ॥ ४३ ॥ ९. गहन करके ॥ ४४ ॥ १०. साला कहि नोई ने अधिक नभवा थी ११. इस रीतिसे-अपूरव (पक्षे नहीं हुआ ऐसा) नाश १२. राजा बुधसिंह ॥ ४५ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबु-
धसिंहचरित्रे मूर्च्छास्थितश्रुतस्वान्तिकपराजयकरिपल्याणप्रहारभग्न
मस्तकदीर्घावस्थशमरणा १ दीदारवस्त्रशयजगतकोटिमुद्रालंकारो
पेतविजयप्राप्तिबुधसिंहबहादुरशाहसेवानिवेदन २ द्वितीयदिनप्रभातय-
वनेन्द्रबहादुरशाहसभासमागतबुधसिंहार्थमहारावराजपदसहितद्वा-
पञ्चाशत्प्रान्तयवनेन्द्रप्रदान ३ बुधसिंहालमसेनासमानीतामैराधी-
शजयसिंहालमसेवकत्ववर्णनं षोडशो मयूखः ॥ १६ ॥

आदितः चतुःपञ्चाशोत्तरद्विशततमः ॥ २५४ ॥

(पट्टपात)

मरत साह अवरंग मंत्र मंडिय रहोरन ॥

अब न साह अवेनीस सूढ तस सुत प्रजाद मन ॥

इहि अंतर यह पिक्खि आनि बंभन अगार सन ॥

पहु तखत जोधपुर नृपहि रक्खहु निसंक मन ॥

यह मिसल अठउपजाय उर द्विज गृहते तव आनि हुते ॥

नृप अजितसिंह रक्खयो तखत सबन तत्थ जसवंत सुत ॥ १ ॥

(दोहा)

इत आलम लहि विजयअरु, प्रभुपन सत्य प्रमानि ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुन्दी के भूपति
बुधसिंह के चरित्र में, मूर्च्छा से सचेत हुए दीदारवस्त्र का अपनी पराजय
सुनकर हाथी के होदे से मस्तक फोड़ कर भरना ? दीदारवस्त्र के हाथी पर
फोड़ रुपयों के भूषण सहित विजय मिलने का बुधसिंह का बहादुरशाह की
सेवा में निवेदन करना २ दूसरे दिन बुधसिंह के प्रभात ज्ञमय बादशाह बहा-
दुरशाह की सभा में जाने पर बादशाह का बुधसिंह को महारावराजा के
पद का साथ वाचन परगने देना ३ आमैर के राजा जयसिंह का बुधसिंह का
आलम की सेना में लाकर आलमशाह के सेवक बनाने के वर्णन का सौलह-
वां १६ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ चौपन २५४ मयूख हुए ॥

राठोड़ों ने १ सलाह की २ भूमि का पति बादशाह अब नहीं है उसका सूर्ख
पुत्र उन्मत्त बनवाला ३ ब्राह्मण के घर से ४ जोधपुर के उमरावों की गणना
में मुख्य आठ मिसल (बैठने की जगह) मानी जाती हैं १ शीघ्र ॥ १ ॥ २ ॥

मृत जखमिन आजम भटन, नृपन हरामी जानि ॥ २ ॥
 इहिं अंतर मरुंधर खबारि, पहुँची विविध पुकारि ॥
 रठोरन जसवंत सुवै, दयो तखत वैठारि ॥ ३ ॥

[पट्टपात]

यह सुनि आलमसाह कहैर हिंदुनपर कुप्यो ॥
 प्रलय रुद्र जिम प्रबल लज्ज घोरज सब लुप्यो ॥
 दिय आयस तिहिंवेर नगर आमैर १ रु नरउर २ ॥
 कोटापत्तन ३ बहुरि पुरी दतिया ४ रु जोधपुर ५ ॥
 आमैर आदि चउ ४ राज्य ये आजम दोख उतारि लिय ॥
 रठोर हुकम बाहिर रहत धन्य सीस अमरख धक्रिय ॥ ४ ॥
 समैर जित्ति यह साह रहिय चउ ४ मास भुसावर ॥
 इस दसमी १० अवदात अनखि सारवंधर उप्पर ॥
 पीरन जारति करन बुल्लि अजमैर वहानौ ॥
 करि फोजन दरकुंच आय आमैर रहानौ ॥
 बुधसिंह हिंतु जयसिंह तब कहिय एह परिनय समय ॥
 इत साह संग अनवधि गमन बहिनि भई इत उचित बय ॥ ५ ॥

(दोहा)

साह जेर करि जोधपुर, करिहै दक्खिन जेर ॥
 बेग न पुनि आवन वनै, व्याहनकी यह वेर ॥ ६ ॥
 लग्गी हमरी खालसै, रजधानी रन रोस ॥

१ सारवाड़ देश की २ पुत्र को ॥ ३ ॥ ३ क्रोध करके अथवा जुलम के साथ हिंदुओं पर क्रोधित हुआ ४ आमैर को आदि लेकर चार राज्य तो आजम के पक्ष में होने के दोष से उतार लिये और राठोड़ पहिले से ही हुकम बाहिर थे इसकारण ५ सारवाड़ पर क्रोध में ६ लला (प्रज्वलित हुआ) अथवा क्रोध करके सारवाड़ पर चला ॥ ४ ॥ ७ जाजब का युद्ध ८ आश्विन ९ सुदि दशमी १० सारवाड़ पर क्रोध करके ११ से १२ परनने (विवाह करने) का १३ बिना अवधि १४ विवाह के उचित अवस्था ॥ ५ ॥ ६ ॥ १५ लड़ाई करने के क्रोध

*अंतहपुर सामोदगढ, रक्खयो भटन भरोस ॥ ७ ॥
 तातैं द्वैरदिन सिक्खलै, वहिनी लेहु विवाहि ॥
 संगहि अैं साहडिंग, चित्त बहुरि भुव चाहि ॥ ८ ॥
 बुंदियपति यह सुनि कहिय, सुनहु अरज मम साह ॥
 मुलतान जु संबंध भो, जानत ध्यानपनाह ॥ ९ ॥
 कूरम नृप यातैं कहत, सहर निकट सामोद ॥
 द्वैरदिन अंतर लगनहै, विरचहु व्याह विनोद ॥ १० ॥
 तातैं जो आयसैं लहौं, आऊं करि उदबाह ॥
 द्वैरदिनकी यह सुनि सुदित, सिक्ख दई तब साह ॥ ११ ॥
 संभर कूरम सिक्खलै, आये दुहुं सामोद ॥
 बनि दुल्लह बुधसिंह नृप, सद्धि लगन सविनोद ॥ १२ ॥
 जाँमि वडी जयसिंहकी, अमरकुमरि अभिधान ॥
 बुंदियपति हिय हित विरचि, व्याही विहित विधान ॥ १३ ॥
 इत आलम अजमेरपुग, पहुँच्यौं गजब गरूर ॥
 बुंदियपति आमैरपति, आये बहुरि हजूर ॥ १४ ॥
 (पट्पात)

इम आलम अजमेर आय पूजन पीरन करि ॥
 रचि मारुन पर रीस हेल्यो दरकुंच अलसैं हरि ॥
 अजितसिंह सुनि एह नमित मरुदेस नरेसुर ॥
 बेग आय कर बंधि परयो पायन अलहैनपुर ॥
 इम साह धनै किय निज अमल सत्य रक्खि जसवंतसुव ॥

से राजधानी (आमैर) खालसे होगे * जनांना ? डमराचों के भरोसे
 ॥ ७ ॥ २ भूमि लेने की चाह से ॥ ८ ॥ ३ मुलतान में थे तब ॥ ९ ॥ १० ॥ ४
 आज्ञा ५ विवाह ॥ ११ ॥ १२ ॥ ६ वहिन ७ नाम ८ उचित रीति से ॥ १३ ॥
 ९ पहन घमंड से ॥ १४ ॥ १० मारवाड़ों पर ११ चला १२ आलम मिटा कर
 १३ आलमवाचास नामक नगर में १४ मारवाड़ में १५ जशवंतसिंह के पुत्र को

उपपरि उफान साँगर उपम दक्खिन पर गज्जयो गरुवा ॥ १५ ॥
 रहि कछुदिन अजमेर सज्जि संभर सेनापति ॥
 दक्खिनपर दरकुंच गव्व धरि चलिय जनक गति ॥
 होय दुर्ग चित्तो ग हेठ दत्तउर मिलान दिय ॥
 यँह रानाँ अमरेस प्रनति मनुहारि पठाविय ॥
 हिंदवान सीस मिच्छन हुकम तामें कुल रानन टरयो ॥
 जवनेस तदपि निकसत निकट प्रनति द्रव्य पठवने परयो ॥ १६ ॥

[दोहा]

अमररान अप्पन अनुज, तखतसिंह अभिधान ॥
 देवसिंह वेधमपुर पँ, दुव२पठये सनिदान ॥ १४ ॥
 इक्कअनेकपँ च्यारि४हय, साइ काज दिय संग ॥
 च्यारि४बाजि चहुवाँन हित, इम पठवाय अभंग ॥ १८ ॥

(षट्पात्)

अट्ट८बाजि गज इक्क१भेट अमरेस पठाये ॥
 तखतसिंह अरु देव लै रु दँसउर दुव२आये ॥
 बाजि च्यारि बुधसिंह हेत नतिपुँव्व निवेदिय ॥
 मंडि त्रिविध मनुहारि जानि जाम्पि प्रमोदि जिय ॥
 पुनि कहिय साँहहित रान प्रभु हय हत्थिय पठये हुत्तासि ॥

साथ रख कर वहाँ से १ उपड़ कर २ सखुद्र के बहाव के ३ भाँति ४ पहुँत (आ-
 री) ॥ १५ ॥ ५ चढ़वाण बुधसिंह को ६ गर्व ७ पहिले इसका पिता औरंगजे-
 ब गया था उसी रीति से ८ चित्तोड़ के नीचे होकर ९ मंदसोर खुकाव किया
 १० अमरसिंह ने ११ विशेष जझ होकर १२ हिन्दुस्थान के ऊपर मलेच्छों के
 हुकम से १३ रानाओं का कुल ही बचा है १४ तोभी १५ भेजना पड़ा ॥ १६ ॥
 १७ अपना छोटा भाई १८ नाम १९ पति २० कारण सहित [अपने देश में
 आये हुए बड़ों को भेट देनी चाहिये इसकारण से] ॥ १७ ॥ २० हाथी २१ बु-
 धसिंह के लिये, 'अभंग' यह महाराणा का विशेषण है ॥ १८ ॥ २२ मंदसोर
 नामक पुर में २३ नज्जता पूर्वक २४ बुधसिंह को बहिन का पति जान कर २५
 बादशाह के लिये २६ प्रसन्न होकर

मिलवाय हमहिं यह भेट अव* विदित निवेदहु समय बसि ॥ १९ ॥
दोहा-सुनि संभर तिन्ह संग लै, जवनईस छिग जाय ॥

मिलवाये दसतूर मित, कस सलाम करवाय ॥ २० ॥

सीसोदन अकरखी सबहि, छुति जु कड़ाई रान ॥

आलस अंगकार किय, छुति रु भेट सनिदान ॥ २१ ॥

बुंदियपति करि सिक्ख तब, लै तिन्ह डेरन आय ॥

नृप कूर्म रठोरहु, लीन्हे उभय बुलाय ॥ २२ ॥

अजितसिंह अगमिंहको, इक संभर अवलंब ॥

पुच्छिय मंत्र नरसंप्रति, कहिकहि किति कंदंब ॥ २३ ॥

[पट्टपात्]

वैदहु वत्त बुंदीस आय रुकत हम आतुर ॥

लियउ कुप्पि जवनेस छिन्नि आभैर जोधपुर ॥

नहिं निवाहि अव सकत बिभव गज बाजि विमैन अति ॥

स्रोत खफरै जिय साह गहत दिनदिन उलटी गति ॥

सुनि यह नरेसँ अक्खिय उचित बाँसर कछुधीरज बहँहु ॥

सेवन बढाय कछु साहको गत सही सु निजनिज गहहु ॥ २४ ॥

बुंदियपतिको हुकम साह दलौ माँहिं सवनसिर ॥

सीसोदन यह पिक्खै जानि जौमिप जग जाहिर ॥

रान सुभैटे राउत्त देवसिंहह बेघस पति ॥

* प्रलिका ॥ २१ ॥ १ बुधसिंह २ यादशाह के पास ३ रीति के अनुसार ॥ २० ॥ ४ नव्रता वा स्तुति-कारण सहित अर्थात् राणाओं ने पहिले नव्रता और भेट कभी नहीं की थी इस कारण से ॥ २१ ॥ ५ आभैर का राजा कछवाहा जयसिंह ७ जोधपुर के राजा राठोड़ अजीतसिंह का ॥ २२ ॥ बुधसिंह का ही आधार था ८ बुधसिंह से १० कीर्ति का लम्ब ॥ २३ ॥ ११ कहीं १२ हम आनंद रुकने से १३ पीड़ित हैं १४ वदास १५ जल के प्रवाह में मच्छ के समान [बहते हुए जल में मच्छ उलटी ही जाता है] १६ बुधसिंह ने कहा १७ दिन १८ धारण करो ॥ २४ ॥ १९ यादशा-ह की सेना में २० देखकर २१ पहिनोई २२ महाराना का दमराव देवसिंह

संभर प्रति करजोरि बिहित अक्खिय यह बिन्नति ॥
 करि नेह गेह पावन करहु मंजु विवाहहु जाँमि मम ॥
 सुनि यह नरेस स्वीकार किय सिक्ख बिमंगिय साह सम ॥

[दोहा]

दस बाँसकी सिक्ख दिय, साह बिदित सनमान ॥
 अजितसिंह जयसिंहसौं, तब अक्खिय चहुवान ॥ २६ ॥
 बेघम व्याहन जात हम, तुम रहि साह समीप ॥
 मन न गिनहु कुमहर महर, उर बिचारि अवनीप ॥ २७ ॥

[पट्पात]

सुनि कूरम रहोर दुहुन अक्खिय सनेह सधि ॥
 साह कितवैके संग अवहु जेहैं रेवाँवधि ॥
 इहिं अंतर कछु होय ततो रहिहैं संगति सर ॥
 नहिंतो अहेँ मुररि अप्प करियो कछु उप्पर ॥
 यह सुनि नरेस पुनि उच्चरिय यह उचित न तुमकोँ अवहि ॥
 जोलों बिबाहि आऊँ सजवै तोलों पुनि रक्खहु दितहि ॥ २८ ॥

[दोहा]

इम प्रबोधि बुंदिय अधिप, मन जय जुँववन मत्त ॥
 दसउरतैं दरकुंच करि, पुर बेघम हुत पैत्त ॥ २९ ॥
 पुँती अनुपमसिंहकी, फूलकुमारि अभिधान ॥
 देवभ्रातैं सबिनय दई, बुद्धहिं बिहितैं विधान ॥ ३० ॥

बान तक्क मुनि इक्क १७६५सक, पुशिखाम माधव मास ॥

१ सुंदर २ बहिन ३ मांगी ४ बादशाह से (यहाँ 'सम' शब्द 'सं' का वाचक है)
 ॥ २५ ॥ ५ दिन की ॥ २३ ॥ १ अकृपा और कृपा ७ हे राजाओं ॥ २७ ॥ =
 छली [डग] के साथ ६ नर्मदा नदी पर्यन्त जावेंगे १० साथ चल कर ११ वेग
 सहित ॥ २८ ॥ १२ समझाकर १३ जाजब के युद्ध की जय और जोवन से मन
 में भस्म होकर १४ प्राप्त हुआ [गया] ॥ २९ ॥ १५ पुत्री १६ नाम १७ भाई देव-
 सिंह ने १८ उचित रीति से ॥ ३० ॥ १९ वैशाख ॥ ३१ ॥

बुधसिंह का कांटा लेने का कागज भेजना] सप्तमराशि-सप्तदशमयूख (३००७)

चुंड़ा उति व्याही चतुर, बुंदियपति सबिलास ॥ ३१ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीप-
तिबुधसिंहचरित्रे दृष्टयवनेन्द्रराज्यदौर्बल्यमारवाठक्षुराजितसिंहयो-
धपुरपट्टाभिषेचन १ श्रुतमरुदेशोदन्तक्रुद्धयवनेन्द्राजममित्रत्वापराध
हतामैरकोटानरउरदतिगाराज्ययोधपुरप्रयाणा २ हतयोधपुराल
मशाहदक्षिणादेशगमनं सप्तदशो मयूखः ॥ १७ ॥

आदितः पञ्चपञ्चाशोत्तरद्विशततमः ॥ २५५ ॥

[पट्टपात]

चोवन ५४ गढ जब खाह दये जाजव रन जित्तत ॥

कोटाहू तिन माँहिं नृपहिं दिन्नों अरिबित्तत ॥

जय उद्धत चहुवान नाँहिं सम बिसम विचारयो ॥

भ्रातन भुव लारि लेन प्रथम दल उतहि हकार्यो ॥

कैंगर पठाय लिखि अप्प कर बेघम सन बुंदिय नगर ॥

करिलेहु प्रथम कोटा अमल भट मंत्रिय सम्मति समर ॥ १ ॥

यह कैंगर हुत बंघि मल मंडिय इत बुंदिय ॥

जोधराज परधान बनिंक बयवृद्ध प्रपंचिय ॥

धावरे गंगाराम सूर सुभटन इकत करि ॥

कोटा उप्पर कटक बेग मंडिय वीरन बरि ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुन्दी के भूपति
बुधसिंह के चरित्र में बादशाही का निर्बल देख कर मारवाड़ के उमराओं
का अजितसिंह का जोधपुर की गद्दी पर बिठाना, मारवाड़ की खबर सुनने
से बादशाह का क्रोधित होकर आजम के साथी होने के दोष से आमैर,
कोटा, नरउर, दतिया इन चारों राज्यों को खालसै करके जोधपुर पर चढ़ाई
करना २ जोधपुर को खालसे करके आलमशाह के दक्षिण में जाने का सप्त-
हवां मयूख समाप्त हुआ और आदि के दोसौ पंचपन २५५ मयूख हुए ॥
१ बुधसिंह का २ शत्रुओं का नाश होने पर ३ सेना ४ भेजी ५ कागज [पत्र]
६ अपने हाथ से उसे युद्ध में सलाह करके ॥ १ ॥ ९ पत्र १० चनियां ११ धाऊ

सुहुकम्म बंस कनकैसे सुत जोगीरामहिं मुख्य किय ॥
यह वीरधीर हड्डन उमगि चलि सन्धारि चतुरंगिनिय ॥२॥

[दोहा]

कोटापति जाजव मरघो, तासै तनय नृप भीम ॥
बेसतरुन लौ पट्ट बल, सो न तजत निज सीम ॥ ३ ॥
बालकृष्ण निज व्यास अरु, फतेबंद कांयथ ॥
बुंदिय पठये भीमनृप, करन साम नय कथ ॥ ४ ॥
आय दुहुँन किन्नी अरज, कांटा इक्षन लेहु ॥
मुलक ओर सबही नजरि, निज गिनि घरहु सनेहु ॥ ५ ॥
नाथाउति नृपमात तव, अरज न मन्ती एह ॥
हिंदुनके दिन पत्तरे, उपजत लोभ अछेह ॥ ६ ॥
तमँकि तथ दोऊरसचिव, पछे निज पुर पत्त ॥
भक्ती भूपति भीमसौ, रन मंडहु अनुरत्त ॥ ७ ॥
इत बुंदियतै उमँडि दलँ, चम्मलि उत्तरि चँडै ॥
गंजन जोगियराम गो, भिरत अँध भुजदंड ॥ ८ ॥

(मुक्तादाम)

सज्यो उत भीमँ महादँल सूर, गज्यो इत जोगियराम गरूर ॥
कँचोदियखेट मिले दुव आय, दये दँल दोउन बाँजि उठाय ॥९॥
बजी रन गीठँ मची धमचक्क, चलझल छोगिधँ लगि लचक्क ॥

? कनकसिंह का पुत्र २ सेना ॥ २ ॥ ३ उल रामसिंह का पुत्र भीमसिंह
तरुण अवस्था में था तो भी ॥ ३ ॥ ४ राजा भीमसिंह ने नीति के कथन से
मिलाप करने को भेजा ५ अपने जान कर ॥ ५ ॥ ६ बुधसिंह की माता ने
॥ ६ ॥ ७ तहाँ क्रोध करके ८ कहा ६ युद्ध में अनुरक्त होकर युद्ध रचो
॥ ७ ॥ १० सेना ?? भयंकर (यह यातो सेना का विशेषण है अथवा चाम-
ल नदी का विशेषण है) १२ आकाश से ॥ ८ ॥ १३ भीमसिंह १४ बड़ी सेना
१५ कचोदीखेड़ा में १६ सेना में १७ घोड़े उठादिये ॥ ९ ॥ १८ चल पूर्वक प्रहार
अथवा निरंतर प्रहार १९ भूमि चलायमान होकर रुकने लगी

कोधपुर जैपुर दोनों राजाओं का पछि चकना] सप्तमराशि-अष्टादशमयूख [३००९]

खटकिय हँडन हँडन खगग, मचकिकय पब्वय लौ डगमगग ॥१०॥

बडेबल भीम करी हतबाह, कटे बहु बुंदिय सेन सिपाह ॥

तिलतिल तुट्टिग स्वामिय काम, परयो कनकाउत जोगियरामा ॥११॥

दयो सय बुंदिय सेन बिगारि, जयो नृप भीम हजारन मारि ॥

उतँ सु कबंध रु कूरम नत्थँ, गये दुव मेकलजा लग सत्थ ॥१२॥

तथाँपि न साह भयो अनुरत्त, चलयो दरकुंचन जात उमत्त ॥

वहै सरिता तय साह उतारि, फिरे दुव भूपति डेरन जारि ॥१३॥

मिलयो नृप रान इहाँ अनुरत्त, उदैपुर द्वेदरकुंचन पत्त ॥

इते दुलही नृप बेघम व्याहि, चलयो जवनीधिप सेवन चाहि ॥१४॥

लयँ त्रय रानिन साँरै संग, मिलयो जवनेसहिँ धारि उमंग ॥

गयो दरकुंचन दक्खिन साह, सजे दल सब्बलँ सूर सिपाह ॥१५॥

(दोहा)

कामवखस निज भ्रातहो, दक्खिनधर रखवार ॥

भागनगर बीजापुरँपँ, हुव तिहिँ सिर हुसियार ॥१६॥

विक्रमनृप परमारभो, उज्जइनीपुर ईस ॥

ता पीछँ नृप भोज भो, धारानगर अधीस ॥ १७ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमराशौ बुन्दीप
तिबुधसिंहचरित्रे कोटारावभीमसिंहस्यकोटाविजयार्थप्रस्थितबुन्दी
सैन्यनिरसनमष्टादशो मयूखः ॥ १८ ॥

१ हाडों के खड्ग हाडों पर खटके ॥१०॥ २ तूटा (मारा गया) ॥११॥ ३ बिजई हुआ ४
भीमसिंह ५ कछवाहों का नाथ (पति) ६ नर्मदा तक साथ गये ॥ १२ ॥ ७
तोभी = अनुकूल ८ उन्मत्त १० वह नर्मदा नदी ॥ १३ ॥ ११ बादशाह को
सेवन की इच्छा से ॥ १४ ॥ १२ बुधसिंह १३ सबल (बलवान्) ॥१५॥ १४ पति
॥ १६ ॥ १७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुन्दी के भूपति
बुधसिंह के चरित्र में कोटा के राव भीमसिंह का कोटा विजय करने को
गईहुई बुन्दी की सेना को नष्ट करने का अठारहवां १८ मयूख समाप्त हुआ

आदितः षट्पञ्चाशोत्तरद्विशततमः ॥ २५६ ॥

(दोहा)

इन लग हिंदुन अदरयो, छकि उचित रैन छोभ ॥
 इन पिच्छै नय धरम तजि, लग्गे केवल लोभ ॥ १ ॥
 पृथ्वीराज चुहान नृप, जयचंदह रठोर ॥
 इनलगहू कछु अनुसरी, हिंदुन धरम हिलोर ॥ २ ॥
 तिनपिच्छै तुरकान हुव, निज नय धरम निधान ॥
 पीढिन कछु अंतर परत, छंडो तिनहु कुरान ॥ ३ ॥
 इत बुंदियपति अदरिय, कोटाउप्पर कोप ॥
 इत आलम रन अंकुरयो, लाज धरम करि लोप ॥ ४ ॥
 कामबखस आलम अनुज, अगैँ जिहिँ अवरंग ॥
 भागनगर बीजापुरह, सूबा दिय हित संग ॥ ५ ॥

॥ षट्पात् ॥

तुरकन दिन बिपरीत आय आलम तिहिँ उप्पर ॥
 धर दक्खिन धमचक्र सजिय बीजापुर संगैर ॥
 बुधसिंहहिँ बलईस विरचि अति कोप बढारयो ॥
 कामबखसकोँ पकरि सुखँ आगँस बिनु मारयो ॥
 बप्पके दये छलकरि कुँबिधि लिप बीजापुर भागपुर ॥
 सूबा सम्हारि सजिय अमल आलम अनय उमंगि उर ॥ ६ ॥
 इत कूरम रठोर आय बिरहित अति आतुरै ॥
 मेकलजासन सुररि उरैरि दुव पतै उदैपुर ॥

और आदि से दोसौ छप्पन २५६ मयूख हुए ॥

१ युद्ध में उचित क्रोध करना इन तक ही रहा २ नीति ॥ १ ॥ २ ॥ अपनी नी-
 ति और धर्म में निधान ऐसे ३ यवनों का राज्य हुआ ॥ १ ॥ ४ युद्ध में खड़ा
 हुआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ५ युद्ध ६ सेनापति ७ सुख ने ८ अपराध बिना ९ पिता को
 दिये हुए १० बुरी रीति से ११ अनिती से ॥ ६ ॥ १२ अपने राज्यों की आमद के
 बिरह से पीड़ित होकर १३ नर्मदा से १४ बहंड़ होकर (धीठता से) १५ प्राप्त हुए

दहवारी दिस इक्क हुते बहुरा जु विनायक ॥

आय रान अमरेस तत्थ भिंटयो छल तच्छक ॥

तीनइहि नरेस केकान तजि मन प्रसन्न वत्थन मिले ॥

रानहिं निहारि भूपन दुहुनखूबिय हिय पंकज खिले ॥७॥

(दोहा)

अगै रान प्रतापसे, भये अरतिन भीम ॥

आयसहू नहि अहरयो, साहनको जिन सीम ॥ ८ ॥

साह सिकंदर जुलिकरन, अरु गज्जन गोरीस ॥

अगै हिंदुन जितिकै, भये प्रबल भुव ईस ॥ ९ ॥

तिनतैं अबलग नहिं तक्यो, सीसोदन गिनि सांह ॥

यह कुल राउल वर्पको, रखै हिंदुन राह ॥ १० ॥

पुर आमैर रु जोधपुर, साह सुभट सरसाय ॥

आलमतैं अब तोरिकै, उभयउदैपुर आय ॥ ११ ॥

अमर रान अति सोद करि, भिंटयो सनमुख आय ॥

कूरम तैंहँ जयसिंह कछु, चरनन हत्थ चलाय ॥ १२ ॥

पकरि हत्थ हियलैय तव, कहिय रान अमरेस ॥

भूपति मैं पावन भयो, आवन दुँहुनअसेस ॥ १३ ॥

(पट्पात)

इम मिलाप करि रान आय तिनसहित उदैपुर ॥

महलन परिखैद मंडि उभयखुल्ले अवनिसुर ॥

बाहिर परिखद लांघि रान सम्मुह पुनि आयो ॥ ॥

१ चहारा विनायक नामक [गणेश] २ छल को काटनेवाला [यह महाराणा का विशेषण है] ३ घांड़े छोड़ कर ४ खुशी से ॥ ७ ॥ ५ शत्रुओं को भयंकर हुए ६ दुःख ॥ ८ ॥ ९ ॥ ७ बादशाह अर्थात् उनका सदैव ही शत्रु ही समझे बादशाह कभी नहीं सबके ८ बापा राउल (इनका नाम जेहेन्द्र और उपपद बापा था) का कुल ॥ १० ॥ ९ बादशाह के उत्तराध ॥ ११ ॥ १० मित्रा ॥ १२ ॥ ११ हृदय से लगाकर १२ अपरसिंह ने ॥ १३ ॥ १३ राजा

करि जुहार कर सीस रक्खि बहु मोद बढायो ॥
 कर दुहुँन रथंभि निज संग करि हुलासि खास परिखद हलिय ॥
 उमराव बुल्लि निजनिज उचित करन मंत एकैत्त किय ॥१४॥

(दोहा)

बाहिर्ना बुद्धहिं व्याहिं इत देवसिंह तखतेस ॥
 वेद्यमतें हुत आयकैं, गिहियां गन नयेस ॥ १५ ॥
 दिलाखुसाल प्रासादकं, गोख मध्य पर्गधारि ॥
 बैठ भूपति तीन ब्रह्मा, चोरं गहर डारि ॥ १६ ॥
 मध्य रान अमरेम अरु, कूरम नृप दिस वाम ॥
 दक्खिन दिस रघोर नृप, इम रहि सज्जिग सार्म ॥ १७ ॥

॥ पट्पात ॥

कूरमपति करजोरि कहिय सीसोद नृपति प्रति ॥
 तुरकनको नहिं तोरि भयो सव जोर मंद गति ॥
 राजाकुल तुमरो सुं ह्व ह्विहुन तुम रक्खैं ॥
 जोखी दिल्हिय जार प्रबल आनन तुम पक्खैं ॥
 साहसों तोरि ह्व आय इत राज धरम साहस परखि ॥
 हिंहुन हँकारि हिंहुन अवनि हिंहुनैपति भुग्गहु हरखि ॥१८॥

(दोहा)

इत बुल्लयो रघोरनृप, हम रावरे सुभँट ॥
 भुग्गहु अज्जाउत्त भुव, ताहि दिल्हिय पुर पट्ट ॥ १९ ॥

(सुक्तादाम)

१ मंत्र (सलाह) करने को २ एकत्र (इकट्ठे) ॥ १४ ॥ ३ शीघ्र ४ मिला ॥ १५ ॥
 ५ दिलाखुसाल नासक सहज के झरोखे में ६ पधार कर ॥ १६ ॥ ७ अमरसिंह
 ८ मिलाप किया ॥ १७ ॥ ९ प्रताप १० सो ११ घोषित (स्त्री). दिल्ली रूपी स्त्री
 है सो तुम जैसे प्रबल जार का १२मुख देखती है १३ हिंदुओं को बुलाकर हि-
 न्दुओं की भूमि को १४ है हिन्दुओं के पति हर्ष के साथ भेजो १५ उमराव १६
 आर्यावर्त की भूमि ॥ १९ ॥

यहँ सुनि रान कही अमरेस, न मैं पुरदिल्लिय जोग्य नरेस ॥
 सुनै हम दिल्लियको दसतूर, रहो सब सांजलि साह हजूर ॥ २० ॥
 प्रवेसत सांयुध इक्क न आम, सजै सब बारहि बार सलाम ॥
 जहाँ विनु आयस बुल्लि सकै न, नमैं इकटक निहारत नैन ॥ २१ ॥
 जहाँ नहि बैठक दुख दुख, तरज्जत तंडि नकीवन जूह ॥
 चलै सब पैदल आनन अगग, प्रभूजिम मन्नि पलोत पग ॥ २२ ॥
 पठावत नारिनको नबरोज, उठावत पतनको हतओज ॥
 बजावत बंब न जावत बार, सजावत पुत्रिन व्याहि सिंगार ॥ २३ ॥
 सुनौ यह सादनको दसतूर, हलै सब हिंदुव धुजि हजूर ॥
 प्रभुपन मिच्छन भोग्यहि एह, लिख्यो बिधि हिंदुन गोधि न लेह ॥ २४ ॥
 रु कोउ करै इम हिंदुव राज, भिरै तब जानि असूधन भाज ॥
 हमै तसमांत न दिल्लिय होस, दहै घर रक्खन ही निस द्योसा ॥ २५ ॥
 रु जो दह दोउनको मत एह, गिनौ तब दिल्लियही यह गेह ॥
 रजु तुम साह उथप्पन राज, उदैपुर ही तब दिल्लिय आज ॥ २६ ॥
 पुरी नृप कूरम मान जु किन्न, पधारि सुधारि यहै तुम लिन्न ॥
 अबै दह अप्पन ज्यो जस होय, जथै करिये बल कालहिं जोय ॥ २७ ॥

१ हाथ जाड़े हुए ॥ २० ॥ २ आशुध सहित ३ बड़ी सभा में ४ बिना आज्ञा बोल नहीं सकता बादशाह के देखने ही नेत्र नहीं टिकता कर ५ भुक्ते हैं ॥ २१ ॥ ६ कठिनार्ह से तर्कना में आवै ऐसा दुःख ७ गर्जना करके नकीवों का समूह डराता है और मुख आगे मथ पैदल चलते हैं ८ स्वामी के समान आन कर ९ पैर दवाते हैं अथवा पग पोलत हैं ॥ २२ ॥ १० नगारा ११ उनसे विवाह करके पुत्रियों को शृंगार कराते हैं ॥ २३ ॥ १२ यह स्वामीपन म्लेच्छों के भोगने योग्य ही है १३ ललाट में नहीं लिखा १४ लेख ॥ २४ ॥ जाति की अख्या के १५ पात्र १६ इस कारण हम को दिल्ली की चाह नहीं है १७ घर की रक्षा में ही जलते (छीजते) हैं ॥ २५ ॥ १८ इस घर (उदैपुर) को ही दिल्ली जानों ॥ २६ ॥ १९ पहिले २० तुम्हारे प्रपितामह राजा मानसिंह ने जो किया था (मानसिंह ने बादशाह अकबर की सेना का सेनापति होकर महाराणा प्रतापसिंह से युद्ध किया था और सामिल भोजन नहीं कराने के कारण राणा की पुत्रियों को यवनियों बनाने का भय दिखाया था) २१ जिस प्रकार ॥ २७ ॥

बन्धो पुनि कूरम भूप वृत्तंत, भली सबही करिहै भगवंत ॥
अवैकरि हिंदुन इकत *अत्थ, सजै पुनि आलमपै निज सत्थ ॥

(दोहा)

हिंदुव चाकर रानके, इक पंगु यहँ ओर ॥
आलमतैं हम तोगिकैं, लियउ रावरो जोर ॥ २९ ॥
देस दुहुनरके खालसै, ओर न लैन उपाय ॥
तो हम जितैं मुलक निज, जो दल देहु सहाय ॥ ३० ॥
जिति मुलक पुनि कटक सजि, व्है दुवैरान हजर ॥
दक्खिनपर दरकुंच वारि, जितहिं साह जरूर ॥ ३१ ॥
रानकहिय कछुदिन उभयर, रहहु अत्थ गृह जानि ॥
पुनि जो जो भवितव्यहै, लेहैं सबहिं प्रमानि ॥ ३२ ॥
वाँदिन डेरन सिक्ख दिय, दोउनतैं कहि एह ॥
इक१इक१गज द्वैरहै अरब, दोउरन अप्पि सनेह ॥ ३३ ॥
अतगपान पुनि बुल्लिकैं, इन ढिग रक्खे रान ॥
तव दोउनरकर ओडि कहि, देहु अप्प कर दान ॥ ३४ ॥
रान तर्थापि न पान दिय, पानदान गहि हत्थ ॥
जिहिं अंतर कर दुहुँनरके, संग्रहि धरिय समत्थ ॥ ३५ ॥
दोउरनृप इम पान लै, निज निज डेरन आय ॥
दूजेदिन किय गोठि तव, रान अमर रस भाँय ॥ ३६ ॥
दोउरनृप बुल्लिल्लय बहुरि, पति परिय चहुँ ओर ॥
करिय अरज तहँ रान प्रति, पुनि कूरम रहोर ॥ ३७ ॥
इक१थाल बिच अप्पनाँ, हमसैह भोजन होय ॥
अवतैं संतैं एकता, करहु न संसय कोय ॥ ३८ ॥

* यहाँ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ १ जाधपुर की आसन्न के दानों राजा ॥ ३१ ॥
२ यहाँ सेनेवाला ॥ ३२ ॥ ३ उस दिन ॥ ३३ ॥ बुलाकर १ हाथ माँड (कैला)
कर ० आप के हाथ से ॥ ३४ ॥ ८ ताँभी ६ पकड़ कर, उस समर्थ (महाराजा)
से ॥ ३५ ॥ १० स्नेह की रीति से ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ११ हमारे साथ १२ निरंतर ॥ ३८ ॥

सुनि बुल्लयो *भट रानको, दढमन गंगादास ॥

सगताउत पुरवानसी, पति कछु †रोस प्रकास ॥ ३९ ॥

‡कूरम पति यह रावरे, पुरुखन अगँ कीन ॥

तोहू कुल उज्जल यहै, भो नहिँ धरम बिहीन ॥ ४० ॥

॥ पट्पात् ॥

अगँ अकबरसाह लैन जुगगज लुभाये ॥

भगवतसिंह रु मान पिता सुत उभय२पठाये ॥

दरकुंचन इन दोरि जोर जिती गुज्जरधर ॥

पलटे पुनि सुत जनैक मिजल पंचक५के अंतर ॥

भगवंतसिंह आयो प्रथम दिखिय जावत रान घर ॥

जिनदिनन छत्र राना उदय धारन हिंदुन धर्मधर ॥ ४१ ॥

नृप भगवंतहिँ रान जाय सम्मुह गृह लायो ॥

उनहू भोजन करन रान जुत प्रसन्न रचायो ॥

दिय उत्तर तब रान देत तुरकन तुम पुलिय ॥

हम हिंदुव अकलंक धरम छंडै न जात जिय ॥

तसमात सुनहु दोउन२असन इक्क१थाल नाँहिँन उचित ॥

यहसुनि नरेस भगवंत तब पृथक जिम्मि बुल्लयो विदितं ॥ ४२ ॥

॥ पञ्कटिका ॥

नृप सुनहु पंच बारि विहाय, सुत मान इहाँ अँहँ सुभाय ॥

* महाराणा का उमराव † कांध करके ॥ ३९ ॥ ‡ हे कछवाहों के पति (जयसिंह) आप के बडाउवाँ ने भी पहिल ऐसा ही किया था ॥ ४० ॥ ?

यानसिंह २ गुजरात ३ पुत्र और पिता ४ पांच दिन के अंतर * से ॥ ४१ ॥

५ दढ किया ६ निष्कलंक ७ इसकारण मे ८ भोजन ९ भिन्न (चुदा) जीमकर १० प्रसिद्ध बोला ॥ ४२ ॥ ११ पांच दिन बिनाकर १२ सग पुत्र मानासिंह

छठे राशि की टीका के नोट में हम लिख आये हैं कि आमेर के राजा मानसिंह के साथ भोजन नहीं कर ने का विरस महाराणा प्रतापसिंह से हुआ था उदयसिंह का नाम भूट से लिखा गया है सोही यहां जान ना चाहिये ॥

वासों नरेस व्है हठ प्रमत्त, बुल्लहु न भुल्लि औसी *कुवत्त ॥ ४३ ॥
 यह कहि नरेस भगवंत बत्त, दरकुंचन दिल्लिय नगर †पत्त ॥
 दिन पंचक अंतर कुमर मान, भिट्यो पुनि ‡सम्मुह जाय राना ४४
 मिलि तासँ विरचि अति मानुहारि, पुनि रान स्वगृह तिनै जुत पधारि
 रचि गोठि विविध व्यंजन रसाँल, बैठारयो मानहिँ पृथक थाल ॥ ४५ ॥
 रहि रान दिठि परुसनँ लगाय, तब कुमर मान बुल्लयो हिताय ॥
 तुमकोहु उचित बैठन नृपाल, भुज्जैँ दुव भुज्जन इक्क थाल ॥ ४६ ॥
 तब कहिय रान राजाधिंराज, एकासन व्रत में करिय आज ॥
 कूरम तथाँपि बुल्लयो निहोरि, सागँस न होत व्रत इक्क छोरि ॥ ४७ ॥
 हमरो हुव आगम समय पाय, है इक्क थाल भोजन हिताय ॥
 इस प्रसँभ पुंज मानहिँ निहारि, पटु रान उँदय बुल्लयो प्रचारि ४८
 तुम लोभ धारि लिय जवन रीति, हमरे घर हिंदुन धर्म नीति ॥
 तुम अधम जाँमि दुहितौ कलत्रँ, तुरकन समापि हुव सचिवतत्रा ४९
 अकलंक यहै ईकलिंग अँन, तसमातँ संग भोजन बनँ न ॥
 यह सुनत मान कुप्यो कराल, बुल्लयो सु उठि छँकि छोरि थाल ५०
 तुम तियन पारि तुरकन प्रसंग, कछु दिनन अंत "खैहँ बैँ संग ॥
 यह कहि द्रुत दिल्लिय मान जाय, अकवरहिँ अत्थ आन्यो कृपाय ५१

*ऐसी खोटी चार्ता झूलकर भी मत कहना ॥ ४३ ॥ † प्राप्त हुआ (पहुँचा) ‡
 सन्मुख जाकर मिला ॥ ४४ ॥ १ उस मानसिंह से २ मनुहार ३ उस मानसिं-
 ह सहित ४ रसयुक्त ॥ ४५ ॥ ५ परोखने में दृष्टि लगाकर ६ भोजन करें ७
 भोजन ॥ ४६ ॥ ८ राजाओं के पति [महाराणा] ने कहा ९ दिन में एक समय
 भोजन करने का व्रत १० तोभी कछवाहा बोला कि ११ एक व्रत छोड़ने से
 अपराध नहीं होता ॥ ४७ ॥ १२ दिन के अर्थ १३ मानसिंह का हठ का समूह
 देख कर वह चतुर १४ [महाराणा उदयसिंह] ललकार कर बोला ॥ ४८ ॥ १५
 वहिन १६ चेष्टियों और १७ स्त्रियों को देकर वहाँ (यवनों के) सचिव हुए हो
 और यह १८ एकलिंगेश्वर का घर [मेवाड़वालों के इष्टदेव एकलिंग महादे-
 व हैं] कलंक रहित है १९ इसकारण २० क्रोध में पूर्ण होकर ॥ ५० ॥ २१ अब
 २१ साथ खावेंगे ॥ ५१ ॥

बहु बरस रहिय चितोर जंग, रान न तथापि छंडयो स्वरंग ॥
 बिनु बित्त लहिय बरसन बिपत्ति, छिति हित तथापि कंपी नछत्ति।
 यह कुल वहै हि निज नय उपेत, दुहितादि तुम सु तुरकान देत।
 इकथाल असन तातैं बनैन, भट हम निसंक मिथ्या भनैन ॥५३॥
 यह सुनि कबंध कछवाह राय, स्वामि समय जानि रोस न दिखाय ॥
 करजोरि कहिय दुवरनृपनफेरि, हिंदुन नरेस तुम धर्म हेरि ॥५४॥
 हम किय अधर्म गिनि बिभव हानि, मरजी सु करहु भट हमहिमानि ॥
 अमरेसरान यह सुनि उदार, बुल्ल्योसु व्यावहारिक विचार ॥५५॥
 मम गेह ओर नहिं तुमहिं दैयं, इक बत्त सुनहु दुवरनृप अजेय ॥
 सौपहु जो निजकर लिखित सत्य, अबतैं न दैहिं तुरकन अपत्या ॥५६॥
 तो दुवरसुतां सु दोउनरबिवाहि, देसहु लै दैहैं अरिन दाहि ॥
 सहभोजन तो नहिं उचित आहि, पत्रावलि जिम्मत हम सदाहि ॥५७॥
 तुम डारि रजत विष्टर बिसाल, नगजाटित मध्य धरि कनैक थाल ॥
 इम भुजंगत तुरकन एधैमान, इत्यादि हेतु सह असन हयान ॥५८॥
 करि लिखित देहु जो कैथित चाहि, तो दैहिं सिक्ख पुत्रिन विवाहि ॥
 दुवरनृपन यहै सुनि अभनै किन्न, राम सु परसावन रहिय भिन्न ॥५९॥
 नृप दुव जिमाय इम सिक्ख अपि, डेरन हैन आय रु मंत्र अपि ॥

१ तोभी २ अपनी धर्मपरायणता का रंग नहीं छोडा ३ बन् ४ तोभी भूमि के अरि छाती नहीं कांपी ॥ ५२ ॥ ५ अपनी नीति सहि-
 न ६ पुत्री आदि ॥ ५३ ॥ ७ सहन करके ॥ ५४ ॥ ८ बसराव मान कर ९ व्यव-
 हार सम्बन्धी ॥ ५५ ॥ १० देने योग्य ११ किसी से नहीं जीने जावैं ऐसे १२ अ-
 पने हाथ का लिखा हुआ १३ सन्तान (पुत्री) ॥ ५६ ॥ १४ पुत्रियें हैं सो १५ शा-
 मिल भोजन करना तो १६ उचित नहीं है १७ पातल (गुल के पत्र) का निर्मि-
 त पात्र) में ॥ ५७ ॥ १८ चांदी का बाजोठ १९ जोने का धातु २० भोजन कर-
 ते हो २१ सबनों का पकाया हुआ [यहां 'इध पकन' इस धातु से एधमानशब्द
 हुआ है जिसका अर्थ पकाना है] ॥ ५८ ॥ २२ मैंने कहा उसकी [विवाह की]
 चाहना होवे तो २३ भोजन किया २४ न्यारे ॥ ५९ ॥ २५ इन दोनों राजाओं ने

यहँ उभय साहसों तोरि आय, करि लिखित दैन इत इन कहाय ६०
 अब करहि साह कुमहर अजेय, तसमांत रान कैथितहि बिंधय ॥
 यह सोधि लिखिय नयँ दुहुँन रूआदि, तुरकन न दैहिँ अवतैं सुतादि
 कहिहैं जु गान धरिहैं सु सीस, इम लिखित ठानि दुव भुवअधीस ॥
 यह लिखित रानकर दियउ आय, प्रभु रान सुनत विस्वास पाय
 दुहिता दुहुँन रूआहन बिचारि, बिरचिय बिबाह उच्छव बढारि ॥
 कूरमनरेस यह समय पाय, प्रछन्न रान प्रति कथ कहाय ॥६३॥
 संग्रामसिंह पट्टप कुमार, सुहिँ तास जामि दैहो उदार ॥
 सुनि रान बहुरि पछी कहाय, इक लिखित ओर अप्पहु लिखाय ॥
 याकौ जु पुत्र जगदीस दैहिँ, वह मुख्य राज आमैर लैहिँ ॥
 आमैरईस सुनि यह उपाय, लिखि स्वकर पल दिन्नो पठाय ॥६५॥
 दुहिता स्वकीय जनिहैं सु पुत, आमैर पट्ट लहिहैं अभुतैं ॥
 यह लिखित रान बंचि रू बिचारि, निज पुँति उचित कूरम निहारि

(दोहा)

निज पुत्तिरैयें संबंध तब, कूरम सैन किय राने ॥
 निज काकासुत पुत्रिका, दिय रठोरहिँ दाने ॥ ६७ ॥
 चंद्रकुमरि कूरम लहिय, कृष्णकुमरि रठोर ॥
 इम बिबाहि दुवरभुवअधीप, जचियँ सिक्ख इन जोर ॥६८॥
 हँटक दोलाजंत्र तब, दुहुँन रूगान नृप दिन्न ॥

१ महाराणा ने ॥६०॥२ इसकारण से ३ राना का कहना ही ४ उचित है ५ दोनों ने नीति को आगे करके ६ पुत्री आदि ॥ ६१ ॥ ७ भूपति ॥ ६२ ॥
 ८ छानें ॥ ६३ ॥ ९ आप के पाटवी पुत्र संग्रामसिंह की पुत्री ॥ ६४ ॥ १०,
 जयसिंह ने ॥ ६५ ॥ ११ आप की पुत्री १२ अशुक्त (नहीं भोगने योग्य अर्थात्
 छोटा हाँन पर भी आमैर का राज्य लेवेगा) १३ पुत्री यहाँ सामान्य रीति से
 पोती को पुत्री करके लिखा है ॥ ६६ ॥ १४ पुत्री का १५ से ॥६७॥ १६ भूपति १७
 माँगी [इन, विवाह कीहुई कन्याओं के पल ने, अथवा महाराणा के, पल से
 ॥ ६८ ॥ १८ स्वर्ण का १९ हिंडोला [हींडोलाट] ॥ ६९ ॥

दोनों राजाओं का सांभर पर आना] सप्तमराशि-एकोनविंशमयूख [१०१९]

दुहुँनस्तुल्य दायज अरपि, कुसल सिक्ख तब किन्न ॥६९॥
 सत्त सहँस ७००० निज दैल सबल, करि दुवरभूपन संग ॥
 रान सिक्ख देसन दई, अँवनी लैन अभंग ॥ ७० ॥
 तव दुवरभूपति सिक्ख करि, बढि चल्लिय बरजोर ॥
 छोनी दब्बत साहकी, उमँडिय संभर ओर ॥ ७१ ॥
 दुवरभूप इम दरकुंच करि, संभर उप्पर जात ॥
 नारनोल सय्यद सुनी, रँमा बिलुट्टन बात ॥ ७२ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीप-
 तिबुधसिंहचरित्रे दक्षिणगतालमशाहहतस्वानुजकामवस्त्रभा-
 गनगरबीजापुरादान १ आलमशाहविरुद्धनर्मदाप्रत्यागतमैराधीश-
 जयसिंहयोधपुराधीशाजितसिंहोदयपुरागमन २ सहभोजनानंगी-
 कारापमानितलेखितयवनेन्द्रकन्याप्रदानप्रतिषेधपत्रोक्तोभयरज-
 महाराणामरसिंहनिजात्मजायुगलपरिणायन ३ पट्टपाभावेऽपिले-
 खितस्वदौहित्रामैरस्वामित्वहस्ताक्षरमहाराणामरसिंहस्वपट्टपुत्रसं-
 ग्रामसिंहकन्याजयसिंहपाणिपीडनवर्णनमेकोनविंशो मयूखः ॥१९॥

१ सेना २ भूमि लेने को [अभंग, यह महाराना का विशेषण है] ॥ ७० ॥ ३
 सांभर नगर की ओर बढे [उठे] ॥ ७१ ॥ ४ सांभर लूटने की ॥ ७२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति
 बुधसिंह के चरित्र में, आलमशाह का दक्षिण में जाकर अपने छोटे भाई का-
 मवस्त्र का मार कर भागनगर और बीजापुर लेना १ और के राजा जय-
 सिंह और जोधपुर के राजा अजितसिंह का आलमशाह से विरुद्ध हांकर
 नर्मदा नदी से पीछे फिरकर उदयपुर आना २ महाराणा अमरसिंह का उक्त
 दोनों राजाओं को सामिल भोजन नहीं करा कर अपमान किये पीछे आगे
 कभी यवनों को पुत्रियें नहीं विवाहने का पत्र लिखा कर दोनों राजाओं का
 अपनी दो पुत्रियें विवाहना ३ अपना दौहिता पाटवी नहीं होने की अवस्था
 में भी और के स्वामी होने के अचर लिखा कर महाराणा अमरसिंह का
 अपने पाटवी पुत्र संग्रामसिंह की पुत्री का जयसिंह से विवाह करने के वर्ण-
 न का उन्नीसवां १९ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दासौ सत्पावन २१७

आदितः सप्तपञ्चाशोत्तरद्विशततमः ॥ २५७ ॥

[पट्टपात]

जाजव संगर जिति साह अति गब्ब सम्हारयो ॥
 संभर पिक्खि सहाय धरा जित्तन मन धारयो ॥
 हुसनअली सय्यद नबाव आदिक सम्मत करि ॥
 जिति सँजव जोधपुर धाय दक्खिन साहस धरि ॥
 कूरम कबंध अवनीपे इत अमररान पुत्तिनपरनि ॥
 पृतनाँ प्रचारि लुट्टन प्रथम पत्ते लागि संभरसरनि ॥ १ ॥

[दोहा]

नागनोलपुर सैनपति, हुसनअलीके भ्रात ॥
 धिंसीखान रु नूरदी, तँहँ पैतो यह बात ॥ २ ॥

॥ पट्टपात ॥

हुसनअली सय्यद नबाव सुभटन अग्रेसर ॥
 नागनोलके फोजदार ताके सांदर भैर ॥
 धिंसीखान रु नूरदीन तिन बत्त सुनी यह ॥
 लुट्टन संभर नगर सुपहु कूरम कबंध सह ॥
 सजि तवहि गेन द्वादस सहस्र १२००० रूपी नगर रक्खन चलिय ॥
 इत नृपन लुट्टि संभर सहर कहँर काल बेहाल किय ॥ ३ ॥

(दोहा)

पुरहिँ लुट्टि दुवर नृप कहत, सय्यद पत्ते आय ॥
 भट कूरम रहोरके, बुल्ले तिन विहसाय ॥ ४ ॥

मयूख हुए ॥

१ गर्व २ बुधसिंह को अपनी सहाय पर रखकर ३ सहमत (सलाह) ४ क्षीप्र
 ५ क्षुपति ६ राखा धरसिंह की ७ सेना ८ प्राप्तहुए ९ सांभर के भाग में लग
 कर ॥ १ ॥ १० सेनापति ११ पहुंची ॥ २ ॥ १२ उमरावों में अग्रणी मुख्य १३ भ-
 ट [वीर] १४ सांभर नगर की रक्षा करने का चले. इधर काल रूपी १५ कोधकर
 के इनने बुरा हाल कर दिया ॥ ३ ॥ ४ ॥

हरवै राउत दंकिपे, आतप करत उभेल ॥

श्रमजल हथ पसाजिहै, मुँडि न पैहै मेल ॥ ५ ॥

सुनत एह सद्यद भटन, दिय उत्तर अति आध ॥

उँहानत बिच छिजिकै, नँहो दरित निदाघ ॥ ६ ॥

इम कहि बाजिन वग्गलै, तुष्टे दिंदुन सीस ॥

दल दोउन धगचक बजि, ज्यों कैटभ जगदास ॥ ७ ॥

॥ पट्पातू ॥

मिलि दिंदुन मुगलान धिउँ रन रिहै रूमापुरि ॥

भिरि भट चंचल सयनै पयन चंचल जिम पातुरि ॥

लुत्थिन लुत्थि अँहुटि बुत्थि लुत्थिन भट कट्टिप ॥

इडन खग खनकि रुंड मुंडन भुव पट्टिप ॥

अकिनिन डक हिँडिमि डगकि नचि भैरव डेरुव नदियै ॥

जेम बनिजकार टंडा ढरत इम अनीक भुव अच्छदियै ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

बैमीखान रु नूरदी, दुवर सद्यद लिय मारि ॥

हँस १००० सूर दुहुँ आरके, भरिगँ घोर खँग झारि ॥ ९ ॥

म कूरम रठार लृप, पुगसंभर जय पाय ॥

हँसी गहि दोउतर दई, लहँगे अंदर लौय ॥ १० ॥

॥ सारहा ॥

जेज निज देखन आय, दुवर नृप संभर लुटिकै ॥

धर २५०० [गम्भी] १५ परिश्रम के जल [पसीने] से ह. थकित लै [रपटै] में. इमकारण
 तवार की संठ से मेल नहीं पावैगे अर्थात् हाथ से तरवार नहीं धारि जावैगा
 ५ ॥ ६. क्रोध ली अग्नि में जलकर गरमा से ७. ड. वेवाला जल (पमाना) ८
 ८ होगया ॥ ९ ॥ = सेना १. जसप्रहार कैटभ नामक दैत्य और विष्णु भक्तों
 युद्ध हुआ था तब ॥ १० ॥ १० धृष्ट (धोत) ११ वल पूर्वक प्रहार १२ नांभर १३ चंचल
 थो से १४ युद्ध करके १५ नादयुक्त किया अर्थात् भैरवने डेर (भैरव के बाल वि-
 लंब) को बजाया १६ वनजारा १७ सेना से १८ भूमि को आच्छादन की ॥ ८ ॥ १९ झड़े
 मार गये २० भयंकर लड़क पलाकर ॥ ९ ॥ २१ दिल्ली लकी छा के लहँगे (जाधरे)

थानाँ दियउ उठाय, आलमके करि करि अमल ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

इत कोटापति भीम दिय, बुंदिय कैटक बिगारि ॥

जुज्झयो जुगियराम हद, मारि मरद तरवारि ॥ १२ ॥

धावर गंगाराम पुनि, सेनानायक होय ॥

कोटा उप्पर उप्परयो, उत्तरि चम्पल्लि तोय ॥ १३ ॥

कायथ घासीराम किय, पंचोलिय परधान ॥

मंलि बनिक हरिगम किय, गुज्जर कुमति गुमान ॥ १४ ॥

अलीखान अभिधान इक, जवन रुहिल्ला बुल्लि ॥

पंचसहस्र ५००० पाँति रक्खयो, खंमग पताकन खुल्लि ॥ १५ ॥

यह सुनि कग्गर भीम नृप, धावर प्रति पठवाय ॥

वाँवा धावर हमहुकौं, रक्खहिँ बुंदिय रोय ॥ १६ ॥

जान्यो धावर नीतिजुँड, गुज्जर गहल गमार ॥

वाया कहिकहिँ जो लिखत, भिरैँ न सो रन भार ॥ १७ ॥

दैं मिलान बहु दिन रहयो, तव धावर नय दिन ॥

अलियखानको हँक चढयो, दोयश्मास दिन तिन्न ॥ १८ ॥

॥ पञ्चटिका ॥

लहि समय भीम तव किय उपाय, बहु बिँत रुहिल्ला हित पठाय

अकिँखिय धावर प्रति वैँदहु वेन, हक देहु न तो अवहम लरैँ न ॥ १९ ॥

धावरहिँ कहिय यह अलियखान, जब किय कुँमंत्र गुज्जर अजान

में अग्नि लगा दी ॥ १० ॥ १ मारवाड़ और हुँडाड़ में अमल (अधिकार)

करके आलमशाह के आगे उठादिये ॥ ११ ॥ २ भीमसिंह ने ३ सेना को

॥ १२ ॥ ४ सेनापति ५ चामन नदी के जल को उतरा ॥ १३ ॥ १४ ॥ १

नाम ७ पाँच हजार सेना का स्वामी ८ आकाश मार्ग में ध्वजाएं खोलकर

॥ १५ ॥ ९ कागज (पत्र) १० हुँ बाबा भाऊ [भाव का पति] ११ बुंदी का रा-

जा ॥ १६ ॥ १२ नीति में सुनि उम धाऊ गुजर जाति वाले ने जाना कि ॥ १७ ॥

१३ सुकाम १४ तनखा ॥ १८ ॥ १५ भीमसिंह ने १६ धन १७ कहा १८ भाऊ से कहा

॥ १९ ॥ १९ बुरीसलाह २० गुजर जाति के सुखने

बुंदिय भट बुल्लि रु कहिय एहु, मिलि सबहि जवन हक वित्तदेहु २०
जो वित्त तो न हय करम टारि, सब याहि देहु भगनां वगारि ॥
सुनि यह कुमंत्र दुर्मन सिपाह, चढिचढि समस्त लागि घरन राह २१
तुरकन दिय धावर कैद धत्ति, यह खवरि देस दक्खिन हु पत्ति ॥
सुनि नृपति बुद्ध आयसँ पठाय, नहि लेहु मूढ धावर छुगय ॥ २२ ॥
बहुदिन तब धावर कैद लिन्न, हरिगमसाह पुनि अरज दिन्न ॥
तब हुकम पाय जवनन चुकाय, हरिराम लियउ धावर बुलाय २३
कोटा नरेस इम खगग आगि, द्वैरवेर कटक दिन्नो विगारि ॥
इत कामवखस सोदरहि मारि, निज अमल देस दक्खिन विथारि २४
दरकुंच उतरि रेवा दुरंत, उज्जैनि आय करि भ्रात अंत ॥
गिरिवर मुकुंददर मध्य होय, पुर पट्टनि चैम्मलि लांघि तोय ॥ २५ ॥
लखखेरिय गिरि दरै कढि सुभाय, अजमेर पीर भिटन चलाय ॥
सक सत्त तक्क मुनि इक्क १७६७मान, अजमेर आय दित्रो मिलान २६
तब बुद्धसिंहप्रति कहिय साह, कूम्भ कबंध किन्नां गुनाह ॥
संभरहि लुट्टि लिप स्वस्व देस, तसमातें जंग खंडहु नरेस ॥ २७ ॥
कहि भूप जियत अवरंगसाह, हिंदून कियउ सासन निवाह ॥
यह आदि मुलक हिंदुन असेस, विनु नीति अमल करनो न बेस २८
फरमान दे रु दोउन बुलाय, अबही नहिं रुक्कहु दुहुन आय ॥

अबगहु अनार्य किय भुस्मि मौज. तिन सचन समप्पह ग्वग्गज २९

१ घन ॥ १० ॥ २ ऊँटों को छोड़कर ३ उदात्त होकर ॥ २१ ॥ ४ कैद में घाल दिया
[रखा दिया] ५ बृहत्तम भेजा ॥ २२ ॥ ६ अरजी भेजा ॥ २३ ॥ ७ संगे आई को
॥ २४ ॥ ८ दूर है अंत जिसका ऐनी नर्मदा नदी ९ नाश १० मुकुंदरा का घाटा
कोटा के राज्य में है ११ चामल नदी का पानी लांघकर ॥ २२ ॥ १२ लखौरी के
पर्वतों के दूरे से निकलकर १३ मुकाम ॥ २४ ॥ १४ सांभर का १५ अपने अपने
देश १६ इस कारण से ॥ २७ ॥ १७ आशा का पालन किया १८ उत्तम नहीं है
यावनी भाषा में वेस शब्द अधिक का वाचक है परन्तु यहाँ लाकड़ों से उ-
त्तम के अर्थ में लिया है ॥ २८ ॥ १९ आमदनी २० चिना आमदनी २१ भूतियों को

यह कहि पठाय फरमान तैन, सैभगहु लिखिय दुयश्नृपन पत ॥
 हम कहि गुनाह सब कियउ दूर, आवहु निसंक तुम अब हजूर ॥ ३० ॥
 यह सुनि कबंध कृपा चलाय, अजमेर साह भिट्यो सुभाय ॥
 तब कहिय साह गिनि अप्प तोर, संभर दुहून श्लुटिय स्वगौरा ॥ ३१ ॥
 कूरम कबंध तब कहिय एह, निज स्वामि निमक खडो सनेह ॥
 आज्ञा अधीन अब उभय रँधि, जँह स्वामि काम तँह लरन जाँहि ॥ ३२ ॥
 आलम सिराहि तब दुव नरेग, दोउन शलिखाय दिय स्वस्व देस ॥
 दतियादि राज अवाहु लिखाय, सँह देस सबन दिन्नै बुलाय ॥ ३३ ॥
 हम दिनु नृपन विम्वामि साह, गहि नीति सबन अप्पिय गुनाह ॥
 दिन कछु विताय अजमेर वंगै, अब आय तखत दिछिय उमंग ॥ ३४ ॥

इति श्री वंशमास्करे महाचम्पूके उत्तरावगण सप्तमराशौ बुन्दीप-
 तिवुधसिंहचरित्रे योधपुरराजराष्ट्रवराजितसिंहामैरराजकूर्मजयसिं-
 हयोर्नगगङ्गासैन्यसहायशाकम्भरीपुरिलुण्टनानन्तरस्वरचराज्य -
 स्वाधिकारपापणा १ कोटाधिजयप्रस्थितबुन्दीसेनापतिधावरगंग-
 रागणूत्तरस्थ यवनकरकारानिवतन २ अजमेरागतालमशाहस्याहू-
 ताजितसिंहजयसिंहभूपतिद्वयतदाज्यपुनर्दानानन्तरराजदतियादि

॥ २६ ॥ १ तदा २ बुधसिंह ने भी ३ पत्र ॥ ३० ॥ ४ मिला ५ अपना प्रताप
 जानकर ६ अपने पल से ॥ ३१ ॥ ७ स्नेह पूर्वक निमक खाया 'सांभर नगर
 में निमक की भीख है इसकारण यहाँ निमक खाना कहा है' ८ हैं ॥ ३२ ॥ ९
 दतिया को आदि लेकर १० देश सहित ॥ ३३ ॥ ११ सब के अपराध दिये
 [चमा किये] १२ नगर में ॥ ३४ ॥

श्रीवंशमास्कर महाचम्पू के उत्तरावगण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति
 बुधसिंह के चरित्र में जोधपुर के राजा राठोड़ अजितसिंह और आमैर के
 कछवाहा राजा जयसिंह का महागण्डा की सेना की सहायता लेकर सांभर
 नगर को लूटकर अपने अपने दोनों राज्यों में अपना अधिकार करना १ कोटा
 को विजय कान्त को गयेहुय बुन्दी के सेनापति भाऊ भंगाराम गूजर का एक
 यवन की कैद में होना २ साह आलम का अजमेर आकर राजा अजितसिंह
 और जयसिंह को बुलाकर दोनों को दोनों के राज्य पीछे दिये पीछे अन्य रा-

राज्यपुनर्दानवर्णनं विंशो मयूखः ॥ २० ॥

आदितीऽष्टपञ्चाशोत्तरद्विशततमः ॥ २५८ ॥

[दोहा]

नृप कूरम गह्वोर सिर, साह नजरि लखि मुह ॥

हुसनअली सय्यद धरूपो, बंधुत बैर प्रबुद्ध ॥ १ ॥

पति बुंदिय अरु जवनपति, जाजव रन दुव जिति ॥

अव अभिमानन उप्फने, करन किति अपकिति ॥ २ ॥

कामवखम जवनै हन्यो, तवनै आलम भुद्ध ॥

वाहि मुहपन चिंतया, बुंदियपति अव बुद्ध ॥ ३ ॥

पुर दिल्लिग दिन पत्तरे, आलम गरव उपर्त ॥

पुर बुंदिय दिन पत्तर, उपजिय धरम अद्वैत ॥ ४ ॥

तुमक हिंदु सब संग तकि, उपजि अपुब्ब उछाह ॥

करिय कुंच अजमेर सन, लिय दिल्लिय मग साह ॥ ५ ॥

सेखाउत कूरम सहर, नाम मनोहरदंग ॥

दिन दुवतत मिलान दिय, आलम अधिक उमंग ॥ ६ ॥

नृप कूरम गह्वोरको, दिय निज देसन सिख ॥

चित्त बुद्ध बुंदिय चहिय, तोरै गरव जय तियख ॥ ७ ॥

[पदपात]

किय विन्नति करजोगि रावराजा आलम सन ॥

बंदगीहु किय बहुत रचिय पुनि स्वामिधरम रन ॥

पुगबुंदिय अव पाम सिखव वखसहु पैमाद गेम ॥

जाओं को दानिया आदि राज्य पीछे देने का वासधां २० मयूख समाप्त हुआ और आदि सं दोसौ अठारह २५८ मयूख हुए ॥

१ कोथिम हुआ २ भाइयों का बैर समझ जाने में ॥ १ ॥ ३ य दशाह ४ की-
ति को अपकर्ति काने के लिये ॥ २ ॥ ५ सूखे सूड ६ जानकर मूर्खपन का
स्मरण किया ७ बुखसिह ने ॥ ३ ॥ ८ सहित धर्म की शक्तता ॥ १० ॥ ९ अपूर्व ॥ ११ ॥ १२ म-
नोहरपुर १२ सुकाम ॥ १३ ॥ १३ बुखसिह ने १४ प्रताप ॥ १५ ॥ १५ प्रसन्नता से १६ से

भट विग्रह मम भुम्भित उतहु रचिहैं कछु उद्यम ॥

मम जैत नाम काका मरद बैरिसल्ल कुल उद्धरन ॥

*सादी हजार १००० सुभाटन सहित रहिहैं हाजरि चतुररन ॥ ८ ॥

(दोहा)

यह सुनि बुंदिय सिक्ख दिय, बुद्ध नरेसहिं साह ॥

जैतसिंह भट सँदँस जुत, संग लपो सु सिपाह ॥ ९ ॥

इम आलम दगलुंच करि, पुर दिखिय संपत्त ॥

सत्त तक सुनि इल्ल १७६७ सक, बैठो तखत विमत्त ॥ १० ॥

फूरकसेर अजीम सुत, करि तिहिं संग करीम ॥

पूरव सूत्रा ताहि दिय, रक्खपो निकट अजीम ॥ ११ ॥

बिनु चिक्रम अरु नीति बिनु, रहत पिक्खि दिखिस ॥

दक्खिन कावल दोहु दिस, सीमा दबिय सँरीस ॥ १२ ॥

इत आलमनै सिक्ख लै, चित इच्छत घर चाव ॥

चलिय मनोहर दंग तैं, बुंदिय दिस बुधराय ॥ १३ ॥

[पट्पात]

इक कनफटा नित्यनाथ कउलैन आचारिज ॥

हरि हर धरम द्दटाय करत अधमन मत कारिज ॥

सिरप बहुत तस संग सुभट हय गँय सिबिको सह ॥

जावत दक्खिन देस नृपहिं मगमाहिं मिल्यो वह ॥

गजमुखेह पुरोहित नृपति को कउलसँग सेवत रहत ॥

तिहिं जाय नाथ भिट्यो त्वरित परिय पाय कितिय कहत १४

(दोहा)

* सवार ॥ ८ ॥ ६ ॥ १ संयास हया (लुख से पट्ट्या) २ विशेष मत्त होकर ॥ १० ॥ ३ फटावाहियर नामक ४ करीमखस नामक ॥ ११ ॥ ५ रीम (क्रोध) सहित ॥ १२ ॥ ६ राज बुधसिंह ॥ १३ ॥ ७ वासमार्गियों का ८ वैष्णव ९ को द्दटाकर १० हाथी ११ पालखी सहित १२ पुरोहित का नाम है १३ वाममार्ग १४ मिला १५ शीघ्र १६ कीर्ति ॥ १४ ॥

नित्यनाथकों *गुरुव नमि, गजमुख नृप ढिग आय ॥
 सिद्ध मन्नि गोरकख राम, महिमा कहिय बनाय ॥ १५ ॥
 यातैं †सकति प्रसन्न अति, याहि सकति बर दिख ॥
 दै मनवांछित यह करत, सिस्सहुकों लैम सिद्ध ॥ १६ ॥
 अनुष्ठान जप दोम अरु, मंत्र जंत्र मतिमंत ॥
 कहैं जाहि भलसहु करैं, कहैं जाहि भुवकंत ॥ १७ ॥
 किय नृप गजमुख कथित सुनि, नाथ निकेत प्रपान ॥
 बुंदियको विगारन समय, अरु भावी बलवान ॥ १८ ॥
 नित्यनाथ ढिग जाय नृप, पैय परि करिय प्रनाम ॥
 कहिय सिस्स मोकों कगहु, भगहु भेट धन धाम ॥ १९ ॥
 लखख १००००० रूपयन करैं सुलग, औसै ग्राम अनूप ॥
 गहहु दच्छिना छैन गिनि, रहहु इहाँ गुरु रूप ॥ २० ॥
 नित्यनाथ यह सुनि कह्यो, इन दक्खिन बसवान ॥
 गुरु भूत सुनि हुन जातहैं, न रहैं तास निर्दान ॥ २१ ॥
 हम भवदोष पुरोहितहि, मुख्य भेल दैजात ॥
 यातैं सिच्छा लेहु तुम, देहु याहि वसु धात ॥ २२ ॥
 यह कहि मैनु गजमुखहि दै, गयो कनफटा देस ॥
 इत बुंदिय ढिग कुंचकगि, आयो बुद्ध नरेश ॥ २३ ॥
 जब कावल नृप बुद्ध हो, तब निज सोदर जोधैं ॥
 चलि तरंडै गुनगोरि दिन, किय जलकोलि कुंयोध ॥ २४ ॥

*गुरु के समान ॥ १५ ॥ †शक्ति १ अपने बराबर का सिद्ध काहेता है ॥ १६ ॥ २ बुद्धिमान ३ राजा करता है ॥ १७ ॥ ४ गजमुख का कहा हुआ २ उस नित्य-नाथ नाथक नाथ के स्थान पर गया ॥ १८ ॥ ६ पैरों से पड़कर ॥ १९ ॥ ७ सु-गमता से लाख रुपये प्रतिवर्ष हांसिल के आवैं ऐसे ८ छात्र (शिष्य) ॥ २० ॥ ९ गुरु को भेरा हुआ सुन कर १० इसकारण से ॥ २१ ॥ ११ आप के पुरोहि-त को १२ शिक्षा १३ धन का समूह ॥ २२ ॥ १४ मंत्र ॥ २३ ॥ १५ सगा भाई जोधसिंह १६ नाव पर १७ बुरी बुद्धि से ॥ २४ ॥

सुभट सचिव अनुचर सकल, बैठे पोतन तथ ॥
 नचि गावन पातुगि*निकर, श्रुति स्वर तारन सत्य ॥२५॥
 गज इकलिंगप्रसाद इक, इहि अंतर मयमत ॥
 निजदायज आयो हुतो, उदयनैगते अत ॥ २६ ॥
 वहै बाग्न अनि दानछक, जल पीवन तहँ आय ॥
 ताल पिक्खि पातन निगत, कुप्पि चल्पो अतिकाय ॥२७॥
 सत्य सकल आपोन थित, किन्ना कछु न उपाय ॥
 निज पोतहि पकग निठुर, एतेमै गज आय ॥ २८ ॥
 धाड़भ्रात निज संगदो, तास भयो इक वार ॥
 एनेविच उलटाइ इहाँ, बोरी नाव सु वार ॥ २९ ॥
 नियति जोग सब तिरि कढिय, भ्रमु बँसु त्वरित अवेरि ॥
 धाड़भ्रात अरु अर्थे हुवर, स्वसँन निकासे हेरि ॥ ३० ॥
 निकमत खिन गुँजरा मरिय, अमु निज कछु अवसेस ॥
 सो बँउत्थि तसमान सो, पत्तो मृत परदेस ॥ ३१ ॥
 अनुज गन जयसिंहको, भीम सुनौ यह तास ॥
 जाँधे नारि सहैमन वारि, पत्ता दिवँ पति पास ॥ ३२ ॥
 यातँ पुर प्रविसन अबहु, सादर सुचै न सनाय ॥
 मति तँथापि संवाधि मन, इम पुरहिग नृप आय ॥ ३३ ॥

*समूह १ ग क स थ की बाईस अति और स्वर तथा तालों के साथ ॥२०॥ १
 मदमस्त २ जोधमिह के दहेज में ॥ २३ ॥ ३ वह एकलिंगप्रसाद हाथी ४ बड़े
 शरीर वाला यह हाथी का किशोर है ॥ २७ ॥ ५ पानगोष्ठी (मनचाल) में
 ६ जोधसिंह की नाव को ही ॥ २८ ॥ ७ धाय भाई धाय का पुत्र ८ हाथी
 ने ९ जल में यह नाव डुबा दी ॥ ३० ॥ १० प्राणरूति ११ धन को शीघ्र अवेर
 कर १२ जं.ध.मिह १३ लूटने हुए (अन्तिम) स्वास लेनेहुओं को ॥ ३० ॥ १४
 निशस्त्रने मलय गुप्त जाति का धायभाई मर गया और जोधमिह का कुछ
 प्राण बाकी था सो १५ इसके चौध दिन मर कर १६ परलोक गया ॥ ३१ ॥
 १७ बनेहा के राजा भीमसिंह की पुत्री १८ जोधमिह की स्त्री १९ सती हो-
 का २० स्वर्ग गई ॥ ३२ ॥ २१ शोक २२ तभी बुद्धि से मन का समझा कर

मुनि भूपहिँ आवत सुभट, सचिव बेग * समुपेत॥

बुंदियपुर सन निकसि सब, सम्मुह आय सहेत ॥ ३४ ॥

नगर जैतगढ ताल तट, रहि नृप अंतप मिलान ॥

प्रात पुरहिँ प्रविसत प्रकटि, गृहगृह मंगल गान ॥ ३५ ॥

कोटारन निज भट मग्घो, जुगियराम निसंक ॥

ताको सुत सालम लयो, गजार्ह नृप अंक ॥ ३६ ॥

इम आत्मके पैसे रहि, पंद्रह १५बरस बिहाय ॥

हय खट सत्रह १७६७ भाई सित, प्रविस्यो बुंदिय आय ॥ ३७ ॥

बुंदियपुर प्रविसत समय, सउन किछ मग रुद्ध ॥

विधवावाँल रजस्वला, पिक्खी संम्मुह बुद्ध ॥ ३८ ॥

इत्यादिके असउने बिबिध, मन मन्ने नहिँ तैत ॥

प्रविस्यो उत्तरद्वार पुर, जाजव जय उनमत्त ॥ ३९ ॥

इतिश्रो वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तमराशो बुन्दीप-
तिबुधसिंहचरित्रे अजितसिंहजयसिंहबुधसिंहार्थदत्तस्वस्वराज्य-
गमनाज्ञात्मशाहदिल्लीगमन १ गुणगौरीदिनबुधसिंहानुजयोधसिं-
हरूप नावा सह बुन्दीतडागमज्जनमूचनमेक विशोमयूखः ॥ २१ ॥

आदितः एकोनपष्ठ्यधिकद्विशततमः ॥ २५९ ॥

॥ १३ ॥ * सहित १ स्नेह सहित ॥ ३४ ॥ १ तालाब के किनारे २ मुकाम
॥ ३५ ॥ ३ बिना शंका चाला जोजीराम ४ तार्थ पर चढेहुए राजा ने गोद में
लिया ॥ ३५ ॥ ५ अर्धीन ६ आदना सुदि पक्ष में ॥ ३७ ॥ ७ शत्रुओं ने मार्ग
रोका ८ चालविधवा और रजस्वला का बुधसिंह ने ९ सामने देखी ॥ ३८ ॥
१० इनको आदि देकर अनेक प्रकार ११ अजकून १२ तहाँ ॥ ३९ ॥

आवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तररागल के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति
बुधसिंह के चरित्र में अजितसिंह, जयसिंह, बुधसिंह इनको अपने अपने राज्यों
की सीमा देकर वादगाह आत्म का दिल्ली जाना १ गुणगौर के दिन बुन्दी के
तालाब में बुधसिंह के छोटे भाई जोधसिंह का नाव लहित डूबने का सूचना
का इलीसवां २१ मयूल समाप्त हुआ और आदि से दोसा उनसठ २५९ म-
यूल हुए ॥

(छप्पई)

बुंदिय गहिय बैठि बुल्लि गजमुखह पुरोहित ॥
 मन्नि गुरुव सुनि मंत्र कउल मारग चाहयोचित ॥
 लखख १००००० रुपय्यन मुलक हँधि सिबिका हय अप्पिय ॥
 गहिय तक अधिकार बखासि गजमुख गुरु थप्पिय ॥
 आचार अधम अहारि रहिय पंच मकारन मुदित मन ॥
 बुंदीस बुद्धि बिगरी विविध कउल कम्म लग्गो करन ॥१॥
 जब काबल बुंदीस हुतो आलम अनुगामी ॥
 तबहि रान जयसिंह गयो परलोक सु नामी ॥
 तास तखत अमरस रहयो रानाँ कछु बच्छेर ॥
 पैतो वह परलोक सुनी बुंदिय यह संभैर ॥
 लौ सिक्ख तबहि पटरागिनी रानाउति पीहर गई ॥
 उम्मेदकुमरि तत्थहि अँचिर भावीबसि अँसु बिनु भई ॥२॥

[दोहा]

पटरागिनि पंचैत्व इम, लयाँ उदैपुर जाय ॥
 च्यारिलख ४००००० मुद्रा प्रमित, रहयो तहाँ तस रँय ॥३॥
 इहिअंतर बुंदीस प्रति, सगपनहित सरसाय ॥
 पुर भनाय रठोरके, नारिकेल्ले हुत आय ॥ ४ ॥
 सो सगपन स्वीकार करि, नारिकेल लिय भेलि ॥

१ बुलाया २ गजमुख नामक पुरोहित को ३ बासमार्ग ४ हाथी ५ पालाई ६
 गादी पर बैठने तक का अधिकार ७ बासमार्ग के *पांच मकारों में मन प्रसन्न
 करके ८ धारियों के कार्य ॥ १ ॥ ९ अमरसिंह १० वर्ष ११ प्राप्त हुआ १२ च-
 हुवान बुधसिंह ने १३ पाटगासी १४ शीघ्र १५ पाण बिना ॥ २ ॥ १६ मृत्यु १७
 धन ॥ ३ ॥ १८ संबंध के लिये १९ नारियल (सम्बन्ध करने का प्रथम दस्तूर)

*बासमार्गियों में, मन्त्रि १ मन्त्र २ मैथुन ३ मुद्रा ४ चार मास्य ५ ए पांच मकार प्रसिद्ध हैं, जिनके
 सेवन से वागीलोक मोक्ष होना मानते हैं, जिनका विशेष विवरण देखना हों तो धारियों के 'भैरवी चक्र'
 नामक ग्रन्थ में देखें ॥

मन परंतु लजि कउल मत, प्रथित बेदमत पेलिँ ॥ ५ ॥

रहत चक्रपूजा नुरत, विधि नय धरम विसारि ॥

आलस मय प्रमाद करि, बिगरी राज सम्हारि ॥ ६ ॥

इहि अंतर लाहोरतँ, दिल्लिय आय पुकार ॥

सूबा बिच दल बंधि सब, सिख मिलि करत बिगार ॥ ७ ॥

नानक मत अहुँ गामि सिख, अजितसिंह तिन ईस ॥

सो मंडत अप्पन अमल, सूबा खंडि सरीस ॥ ८ ॥

(पट्टात)

सुनत एह दिल्लिस अटकदिस कटक अगंजित ॥

सजि चल्लिय द्रुत साह राह उद्धत जय रंजित ॥

सबहि पुत्र निज संग हुरम बेगम सब हाजरि ॥

तीन लख ३००००० तुकखार भार सतपंच ५००० ताम भीर ॥

संक्रमित साह आलम सबल क्रम प्रवेस लाहोर करि ॥

वह अजितसिंह सब सिखन हनि दंडिखंडिलिन्नो पकरि ॥ ९ ॥

(दोहा)

नासित करि सब सिखनतँ, नानक पंथ छुराय ॥

मुंडित डही मूछ करि, दंडि^{१२} दये निकसाय ॥ १० ॥

सालमार उपवन निकट, रह्यो कछुक दिन साह ॥

शशिआये ॥ ४ ॥ १ प्रसिद्ध २ हटाकर ॥ ५ ॥ ३ चक्रपूजा में ४ गफलत [भूल]

॥ ९ ॥ ७ ॥ ५ नानक के मत के साथ चलनेवाले १ रीस [क्रोध] सहित ॥ ८ ॥

७ घोड़े = चल कर १ सेना सहित १० दंडें लांछ कर [नानक मतवाले हाथों में दंड रखते हैं] ॥ ९ ॥ ११ आसक्त करके १२ उन दंड रखनेवालों को डाढ़ी मूछ मुँडवा कर निकला दिये [डाढ़ी मूछ का मुँडवाना नानक मत के विरुद्ध है]

॥ १० ॥ १३ सालमार नामक याग के समीप

* ग्रामवासियों के ग्रन्थों में "भैरवा चक्र" की पूजा की विधि विस्तार से लिखी है, वह यहाँ नहीं लिखी जासके जिस किसीको देखना होवे वह "भैरवा चक्र" नामक ग्रन्थ में देखे, उसका सिद्धान्त नृसिंह के श्लोक से जानना चाहिये ॥

प्रवृत्ते भैरवाचके सर्वे वर्णा द्विजोत्तमाः ॥ निवृत्ते भैरवाचके सर्वे वर्णाः प्रयक् प्रयक् ॥ १ ॥

अब अभाग तुरकानको, उलटी करत *इलाह ॥ ११ ॥

(पट्पात)

कलियुग भूपन कुमति †निलय नारिन भरि रखै ॥

रहै इक अजुरत अवर जारन तब चखै ॥

यौहौ आलम संग निकर नारिन अंतहपुर ॥

तिनमें बेगम इक लज्ज लाघिय कामातुर ॥

सँहसन सिपाह जातिक रहत रुकत तोहु न काँमग्य ॥

निसदीह जार इच्छत निलज सरमा जिम सारद समय ॥ १२ ॥

(दोहा)

गायक आवत गान गृह, सिखवन नारिन गान ॥

तिनविच पिक्खयो रूप बैर, गायक इक जवान ॥ १३ ॥

छन्नै ताहि कहायकै, रखयो चिकन दुराय ॥

प्रतिसीरा पलटाय पुनि, लिन्नौ रति बुलाय ॥ १४ ॥

दिन रखै मंजूस धरि, रति निकारै ताहि ॥

यौ बेगम दिल्लीसकी चिपी कलावत चाहि ॥ १५ ॥

पिक्खि सँउत्तिन इक निस, अक्खी आलम अग ॥

सुनत प्रमादी साह धकि, लयो ताहि गृह मग ॥ १६ ॥

साहागैम बेगम सुनत, छन्नै संगै लगाय ॥

जाय सउँच संकानिलय, आई ताहि दुराय ॥ १७ ॥

(पादाकुलकम्)

* ईश्वर वाची यावनी शब्द है ॥ ११ ॥ † स्त्रियों से घर भर रखते हैं, उन में एक से प्रीतियुक्त रहता है १ स्त्रियों का समूह २ जनाने में ३ काम से पीड़ित ४ पहरायत ५ काम का वेग ७ सरदक्तु के समय में ६ कुत्ती के समान ॥ १२ ॥ ७ कलावत ८ गाना सिखाने के लिये १० देखा ११ श्रेष्ठ ॥ १३ ॥ १२ कनात में लपेटकर ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ सौतों ने १४ उसी बेगम के घर का मार्ग ॥ १७ ॥ १८ बादशाह का आना १९ छाने अपने साथ लेकर १७ पाखाने जाकर १८ पाखाने में १९ उस कलावत को छिपाआई ॥ १७ ॥

इहिँअंतर आलम तँहँ आयो, तिय जुब्बन *तसकर नहि पायो ॥
 तब नचाय +सोतिन डगतारा, +सउचगेह दिय सैन इसारा ॥ १८ ॥
 सु लखि साह अकिखय बेगम सन, मैं धावरेकगद ॥ अज्जबिकल मन
 यह सुनि गायक मिच्छु बिचार्यो, खंजर दोरि साह हिय मार्यो
 रीठेक फारि पार वह छुट्यो, छिन अंतर आलम असु छुट्यो ॥
 निर्याति जोग इम लेहु निहाँ, दिछीसहिँ गायक हनिडारै ॥ २० ॥
 गायकहू नारिन गहि मार्यो, साह कुबिधि मरि सुजस बिगार्यो ॥
 अंतहपुर तब बजिगँ अचानक, इतउत रुदनराग उरआनक ॥ २१ ॥

(पदपात)

हुरम हार-शृंगार तोरि झूरत तोबा करि ॥
 झारिझारि बंगरिन परत लुटत उटत परि ॥
 मोजदीन पट्टप कुमार यह सुनि हुँत धायो ॥
 सुतो कुमर अजीम भुँद ताकँहँ हनिआयो ॥
 लघुभात दोय तिन सिर निलज पिल्लयो दलँ हलकारिकै ॥
 दोउनरमराय गहिय लई आजमँ अनय विचारिकै ॥ २२ ॥

(दोहा)

आलम मरन अपुँव हुव, छुट्यो दिस दिस वत्त ॥

*श्री के जावन का चारों लाँवोंन ज्यों की पुतलियों का इसारा करके इतहारत में
 हाने का इसारा किया ॥ १८ ॥ *श्रुतों के राग में 'आज' श्रुत्यु ॥ १९ ॥ २ बाँसे की [पीठ
 की लंछा] छुट्यो अथवा पीठ को फाड़ कर ३ प्राण ४ भाग्य के योग से ५ कलावत
 ॥ २० ॥ ६ वज्र ७ रोने के राग और ८ छातियों के ढोल ॥ २१ ॥ ९ फारसी में
 तोबा शब्द परित्याग की प्रतिज्ञा का वाचक है जिमका अन्वय 'हार शृंगार'
 २' के साथ है, अर्थात् हार शृंगार के परित्याग की प्रतिज्ञा करके १० शीघ्र ११
 भूद [यहाँ झूठ कहने का अर्थ यह है कि अजीम, आलमशाह का छोटा पुत्र होने
 से वह पाठ का हकदार नहीं था तो भी उस सूखे ने वृथा मार डाला १२ बेजी १३
 सेना १४ आजमशाह के किये हुये अनय [अनीति] को विचार करके अर्थात्
 आजम ने भी आलम के छोटे भाई होने पर दिछी के तखत का दावा किया
 था इसीप्रकार ये भी कर बैठे तो आश्चर्य नहीं, यह जानकर ॥ २२ ॥ १५ अपूर्व

मोजदीन लय३धात हनि, बैठा तख्त प्रमत्त ॥ २३ ॥

(षट्पात)

आलम मृत सुनि अजितसिंह मरुदेस नरेसुर ॥

करि फोजन दरकुंच आय अजमेर निडर उर ॥

लिन्नों *बिंदुलि दुग्ग साह थाँनाँ हनि +संगर ॥

सूबा दबिबूसजोर भयो बिनु संक गब्ब भर ॥

इत तकि छिद्र दकिखन अर्वनि मरहट्टन बल मंडयो ॥

जिततित उठाय दिल्लिय असल छैलि कातरपन छंडयो ॥ २४ ॥

(दोहा)

मँति प्रमाद आलम मरत दिल्ली तिय बरजोर ॥

तक्की मारि कटाँछ दग, सहर सितारा ओर ॥ २५ ॥

(षट्पात)

देसदेस मचि दंग चंग भूखन चमकाये ॥

पुरपुर धाटिन पात पयन घुग्घर घमकाये ॥

अलस अस अन्याय हावभावन बिसतारत ॥

आसवपान अपार मार आतुर दग मारत ॥

गनिकान बिभव अधिकार गत चंडाँतक घुम्मर रचिय ॥

दिल्लिय नवोढ दुलहनि बनिय सहर सितारा बरन प्रिय ॥

(पहले किसी बादशाह का मरना नहीं हुआ ऐसा) ॥ २३ ॥ * अ-
जमेर के गढ़ का नाम 'बीटली' है † युद्ध में ‡ जोर [यल] सहित १ भूमि
में २ बढ कर ३ कायरपन छोडा ॥ २४ ॥ प्रमाद की बुद्धि से ५ कटाक्ष ॥ २५ ॥
अथ यहाँ रूपक अलंकार से दिल्ली रूपी स्त्री का सितारा शहर को बरने का
वर्णन करते हैं कि ६ उपद्रव (दंगा) सचा सोही तो ७ चंगे (सुन्दर) प्रपण च-
मकाये और पुरपुर में ८ बाड़े (डाकें) ९ पड़े बेही पैरों में गूघरे बजाये १० अ-
त्यंत मद्य पीना ही कामदेव से पीड़ित होकर नेत्र चलाये [नजारे मारे] गनि-
काओं को वैभव मिलना और राज्य के अधिकार [उहदे] मिलना ही ११ लह-
ंगे [वागरे] की घुमर लगाई (स्त्रियों के समूह के नृत्य का नाम घुमर है) ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

मोजदीन इत आत हनि, बैठि तख्त बनि बीर ॥
निलज दूर किन्नो *अनखि, आलमशाह वजीर ॥ २७ ॥

॥ पट्टपात ॥

हुसनअली †आलमवजीर करि दूर ‡कुसिकखन ॥
जुलफकारखाँ नाम अवर थप्यो लखि §इकखन ॥
तजि पत्तन लाहोर रचिय दरकुंच गेह रुख ॥
अतिजब दिल्लिय आय पट्ट पायो सु परम सुख ॥
आसव गाविपान अनुग्त अति हठ प्रमत्त तय ३आत हनि ॥
गनिकान संग गीदर रहत दिल्लिय पौदप दीमै बनि ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

नायक लाडकपूर इक, गायक गैहिर गुमान ॥
तास लालबीबी बहिनि, अधिक रूप गुन आन ॥ २९ ॥
पट्ट हुम्म ताकोँ करी, मोजदीन बस होय ॥
गलबाँही छिनछोरिकै, कम्म सुनै नहिँ कोय ॥ ३० ॥

पादाकुलकम् ॥

नारिन संग फिरत कांतारन, नारिनहीमै सहल सिकारन ॥
इक दिन बाग करी असवारी, नाजर संग तथा सब नारी ॥ ३१ ॥
पान कार्पिसायन अति किन्नो, माँ चढन सासन पुनि दिन्नो ॥
दिन बैला बसि केलि बिहाई, अपरअन्ह संध्या अब आई ॥ ३२ ॥

* क्रोध करके ॥ २७ ॥ † आलमशाह के वजीर को ‡ बुरी जिद्द से [लोगों के सिम्हाने में] § परीक्षा करने के लिये अथवा अपने नेत्रों से देख कर ॥ विशेष पीने [अधिक पीने] में अनुग्त ? दिल्लीरूपी वृत्त का २ दीमक (उदेही) ॥ २८ ॥ ३ कलावंतों का अफसर ४ कलावंत [गानकार] ५ गहरे घमंड वाला ६ घर अथवा नगर ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ७ वनों में ॥ ३१ ॥ ८ मद्य-पान ९ सन्ध्या समय १० दिन का समय क्रीड़ा में बिताया ११ अपरान्ह स-

मोजदीन अतिपान विमत्तो, रहसि लालबीबी अलुमत्तो ॥
 सोधि तास सिविका विच सोयो, जावतखिन काहू नहिं जोयो ॥ ३३ ॥
 असवारीके समय अचानक, इत उत वजे चढनके आनक ॥
 कहि कहि त्वरौ दरोगन किन्नी, सब हरमन सिविका कसि दिन्नी ॥
 लौलै चले कहार नृजानन, जोबत फिगत साहकों सब जन ॥
 भटन लालबीबीय छिग भास्यो, खोजन तब तह जायनिकास्यो ॥ ३५ ॥
 खोलि बंध सिविका इक नाजर, आन्यो साह भटनके अंतर ॥
 अति अचेत सिविकाविच डग्या, बुहुहिं राज समरत विचारया ॥ ३६ ॥
 आई तब दिल्लिय असवारी, मनजित साह रहैं इम मारी ॥
 दे अधिकार विभव सुखदायक, गुरुमंत्री किन्नें सब गायका ॥ ३७ ॥
 दोहा—इत दिल्लिय इम मचि अनप, इत बुंदिय अवनीस ॥

साहबदादुर मिच्छे सुनि, सोचि रु छुन्यो गीस ॥ ३८ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायण सप्तम ७ राशौ बु-
 न्दीपतिबुधसिंहचरित्रे बुधसिंहवाममार्गधारण १ नानकमतीयोप-
 द्रवश्रवणात्मशाहलाहोरगमन २, आलमशाहकलत्रोपपत्तिगाय-
 ककरालमशाहपञ्चत्वप्रापण ३ इताद्युजत्रिकमोजदीनदिल्लीपट्टो
 पविशन ४ अतिमद्यपमोजदीनगायककनीलालबीबीविश्राभवनं द्वा-

न्ध्या [सायंकाल] ॥ ३२ ॥ १ विशेष मत्त हुआ २ एकान्त में ॥ ३३ ॥ ३
 शीघ्रता ॥ ३४ ॥ ४ पालगियों को ५ नाजरों ने ॥ ३५ ॥ ६ उमराओं के भी-
 तर ॥ ३६ ॥ ७ बादशाह के मन को जीतने वाली ८ महाजारी [मगी] रंग वि-
 शेष जिसको अंगरेजों में प्लेग कहते हैं, यह लालबीबी का विशेषण है ९ ब-
 डे सलाहकार सब कलावंतों को किये ॥ ३७ ॥ १० अनीति ११ मृत्यु ॥ ३८ ॥

अब वंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुन्दी के श्रुपति
 बुधसिंहके चरित्र में, बुधसिंह का वाममार्ग धारण करना १ नानक मत वा-
 ले सिक्खों का उपद्रव सुन कर आलमशाह का दिल्ली से लाहोर जाना २
 आलमशाह की वेगम के जार [उपपत्ति] एक कलावंत के हाथ से बादशाह
 आलमशाह का मारा जाना ३ तीन छंदे साइ्यों को मार कर मोजदीन का
 दिल्ली के तख्त पर बैठना ४ अत्यन्त सचपान करनेवाले मोजदीन का एक

विंशो मयूखः ॥ २२ ॥

आदितः पष्ट्युत्तरद्विशततमः ॥ २६० ॥

दोहा ॥

मति बिगारि भजिं बाममत, सजि विधिरहित समाज ॥

आलस पर आसिक भयो, राजकाज तजि राज ॥ १ ॥

पट्टपात् ॥

हुसनअली सय्यद नबाव इक संत्र रचिय इत ॥

मोजदीनकोँ मत्त जानि चिंतिय प्रपंच चित ॥

पूरब पुर पटनाँ सु साहफूरुक अजीम सुव ॥

तव पत्रनँ मिलि ताहि भिरन आन्यों दिल्ली भुव ॥

इन मोजदीन तासन बिरचि भजि दिल्लिय अंदर दुरघो ॥

लगि पिछि साहफूरुक सजव आय ताहि हनि अंकुरघो ॥ २ ॥

दोहा ॥

सक नव खट सत्रह १७६९ समय, बिक्रम हार्यन बट्ट ॥

मोजदीनकोँ मारिकै, बैठो फूरुक पट्ट ॥ ३ ॥

जुलफकारखाँ सचिव तस, हन्यों सोहू हमगीर ॥

सय्यद फूरुकसाह किय, हुसनअली सु वजीर ॥ ४ ॥

पलटो गहिय तीन ३ इम, बरस इक १ के माहिँ ॥

आलम पिछैँ मोजदी, अब यह फूरुक आहिँ ॥ ५ ॥

बुध नृपकै याही बरस, भयो कुमार कुलभान ॥

कछवाही रानी उदर, देवसिंह अभिधान ॥ ६ ॥

होत जनज दिमदिस दये, लकरखन दम्म लुटाय ॥

कलावंत की पुत्री लाख रानी के बसीबूत माने का चार्ईसवां २२ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोस्तै साठ २६० मयूख हुए ॥

१ याम सत का लेखन करके ॥ १ ॥ २ फुनकगाह ३ पुत्र ४ पत्रों से मिल कर अर्धात्त लिखा पढी करके ५ मुख करने के लिये ६ उल फुनकगाह से ७ खड़ा हुआ ॥ २ ॥ ८ बिक्रम के सय्यद के मार्ग से ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ १ रुपये

जातकरम अरु दान जप, सबविधि पुण्य सधाय ॥ ७ ॥
 कुमर जनम आभेरपुर, सुनि जयसिंह नरिंद ॥
 पठये कुल पहिरावनी, दस १० हय दोय २ कैरिंद ॥ ८ ॥
 मास तीन ३ रहि कुमर वह, छोरि गयो निज देह ॥
 विगारि बाममग बुद्धमति, आलस गहिय अछेह ॥ ९ ॥
 औसो आलस अवर गत, सुन्यो न पिक्खयो रंच ॥
 सातों ७ प्रकृति सम्हार नहिं, विगस्त सबहि प्रपंच ॥ १० ॥
 पुर बनाय संबंध भो, तिहिं पर लगन लिखाय ॥
 रठोरनको खबरि दिय, आवत बुंदिय राय ॥ ११ ॥
 विप्र पुरोहित निज बिबुध, नाम भवानीदास ॥
 महँडू केसोदास पुनि, कुल चारन मतिकीस ॥ १२ ॥
 ये दुव २ भूप तयार करि, पठये नगर बनाय ॥
 लगन बेर हम आयहै, दिन्नी एह कहाय ॥ १३ ॥
 द्विज चारन दुव २ जायकै, भाखि लगन रहि तथ ॥
 इत नृपको आलस अधिक, उपजत विविध अनर्थ ॥ १४ ॥
 बहै लगन नृप चुकिरै, दूजो लगन दिखाय ॥
 लगन पंचइम चुक्यो, व्याहन गो न बनाय ॥ १५ ॥
 द्विज चारन प्रति कहिय तब, पति बनाय करि रास ॥
 अब तुम सिर कन्या हनों, कै आनहु बुन्दीस ॥ १६ ॥
 तब चारन तथहि रह्यो, द्विज आयो नृप पास ॥
 बुल्लयो अब मरिहों न तो, व्याहहु आलस बाँस ॥ १७ ॥
 यह सुनि द्विज संकोच वारि, गो नृप नगर बनाय ॥

१ विधिपूर्वक ॥ ७ ॥ २ बड़े हाथी ॥ ८ ॥ ३ बुधसिंह की बुद्धि ॥ ९ ॥ ४ अन्य
 में गया हुआ अस्वामि, अमात्य, मित्र, कोश, राष्ट्र, दुर्ग, सेना ये राज्य के सातों
 अंग हैं ॥ १० ॥ ११ ॥ ५ पंडित ७ चारनों की एक शाखा का नाम है ८ बुद्धि का
 प्रकाश करने वाला ॥ १२ ॥ १३ ॥ ६ अनर्थ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १० हे आलस्य
 का स्थान ॥ १७ ॥

परनि सुता रहोरकी, विविध त्याग बंटाय ॥ १८ ॥

बुंदिय दिस पुनि कुंच किय, अति आलस *अलसात ॥

आत आत मगमाहिं रुकि, बहु सुकाम रहि जात ॥ १९ ॥

चलत रुकत रुकि चलत इम, नगर मालपुर आय ॥

तहँ तंडाग अंतर उतरि, कटके सुकाम कराय ॥ २० ॥

व्याहयो मासतपस्य बिच, साह्यो अलस सुगाढ ॥

रहत मास पुरताल बिच, आयो सिर आषाढ ॥ २१ ॥

षट्पात् ॥

गरजि मेघ घनघोर ओर उत्तर सन आये ॥

अधिक मंडि आसौर विहित संबर बरसाये ॥

आयो जल जब ताल तवहि स्पंदन मँगाय इक ॥

तिहिँ उप्पर थित होय रह्यो बहु दीह आलसिक ॥

मालपुर सचिव यह सोधि मन कूरमर्पति प्रलि पत्र दिय ॥

उन कहिय नीर परिवाह मग कहहु तब यह इन करिय ॥ २२ ॥

गीर्वाणभाषा ॥ उपजातिः ॥

इत्थं स वक्षोद्वयसे कृपीटे रथस्थितो मालपुरातडागे ॥

बहून्यहानि ह्यवसत्प्रमत्तश्चिरक्रियो बिन्दुमतीक्ष्णीशः ॥ २३ ॥

अनुष्टुप् ॥

तत्रैव फूरुके शाहे, जाते भटसहस्रभृत् ॥

स्वामिदर्शनसाकांक्षो, जैत्रसिंहः समागतः ॥ २४ ॥

॥ १८ ॥ * आलस्य करता हुआ ॥ १९ ॥ १ तालाब के भीतर २ सेना का ॥ २० ॥ ३ फागुन में ४ उस आलस्य को गाढा (हठ) पकड़ा ॥ २१ ॥ ५ मेघ धारा ६ उचित ७ जल ८ रथ संगवा कर ९ आमेर के राजा जर्घोसिंह प्रति १० जल निकलने के मार्ग [मोरी] के रस्त से ॥ २२ ॥ इसप्रकार वह छाती पर्यन्त जल आने पर रथ में बैठाहुआ मालपुरा के तलाब में मदोन्मत्त आलसी कुंदी का राजा बहुत दिनों तक रहा ॥ २३ ॥ वहाँ ही फरोखशाह के बादशाह होने पर हजार योद्धाओं को धारण करनेवाला और स्वामी के दर्शनों की इच्छावाला जैत्रसिंह आया ॥ २४ ॥ जिस पीछे आवण मास के आन पर, आ-

वंशस्थः ॥

ततो नृपः श्रावणिके समागते, बुन्दी समागम्य विषुप्तबुद्धिभृत्।
आलस्यमासेव्य चिगक्रियेश्वरोऽवसद्यथापूर्वमवस्थितः पुनः ॥ २५ ॥

प्रायो ब्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इत मेरुनृप अजमेर लिय, तब बिग्रह हुव एक ॥

रूपनगर रठोर नृप, राजसिंह किय टेक ॥ २६ ॥

मरुभूपति सौं नहिं मिल्यो, हठपूरव हमगीर ॥

साहहिं गिनि भानेज सुत, भो वह दिल्लिय भीर ॥ २७ ॥

याकै अरु मरुईसकै, बनी नाहिं जब वत्त ॥

तब रजधानी संगलै, दिल्लियपुर वह पत्त ॥ २८ ॥

बुद्धियहू तब आय वह, राजसिंह रठोर ॥

नहिं किन्नौं सतकार तम, बुद्ध अलस वरजोर ॥ २९ ॥

राजसिंह निज पुढिका, सगपन हित कहि वत्त ॥

सोहू नृप मन्त्री नहीं, अलस नारि अनुरक्त ॥ ३० ॥

पाय अनादर तब गयो, कोटापुर रठोर ॥

कन्या भीमहिं व्यादिकै, जुरि मंडयो इक जोर ॥ ३१ ॥

रूपनगर पति रीति इहिं, भीम हितुं करि मंत्र ॥

निज रजधानी संगलै दिल्लिय गयउ स्वतंत्र ॥ ३२ ॥

मरुनृपको बनि बनि पिसुन, अनय साहसौं अक्खि ॥

लक्ष्य का आश्रय लेकर, आलसियों का गिरासण, सोई हुई बुद्धि को धारण करनेवाला, राजा [बुधसिंह] जिसप्रकार पहिले स्थित था तिसीप्रकार बुन्दी में आकर फिर रहा ॥ २५ ॥ १ मारवाड़ के राजा ने रकितनगढ़ के राज्य के प्राचीन राजधानी का नाम रूपनगर है ॥ २६ ॥ २ राजधानी की हाथी घोड़ा आदि सब सामग्री ४ प्राणहुआ ॥ २८ ॥ ५ बुधसिंह ने ॥ २९ ॥ ६ आलस्य रूपा ग्री से अनुरक्त ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ७ भीमसिंह से सलाह करके ॥ ३२ ॥ ८ चुगल ९ अनीति

साह लगत भानेज सुत, यातैं अहर रक्खि ॥ ३३ ॥

पद्धति: ॥

इत बैठि पट्ट फूरुक सिताव, करि सचिव मुख्य सख्यइ नवाव ॥
फरमान देसदेसन पठाय, सतकागपुर्व सत्र नृप बुलाय ॥ ३४ ॥
बुधसिंह पास नैति सहित तत्र, निज हथ्य मंडि पठयो सु पत्र ॥
हुत सदल आय सत्रुन विदारि, चाचा व रचहु मम घर सम्हारि ३५
सोहू न पत्र मन्थो नरेस, बिधिजोग राज बुडुन बिसेस ॥

किय छत्रमहल विच सतत बास, अच सुभट मंत्रि सब हुव उदास ३६
दोहा ॥

चारन केसोदाससौं, इकदिन अक्खिय बुद्ध ॥

मरुनृप जो अप्पन मिलैं, जुरैं साहसौं जुद्ध ॥ ३७ ॥

बुंदिय तजि उत हम चलहिं, वे आवहिं इत बेग ॥

ततो उभयश्मगमाहिं मिलि, धर दब्बहिं गहि तेग ॥ ३८ ॥

महडू केसादास तब, यह सुनि गो अजमेर ॥

मरुनृपसौं मिलिकैं कहयो, अब नहिं करहु अवेर ॥ ३९ ॥

हेरतहो मरुनृप यहहि, कोऊ मिलहिं सहाय ॥

यातैं हुत दरकुंच कगि, बुंदिय तरफ चलाय ॥ ४० ॥

कुंच तीन ३ मरुनृप करिय, चढ्यो तथापि न बुद्ध ॥

तब आलस्य अचेत गिनि, फिरयो कबंधहु क्रुद्ध ॥ ४१ ॥

दिल्लीपति फरमान इत, नहिं मन्नै बुंदीस ॥

यातैं अनखं बिचारि उर, रची साहहू रीस ॥ ४२ ॥

रूपनगरपुर भूपको, तबही लग्यो दाव ॥

संभरको मरुपति सहित, चरच्यो पिसन चंचाच ॥ ४३ ॥

॥ ३३ ॥ १ पूर्वक ॥ ३४ ॥ २ नअता सहित ३ सेना सहित ४ हे काका अब
॥ ३५ ॥ ५ बुंदी के एक महल का नाम है जिसमें निरंतर रहना मांडा ॥ ३६ ॥
॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ १ रूपनगर नामक पुर के
राजा का २ जुगल ने ३ जुगली रची ॥ ४३ ॥

[पट्टपात]

रूपनगर पति कहिय सुनहु मम वत्त साह श्रुत ॥
 मरुपति अरु बुंदीस जुरत मिलि उभय २ मंत्र जुत ॥
 कोटापुर पति मरद वाहि बुल्लहु करि अदर ॥
 दै तिहिं बुंदिय देस प्रबल पिल्लहु तिन उप्पर ॥
 कूरम नरेस जयसिंह कहैं छंद लिखाय हिय प्रीतिछकि ॥
 उज्जैन नगर सूबा अगपि तत्थ पठावहु नीति ताकि ॥४४॥
 सुनत एह दिल्लीस पत्र लिखि भीम बुलायो ॥
 महाराव कहि मिलि रु बहुत सतकार बढायो ॥
 दै तिहिं बुंदिय देस साह पिल्लयो दोउन २ पर ॥
 इहिं तब कोटा आय सेन सज्जिय हित संगर ॥
 इत साह भेजि आमैर दल जयसिंहहिं इम हुकम दिय ॥
 सूबा सम्हारि उज्जैनपुर करहु जाय हम महर किय ॥४५॥

(दोहा)

सुनि कूरम उज्जैन दिस, करि दरकुंच चलाय ॥
 सूर सबल सेना सहित, बुंदिय निकस्यो आय ॥ ४६ ॥
 संभर सम्मुह जायकै, आन्यों पुरहिं बधारि ॥
 रक्खयो कछुदिन प्रीति रस मंडि विविध मनुहारि ॥४७॥
 अंतेउर कछवाहको, अंतेउर बिच आय ॥
 मिलि ननंद भाउज मुदित, रही हृदय हरखाय ॥ ४८ ॥
 उपालंभ कूरम दयो, बुद्ध नरेसहिं तत्थ ॥
 मन्नै नहिं फरमान तुम, किन्नाँ बहुत अनर्त्थ ॥ ४९ ॥

१ कानों में २ पत्र ३ तहां (उज्जैन) ॥ ४४ ॥ ४ भीमसिंह को ५ कोटावाले इस
 समय से पहिले केवल राव कहलाते थे अब महाराव की पदवी मिली ६ भेजा
 ७ बुद्ध के अर्थ ८ पत्र ॥ ४५ ॥ ९ वह शूर और बलवान् जयसिंह ॥ ४६ ॥ ४७॥
 १० कछवाहे का जनाना ११ बुन्दी के जनाने में आया १२ बुधसिंह की स्त्री
 ननंद और जयसिंह की स्त्री भोजार्ह ॥ ४८ ॥ १३ अलंभा १४ अनर्थ ॥ ४९ ॥

कोटापुर पति भीम अब, बुंदिय लिन्न लिखाय ॥

तुम प्रमत्त वह छिद तकि, करिहैं विग्रह आय ॥ ५० ॥

यातैं मम मत आहि यह, सजहु भ्रात दुव साम ॥

प्रेथित सत्य मैं बीच परि, कष्टों द्रोह निकाम ॥ ५१ ॥

तब प्रमत्त नृप कहिय फिरि, एह गेहकी रारि ॥

घरहीमैं हम समुझिहैं, लिन्नी विविध विचारि ॥ ५२ ॥

सक अंबर रिखि सत्त ससि १७७०, फगुन द्वादसि रूपाय ॥

कछवाही उर कुमर हुव, भावतसिंह स नाम ॥ ५३ ॥

भागिनेयें हित हरख करि, करिय कुंच कछवाह ॥

पहुँचावन बुंदीसहू, चढ्यो तुरग हित चाह ॥ ५४ ॥

चढत बाजि प्रासाद सिर, बुल्लयो विकट उत्तूक ॥

काकन कंकन कुक्कुरन, किय फेरंडन कूक ॥ ५५ ॥

यह असकुन चिंते न चित, चल्लयो चढि चहुवान ॥

कूरमकों पहुँचायकैं, मुररयो अलस अमान ॥ ५६ ॥

नाथाउत नगराजको, गुढा नाम इक गाम ॥

मातुलकुलं चहुवानको, किन्नै तत्थ सुकाम ॥ ५७ ॥

सक अंबर रिखि सत्त इक १७७०, फगुन मेघैक भूत १४ ॥

कोटापति लै दैल चढ्यो, बुंदीपर मजबूत ॥ ५८ ॥

इतिश्री वंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमराशौ बुन्दी-
पतिबुधसिंहचरित्रे हतदिल्लीपतिमोजदीनफूरुक्सियरशाहयवनेन्दी-

॥ ५० ॥ १ मेरी सलाह है २ प्रसिद्ध ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ३ कृष्णपक्ष की ॥ ५३ ॥ ४
भानजे के ॥ ५४ ॥ ५ घोड़े पर चढते समय ६ महल के ऊपर ७ पक्ष विशेष
८ कुत्तों ने ९ गीदड़ों [स्यालियों] ने कूत की ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ १० बुधसिंह
के मामा के कुलवाला का था ॥ ५७ ॥ ११ कृष्णपक्ष की चतुर्दशी १२ सेना
॥ ५८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुंदी के भूपति
बुधसिंह के चरित्र में दिल्ली के बादशाह मोजदीन को मारकर फूरुक्सिंह का

भवन १ बुधसिंह की मृत्युनाहेतु मशायपपुत्री विवाह लग्न पञ्चक्रा-
तिकमसा २ सनपतिनसिंहाजनेमग्रहतद्विरुद्धरूपनगमराजराजसिंह-
दिल्लीगमन ३ आज्ञाधनानिकमफुरकसियरबुधसिंहबुन्दीदरसान-
नरकोटापनिशीमसिंहनम्प्रदान ४ आमैराधाशजयसिंहोजिनिर्पा-
दमेवशां त्रयोविंशो मयुखः ॥ २३ ॥

आदित एकपद्युत्तरगद्विशततमः ॥ २६१ ॥

[पट्टपात]

पोतन चम्मालि छाया घाय बांझग निसँसान घन ॥

पकखर घंट घमंकि बेग दल्लिय हग वारैन ॥

माधानी मव संग भिरन अवग्रहु अनेक भट ॥

सहैस बीस २००००० हय सज्जि भाँस आयउ बट उब्बैट ॥

निस घटिय दोय २ रहैत निडर लरन घेरि बुंदिय लई ॥

प्रानहि पुकार बुंदीस प्रति भय बिहाल हाजरि भई ॥ १ ॥

मुनन एह बुंदीस चलिय चढि वाजि मुहँ मन ॥

खवरि इते निच आय घेरि लित्रों अरि पैतन ॥

तवहि भूप हरि बास लंघि असतोली भूधर ॥

आय सुगंधपुर करिय रक्तदंता दग्गसन वर ॥

गजमुखद पुगेदित कहिय तव मैतो जावत लरन रन ॥

भाँससों निटि दिखगय भुज नगर द्वार गचिहों मगन ॥ २ ॥

बादशाह होना १ बाधभेद के व्यवस्थान आत्मिक के कारण भणाय के राजा की
पुत्री से विवाह करने में पाँच लक्षों का लुकाया २ मारवाड़ के राजा राज-
गसिंह का अजमेर लेना और जयपुर के राजा राजसिंह का अजमेरसिंह के
पिल्ले दिल्ली जाना ३ फारमान नहीं सोलने के कारण फुरकमियर का बुधसि-
ह से पुँडा तीनदर कोटा के साथ भीमसिंह को देना ४ आमैर के राजा जयसिंह
की परजाण के लक्ष पर भेजने का संदेश २३ मंगल समाप्त हुआ और आ-
ज्यादि में दो गै २६१ मयुख हुए ॥

१ बाधों से आत्मिक नहीं होना २ समान नगरे पड़े ३ बाधों ४
माधोसिंहों का दण्ड ५ बिना मार्ग ॥ १ ॥ ६ मन का मुँह ७ पुर ८ असतोली ना-

यह कहि गजमुख आय प्रविशि पच्छिम पुर तोरैन ॥
 दक्खिन तोरन निज निकेतें तँहँ जाय रच्यो रन ॥
 भरि भरि वाहत तुपक पिक्खि नृप भीम कहाई ॥
 दोउन २ कैँ तुम बंधँ मिलहु करि बंध लाराई ॥
 गजमुखहु पाय तब लोभ गति मँद जाय भीमहिँ मिल्यो ॥
 पकराय तबहि लिननो निँपुन गुरुतामद तब द्विज मिल्यो ।३।
 (दोहा)

गजमुखकौँ पकराय इम, तोरैन अँररन फारि ॥
 आय तखत कोटैस अरि, बुंदिय अमल बिथारि ॥ ४ ॥
 इत नृपसौँ सालाम कह्यो, मरन उचित इहिँ जुद्ध ॥
 जो न रुचत तां लरहिँ हम, हमहिँ सिक्ख अव सुद्ध ॥ ५ ॥
 यह कहि सज्ज्यो जाय गढ, निज पुर करउर नाम ॥
 नृप सु सुरथपुरतें सुगरि, गो मेवाग्न गाम ॥ ६ ॥
 मेवागहिँ पुनि दाहिनेँ, करि गो मालव देस ॥
 सालकें भिँट्यो जाय तँहँ, पुर आमैर नरेस ॥ ७ ॥
 इहिँ अंतर उनीयार पति, नरुवँस संग्राम ॥
 नैननगरके ग्राम कति, दब्बे तकत कुकाम ॥ ८ ॥
 कौरातें गजमुखहु कढि, गो मालव नृप पास ॥
 तबहि अनादर तरँजि नृप, अंतर भो जु उदास ॥ ९ ॥
 छिन्नि अखिलेँ अधिकार तस, द्विज सिवदासहिँ दिद्ध ॥
 कउल मग्ग गुरुसिर कहँरै, कोप बिगारि अब किद्ध । १० ।

स पर्यंत लांघकर ॥ २ ॥ १ शहर के द्वार में २ अपना घर ३ नमस्कार करने योग्य ४ सूर्य ५ बलुर भीमसिंह ने ॥ ३ ॥ १ पुर के द्वार के ७ किवाड़ों को तोड़कर ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ मेवाड़ के नामों में ॥ ६ ॥ १ शाला[जयसिंह] से मिला ॥ ७ ॥ १० उणिशरा का पति ११ नरुका संग्रामसिंह १२ नैणवा नगर के ॥ ८ ॥ १३ कैद से १४ धमकाकर ॥ ९ ॥ १५ सब १६ क्रोध “यहां क्रोध की अधिकता दिखाने को एकार्थ बाची दो शब्दों का प्रयोग है” वा कहर का अर्थ जुद्ध है

कोटापति बुंदिय मुलक, इत समरत अपनाय ॥
 अनायत करउर समुक्ति, घेर्या सालम जाय ॥ ११ ॥
 बुंदियपुर अवरोधतैं, रानिय बिपति बिरत्त ॥
 इक १ बेघम आमैर इक १, पुर भनाय इक १ पत्त ॥ १२ ॥
 अवर लोक अवगोधके, बिभव सचिव तिहिं बार ॥
 सब बेघमपुर संचरे, देवसिंहके द्वार ॥ १३ ॥
 खरच रुपये अठसत ८००, अरपि नित्य तिन्ह एव ॥
 इक १ हाँपन बुंदिय बिभव, दुभर निवाहयो देव ॥ १४ ॥
 इत नृप सालव जायकैं, लिन्नै तुरग अनाय ॥
 बेघमपति प्रति मोलकी, हुंडिय दिन्न पठाय ॥ १५ ॥
 देवसिंह वह बंचि दैल, गिनि सगपन उपवहार ॥
 दिन्नी हँय सोदागरन, मुद्रा तीस हजार ३०००० ॥ १६ ॥
 बिपति बीच इम बंदगी, चुंडाउत किय चाहि ॥
 अप्पन सिर ऋन किय अधिक, बुंदिय बिभव निवाहि ॥ १७ ॥
 इत करउरपुर भीम नृप, रहयो बिंदि रनरत्त ॥
 अठारह ८१ अह अंकुर्या, मुरयो न सालम मत्त ॥ १८ ॥
 पल पल बिच गोलन परिग, प्राकारिन बिच पंथ ॥
 सब करउर तोपन सिलगि, हुव आसूकै हरिमंथ ॥ १९ ॥
 मुहुकमकुल उमराव इक, सुखसिंहह चहुवान ॥
 पुत्रहिं दे घर बिभव पद, किय कसायँ परिधान ॥ २० ॥
 वह अनिच्छ विचरत फिरत, कोटा दैल बिच आय ॥

॥ १० ॥ १ स्वतंत्र ॥ ११ ॥ २ जनाना से ३ बिरत्त होकर ॥ १२ ॥ १३ ॥
 ४ देकर निनको धारण किए (रक्खे) ५ एक वर्ष ॥ १४ ॥ ६ कुछ आमद
 नहीं तो भी ॥ १५ ॥ ७ पत्र ८ घोड़ों के सोदागरों का ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ मुद्र
 में प्रीति करके १० अठारह दिन ११ खड़ा रहा ॥ १२ ॥ १३ कोटों में मार्ग होकर
 १४ भाड़ में १५ चने होयें ऐसे होगया ॥ १६ ॥ १७ भगवा १८ वस्त्र ॥ १९ ॥ २०
 इच्छा रतिह १० कोटा की सेना में आया

मिलि गह्विय तजि भीम नृप, दयो ताहि बैठाय ॥ २१ ॥
 कहयो भीम करजोरि तब, मो सिर करहु निदेस ॥
 सुखसिंहहु यह सुनि कहयो, चढि घरजाहु नरेस ॥ २२ ॥
 तबहि कहैं सुखसिंहकैं, वह चढि बुंदिय आय ॥
 नतो कितो करउर नगर, लेतो हुँतहि छुगाय ॥ २३ ॥

(पादाकुलकम्)

कोटापति सुखसिंह कथित किय, जान्यो लोकन सालम जितिय ।
 कूरमपति इन मंल विचारयो, जामिष बुंदिय हीन निहारयो ॥ २४ ॥
 अमर रानके पट्ट उदैपुर, लसत रान संग्राम धरम धुर ॥
 तिहिं प्रति दल जयसिंह पठायो, स्वकर मंडि सतकार सिवायो ॥ २५ ॥
 हे नृप तुम भीमहिं समुझावहु, बुद्धहिं बुंदिय देस दिवावहु ॥
 यह मोसिर औसान करहु अब, तुमरो हुकम भीम स्वीकृत सब ॥ २६ ॥
 तबहि रान यह पल विचारयो, कूरमपति संकोच सम्हारयो ॥
 निज काका तखतेस बुलायो, बुंदिय भीम समीप पठायो ॥ २७ ॥
 तबहि आय तखतेस भीम प्रति, अखिष्य विविध रानकी विन्नति ॥
 बुंदिय तजि निज गेह पधारहु, मो सिर यह औसान विचारहु ॥ २८ ॥
 यह सुनि भीम कहयो धरि गव्वहिं, बुध नृपतैं बुंदिय नहि दव्वहिं ॥
 जमी समस्त साहकी जानों, तजिहों तो व्हैंहैं तुरकानों ॥ २९ ॥
 यह कहि सिक्ख दई तखतेसहिं, तजत भीम नहिं बुंदिय देसहिं ॥
 यह देसहिं सालम लागि लुट्टन, कोटा पति थानन करि कुट्टन ॥ ३० ॥

[दोहा]

मेवावत सामंतदर, इन दडुन गहितेग ॥

॥ २१ ॥ १ आज्ञा ॥ २२ ॥ २ शीघ्र ही ॥ २३ ॥ ३ कहना किया और लोगों ने जाना कि सालमसिंह जीत गया ॥ २४ ॥ ४ सहायणा अमरसिंह के ५ पत्र ॥ २५ ॥ ६ स्वीकार (संजुग) करेगा ॥ २६ ॥ ७ २७ ॥ २८ ॥ ७ गर्व ८ यवनों का राज्य ९ बुंदी के देश को सालमसिंह लूटने लगा ॥ ३० ॥

बुंदियढिग पुर जैतगढ, लुट्टिय आप सवेग ॥ ३१ ॥

तिन पर पठयो भीम नृप, धाइभ्रात भगवान ॥

वाँनै जाय धनावपुर, किन्नौ हद धूमसान ॥ ३२ ॥

मेवावत सामंत हर, मरे बहुत करि जंग ॥

धाइभ्रात भगवानके, घाय बिलगंगे अंग ॥ ३३ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीप-
तिबुधसिंहचरित्रे कोटामहारावभीमसिंहबुन्दीहरण १ बुन्दीन्द्र-
बुधसिंहजयसिंहनृपान्तिकमालवगमन २ वेधमरावदेवसिंहबुन्दी-
कुटुम्बपालन ३ सुखसिंहाभिधहड्डपतिकथनमहारावभीमसिंह-
करवरनगरप्राप्त्युत्थापन ४ जयसिंहलेखमहाराणासंग्रामसिंह-
स्य बुन्दीमुक्त्यर्थमहारावभीमसिंहभक्षानतदस्वीकरणवर्णनं चतु-
र्विंशो मयूखः ॥ २४ ॥

आदितो द्विपृष्ठयुत्तरद्विशततमः ॥ २६२ ॥

(पञ्चकटिका)

संग्राम रान साँदर कहाय, सो भीम नाँहिँ मन्निष सुभाय ॥

तकसीर तास मेटन बिचारि, कोटेस उदयँ पत्तन पधारि ॥१॥

सीसोदभिदि संग्राम रान, दिय भीम तत्थ कछुदिन मिलान ॥

॥ ३१ ॥ १ युद्ध ॥ ३२ ॥ २ सामंतसिंह के बशवाले ३ विशेष करके घाव-
लगे ॥ ३३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति बुध-
सिंह के चरित्र में, कोटा के महाराव भीमसिंह का बुन्दी छीनना १ बुन्दी के
रावराजा बुधसिंह का राजा जयसिंह के पास आलवे में जाना २ वेधम के
राव देवसिंह का बुन्दी के कुटुम्ब की पालना करना ३ महाराव भीमसिंह का
सुखसिंह नामक हाडा सन्न्यासी के कहने से करवर नगर का घेरा उठाना
४ जयसिंह के लिखने से महाराणा संग्रामसिंह का बुन्दी छोड़ने के अर्थ महा-
राव भीमसिंह को कहलाना और भीमसिंह के अस्वीकार करने का चौबी-
सवां २४ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ वासठ २६२ मयूख हुए ॥
४ आदर सहित ५ उदयपुर ॥ १ ॥ ६ मुकाम

१०४१

राष्ट्रोजयसिंहकासालमसिंहपरजाना] पन्नामगाशि-पंचविंशमवृत्त (३०४१)

* अट्टाल सीम इक दीह आय, बैठे दुःभूप + गिखिद बनाय ॥ २ ॥
 + मागाद नामके दृष्ट याम, इक नटिय आय किन्नों इतमास ॥
 कोटेग कुजग करि कहि कुबत्त, बुल्लिय सालम जन चढ़ि वत्त ३ ॥
 सो सुनत भीम कः मुच्छ घाल्ल, लै गिखि आय बुंदय उभाळ ॥
 गहोर सुभट जयसिंह नाम, सालम सिग पल्लयो जय सकास ॥ ४ ॥
 दल्ल महँमबीम २०००० लै तब दुँहह, जयसिंह विविध सजि नोपजूहँ
 करउग सु जाय विंटेय सजोर, इक १ मास गहिय घममान घाग ॥ ५ ॥
 करउग रजपूनन इग उँपेत, मा पूर सँगधि जिम गोभ दत्त ॥
 जयसिंह पुर सु तुट्टन नजानि, मन साधि श्रंय गामहिँ प्रमानि ॥ ६ ॥
 सालम मर्माप लिखि दल्ल पठाय, अय साम दहहिँ तुम भित्तहुआय ॥
 अरु तुमरे गुन गाँ दे अजेय, मन दुहिना सगपन हे विधेय ॥ ७ ॥
 सालम कदाय तब इन अँनीक, पुग तोँ अँदर मिलनठाँक ॥
 मन्नी यदैहु गहोर तथ्य, पुग द्वार गयो लै तुच्छमथ्य ॥ ८ ॥
 उतँ चाढपालम मदेँल आय, गहोर लिपउ अँदर बुलाय ॥
 सालम सु मिलयो जालम जैनू, हुय घाटय अह बैठक दुहून ॥ ९ ॥
 (दादा)

बीममहँम २०००० दलँ वँ, अँगो कगउग हो न ॥
 यदै नजनै कदो मिलयो, भाँहँ कबंध भिगयो न ॥ १० ॥
 सालम सुत पगतापसों, स्वीय सुता मबंध ॥
 करि बुंदिय गो कुंचकगि, सु जयसिंह तह मंधँ ॥ ११ ॥

* अतः जगदीश्वर का के ॥ २ ॥ इति महल के नीचे ॥ ३ ॥ १. बुद्ध पर हाथ
 रख कर २. बुद्ध कर जय की नामना मढ़ि ॥ ४ ॥ ४. काटनाई से तबना में जावे
 एता ५. नम्र ॥ ६ ॥ ६. महित (भयुक्त) ७. जैमे बाणों ने पूर्ण आथाओमा देवे नैस
 ८. साम उराय ॥ ९ ॥ ९. पद ॥ १० ॥ १०. काटा की मना में ११. शहर के द्वार
 के भीतर मिलना ठीक है १२. बाहर निकलने में पकड़ लेने का भय था इसका-
 रण ॥ १३ ॥ १३. सेना सहित १४. जुलूम करने वाले क्राध से ॥ १५ ॥ १४. काय-
 र ॥ १० ॥ १५. अपनी (जयसिंह राठौड़ की) पुत्री का १६. विजय करने की प्र-

जायो जुगियगागको, अंकुगि कगउर एम ॥

जेरै न दोरह बर मो, भावी मिहँ सु कैग ॥ १२ ॥

इत कूगम कहि संभगहिँ, उज्जइनी हम जात ॥

जोलो तुम अत्थहि रहहु, हम करिहँ भुव हात ॥ १३ ॥

यह कहि वह उज्जैन गां, सूबापति मासाय ॥

गाम नाम कायत्थिया, रहयो सु बुंदिय राय ॥ १४ ॥

(पट्पात्)

इत मरुपति निज भटन पुच्छि लखि समय मंत्र किय ॥

मिलि अप्पन कूगमन अगग गंभापुग लुट्टिय ॥

अब कूगम पनि फुट्टि भयो सूबा सिर स्वामी ॥

ऐकाकी अप्पनहि गदे दिर्ल्लास हगर्मा ॥

अवर न उपाय सुज्झत अवहि उचित आहि दिल्लिय गमना

सुंदर बिबाहि साहहि सुता रहैं सदा सिर कूगमन ॥ १५ ॥

(दोहा)

अमर लिखाई उदय पुग, मेटि रंति वह भुद्ध ॥

पुत्तिन संटैं पहुमि पुनि, लग्गो ग्वखन लुंद्ध ॥ १६ ॥

निज तनया तब मंगले, यह कुमंत्र उपजाय ॥

आजनमिह दिल्लिय गयो, पायो माहक पाय ॥ १७ ॥

तब हिंदुन जिम नार्भकी, सुता बिबाहयो माह ॥

अजितसिंहको इकठे, किन्न माफ गुनाह ॥ १८ ॥

साह बनायो सय्यदन, पातैं वे^{१२} हमगोर ॥

हुसनअली उच्छैन करैं, बाहिबेमात्र बजीर ॥ १९ ॥

निज्ञा छोड कर ॥ ११ ॥ १ उदय [खडा] होकर : आर्भात (नहीं झुका) ॥ १२ ॥

३ बुद्धि को ॥ १३ ॥ १४ ॥ ४ अंतर्गत ५ वादगाह को बेटी पाना कर ६ कलव हों के घस्तक पर रहैं ॥ ११ ॥ ७ गडागशा अमरनिह ने वादगाहों को पुत्री नहीं देने की रीति लिखवाई थी उसको मेट कर ८ सूत्र ने ९ बदले में १० लोभ ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ उच्छैन ॥ १४ ॥ १५ सय्यद १६ चाहा हुआ (चाहै सो) १७

तिनसों साहसु दवि रहन, सन्मुह सजत न सत्य ॥
 हुसनअलीके हुकमकों, मिटन कोन समत्य ॥ २० ॥
 हुसनअली काह मुकल्यो, यह मरु भूपति पास ॥
 संभर पुर भाई हनै, बैर बिमंगों तास ॥ २१ ॥
 यह मुनि तब मरुपति गयो, हुसनअलीके गंह ॥
 करन जोरि अरु साथ कार, अकला निहिं प्रति एह ॥ २२ ॥
 में करम बरज्यो बहुत, सौहस तदपि सम्हारि ॥
 जयनिहदि पुर लुटिगो, अत रावर मागि ॥ २३ ॥
 सयद वृष्य कगे इन निलो, सयदमों मरुमोर ॥
 सयद तब मरुगस गिन्यो, जयनिहदि बगजंग ॥ २४ ॥
 जयनिहदि यह मव मुन्यो, मरुपति सयद मेल ॥
 तब उज्जइनी नीनि तकि, अंकुगि रहिय अठैल ॥ २५ ॥
 इहिं विव दकिख ॥ देवकी, पता आनि पुकार ॥
 मरहट्टे लुट्टा मुत्तक, करि करि विविध बिगार ॥ २६ ॥

(पदपात्)

हुसनअली सयद नवाव दकिखन पुकार लहि ॥
 पुर अवरंगवादा चल्या दरकुंच विजय चहि ॥
 सारधलकख १५०००० तुर्ग संग सत दोय २०० तोप सजि ॥
 आवत घन जिम उमडि बंध निकरं च तनितें बजि ॥
 उज्जैन निकट आया जवाह कूरुमपति इक नीति करि ॥
 पैतीस ३५ कोस दरकुंच गो दुलहनि व्याहन व्याज दौरि ॥ २७ ॥

(दोहा)

॥ १० ॥ २० ॥ १ उनका बैर मांगना हूँ ॥ २१ ॥ २२ ॥ २ हठ ३ तोर्ना ॥ २३ ॥
 ४ झूठे सोमन ५ भागवाह का मुकुट ६ अपराध सहित ॥ २४ ॥ ७ नहीं छिगै
 ऐसा हांकर ॥ २५ ॥ २६ ॥ ८ यहां अजहत् स्वार्थ लक्षण मे सवार जानने
 चाहिये ९ नगरों का समूह १० संघ की गर्जना के समान बज कर ११ बिबाह
 के मिस से १२ डर कर ॥ २० ॥

सह लिङ्गकोस उज्जैनतै, इक चहुवानन गःम ॥
 तिन तनया सगपन कियउ, कूरमसौ सह सोम ॥ २८ ॥
 वह सगपन मन चिनि अरु, सद्यद गिनि बग्जोर ॥
 विनुहि लगन व्याहन गयो, कूरम कुल सिरमोर ॥ २९ ॥
 गीर्वाणभापा ॥

वंशस्थः ॥

लगनं विनोद्वाहचिर्कीर्षया गतां नातिस्थ आमेरपुगे नगेश्वरः ॥
 तत्तस्य पत्नी खलु चाहुवाण गा पल्लकपाया वल्लयान्यधारयत् ॥ ३० ॥
 प्र कुनी मिथितभापा ॥

(दोहा)

कौमको परिनाय डैम, सद्यद दक्षिखन पैत ॥
 नववर तव उज्जैनपुर, आयो पगि उमत्त ॥ ३१ ॥

[पद्यात]

नववर आय अवेति जानि सद्यद दक्षिखन गैत ॥
 लिखि लिखि मुकलिय साह फूरु क हजूर नत ॥
 बुंदीपति आयैत स्वामि आयग लुण्ठो किन ॥
 आलमके अनिसोक नहिँ फरमान लये इन ॥
 बुंदिय लिखाय बखसहु इनहिँ सिग सब हुकम चढायहै ॥
 फरमान दे रु बुल्लहु बुधहिँ अब हजूर हुत आयहै ॥ ३२ ॥
 दोहा ॥

यह सुनि साह नवाव डक, नाम दलावरखान ॥

१ विनाय के स. थार ॥ २९ ॥ नीति में स्थित, आमेर का राजा विना लगन
 ही। वयाह का डच्छा में गया। इस कारण से उसी श्री, चहुवाण की पुत्री
 ने निश्चय ही लाग की चूड़ियें धारण कीं, अर्थात् विना लगन अथवा नक विवाह
 में के कारण दांत का चूड़ा उपस्थित नहीं हो सका ॥ ३० ॥ २. उच्यते को ३
 इस प्रकार का लगन ही वाह कर गया ३ नवान वर [जयमित्र] ॥ ३१ ॥ ३
 गया दूपा ७ आपके अर्थान है ८ नाटिक का हकूम किसने बोपा ॥ ३२ ॥

लिखिन पटा जुत मुकल्यो, कूरम अरज प्रमान ॥ ३३ ॥

आय दलावरखान तब, कूरम सचिव समेत ॥

बुंदी तै द्रुत भीमसौं, अप्पा इनहिं सहेत ॥ ३४ ॥

प्रथम साह किंग खालसै, बुद्धहिं तदनु समाप्ति ॥

कोटाकं उठवायकै, थानाँ इन निज थप्पि ॥ ३५ ॥

सुना भनाय अधीमकी, गनी जो गहोरि ॥

सुना नाग सूरज कुमार, हुन ताकं गुनगोरि ॥ ३६ ॥

सक अंग दग सत इक १७७०, अर्मा रु फगुन मास ॥

कोटापति बुंदियलई, गिल्यो सु दुँजग आस ॥ ३७ ॥

सक जामल दग मत्त इक १७७२, अगहन द्वादशि रथाम ॥

आई पुनि बुंदीसकै, बगधा कुलटा वाम ॥ ३८ ॥

बुल्लि मचिव बुंदीसके, फेरि बुद्ध नृप आन ॥

दै बुंदी दिल्लिय गयां, जवन दलावरखान ॥ ३९ ॥

अवर देग बुंदीसकै, आयो सबहि बहोरि ॥

भार्म नगर बागै मऊ, द्वे पगना न छोरि ॥ ४० ॥

तदनंतर फमान पुनि, पठये साह जरूर ॥

बुद्धसिंह जयसिंह नृप, बुल्ले उभयर हजूर ॥ ४१ ॥

(पट्पात)

फमानन हुँत केलि सज्यो कूरम नरस जब ॥

बुंदीसहिं बुल्लवाय कदयो अँ हून उभयरअव ॥

ए विरैवहु फमान चलहु दिल्ली हम मत्थै ॥

तैह साह रिभाय मुकुट ठेहँ अरि मत्थै ॥

कूम नरेस यह कहि चढ्यो वेंरीपनि तदपि न चढत ॥
 आलम अयेत मतिमंद अति पल पल प्रति चलिहैं पढत ४२
 सुनत एह जयसिंह आयुं बुंदिय दल आयो ॥
 जामिय बुद्धहि कहिय साल गाजि मंद सवायो ॥
 अब नृजान आरुहहु चलिहैं धरि खंथ भुन्य हग ॥
 निज अमुं साथ दिवाय एह आकषय नृप कूम ॥
 संकोच तास बहुवान तब चाँड तरंग तिन संग हुव ॥
 इहिं रीत छोपि मालव अवनिदल्लिय चल्लिय भूप दुवरा ४३।

[दोहा]

कहि मुकुंद दर उत्तंग, चम्पल्लि पट्टन ओर ॥
 लकष्यैगिय गिर लंघन, आय ग्राम अनघोर ॥ ४४ ॥
 कछुदिन तथ मुकाम कार, भंग मुकलि हित चाप ॥
 संभग निज उमगव गव, दे दल लित्र बुलाय ॥ ४५ ॥
 प्रथम इंदमल्लान भर, नगर इंदगढ नाह ॥
 मेव सुवन छित्तर मरद, आयो अधिक उछाह ॥ ४६ ॥
 छित्तरगो जयसिंह नृप, मेल्या न बर्थन घल्लि ॥
 इन अकषी तुग आमई, हम मिलिहे अब दल्लि ॥ ४७ ॥
 हम कहि कूमसौं मिलयो, दे पय गहिय सीस ॥
 इक सूरपन अनुसग्यो, अनखि इंदगढ ईम ॥ ४८ ॥
 करउरपति आयो नरनुं, मिलयो उरर उद्योत ॥
 सालम जुगगीराम सुव, भट मुहुकमसिंहोत ॥ ४९ ॥
 रन कंगउर पचि पचि रह्यो, मु नृप भीम हन संघ ॥

१ तोर्मा २ मंद बुद्धिमान्ता ॥ ४२ ॥ ३ काँध ४ मेना में ५ बहिन के
 पनि बुधमिह में ६ माले ने ७ पालन पग चढो ८ अपने प्राण को ९ सौ-
 गन ॥ ४२ ॥ ४४ ॥ १० हलकार भेज कर ११ पत्र देकर ॥ ४४ ॥ ४६ ॥ १२ दाय
 बदा कर नहीं लिता १३ रोगी ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ १ जिस पीछे १५ उरड (घमंड) प्र-
 काश करके १६ पुत्री ॥ ४९ ॥ १० प्रतिज्ञा छोड़ कर

यातैं दोउन अहंयो, सालम थप्पलि खंथ ॥ ५० ॥

सुभट बैरिसल्लोत सजि, नगर पलोधी नाह,

जैनसिंह जाजव जयी, आयो मरम सिपाह ॥ ५१ ॥

बैरिसल्ल कुल उद्धरन, दह्वा गन हमंगार ॥

बलवनपति आयो बहुगि, अमयसिंह अति वीर ॥ ५२ ॥

पुर स्वातोली पति प्रबल, अमयसिंह अभधान ॥

इंद्रसिंह कुल उद्धरन, चाप मिलयो चहुवान ॥ ५३ ॥

मिलयो आने उद्धत गुमर, चंडै समर चहुवान ॥

सेगसिंह सागंत हर, भजनेगी पुर भान ॥ ५४ ॥

नाथाउत नगरजहू, नगर गुढाको नाह,

पुनि दूजो निम्मान पति, आयो मिलन उछाह ॥ ५५ ॥

सबल मिले उमगाव सब, हम स्वामी छिग आय ॥

सबहि मिगंह सूरपन, जयसिंहहु जस गाय ॥ ५६ ॥

दोहा-सवन कह्यो दिल्लीस दिप, बुंदिय लायत लिखाय ॥

ते कैंगर पिकलैं हमहु, तव इन दिन्न दिखाय ॥ ५७ ॥

पाकख पटा मवाहन कह्या, कूरम नृपति मिगहि ॥

मऊ नगर बागैं मुलक, ए न पटादिचि आह ॥ ५८ ॥

कूरम नृप भुमिकाय कहि, दुव २ हम दिखाय जात ॥

अब लेहैं कहि माहगों, गेन मुलक दसु जातैं ॥ ५९ ॥

हम कहि अवरन सिकखदे, चलै उभय नृप तार्थ ॥

सालमसिंह रु जैनमा, सुभट लगेदुव ३ सत्य ॥ ६० ॥

हम दुव २ नृप आनेगपुर, दरकुंचन चलि आय ॥

जामिप सालक प्राति जुत, गेहे कछुत दिन गये ॥ ६१ ॥

१ जयसिंह और बखानिह इन दोनों ने आकर किया ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ २

नाम ॥ ५३ ॥ ३ युद्ध में भांकर ॥ ५४ ॥ ४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥

६ बाकी का देश ७ भन का समूह ॥ ६१ ॥ ८ तहां से ॥ ६० ॥ ९ बहिनाई और साला १० राजा

तैंहें करुता रन गीभ तकि, सालम हित दखसीस ॥

नैननेगगको पगगनाँ, सब दन्नों बुंदीस ॥ ६२ ॥

मालमके इकत भई, पहुनि दम्भ नवलकख ९००००० ॥

कतिकन तब योंहू कहयो, वनिहै कबहु विपैकख ॥ ६३ ॥

॥ मुकनादाम ॥

करी इम सालमको बखमीस, गये पुनि दि छिय द्वेअनगीस ॥

उमे हिन संग गये पुनि आम, गजी नृप दोउन साह सलाम ॥ ६४ ॥

अनामय दोउनका जवनेस, गिनाधंग पुच्छिय प्रीति दिसेस ॥

उमे २ नृप अप्पन अप्पन ओह, सिगहहि पाय खर हत गोकु ॥ ६५ ॥

उमे २ भट मालम जैत ममत्थ, बुलायउ एहु सभाविच तथ ॥

न कीवनकी इतमोम उभल्ल, परी लकरी इक सालम हेल्ल ॥ ६६ ॥

दई पुनि साह समस्तन मिक्ख, रई नृप कूगमकी आन तिक्ख ॥

रैंहें इम दिलितय द्वे, नग्नाइ, गदा खलिवत्त बुलायत साह ॥ ६७ ॥

लपो नृप कूगम साह गिभाग, प्रसन्न कहैं सु कहैं हित पाय ॥

मुगदव सालमको करि मुहैं, पठायउ बुदियपै तब बुद्ध ॥ ६८ ॥

सभा दिन इक बडी गचि साह, बुलायउ आम सबै नग्नाइ ॥

गयो जयमिहह कूगम ईम, गयो बुध दहुन वंग अधीस ॥ ६९ ॥

गावत सदनके सपुत्त, गयो मरु ईम अजिनहु तत्त ॥

गयो नृप संगैर भीम मरंध, गयो पुनि रूपापुमे कबंध ॥ ७० ॥

गये इम हिंदुव मिच्छ असेम, गयो पहिलैं तैंहें बुद्ध नेस ॥

सलाम करी कसि पाटिनी ठल्ल, लई नृप बुदिय पट्ट मिसल्ल ॥ ७१ ॥

॥ ६१ ॥ १ नैगवा नगर का ॥ ६२ ॥ २ कायों की आमदनी की ३ अष्ट ॥ ६३ ॥

४ आम द. चार में ॥ ६४ ॥ ५ कजलना ६ हंसने हुन होठों में ७ स्थान पर ८

परासा पात ॥ ६९ ॥ ९ समर्थ १० गेय बढ़ानेवाली ११ हाल पर ॥ ६९ ॥

॥ ६७ ॥ १२ पूर्व (बुधसिंह) ने ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ १३ यादगाह का गसुग होने में

घनेंड क. ता. हुआ १४ अजितसिंह १५ नृपवाण भीमसिंह १६ रूपनगर का १७ ति

राठीक ॥ ७० ॥ १७ तय १८ बुधसिंह १९ कटारी ॥ ७१ ॥

बादशाहसे संग्राममिहगणाकी चार्ता] सप्तमराशि-पंचविंशमयुक्त [३०६७)

गये तदनंतर सर्वहि आम, सजी दित पूब नम्म सलाम ॥
बिलंब कलू कणि आयउ भीम, तकयो हिय हेत रची तसलीम ॥ ७२ ॥
सिरे लखि बुद्धहिं मुद्ध गिमाय, जग्यो मनमाहिं सुक्यो मिटिजाय ॥
दई उठि साह समस्तन सिक्ख, रही तँहँ बुद्ध बलापति तिकख ७३
(शुद्धप्राकृतभाषा)

(मालिनी)

इय उअयउगयां तत्थ मङ्गामरगणा,
गाग्वडजयमिहं पोमअं गोहपत्तम् ॥
जइ कुणाइ पमाअं फूरुआं तुब्भधाए,
वसइ गाणा ततो मे पट्टां चित्तऊडम् ॥ ७४ ॥
गायमयजयमिहो तं कखु दहूणा पराणां,
समयबलविण्णी गाइ एकत्तुबुद्धिम् ॥
दडवडहि गयो सो साहआमम्मि कुम्भो,
कहिउ जवणाणाहं फूरुअं राणावत्तम् ॥ ७५ ॥

॥ प्रायोदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

(पट्पात)

१ जिस पीछ सब आम द्वार से गए २ आदाव ॥ ७२ ॥ ७३ ॥

संस्कृत अनुवाद ॥

इत उदयपुगत तत्र संग्रामगणानरपतिजयसिंहं प्रेषितं स्नेहपत्रम् ॥
यदि करोति प्रसादं फूरुकुगतं बुद्धौ वमनि ननु नदा पत्तनं चित्रकूटम् ॥ ७४ ॥
नयमयतयामिहः तं खल दृष्ट्वापणं समयबलविवेकी नीत्वा एकत्र बुद्धिम् ॥
शीघ्रं गतोत्तौ शाहकार्ये कुर्मः कथयितुं यनननाथं फूरुकं राणवानाम् ॥ ७५ ॥

॥ भाषानुवाद ॥

इधाराणा संग्राममिह ने वहाँ राजा जयसिंह को प्रीति पत्र भेजा कि जो
तुम्हारी बुद्धि से फूरुकुगाह कृपा करे तो निश्चय ही चित्रकूट वस जावे ॥ ७४ ॥
उस समय को और बल को जाननवाला जयसिंह नीति के पत्र को निश्चय
देव कर बुद्धि को एकत्र करके बादशाह के कार्य में शीघ्र वह कछवाहा फूरु
कशाह से राणा की चार्ता कहने को गया ॥ ७५ ॥

अगँ अकबर साह लियउ चितोर दुग बर ॥
 पच्छी अप्रिय बहुमि गहयो तबनै वह उजैर ॥
 साह हुकम विनु गन जाय स्वच्छंद बसै किम ॥
 यातैं पठई अत्थ अरज संग्रामसिंह इम ॥
 अप्पहु निदेस बसवाय अब चित्रकूट हमहू रहैं ॥
 सतपंच ५०० सुभट पखैत मम कायतकरो तँह निब्वहैं ७६ ॥

[दोहा]

नजरि द्रव्य कगिहै कितां, यहै कही जब साह ॥
 तबहि दम्म त्रयलख ३००००० मित, अकखे कूरमनाह ७७

(षट्पात)

सुनि सु रान मुकलिय नजरि हुंडी त्रयलखन ॥
 कूरम किन्नी नजरि साह पिकखा सु मोद सन ॥
 लियउ पाट लिखवाय रही महुगहि अवसेसह ॥
 अरज डक पुनि करिय नगर आमेर नरेसह ॥
 बुधसिंह भीम विग्रह बिरचि छिज्जहिं लरि लरि परसपर ॥
 दोउन मिलाय अब अप्प द्रुत मेटि बइर मंडहु महर ॥ ७८ ॥

[दोहा]

सुनत एह कोटेसमौ, दिन्नी साह कहाय ॥
 करहु मेल बुंदास सन, जयसिंहह दिग जाय ॥ ७९ ॥
 जां तुम छिन्प्या हुकम लहि, सां सब पच्छो देहु ॥
 उमयरभात एकत जुगि, सनय साम करि लैहु ॥ ८० ॥

(द्दुर्गितम्)

बरजोर आयस साहका, सुनि भीम भी जुन धी भई ॥

१ शून्य २ स्वतंत्र ३ कहना करो नही ॥ ७६ ॥ ४ कछवाहों के पान न ॥ ७७ ॥
 सुहर लगाना ५ बाकी रहा ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ६ बलवान् आला ७ भय
 सहित ८ बुद्धि

जयसिंहके घन रूप डेग्न जाय विन्नति मंडई ॥

कछवाह कहि बागँ मऊ अब छोगि इन लिखि दीजिये ॥

बुंदामसौ मिलि मोमकैँ इकथाल भाजन कीजिये ॥ ८१ ॥

तब साह ओ कछवाह द्वैरमन मंत्र इकत जानिकैँ ॥

काहेम वह तजि देस दानों लेख कगौर ठानिकैँ ॥

कहि असेन इकशहि थाल ओ भूपाल त्रय दिन वितैरयो ॥

नृप भोम उप्पर ओर ओ मनमौहिँ दाख भग्यो जग्यो ॥ ८२ ॥

सक तीन हय रिखि इंदु १७७३ मैं यह बत्त तीननकैँ भई ॥

इहिँ बीच जटनकी पुकार अपार दिल्लिय उँन्नई ॥

इक नैग थूहनि ईस जट्ट सु नाम चूडामनि रहैँ ॥

धन जोर ओ मन जोर जो रन जोर फोजन निबवहैँ ॥ ८३ ॥

तब साह जट्ट पुकारपैँ कछवाह भूपति पिल्लयो ॥

बुंदीम बिनु सब संग नृप करि सेन संचय ठिल्लयो ॥

इन जाय तोपन माल कैं राँच जाल थूहनि बिटई ॥

इत साह बुंदिय नाह बुलिलँ रु रौन बत्त सु पुच्छई ॥ ८४ ॥

बुधैँसिंह रान पठाय विन्नति चित्रकूट बसावहाँ ॥

किय भेट दम्म त्रिलख ३००००० ओ अपनो निदेस उठावहाँ ॥

नयैँमंद हड्ड नरिंद यौ सुनि कुँम्म कानि हु नाँकरा ॥

जयसिंह उक्त प्रपंचैँ जानत हू यहै कथ उच्चरा ॥ ८५ ॥

वह दुर्ग अकबर साह रन करि अवद द्वादस १० तयो ॥

हम आदि बहुतन रौन तजि तब सीम साहनकोँ नयो ॥

वह चित्रकूट बसायकैँ पुनि रान फेल प्रचारिहैँ ॥

१ माम उपाय [मिल] करके ॥ ८० ॥ २ और ३ पत्र लिख कर
४ भोजन ५ विस्तारा [फलासा] ॥ ८२ ॥ ६ जाटों की उडती ॥ ८३ ॥ ८ भे-
जा ९ एकत्र करके १० बुला कर ११ राणा की वार्ता ॥ ८४ ॥ १२ हे बुधसिंह
१३ नीति से सुख १४ जयसिंह की १५ जयसिंह की कही हुई यह रचना जानना
या तो भी ॥ ८५ ॥ १६ राणा को छोड़ कर बादशाहों का शिर झुकाया है

अवनोप हिंदुन फोरि अंकुरि साह नाह बिसारिह ॥ ८६ ॥
 यह गह फूरक साह सुनि वह पत्र भीत विदारयो ॥
 जयसिंहपै इत भीम थूढ़नि जंग मोह प्रमारयो ॥
 करजोरि कहि मम गेह पुत्रिय अप्प उपनय कीजिये ॥
 कछवाह तब जयसाह कहि कछु दीहैं अंतर दीजिये ॥ ८७ ॥
 नृप बुद्ध सोदरकी सुता हम पुंख सगपन कै बगी ॥
 वह व्याह करि दैन रावरे गृह बत्त उपनय अदग ॥
 जयसिंह यह कहि भीममौ बुधसिंह प्रति दैल पल्लयो ॥
 तुम व्याह मंडहु बेग मै पुनि भीमको दैव भिल्लयो ॥ ८८ ॥
 बुधसिंह यह सुनि साहसौ लहि मिक्ख थूढ़नि संक्रम्यो ॥
 जल घोर सिंधु हिलोर ज्यौं दैल जोर जटनपै जम्यो ॥
 लिखि पत्र बुंदिय जोधैं सोदरकी सुता नृप बुल्लई ॥
 उम्मेदकुमरि सु नाम जो परिनाय कूगमको दई ॥ ८९ ॥
 कोटेम भीमहु अप्पनी तनया सु तथ बुलायकै ॥
 वरजोर कूगम मोर को दिय प्रीति सह परिनायकै ॥
 सक अगि हय सिंख डंडु ७७३ हायन नैर थूढ़नि जंगमै ॥
 कछवाह इम दुव व्याह कीने वीर सुचि रस रंगमै ॥ ९० ॥
 करि व्याह कूगम नाह यौ पुनि ताव जटनपै दयो ॥
 हरिमथैं आपूकै गैव ज्यौं तरकाव तोपनको भयो ॥
 उडि कोट अट्टनै थट्ट यौ गढ बैह जटनकै परे ॥

१ हिन्दु राजाओं का २ उदय होकर बादशाह का स्वामी बन भूलैगा ॥ ८६ ॥
 ३ डर कर फाड़ डाला ४ विवाह ५ दिन की छेटी ॥ ८७ ॥ ६ बुधसिंह के
 सगे भाई की बंटी ७ पहिल ८ जीघ ९ विवाह की चार्ता स्वीकार करी
 १० पत्र भेजा भीमसिंह का ११ चवन ॥ ८८ ॥ १२ चना १३ सेना का १४ छोड़े
 भाई जोधसिंह की बटा को १५ बुलाई ॥ ८९ ॥ १६ पुत्री को १७ चलवान उस वीर
 कछवाहे को १८ युद्ध में १९ शृंगार रत्न किया ॥ ९० ॥ २० चनों का २१ भाइ में २२
 शब्द होवै तैसे २३ बुरजें २४ मार्ग

कढि बेग तब गहि तेग वे सब सेन सम्मुह व्है मरे ॥ ९१ ॥

जयसिंह थूहनि तोरिकैं इम जट चूडामनि हन्यौ ॥

अरु बदनसिंहहिं रक्खि सरनैं *अप्प जय छक उप्फन्यौ ॥

जिहिं बदनसिंह निकेत सूरजमल्ल जट सु पुतभो ॥

‡जर बांटिकैं सिर §संठि लै भुव फोज लखन जुतभो ॥ ९२ ॥

है कोटि २०००००००० आमद मुलक दबि रु ताव साहनपैं दयो ॥

धरि बीस २००००००००० कोटि स्वकीय कोस सरोस सत्रुनको जयो ॥

लार आगरा लहि मारि दिल्लिय साह कोसन लुटिकैं ॥

किय भरतपुर निज राजधानी जंग मिच्छन जुटिकैं ॥ ९३ ॥

गढ भरतपुर कुम्भेर डिग्घ रुबैर ए चउ४ निर्मये ॥

अैसान मिर आमैरको भुल्लयो न जोहु इते भये ॥

वाकं जहाहरमल्ल पुत सहाय सूरहु जाहिलै ॥

बैठो सु मरुपति विजयसिंहहु इक्क गदिय ताहिलै ॥ ९४ ॥

जिहिं पुत्र नातिय ए भये तिहिं सरन कूरम स्वीकंरयो ॥

गढ फोरि थूहनि तोरि सब नृप जोरिं दिल्लिय संचरयो ॥

रस राहसौं रु सिराहसौं मिलि साहसौं जय अप्पयो ॥

सिरमोर भूप समस्तमैं बरजोर कूरम यौ भयो ॥ ९५ ॥

कछवाह साह उभैरहि इक गिनि वैयाज भीम विचारयो ॥

जामात पर रचि घात जड नृप सल्ल मंत्र सम्हारयो ॥

पुग रूपनगर नरेस अरु मरुदेसपति दुव बुल्लिकैं ॥

मिलि इक्क मद्मति मंल मंडिय भूप तीनन भुल्लिकैं ॥ ९६ ॥

॥ ९१ ॥ * आप ऽ घग् में ‡ धन बांट कर § बदले में महक लेकर ॥ ९२ ॥ १

अपने खजाने में २ जीता ३ बादशाह के खजाने को ४ मलेच्छों से ॥ ९३ ॥ ५

बनाये ६ बीर भी जिसकी जहायता लेते थे ७ मातवाड़ का राजा ॥ ९४ ॥

८ पोते ९ स्वीकार किया १० सब राजाओं को एकत्रित करके ॥ ९५ ॥

भीमसिंह ने ११ छल विचारा १२ जमाई (जयसिंह) पर १३ सलाह की

॥ ९६ ॥

लिखि पत्र सद्यदपै *ततखिन देस दखिन मुकलपो ॥
 इत साहकी हित चाहसों कछुवाह भूपति †उज्जलपो ॥
 जयसीह यह कछु दीहमें अधिकार अप्पन पायहै ॥
 बनिकैं वजीर समगत मस्तक चंडे घात चलायहै ॥ ९७ ॥
 रहनों तुम्हैं जु वजीर व्है अरु बंधु बैर निवेनों ॥
 तो बेग आवहु तेग मंडि छुमंडि कूगम घेरनों ॥
 द्रुत पिखिख यह छुद सजिज सद्यद सेन संम्मद उप्पग्यो ॥
 सजि अगग तोपन मगग कोपन लज्ज लोपन संचरयो ॥ ९८ ॥
 उज्जैन आय रु साहको दैल मंडि दूतन अप्पये ॥
 हम आनि पूरव देससों तुम पट्ट दिल्लिय थप्पये ॥
 जयसिंह नृप मम भ्रात मांगक ताहि निज हिय लायकैं ॥
 मम तुल्लय अदर अहस्यो सु दये हि अप्प भुलायकैं ॥ ९९ ॥
 कछु त्रास नहि बिसवासहै अब पाग आय रु अकिखहों ॥
 रन चाय आयस पाय मै निज बंधु बैर न रकिखहों ॥
 सुनि साह यह निज मातगों सब बात सद्यदकी कही ॥
 तब मात अकिखय घात यह जयसिंह उप्परहै सर्ही ॥ १०० ॥
 तिहिं देहु सौंदर सिक्खसों आमैर नैर पठायकैं ॥
 तब छूक अप्पनमाहिं नाहिं लारैं जु सद्यद आयकैं ॥
 सुनि साह यह कछुवाहसों हित चाह अकिखय सर्वही ॥
 तुम जाहु बेगहिं सिक्खि लै अति फैल सद्यदको मही ॥ १०१ ॥
 जयसिंह अकिखय भो वजीर जु मोजदीनहिं मारिकैं ॥
 लैहैं सु आवत बेर ये सब चौर छत्र उतारिकैं ॥

* उमी समग्र १ बड़ा २ आपके वजीर पन का ३ अर्थतर ॥ ९७ ॥ ४ साहयों
 का बैर मिटाना होवे तो ४ पत्र ५ तर्प सहित ६ चला ॥ ९८ ॥ ७ पत्र लिख
 कर ८ हलकारों को दिया ९ मारनेवाला १० आदर से सेने घराबरा किया ११
 अपने ॥ ९९ ॥ १२ लहर १३ कहेगा १४ छुक्रम पाकर युद्ध का चाह ले ॥ १०० ॥
 १५ आदर के साथ १६ दोष (धूल) ॥ १०१ ॥

तसमांत सज्जहु सेन सम्मुह सन्नु सय्यद मारिहैं ॥
 सबहिंदु पायन लाय हिंदुसथान आन बिथारिहैं ॥१०२॥
 कहि साह तुम गृह जाहु जो अति जोर सय्यद जानिहैं ॥
 पुनि तुमहिं बुल्लि प्रपंच करि तिहिं मारि खैंरै प्रमानिहैं ॥
 तब कहिष कूगम गनहित फामान जो वह निर्भयो ॥
 चित्तार दुगग बमायबेहित सो समुद्धहु नांभयो ॥ १०३ ॥
 बुंदीस बैनन चिंति तब यह साह नाहिं न स्वीकरी ॥
 कछु और मंगहु गन हित दैहैं सु यह पुनि उच्चरी ॥
 आमेगपति तब एह अक्खिय गमपुर लिखिदाजिये ॥
 करि भान भूपति गन सर्वसमान सेवक कीजिये ॥१०४॥

[दोहा]

मालवधर अंतर मुलक, नगर गमपुर नाम ॥
 चंद्राउत मीसोद तैंहैं, स्वामि नाम संग्राम ॥ १०५ ॥
 याकै पुरुखन अग्य अति, सेये दिल्लिय साह ॥
 किये सुभट तब राव कहि, राज बग्वमि हित राह ॥ १०६ ॥
 तबतैं बुंदिय जोधपुर, पुर आमेग सदान ॥
 सनमानित मीसोदहू, सेवत रहि सुलतान ॥ १०७ ॥
 तिन कुल यह संग्राम नृप, गहयो सुररि लहि काल ॥
 छिद यहै तकि गहन छिंति, कहि कूगम भूपाल ॥ १०८ ॥
 पट्पात् ॥

कहि कूगम करजोरि सुनहु मम वत्त साह श्रुतैं ॥
 रामपुर पै संग्राम रहिय अब सुररि जोर जुत ॥

१. कूगमकारण मे ॥ १०२ ॥ २ कुशलता ३ लिखागया था मोक्षमुद्रा [छाप] सहित नहीं हुआ अर्थात् छाप नहीं लगी सो लगवादेयें ४ स्वीकार नहीं करी ५ यादग करके ॥ १०४ ॥ १०५ ॥ १०६ ॥ ७ सम्मान पाकर यादशाह को ॥ १०७ ॥ ८ समय १०८ मिनट लेने के लिये ॥ १०८ ॥ ११ काल में १२ पति

जनपद लेहु उतारि गहैं मुगैँ न ठिकानाँ ॥
 रानहिँ देहु लिखाय रचहिँ सेवन यह रानाँ ॥
 सुनि यह लिखाय फगमान दिय करि समुद्र जयसिंह कर ॥
 रान तुम दब्बि गढ रामपुर सज्जहु सेवन सुभट बर ॥१०९॥
 दोहा ॥

रामपुरहिँ लिखवाय इम, रान अरथ हित राह ॥
 सजव सिक्ख करि साहसौँ, नीति चतुर कछवाह ॥११०॥
 जामिपँ डेरन आय कहि, चलहु अप्प करि सिक्ख ॥
 इहाँ समय कछु औरभो, रहैं न राजस तिक्ख ॥१११॥
 षट्पात् ॥

सुनत एह बुंदीस दियउ कूगम प्रति उत्तर ॥
 तुम आयउ लहि सिक्ख सजव सज्जित पैद्वति पर ॥
 हमहि सिक्ख अब होत कछुक अंतर परिजहैं ॥
 चलहु अप्प तममाँत सिक्ख लै हुत हम औहैं ॥
 जयसिंह सु सुनि आमैरपुर आय कटक बहुसज्ज किय ॥
 इत सँदल आय दिल्लिय उमँडि हुसनअली अनखात हिय ॥११२॥
 स्वमुर साहको मूढ अजित अभिधान धन्वपति ॥
 रूपनगर रटोर जनक मातुल विमंदमति ॥
 योहोको जामात भीम कोटेस राम सुत ॥
 वेंधुवरग त्रय जानि बीच डारिय विसास जुत ॥
 कहि साह साम सय्यद विरचि राजकाज निबहहु सकल ॥

१ देश २ छाप (मुद्र) लगाकर ॥ १०९ ॥ ११० ॥ ३ यहिनोई [बुधसिंह] के डेर पर ४ राजापन की या राजागुन की ॥ १११ ॥ ५ मार्ग पर ६ इसकारण से ७ सेना सहित ॥ ११२ ॥ अजितसिंह का नान ८ मारवाह का पति १० यादशाह फुरोग्वसिपर के पिता का ११ मामा १२ विशेष मूल्य बुद्धिवाला १३ इसी राजसिंह का जमाई भीमसिंह कोटा के राजा रामसिंह का पुत्र १४ इन तीनों को सम्बन्ध जानकर

इन दियउ डारि सय्यद श्रवनं उन सब फोरिय मंलबल ॥१२३॥
 ए तीन ३ हि अवनोप लचिग अति भुम्मि लुभाये ॥
 बदलि साहसौं छन्न अधम सय्यद बिच आयें ॥
 साहहिं दै विसवास इक बाँसर जुरि इकत ॥
 बैठे करन रहस्य साह पंचम५ करि सम्मत ॥
 तब साह तीन भूपन पकरि बंधि जाहि की पग्य करि ॥
 मखतूल पासि गल डारिकैं मारि गिरायउ गारि लारि १२४
 हरिगीतम् ॥

सक बेद हय गिरि इंदु १७७४ हांयन मास फगुन 'गोरमै' ॥
 हनि साह त्रय नैरनाह सय्यद चाह हुब अति जोरमै ॥
 परि कूक दिस दिस हुरमखानन नारि तोबह उच्चैरैं ॥
 आतंक सय्यदको अतीव सु द्रव्य गोपेनहू करैं ॥ १२५ ॥
 लै सबन हुरमन द्रव्य धन्य धरैसैं 'धी' गृहमै धरयो ॥
 मरुईस सुनि वसुजुतैं पुत्तिपैं बुल्लि लोभहि अदर्यो ॥
 सह बित्त मुकल्लि धन्य दिय तनया सु यौ मरुईसनैं ॥
 अरु भीमैं सय्यदसौं कही बुधसिंह बैर रचैं घनैं ॥ १२६ ॥
 जयसिंह जौमिप है यहै तुमसौंहु छल करि तोरिहै ॥
 तसैंमात मारहु याहि सब मिलि जोर छल यह जोरिहै ॥
 सुनि एह सय्यद फेरि फोजन बैट्ट बुंदिय बंधयो ॥

१ यह वार्ता सय्यद के कानों में डाल दी ॥ १२३ ॥ २ भूमि के लोभ से ये तीनों राजा न-
 म गये ३ एक दिन एकत्र होकर ४ एकान्त सलाह करने बैठे ५ बादशाह को ६ तीनों
 राजाओं ने ७ उसी (बादशाह) की पगड़ी से ८ रेसम की फासी ९ गालियों से
 लड़कर अर्थात् बादशाह को गालियें देकर ॥ १२४ ॥ १० सम्वत् के ११ शुक्लपक्ष में
 १२ राजा १३ 'तोबा तोबा' करने लगी १४ धन छिपाने लगी ॥ १२५ ॥ १५ मा-
 रवाड़ के १६ पति की १७ पुत्री के घर में १८ धन १९ सहित पुत्री को २० बेटी को
 धन सहित मारवाड़ में भेज दी २१ कोटे के महाराव भीमसिंह ने ॥ १२६ ॥
 २२ यह दिन का पति २३ इसकारण से २४ बुन्दी का मार्ग

अवनीस तीनन३ अँप्प लै बुधसिंह डेरनपैँ गयो ॥ ११७ ॥
 बुंदीस यह सुनि सेन सज्जि रु सेन सम्मुह संकैम्यौ ॥
 तव जैत आँखिय घोर यह अति जोर सय्यदको जम्पौ ॥
 लाहोर तोरै न होय नृप तुम जाहु कूगम देसमै ॥
 हम धीर रन हमगीर जुज्जहिँ वीर जाँगठ बेसमै ॥ ११८ ॥
 यह कहत आँतुर आय खल दल जानि बहल लुं वये ॥
 बजि वीर आनकँ यौ अचानक राग सिंधुव लगगये ॥
 बजि डेरु डिंडिम डक्क ओ बँहकक अँभ फरकई ॥
 अहि भोगँ लेत लचक ओ धरनी सु धक्कन धक्कई ११९
 परि ओर ओरन रोरेँ दिखिय जोर जालम जंग भो ॥
 हटनारि हटन लागि पैटन अंग गंग विरंग भो ॥
 प्रजरात जान बजाग वीथिनै यौ अलौत सु उच्छरै ॥
 जिम मास बाँहुल दैरसपैँ नेहाँस काँस करै जरै ॥ १२० ॥
 आकास धूम रु धूलि धुंधुगि भान भाँसन लुप्पयो ॥
 बजि कंक गिद्ध सिचान पच्छँति रारि सय्यद रूपयो ॥
 अनिरुद्ध सुँव तव तेग भारत मीर मारत निक्कल्यो ॥
 कुल बैरिसल्लजैँ जैतसिंह सु सेन सम्मुह उँभल्यो ॥ १२१ ॥
 पुनि जोधराज प्रधान ऊँरुज आय ए रन अँकुरे ॥
 लहि रोक कोकँन सोक भो पुरलोक ओकँन मैँ दुरे ॥

१ आप (सय्यद) तीनों राजाओं को साथ लेकर ॥ ११७ ॥ २ चला ३ जैतसिंह
 ने कलाहलाहोरी दरवाजे होकर ४ वृद्धावस्था में ॥ ११८ ॥ ५ शीघ्र वा घबराया
 हुआ कि बुधसिंह भाग नहीं जावे ७ डोल = ध्वजा ८ आकाश में १० फण
 ११६ ॥ ११ भय १२ हाथों के किवाड़ लग कर १३ गलियों में १४ अग्नि १५ का-
 तिक मास की १६ असावस्या पर १७ दीपक १८ प्रकाश ॥ १२० ॥ १९ सूर्य का
 देखना लुपगया २० पंच २१ पुत्र बुधसिंह). बैरीमाल के कुल में २२ जनमाहुआ
 २३ वंश ॥ १२१ ॥ २४ धैर्य २५ खड़े हुए २६ सूर्य की रोक देखकर चकवा च-
 कवियों को शोक हुआ २७ घरों में छिपे.

कमनैत फोजनमैं पग्यो भट जैत हड्ड हकारिकैं ॥
 रन नैर दिल्लियकी रही तिय जालैरंध्र निहारिकैं ॥ १२२ ॥
 तगवाहि नागिनि जैतकी बिस मोह सत्रुनको दयो ॥
 दल जुद्ध जाव प्रबुद्ध व्हें नृप ताव तोरन लंघयो ॥
 निकसाय स्वामिय संकरैं बान आट तोरनपैं अरयो ॥
 बाजि हक्क रन धमचक्क यों बिनु मत्थ जैत लग्यो पग्यो ॥ १२३ ॥
 परि वीर सत्रह १७ संगके दल जाम इक्क १ सु रुक्कयो ॥
 लागि क्रोध कै परि जोध ऊरुज स्वामि ज्ञन सब चुक्कयो ॥
 लाहोर पंडति भूय कढि कछवाह जनपद संक्रम्यौ ॥
 इत जीति संगर घोर सद्यपद जोर दिल्लिय मैं जम्पौ ॥ १२४ ॥
 किय साह नाम रफील दोला मास छहदबिच सां मर्यो ॥
 तब आर किय दुवरे मास बिच तजि सोहु संचैर संचैरयो ॥
 तब किय मुहुम्मदसाह सोह सु चाह सद्यपदकी भई ॥
 यह यों छहदहायनमें छ ६ साहन धौपि दिल्लिय भुगई ॥ १२५ ॥

(पट्पात)

सक बसु खट हय इंदु १७६८ मरिग आलम औरंग शुंव ॥
 गुनहतरी ६६ हनि मोजरीन फूरक पट्टप हुय ॥
 किय रफील दोला सु ताहि हनि सक चउहतरी ७४ ॥
 पचहतरी ५७ यह मरत अवर किय सोहु गयो मरि ॥
 सद्यपद बजीर पुनि मंत्र सजि आलम नातो जानि जिय ॥
 तक्कत रफील कदाह तनय साह मुहुम्मद साह किय ॥ १२६ ॥

१ दिल्ली नगर की छियें २ जालियों के छिद्रों में ॥ १२२ ॥ ३ घूर्छा ४ सेना
 से जब तक युद्ध हुआ ५ तब तक राजा सचेत होकर ६ जहर का दार लंघ
 गया ॥ १२३ ॥ ७ सेना को एक पहर तक गौरी ८ करके ९ जोधराज वैश्य १०
 भार्ग ११ देश में १२ चला ॥ १२४ ॥ ११ जरीर को छोड़ कर १४ चला (मरा)
 १५ बादशाह १६ छः वर्ष में छः बादशाहों ने १७ दौड़कर (जीवता से) ॥ १२५ ॥
 १८ पुत्र १९ आलम का पोता

(दोहा)

सक सर हय सत्रह १७७५ समय, सय्यद थप्पि सुं लाह ॥

पुर दिल्लीके पट्टपर, धग्यो मुहुम्मदसाह ॥ १२७ ॥

श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपति
बुधसिंहचरित्रे महाराणासंग्रामसिंहभणनबुन्दीमुक्तयस्वीकाराप-
राधक्षमापनमहारावभीमसिंहोदयपुरगमन १ करवरसमरनिरास-
कोटाकटकप्रत्यागमन २ मरुधराधीशजितसिंहदिल्लीन्द्रफूरुकसिय-
रस्वमुतापगिणायन ३ आत्तसैन्यहुसनअलीसय्यददक्षिणादिगमन
४ वैवाहिकनक्षत्रमन्तरापिहुसनअलीभीतत्यक्तोज्जयिनीनगरशरगु-
णाक्रोशान्तरजयसिंहस्वविवाहार्थगमन ५ जयसिंहप्रार्थनापत्रागम
भीमसिंहत्याजितबुन्दीबुधसिंहप्रत्यर्पणा ६ यवनेन्द्राव्हानजयसिंह
बुधसिंहदिल्लीसरणा ७ जयसिंहद्वारामहाराणासंग्रामसिंहस्य पुन-
श्चित्तोद्वासहेतुफूरुकसियराज्ञाग्रहणा ८ चूडामणिजट्टविजयार्थज-
यसिंहाधिकारशूहण पुग्यवनेन्द्रसैन्यप्रेषणा ९ थूहणपुरसमरविवाह
द्वयकरणा नन्तरजयसिंहजट्टविजयन १० जयसिंहविरोधेन कोटाधी-

॥ १२३ ॥ १ अपना श्रेष्ठ लाभ ॥ १२७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुन्दी के पति
बुधसिंह के चरित्र में, महाराणा संग्रामसिंह के कहने से बुन्दी नहीं छोड़ने
का अपराध क्षमा कराने को महाराव भीमसिंह का उदयपुर जाना १ करवर
के युद्ध में कोटा की सेना का निरास होकर पीछी आना २ मारवाड़ के रा-
जा अजितसिंह का दिल्ली के बादशाह फूरुकसियर को बेटी विद्याहना ३
सय्यद हुसनअली का सेना लेकर दक्षिण में जाना ४ हुसनअली के भय से
उज्जयिणी को छोड़ कर पैंतीस कोस के अंतर पर जयसिंह का बिना ही लगन
विवाह करने को जाना ५ जयसिंह की अरजी जाने पर भीमसिंह से छुड़ा
कर बुधसिंह को बुन्दी पीछी देना ६ बादशाह के बुलाने पर जयसिंह और
बुधसिंह का दिल्ली जाना ७ महाराणा संग्रामसिंह का जयसिंह द्वारा बाद-
शाह फूरुकसियर से चीतोड़ बमाने की आज्ञा मांगना ८ चूडामणि जाट को
विजय करने के अर्थ बादशाह का जयसिंह के अधिकार में थूहणपुर पर से-
ना भेजना ९ थूहणपुर के युद्ध में राजा जयसिंह का दो विवाह किये पीछे

लांघि पहर खट्‌असन लिय, पुनि सुनि कुसल प्रसंग ॥ ३ ॥
 दिल्लीतैं इहिं बिच निकसि, रन वारि बुंदिय नाह ॥
 मिलिय आनि जयसिंहसौं, टांडा अधिक उछाह ॥ ४ ॥
 कोटापति अग्गैं लियउ, सोपुर मुलक छुराय ॥
 इंद्रसिंह सोपुर अधिप, निकस्यो प्रान बचाय ॥ ५ ॥
 गोर बंस अवतंस यह, सोपुर पुर अधिराज ॥
 आयो मिलि बुंदीससौं, कूरम ढिग भुवकाज ॥ ६ ॥

उछुर ॥

इत उदयपुर पति एस, संग्रामसिंह नरेस ॥
 पुर रामपुर लहि पत्तैं, सजि सेन पिछ्लिय तत्त ॥ ७ ॥
 तिन रामपुर नरनाह, संग्रामसिंह सचाह ॥ ८ ॥
 कर बंधि नैरं बिहाय, पय रान लगिय आय ॥
 तव रान लखि नंत एस, दिय मंडि अद्दह देस ॥ ९ ॥
 लहि अद्द भुव तव राव, हुव रानको उमराव ॥

बराव १ मराव २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

भुव अद्द छिन्निय रान, थित च्यारि४ पुर जुतथान ॥ १० ॥
 जिन्नोद १ जीरन २ दंग, सजि कुकुटेश्वरसंग ॥
 लिय नैर नीमचि४नाम, किय तत्थ सेन मुकाम ॥ ११ ॥
 भुव अद्द लै इम रान, दिय फेरि अप्पन आन ॥
 भुव अद्द पत्तिहिं रक्खि, लिय बंदगी रस चक्खि ॥ १२ ॥
 खट सत्त हय इक १७७६मान, लिय गामपुर इम रान ॥
 इत जोर सयपद किन्न, गहि हत्थ दिछिय लिन्न ॥ १३ ॥
 निज पति मुहुम्मदसाह, ताकी न कछु जिय चाह ॥

१ भोजन ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

कोटेस अरु मरुनाह, किय दोहुबुल्लि सु लाह ॥ १४ ॥
 तुम जाय निज निज देस, सज्जहु अनीक बिसेस ॥
 खगमार धारन खेगि, लैहैं ब कूरम घेरि ॥ १५ ॥
 दुवरसालै जाँमिप मारि, आमैर बुंदिय धारि ॥
 रहिहैं निरंकुस होय, पिच्छैं न कंटक कोय ॥ १६ ॥
 मरुईस सुनि यह वत्त, मरुदेस आयउ मत्त ॥
 लागि सेन सज्जन अंध, कछवाह सीस कबंध ॥ १७ ॥
 इत भीम भुम्भि उमंग, ब्रज आय गोकुल दंग ॥
 गुरु गोकुलस्थ बिचारि, लिय मंत्र बल्लभ धारि ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

बल्लभमत चहि मंत्र लहि, रजततुला किय दान ॥
 हुव सेवक ब्रजनाथको, कोटापति चहुवान ॥ १९ ॥

(पादाकुलकम्)

कृष्णदास निज नाम कहायो, नंदगाम कोटा लिखवायो ॥
 सेरगढ सु थपिय बरसानौ, इन नामन व्यवहार चलानौ ॥ २० ॥
 कोटकोट अंतर कोटापुर, किय ब्रजनाथ निवेदित आतुर ॥
 दान रु द्विज भोजन बहुदिनौ, चिकनमाँहिँ रहनौ पुनि लिन्नौ ॥ २१ ॥
 दुस्यो कितव डेनरके अंदर, बाहिर नाँयो पंद्रह १५ बीसर ॥
 रोग गोग कहि मृत्यु उढायो, कोटापुर सुनि सोक अघायो ॥ २२ ॥
 मोर्धानी मिलि चाहि जुद्ध चित, सावधान कोटा किय सज्जित ॥
 द्वारन अगरेँ लगाय धीर धुव, बुगज बरन सिर मरन मंडि हुव ॥ २३ ॥
 जान्यौ मृत भीमहिँ सुनि अँह, बुंदिय कटक छिन्नि गढ लैहैं ॥
 सोहि भई सालम सुनि धायो, लुटन कोटा मुलक लगायो ॥ २४ ॥

१ मारवाड़ का पति ॥ १४ ॥ २ सेना ॥ १५ ॥ ३ लाला ४ बहिर्नाई ॥ १६ ॥ ५ बल्लभ संप्रदाय को ॥ १८ ॥ ६ चाँदी की ॥ १९ ॥ ७ सेरगढ का नाम बरसाना
 रक्खा ॥ २० ॥ ८ भेट ॥ २१ ॥ ९ छला १० नहीँ आया ११ दिन ॥ २२ ॥ १२ मा-
 थोसिहोत हाडा १३ किवाड़ ॥ २३ ॥ २४ ॥

दिल्लोनि नृप साल विद्वत्तरि ७२, सालम पठयो मृगय गविच करि ॥
 इति नव अंग राज अवेग्यो, ॥ किन्चो ॥ समुक्ति विनु फेग्यो फेग्यो २५
 अब गहँ साल छदनरि ७६ अंग, मृन ॥ मृन मुनि भोमहि ॥ ज्ञानि सवग ॥
 बुंदिमै चहि वेग बुद्धि, अपि सालम कोटा घर ॥ २६ ॥
 विनु नृप ॥ आगय डोह बढायो, मार लूट करि फेत्त मचायो ॥
 सु मुनि भोम यो कुत सन चलयो, गिनि सागमे मुच्छन कर घलयो
 काटा पुर पैतो निम वेन्ता, हार आय सुभदन दिय हेत्ता ॥
 खुल्लहु अमर तिपत हम आये, प्रात सचहि कोरहँ मन भाये ॥ २८ ॥
 यह सुनि अजबसिंह माधानी, प्रेम सुवन बानी पहिचानी ॥
 इमि नव आयउ हार कन्ह हर, अमर खुल्ल भूपति किय अंदर ॥ २९ ॥
 बंदिग घर तव कुसल बधाई, इस सु भोम बह रैति विदाई ॥
 प्रातहि कटक अघातक सज्ज्यो, गहि गुमान सालमसिर गज्ज्यो ३०
 पुर घाटोनि ननो छह सालम, पहुँच्यो भोम जेहि दत्त जालम ॥
 सालम दलदो पारिस विथर सह, सवन सुनाय भोम अवखी यह ३१
 पत ३३ मम् ॥

सालम दल यह सज्जि मुनक निज मारयो ॥

अपन पथ इति स्वत करन ललकारयो ॥

हुन मरेनि बलवान तनो हम जिनिहँ ॥

कोटापान सहुहुन ननो पैद विचिहँ ॥ ३२ ॥

(अंदा)

भीम कहिय जिते बिनाँ, अप्पन जियत रहै न ॥

अप्पन बिनु यह उग्रहै, लैहैं बुंदिय अँन ॥ ३४ ॥

यह कहि बाजिन बग्गलै, परयो भीम पैबि पात ॥

खरकोनैन मनु चुगत खिन, घल्ली सेनन घात ॥ ३५ ॥

मरुभाषा डिंगलभाषेत्येके ॥

अस्मिन्सजातीयेष्वेवप्रसिद्धंगीतनामकं मरुदेशीयं छंदः ॥

गीतेष्वपिसुपक्षीगीतः ॥

भूमी लागरै लुंभाणों डाणों संपाति रूपरा भड़ाँ,

लेताँ ताणों बागरै भूपराँ लग्गी लीह ॥

अंधायो खागरै बीसँ मागरै ऊपरा आयो,

सालमेम नागरै धूपरा भीमसीह ॥ १ ॥

घटा बीज घाटकी उतोळे खागाँ वीर घाँचै,

रटा ब्रंवाटकी बागाँ घोळे नागाँ राड़ि ॥

दै काँवो रामरै छटा बिहंगराटकी दाँळे,

फँटा सेना बिरोळे भाटकी फाड़ि फाड़ि ॥ २ ॥

१ बुन्दी का स्थान लेवैगा ॥ ३४ ॥ २ वज्र पड़ने के समान ३ मानों चुगते हुए तीतरों पर शिचाण (सिकरे) ने घात डाली ॥ ३५ ॥ मरुभाषा जो डिंगल भाषा कहलाती है उसमें हमारी जाति में ही प्रसिद्ध है ऐसा गीत नामक मारवाड़ी छन्द, जिन गीतों में भी यह सुपंखरा गीत है ॥ भूमि का ४ लोभ लाग कर ५ डाणा लगा हुआ (मस्त) संपाति रूप के वीरों से घोड़ों की बागें ६ खींचते ही ७ भूमि पर ८ लकीरसी लग गई खड्ग से ९ अतृप्त [भूखा] १० बी [पक्षी] तिन के ईस (गरुड़) के मार्ग से सालमसिंह रूपी सर्प के ११ मस्तक पर भीमसिंह आया ॥ १ ॥ घाटा में बिजुली के १२ रूपवाले खड्ग को हाथ में तोल कर, वीरों को घेर (धकेल) कर १३ तासों के निरन्तर शब्द होने पर सर्पों से युद्ध करके रामसिंह के पुत्र ने १४ घेरा देकर, पक्षियों के राजा [गरुड़] की शोभा से चारों ओर, सेना रूपी १५ फणों को १६ उड़ाये, और उससे नाकों को फाड़ फाड़ कर पछाँट डाली ॥ २ ॥ डाँगाँ लगे हुए (उस डाँकी वीरों का विशेषण है)

डांणों ओक ओक *जाँगी जैतरा रुड़ाया डाकी,
तोक चंचाँ केवाणाँ छुड़ाया बीर ताल ॥

†पाँणाँ भोक संभरी असंखाँ के उड़ाया प्राँणाँ,
बाणाँ सोक पंखाँ के उड़ाया बूंदीवाल ॥ ३ ॥

काटी पूछ भंडा ले ‡किसोर दूजे दाटी कोपि,
सेना फटा फाटी मैँ कटार पंजाँ साजि ॥

बैनतेय भीमरी सपाटी तेग आगैँ बचे ,

भोगी जांगीरामगे त्रिपाटी गयाँ भाजि ॥ ४ ॥ ३६ ॥

प्रायोदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

बोहा ॥

‡अहि सालम इम भजिंजगो, फोज फटा सु फटाय ॥

व्याधि महिन कृमि बैर की, अतिजव बुंदिय आय ॥ ३७ ॥

कोटेमहु हुनै पिढि लागि, लिनी बुंदिय घेरि ॥

सठ सालम इक दाह लरि, गो भाजि आयुध मेरि ॥ ३८ ॥

जायो जुगियरामको, आयो नगर भलाय ॥

कोटापति इत लुट करि, बुंदिय दिन्न जराय ॥ ३९ ॥

फगुन विसद चउत्थि४सक, रस हप सत्रह१७७६मानँ ॥

बहुरि भीम बुंदिय लई, इम फेगी निज आन ॥ ४० ॥

ने घर घर में विजय के * नगरे बजाए और तरवारों रूपी चंचुओं में उठा-
कर लड़कों की सूटों से वीरों की तालियाँ [छपेलियाँ] छुड़ाई, इसकारण हे चह-
याण तुम्हारे † हाथों को धन्य है कि जिन में असेन्यों के प्राण उड़ाए और
बाणों के साँक रूपी पंखों में बुंदीवालों को उड़ाये ॥ ३ ॥ उस सेना के भं-
दे लेने रूपी पूछ को काटा और ‡ दूसरे किसोरसिंह ने कोय करके दयाई
कटार रूपी पंजाँ का भय सज कर सेना रूपी कण को काड़ा, इसप्रकार गर-
द रूपी भीमसिंह की जीघ चलनेवाली तेग के आगे बच कर, जोगीराम का
पुत्र रूपी सर्व जीवता की दौल से भाग गया ॥ ४ ॥ ३६ ॥ ‡ वर्ष १ कण २
राम महिन ३ पद पैर का काटा ४ पदुन जीघ बुंदी आया ॥ ३७ ॥ ४ जीघ
॥ ३८ ॥ ३९ ॥ २ बुंदि पक्ष को ७ प्रमाण आता ॥ ४० ॥

सबहि देस बुंदीसको, अडर भीम अपनाय ॥

लूट माँहिँ बहु द्रव्यलै, इम पुनि कोटा आय ॥ ४१ ॥

(पादाकुलकम्)

अवरहु भीम देस बहु छिन्नै, चउदह सहस्र १४००० गाम निज किन्नै
अगँलिखित * कर्महिँ अप्पो, सो सब लुपि लोभ हिय थप्यो ४२
हुलसि एह अक्खिय सुभटन हित, अब ब्रजनाथ करहि सब इच्छित ॥
रन जयभिँह † बुद्ध लरि मागहिँ, ‡ वसुमति आन § अमोघ बिथारहिँ ४३
इक पुत्रहिँ बुँदिपगढ अप्पहिँ, थिर इक्कहिँ काँटागढ थप्पहिँ ॥
इक सुतहिँ सोपुगढ दैहैं, हम उज्जैन राज अब लैहैं ॥ ४४ ॥
तदनंतर सय्यद प्रति कर्गंग, पठयो द्रुत लिखि भीम अप्पकर ॥
इत दल सजव सज्जि हम आवत, उत तुम आहु कटक अमावित ४५
पकरि बुद्ध जयसिँह बिपक्खन, लैहैं पहुँमि मारि भट लक्खन ॥
यह लिखि संगर भीम उमाहयो, चर्तु सज्जि सहस्र बीस २००००
जय चाह्यो ॥ ४६ ॥

[दोहा]

इत सय्यदसौँ मिक्ख लहि, अजितसिँह मरुँ आय ॥

जहँ सुभटन एकतँ जुगि, अक्खिय रत्न उपाय ॥ ४७ ॥

[पद्यात]

मिसल अठ उमराव जयहि ३ होर इक्क जुगि ॥

अजितसिँह प्रति अक्खि अनयै किन्नौ तुम अँकुरि ॥

कूर्मपातिसौँ तोरि अप्प सय्यद चाह्यो उर ॥

॥ ४१ ॥ * कछवाहा जयसिँह को दिल्ली में लिख दिया था कि बुन्दी के पा-
गने छोड़ देंगे, उसको ॥ ४२ ॥ † बुद्धसिँह को ‡ पृथ्वी पर § पाँछा नहीं
फिर ऐसी आण फैलावेंगे ॥ ४३ ॥ १ जिन पीछे २ पत्र ३ अपने हाथ
में ४ नहीं भावै ऐसा ॥ ४५ ५ शत्रुओं को ६ भूमि ७ युद्ध पर उत्साह युक्त
हुआ ८ सेना ॥ ४६ ॥ ९ मारवाड़ में १० एकत्र ॥ ४७ ॥ ११ अनीति करी १२
बड़े होकर

अज्ज गई आमैर कलिह जै हैं सु जोधपुर ॥

स्वामिकों मारि सद्यद सबल कानि न रक्खहिं अप्पनी ॥

तसमांत जोरि जयसिंहसों धन्व पहुमि रक्खहु धनी ॥४८॥

दोहा-कूरमसों सगपन बिरचि, मरुधग बुल्लहु ताहि ॥

रुचिर सुता अब रावरी, बिधिजुत देहु बिबाहि ॥ ४९ ॥

मरुपतिसों यह मंत्र करि, पठयो सुभटन पैत ॥

नृप कूरम आवहु निडर, यँहँ व्याहन अनुरत्त ॥ ५० ॥

कूरम सुनि पच्छी कहिय, धरा अलप तुम धार्म ॥

रक्खहु पुत्रिन जतन रचि, परहिं साहसों काम ॥ ५१ ॥

यह सुनि इन पच्छी लिखिय, हम तुम बिच हरिं आहिं ॥

आवहु अप्पन इक्कहँ, जावहु ससुख बिबाहि ॥ ५२ ॥

सु सुनि कंच जयसिंह किय, सजि दल सबल सिपाह ॥

बुंदी सोपुर नृप उभयर, चलिय संग हित चाह ॥ ५३ ॥

(पादाकुलकम्)

रस हित बिनय परसपर रैते, तब नृप तीन३जोधपुर पत्ते ॥

रठोरन अक्खिय कूरम सैन, लगनबेर अब चलहु बिबाहन ॥५४॥

मरुपति सों तब सबन सँमक्खी, कूरमपति सुभटन यह अक्खी ॥

हँम नृप परनि पधारहिं जोलों, हमबिच रहहु धन्वपति तोलों ॥५५॥

अजितसिंह यह मन्नि रहयो यँहँ, कूरमपति गो तब व्याहन कँहँ ॥

रनँ जिम सज्जि कवच धारन करि, बैर दुलहनि रठोरि लई बरि ॥५६॥

१ उसके पति बादशाह को मार कर बलवान् हुआ है २ इसकारण से ३ मारवाड़ की भूमि ॥ ४८ ॥ ४ सुन्दर पुत्री ॥ ४९ ॥ ५ उमरावों ने ६ पत्र भेजा ७ प्रीति युक्त ॥ ५० ॥ ८ तुम्हारे घर में ॥ ५१ ॥ ९ बिष्णु भगवान् हैं ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ १० नम्रता ११ रक्त प्रीतियुक्त हुए १२ जयसिंह से कहा १३ विवाह करने को ॥ ५४ ॥ १४ ममची सामने, गोबरू १५ महाराजा [जयसिंह] १६ हे मारवाड़ का पति [अजितसिंह] तब तक हमारे बीच में रहो "भीतर जयसिंह को चूक करके न मार सकै इसकारण से" ॥ ५५ ॥ १७ जैसे युद्ध में सज्जित होकर जाता है तैसे १८ श्रेष्ठ दुलहनि राठोड़ी की बरी ॥ ५६ ॥

(दोहा)

इक नबाब कलीजखाँ, इहिँ अंतर लहि *काल ॥
दक्खिन सन आयो दुसह, दिल्लीपर रचि जाल ॥ ५७ ॥

(षट्पात्)

हुसनअली सय्यद वजीर सुनि एह बंदि †जर ॥
नाम दलावरखान मुगल ‡पिल्लयो तिहिँ उप्पर ॥
नरउर पति गजसिंह संग सह सेन दयो सजि ॥
कटोपति प्रति पत्र त्वरित लिखवाय गेबब तजि ॥
मारहु कलीजखानहिँ मरद खानदलावर संग रहि ॥
जयसिंह जेर पिछैँ करहिँ यह करि जेर कलीज अहि ॥ ५८ ॥

(दोहा)

सु सुनि भीम सिर धुन्किँ, दिय दैल अधिक छुराय ॥
जान्यौँ तप जयसिंहके अंत अप्पनौँ आय ॥ ५९ ॥
बुढे वीरन संग लौ, तब यह मरन बिचारि ॥
सम्मुह खानकलीज सौँ, रचन चलयो अब रारि ॥ ६० ॥
खानदलावर भीम अरु, नरउरपति कछवाह ॥
दरकुंचन चलि भिंटये, सजुन सबल सिपाह ॥ ६१ ॥
मेकलँजाके पार इक, तटिनी कोठी नाम ॥
तीनन३ खानकलीज सौँ, सजिय तथ संग्राम ॥ ६२ ॥

षट्पात् ॥

सल्लो जुरि दुवरसेन हुलसि जुझन बढि हल्ली ॥
काँदबिनि चल्ली किँ बाढ चमकत धैनबल्ली ॥

* समय पाकर ॥ ५७ ॥ † घन बाँट कर ‡ भंजा १ घमंड को छोड़ कर २ हे वीर ३ दलावरखाँ कैसा धरह कर ४ कलीजखाँ रूपी स्तूप को ॥ ५८ ॥ ५ जयसिंह के मारने को अधिक सेना इकली थी जिसको छोड़ कर ६ जयसिंह के तप से ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ७ नर्मदा नदी के पाम = नदी ॥ ६२ ॥ ९ घाँड़ों के सवार १० मेघमाला ११ मानों १२ विद्युत् (विजुर्ता)

दिष्टि जुगत हय दपटि मिले रनरसिक महाभट ॥
 तब बज्जिग तरवारि भीरु भज्जिग बट *उब्बट ॥
 गिह्वनि सिचान +संकुलि गगन रचि +मयूख अवरोध किया ॥
 खुरतार मार ॥ जव धार खुदि दिसदिस ॥ पुहवि दरारदिय ६३
 लग्गे जिम जिम लोहें छोहें तिम तिम उर छायो ॥
 धायो जिम जिम धीर बीरें तिम तिम प्रकटायो ॥
 जिम खादित जैपालें मथत अंत्रन द्रुत दुँज्जर ॥
 इम कलीज दलें अतुल मथ्यो सायुध संय संभर ॥
 हैदराबाद भट बहुल हनि चिरं अच्छरि रस चकखयो ॥
 भूपाल भीम कांटस सिर रुद्रमाल नैन रक्खयो ॥ ६४ ॥
 हत्थी भज्जत हड्ड चढ्यो हयबर रँय चंचल ॥
 हय कट्टत पयचौर बन्यो खयकौर महाबल ॥
 तोमरं तुट्टत तंग तेग तुट्टत करि कत्तिपँ ॥
 कत्तिय कट्टन कैरद घोर छत्तिय अरि घत्तिय ॥
 देख्यो कजीज जीवन दुलभ मिलत भीम भद्व सुदिरँ ॥
 जिम जिम रँवसीस रज रज रचिय तिम तिम धुन्निरँ संभुसिर ६५
 दोहा ॥

मुनि हय मत्त रु डक्क १७७७ सक, जेठ रु पुणिशाम दीह ॥

*बिना मार्ग आकाश म भर करं मुख की करणों को रोक दे ॥ शीघ्र दोड़ने के
 वेग से ॥ भूमि ने ॥ ६३ ॥ १ शस्त्र २ क्रोध वा उत्साह ३ चौर रस ४ जिसप्रकार
 दुःख से ज़रनेवाला खाया हुआ ५ अजैपालया [जमालगोटा] आंतों को शीघ्र
 मथ डालता है तिसीप्रकार महाराज भीमसिंह ने ६ कलीजखां की बड़ी सेना
 को मथी ७ आयुध सहित हाथ से चढ़वाण ने ८ बहुत ९ राजा भीमसिंह ने
 अपने मस्तक को शिव की सुंडमाला के अर्थ नहीं रक्खा, अर्थात् टुकड़े टुकड़े
 होगया १० बंग में चपल घड़े पर चढ़ा ११ पैदल होकर १२ नाश करनेवाला
 [यमराज] १३ भाला १४ खड्ग विशेष १५ कटागी अथवा मतांतर से लुरी १६
 भादवा के मेष के समान १७ अपने मस्तक को १८ सुंडमाला के योग्य नहीं
 रहने के कारण शिव ने मस्तक धुना ॥ ६५ ॥ ६६ ॥

परयो दलावरखान रन, सहित *भीम गजसिंह ॥ ६६ ॥
 नाउरपति जाजव भज्यो, परघो इहाँ तजि प्रान ॥
 मारि हजारन भीम जिम, परघो भीम चहुवान ॥ ६७ ॥

(पट्पात)

सुनि कोटापुर भयउ ःभीत मरतहि निज भपति ॥
 धाडभ्रात भगवान हुतो बुंदी सु जानि ॥
 बुंदिय बिच बुधसिंह आन फिवाय सोधि उर ॥
 अप्यन सब थानाँ उठाय आयउ कोटापुर ॥
 सुनि खबरि एह मतिमंद सठ सालम आय भलाय सन ॥
 बनि सचिव मुरूप बुंदिय बहुरि राजकाज लग्गो करन ॥ ६८ ॥

[दोहा]

तनय तीन ३ नृप भीमकै, जेठो अज्जुन १ नाम ॥
 अमरगान भानेज यह, तव भूपति हुय ताम ॥ ६९ ॥
 स्पामसिंह २ मध्यम सुवन, लघु सुत दुरजन साल ३ ॥
 राज लोभ निसदीह रखि, कट्टत एहू काल ॥ ७० ॥

[पट्पदी]

हुसनअली इत सज्जि छोह कूरम सिर छायो ॥
 साह सुहुम्मंदकोँ चढाय आमै चलायो ॥
 सयपद अति बरजार साह दुम्मैन इहिँ कारन ॥
 चिंतत रहत उपाय मन्नि निहचै तिहिँ मारन ॥
 तव नाम सुहुम्मदखान इक तूगनी तक्कयो प्रवल ॥
 रचि मल साह तासौ रहँसि माग्यो सयपद छेदि छल ॥ ७१ ॥
 दोहा—तव पच्छे दरकुंच करि, हुसनअलीकोँ मारि ॥

* भीमसेन के समान ॥ ६७ ॥ ःभय ः भीमसिंह का नाश जानकर ॥ ६८ ॥
 १ मझराणा अमरसिंह का २ तडाँ [कोटा में] ॥ ६९ ॥ ३ पुत्र ॥ ७० ॥ ४ उदात्त
 ५ एकान्त में सलाह करके ॥ ७१ ॥

बनि स्वतंत्र इम साहू, पुर दिल्लिय*पगधारि ॥ ७२ ॥
 बरस तीन३ नृपकै बच्यो, भावतसिंह कुमार ॥
 दुव२रानिन उर दोय२सुत, बहुरि भये इहिं बार ॥ ७३ ॥
 नाम भवानीसिंह सुत, कछवाही गृहजात ॥
 पदमसिंह दूजो२ भयो, छुंड़ाउति जठरांत ॥ ७४ ॥
 कुमार बधाई जोधपुर, पर्ता संभर पास ॥
 जयसिंहहु तथहि सुन्यौ, सय्यद सत्रु बिनास ॥ ७५ ॥
 सुनत कंच जयसिंह किय, बिनस्यो सय्यद बैर ॥
 सोपुर बुंदिय नृपन सह, आयो पुर आसैर ॥ ७६ ॥
 संभर किय छुंड़ाहरहि, दसवा निवसथ बास ॥
 अनाहत जयसिंह गां, साह सुहुम्मद पास ॥ ७७ ॥
 अहु मत्त हय इक १७७८ लक, चित्त भहर करि चाह ॥
 अकवारपुर सूबा दियउ, कूम्हपतिको साह ॥ ७८ ॥

पञ्चाटिका ॥

पुनि कहिय साह कछवाह राय, क्यों नाहिं अत्रं छुंदीस आय ॥
 जयसिंह कहिय सालमं नैरेस, आवाद रखत पुनि नाहिं असेस ७९
 कोटेस भीग करि जोर दीय, बागौ मऊ सु लिन्नै छुराय ॥
 बिनु खरच नाहिं निवहत प्रवास, जर कोस सबहि हुव नैह जास ॥
 सतपंच ५०० सुमट सौदी सुमंतै, मभ संग दिय सु हाजरि रहंत ॥
 सुनि साह दयो अँभरख निवागि, अँसी अनेक दिय कुँम्म टारि ८१
 चूड़ामनि सुत सुहुकम्म जहु, इन दिनन बहुरि लगगो कुँवहु ॥

* पधारा ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ कछवाही के घर में १ जन्मा २ जठर (उदर)
 से ॥ ७४ ॥ ३ सुधासिंह के पास ॥ ७५ २ नाज हुआ (मिट्टा) ॥ ७६ ॥ ५ सुधासिंह
 ने ६ दसवा नामक ग्राम में ७ जिनका बुलाया ॥ ७७ ॥ ८ कूपा ॥ ७८ ॥ ९
 यहां १० सालमनिह ११ राजा (सुधासिंह) का ॥ ७९ ॥ १२ जोर की रीति से
 [बल पूर्वक] १३ नष्ट ॥ ८० ॥ १४ सवार १५ अष्ट बुद्धिवाले १६ क्रोध १७
 जयसिंह ने ऐसा अनेक आपनिय टाल दीं ॥ ८१ ॥ १८ कुमार

करि लूट मुलक सिर घलि घत्त, मरुईस सरन मरुदेस पत्त ॥ ८२ ॥
जयसिंह बदन जट्टहिं सहेत, बहुभुव दिवाय थूहनि समेत ॥
वै साह हितु मुहुकम हराम, पातैं पलाय गय धन्व धाम ॥ ८३ ॥
तब साह कहाई हे नरेस, आतुरं गहि भैजहु जट्ट एस ॥
मन्थो न हुकम यह भैरु महीस, रचि साह मुहुम्मद सुनत रीस ८४
इत लहि प्रमाद आलस अनंत, बुंदीस गाम बसवा बसंत ॥
तैंहिं किय अनीति लोकन अपार, दबिबय अनेक परकीय दार ८५
ताड़न रु लूट तज्जर्न विधाय, पत्तन प्रजा सुं किय दुखित प्राय ॥
पुरजन सब लहि तब दुख अपार, कूरम प्रति दिल्ली किय पुकार ८६
सुनि कहिय भूप कूरम हसंत, बसवा सु गाम अबहु बसंत ॥
कहि पुनि वे जामिप अस्मदीय, सहनौ समस्त दुखहु गैरीय ८७
तुम माँहिं अबहु जो परहिं त्रास, तो कहहु जाय बुंदीस पास ॥
मम ढिग जो अहो बहुरि भजिज, दैहौं निकासि तो तौड़ि तज्जि ८८
यह कहि पुरवासिन सिक्ख दिन्न, कूरम इम जामिप हितहि किन्न ॥
मन्थो न हुकम इत मरुनरेस, बलसजिय साहतिहिं सिर बिसेस ॥ ८९ ॥
मरु पिल्लि' बहादुरखान मीर, पिल्लयो पुनि कूरमपति प्रवीर ॥
इम दुवचलाय मरु दिस अमौन, मरुपहु सुनि सम्मुह किय प्रयान ९०
मगरूर पूर बनि मरु महीप, सजि आय मनोहरपुर समीप ॥
इततैं सैंसेन मारन उपाय, जयसिंह बहादुरखान आय ॥ ९१ ॥
मरु ईस अतुलैं लखि साह सैन, भजिगो तजि डेरन अप्प अैनैं ॥

१ घात २ मारवाड़ गया ॥ ८१ ॥ ३ मारवाड़ में भाग गया ॥ ८२ ॥ ४ शीघ्र ५ मारवाड़ के पति ने ॥ ८४ ॥ ६ पराई स्त्रियों को ७ पीटना ८ धमकाना ९ करके १० उस नगर की प्रजा को ११ बहुत दुखी की ॥ ८२ ॥ १२ काकुभाषा से कहा कि क्या अब भी वह ग्राम घसता है १३ हमारे बहिर्नोई हैं १४ भारी दुःख होयें सो भी सहना चाहिये ॥ ८६ ॥ १५ ताड़ना और तज्जर्न करके ॥ ८८ ॥ १६ बहिन के पति का १७ मारवाड़ के राजा ने १८ सेना ॥ ८९ ॥ १९ मारवाड़ में भेजा २० अमाप २१ मारवाड़ के पति ने भी ॥ ९० ॥ २२ सेना सहित ॥ ९१ ॥ २३ अनांक (बहुत) २४ अपने घर (जोधपुर)

सक अंक सप्तहय इक्क १७७९वाँ च, रन छोरि लगाई गालिनीच १२
 सुनि साह कटेक अंति जब चलाय, गठोर बिभव लिय लुट्टियाय
 संभर बिनु कहूँ लरतहु सुन्योँ न, भजि भजि गो संगर छोरि भौन ९३
 अगोँ जब आलम गो चलाय, अल्हनपुर लग्गो पयन आय ॥
 पुनि अमर रान कर लिखित दिन्न, सो मेटि साह जामाँत किन्न ९४
 अरु बहुरि सग्यदन मिलि अधर्म, जामाँत साह हनि किय कुकर्म
 पुनि तब तृतीय ३२न समय पाय, पृतना तजि कातर गो पलाय ९५
 जयसिंह बहादुर लगिय पिठि, इन रचिय मंत्र गृह जाय निठि ॥
 रघुनाथ सचिव गठोर सर्व, मिलि कहिय राज गय अप्प गर्ब ९६
 कर बंधि परहु अब साह पाय, जो यह न देहु कुमरहिँ पठाय ॥
 भट सचिव मंल इम तब बिचारि, जयसिंह नरेसहिँ बीच डारि ९७
 सुत अभयसिंह पट्टप समर्थ, पठयो पुर दिखिय कुम्भ सत्थ ॥
 रघुनाथ सचिव दिप संग तामै, लहिसाह जाय इन किय सलाम ९८
 गृह जाहु कुमर यह कहिय साह, आवत हम मंडहु रन उछाह ॥
 तब कुम्भ कहिय यह गिनत आन, याको न दोस जन कहि अमान ९९
 पुनि कहिय साह जो यह प्रपन्नै, तो जैनक इनहु तब हम प्रसन्न ॥
 यह सुनि उवाच कछवाह ईस, व्हैहैं जु हुकम धरिहैं सु सीस १००
 प्रल्हाद एँह तुम हरि प्रमान, मरुपति हिरण्यकसिपुव समान ॥
 यह सीस साह सेवन बहंत, चित जनक ईहिँ न यातैं चहंत १०१

॥ ६२ ॥ १ बादशाह की सेना २ बड़े बेग से ३ सांभर नगर के चिना ॥ ९३ ॥
 ४ राणा अमरसिंह के हाथ में ५ लिखावट लिखकर दी थी उसे मिटाकर ६
 जमाई ॥ ९४ ॥ ७ जमाई बादशाह को मारकर ८ सेना छोड़कर भग गया
 ॥ ९५ ॥ ९ आपके घमंड से ॥ ९६ ॥ १० जो यह नहीं करो तो ॥ ९७ ॥ ११ समर्थ
 १२ कछवाहा जयसिंह के साथ भेजा १३ तहाँ ॥ ९८ ॥ १४ नहीं माननेवाला
 इसका पिता ही है ॥ ९९ ॥ १० शरणागत है तो ११ पिता (अजितसिंह) को
 मार डालें तो १२ बोला ॥ १०० ॥ १३ यह [अभयसिंह] १४ इस कारण से
 पिता इसका नहीं चाहता ॥ १०१ ॥

*प्रल्हादवत् कूरम सुनाय, इम अभयसिंह हित रिस उडाय ॥
 कहि साह हमहिं जो गिनत ईस, सुत तो अबआनहु जनकसीस १०२
 रघुनाथ सचिव किय अरज तत्थ, सब करहिं पाय आयस समत्थ ॥
 डेरन बहोरि लहि सिक्ख आय, दैल अभयसिंह पठयो लिखाय १०३
 निज अनुज आत बखतेस नाम, तिहिं प्रति उदंत सब लिखिय ताम
 यह मिच्छ जनक सिर कुपित आज, लै हैं उतारि ध्रुव धन्वराज ॥
 लहि राज भोग जो चहत लाल, तो भ्रात इनहु जनकहिं उंताल
 दैहौं तब तो कहैं अद्द देस, नागोरपुर पै करिहौं नरेस ॥ १०५ ॥
 बखतेस भुंइ यह पत्र पाय, जनक सु निज माख्यो सुप्त जाय ॥
 हाकार जोधपुर नगर होय, रनवास अचानक उठिय रोय ॥ १०६ ॥
 सुनि मिसल अठ ८ उमराव एह, गहि तेग कुमर बिंटयो ज्वगेह
 बखतेस भात तब नैति विधाय, दिय अभयसिंह कंगर दिखाय ॥
 गिनि तब समस्त यह मंलगूढ, अब किय नरेस चितिकै अरूढ
 नाजरन सहित सुंझांत नारि, चितिअंगि भरम हुव असिह च्यारि ८४
 सक गगन अठ हय इक १७८० साल, यह खबरी भई दिल्लिय उताल

*प्रल्हाद की वार्ता १ पिता का मस्तक ॥ १०२ ॥ २ समर्थ आज्ञा पाकर ३ पत्र ४
 अपने छोटे भाई ५ बखतसिंह के नाम ॥ १०३ ॥ ६ वृत्तान्त ७ नहान ८ पिता के ऊ-
 पर ९ निश्चय ही मारवाड़ का राज्य उतार लेवेगा ॥ १०४ ॥ १० शीघ्र ११ ना-
 गोरपुर का पति करके १२ राजा करदंगा ॥ १०५ ॥ १३ सूढ़ १४ सोते हुए
 पिता को ॥ १०६ ॥ १५ अपने घर में घेरालिया १६ भय से १७ नम्रता करके
 १८ पत्र ॥ १०७ ॥ १९ चिता पर चढ़ाया २० जनाने की स्त्रियां २१ * चिता
 की अग्नि में चोरासी जन भरम हुए ॥ १०८ ॥

* इसके लिये राजपूताने में ऐसा प्रसिद्ध है कि नाजर आदि जिन १७ जन का बखतासिंह को अपने में वि-
 रुद्ध होने का खटका था उन ८४ जनों को चिता की अग्नि में बलात्कार डाल कर भरम कर दिये
 इस बखतासिंह की बुराई का यह लक्ष्य छंद प्रसिद्ध है ॥

छप्पय ॥ प्रथम तात मारियो, मान जीवती जडाई ॥ असोच्यार आदमो, हत्याबोरी पण आई ॥
 कर माहो इकठ्ठास, जेग जैसिंह बुलायो ॥ मिट मरधर मरजाद, भरम गांड को गुमायो ॥
 कवियणां हंत केवाकरे, धराउदक लेवण धरी ॥ बखतसां जनय प्रायो पछे, कसावत आछे करी ॥ १ ॥

सुनिरीक्षिमरातब बखसि साह, किय अभयसिंह मरुदेस नाह १०९
 अरु कहिय राज्य जमवाय जाय, पुनि आवहु सेवन मोद पाय ॥
 मरुपति उवाच तब नाय मत्थ, नागोर देत मैं अनुज अत्थ ११०।
 सो सुभट मोहि नहिं दैन देत, करि लिखित अप्प पठवहु निकैत
 राजाधिराज पद वाहि देहु, अप्पहु निदेस करि महर एहु १११।
 इम अभयसिंह कहि धन्व आय, पुनिदियउ साह लिखित सु पठाय
 राजाधिराज उपपद समेत, नागोर देहु बखतेस हेत ॥ ११२ ॥
 यह सुनि रठोरन तजिय टेक, कष्टिय दिन मरुपति मरु कितेक
 हनि अजितसिंह पितु बुद्धि हीन, इम बखतसिंह नागोर लीन ॥
 पट्टप कुमार गजसिंह जाम, हुव अगग बीर अमरेस नाम ॥
 नृप इंद्रसिंह नाती जु तास, सो करत पट्ट नागोर बास ॥ ११४ ॥
 नृप अभयसिंह ताकैहं निकारि, नागोर दई अनुजहिं बिचारि ॥
 इत कुंम्म साह सेवन बिंधाय, लहि सिक्ख यहहु आमैर आय ॥
 आमैर हुतो बुंदी नरेस, पुनि कियउ भूप कूरम प्रवेस ॥
 मिलि तबहि साल जामिप समोद, बिरचिय दुहून २कति दिन विनोद
 दोहा ॥

सक ससि बसु सत्रह १७८१ समय, कहि बुद्धहिं कछवाह ॥
 बिरचहु राज्य प्रबंध तुम, वा हम रचहिं सुलाह ॥ ११७ ॥
 बिनु प्रबंध आलस बहत, रहत न सुरपुर राज ॥
 कहत होत बुंदिय कुंनय, अह प्रति महत अकाज ॥ ११८ ॥
 बुंदीपति अक्खिय तबहि, अच्छी करहु बिचारि ॥
 पठवहु कोऊ नीति पट्ट, सब जो करहि सम्हारि ॥ ११९ ॥

१ मारवाड़ का पति ॥ १०९ ॥ २ अभयसिंह ने कहा ३ छोटे भाई बखतसिंह
 को ॥ ११० ॥ ४ आय ५ हमारे घर [जोधपुर] ॥ १११ ॥ ११२ ॥ ६ मारवाड़ में
 ॥ ११३ ॥ ७ गजसिंह का पुत्र ८ उसका पोता ॥ ११४ ॥ ९ जयसिंह १० करके
 ॥ ११५ ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ ११८ स्वर्ग का १२ अनीति १३ दिन प्रति ॥ ११८ ॥ ११९ ॥

नाथाउत नगराज तब, नृप मातुल कुल जानि ॥
 पठयो वह कूरम तु पहुँ, बुंदी विभव बखानि ॥ १२० ॥
 आय लंघि रक्खयो नृपति, द्विगुन खरच निज सत्थ ॥
 सब भेटयो नगराज सो, अधिप खिज्यो इम अत्थ ॥ १२१ ॥
 कछवाही सेवन करत, श्रीहरि मूर्ति सुमंत ॥
 कउल भूप वरजत कुढत, तदपि न टेक तजंत ॥ १२२ ॥
 पति पतनीकैं याहि पर, बनें न हितकी बत्त ॥
 इहु न लोपैं तिप हुकम, तदपि कउल मत रत्त ॥ १२३ ॥
 अगैं नव हय संत इक १७७९, कछवाही यह किड ॥
 लै सालमसौ सचिवपन, निज अनुचरकों दिड ॥ १२४ ॥
 राम नाम निज दास इक, सो करि सचिव सु भाय ॥
 इम रानी पति हुकम बिनु, रही राज्य अपनाय ॥ १२५ ॥
 अड खरच कइत लग्यो, नाथाउत बिख रूप ॥
 रानी प्रति तब प्रीति रचि, भाखी बुंदिय भूप ॥ १२६ ॥
 निज अनुचर प्रति लिखहु तुम, रनै करि रक्खहु गेह ॥
 नाथाउत नगराजकों, द्रंग न प्रबिसन देहु ॥ १२७ ॥
 रानीहू सखुकी तबहि, रुकहिँ मोर निदेस ॥
 सो करिहैं नगराज जो, कहिहैं कुम्म नरेस ॥ १२८ ॥
 यातैं अनुचर राम प्रति, दिय लिखि पत्र पठाय ॥
 नन सौंपहु नगराजकों, अप्पन गृह वेंपय आँय ॥ १२९ ॥
 तब बुंदिय नगराज तिन, दित्रौं प्रबिसन नाहिँ ॥
 महुरछाप देंहिँ न कह्यो, अधिप निदेस न आँहिँ ॥ १३० ॥

१ बुधसिंह के मामा के २ कुल में श्रेष्ठ राजा ने १२० ॥ १२१ ॥ ३ श्रेष्ठ बुद्धि
 ४ याममार्गी राजा [बुधसिंह] ५ जलता [जीजता] था तो भी ॥ १२२ ॥ १२३ ॥
 स ॥ १२४ ॥ १२५ ॥ १२६ ॥ ६ युद्ध करके ७ पुर में घत बुझने देता ॥ १२७ ॥ ८
 जयसिंह कहैगा सो करैगा ॥ १२८ ॥ ९ खरच १० आमद ॥ १२९ ॥ राजा की
 आज्ञा नहीं ११ है ॥ १३० ॥

तिनहिं *ठिल्लि नगराज तब, प्रविश्यो बुंदिय आय ॥
 राजकाज लगगो करन, †नूतन छाप घराय ॥ १३१ ॥
 आय खरच सब लिखिलियउ, ‡खंधावार सम्हारि
 स्वाभि समुक्ति बुधसिंहको, बिगरत लिन्न सुधारि ॥ १३२ ॥
 द्विगुन खरच सेहत कियउ, मातुल पर नृप रोस ॥
 अच्छीमें उलटी समुक्ति, दिय कूरय सिर दोस ॥ १३३ ॥
 इत हुत जामिये राज्यको, करि प्रबंध कछुवाह ॥
 दरकुंचन दिलिय गयो, सबिनयें भिंटयोसाह ॥ १३४ ॥
 तदनंतर मरुईसहू, जय नयँ राज्य जमाय ॥
 दिलिय भिंटयो मुगल हुत, साहसुहुम्मद आय ॥ १३५ ॥
 कूरम प्रति मरुपति कहिय, मम भटँ अति मगरूर ॥
 जमन देत नहि राज्य जुरि, करहु अप्प मचकूर ॥ १३६ ॥
 पठयो कूरम जोधपुर, तब निज कटँक उताल ॥
 रठोरन समुक्काय रहि, कट्यो तँहँ बहुकाल ॥ १३७ ॥
 हुते भूप जयसिंहकै, सुताँ दोय२सुत दोय२ ॥
 सुनहु रामनृपें नाम तिन्ह, सावधान श्रुति होय ॥ १३८ ॥
 जेठो सुत सिवसिंह१जो, मारयो जनक प्रमत्त ॥
 अनुज ईश्वरीसिंह२तस, तात कथितँ कर तत्त ॥ १३९ ॥
 सुता विचित्रकुमारि१इक१, दूजी२कृष्ण कुमारि ॥
 सु पहुँ रान संग्रामकी, जामेयी निरधारि ॥ १४० ॥

*ठेल (हटा) कर † नवीन ॥ १३१ ॥ ‡ स्कंधावार [राजधानी] को ॥ १३२ ॥ १
 मामा पर ॥ १३३ ॥ २ शीघ्र ३ बहिर्नोई के राज्य की ४ नैजता सहित ५ बा-
 दशाह से मिला ॥ १३४ ॥ ६ जिसपीछे ७ नीति से जीतकर ॥ १३५ ॥ ८ हम-
 राय ९ विचार ॥ १३६ ॥ १० सेना ॥ १३७ ॥ ११ पुत्रियाँ १२ के राजा रामसि-
 ंह कानों से सावधान होकर सुनो ॥ १३८ ॥ १३ उन्मत्त होने के कारण पिता
 (जयसिंह) ने मारहाला १४ पिता जयसिंह का कहना करनेवाला ॥ १३९ ॥
 १५ सो प्रभु राणा संग्रामसिंह की १६ भानजी ॥ १४० ॥

भयो बिचित्रकुमारिको, बय*उपयम अनुसार ॥
 जानि जनक जयसिंह जब, रचिय व्याह व्यवहार ॥१४१॥
 अभयसिंह मरुईससौं, करि सगपन कछवाह ॥
 सामग्री किय उचित सब, नयपटु जैपुर नैह ॥ १४२ ॥
 सिक्ख तबहि लहि साहसौं, दुबरनृप मथुरा आय ॥
 अंतहपुर आमैरतैं, लिन्नो सकल बुलाय ॥ १४३ ॥
 सक ससि बसु सत्रह १७८१ असित, अर्थात् ८ नैह विचारि ॥
 तनया व्याही मरुपतिहिं, कुम्म बिचित्रकुमारि ॥ १४४ ॥
 माता नृप संग्रामकी, रानी अमर कलत्र ॥
 चाहुवान पुरबेदजा, पतिकी तनया तत्र ॥ १४५ ॥
 सस्मू बह जयसिंहकी, गंगा न्हावन आय ॥
 मुरत मग मथुरा मिली, लानी कुम्म बधाइ ॥ १४६ ॥
 चाहुवानि पिकख्यो रुचिर, बिट्टी तनया व्याह ॥
 बैरनि बिचित्रकुमारि नव, नव दुल्लह मरुनाह ॥ १४७ ॥

[षट्पात्]

सस्मूकी जयसिंह कानि किंकर जिम किन्नी ॥
 इक दिन गोकुल जात खंध सिविकं तस लिन्नी ॥
 इक्क बंस गहि अप्प मैरुप कर इक्क गहायो ॥
 मातासौं गिनि मैहत बिहित सतकार बढायो ॥
 अप्पनो गिनहु मोकों अनुगें यँह तीरथ हरि अवतरिय ॥

* बिवाह के ॥१४१॥ १ नीतिचतुर २ जयपुर का पति "अब थोड़े ही समय में जयपुर बसावेगा इससे जयपुर का पति कहा है" ॥१४२॥ ३ जनाना ॥१४३॥ ४ कृष्णपक्ष ५ भादवा की ॥१४४॥ ६ उदयपुर के राणा अमरसिंह की स्त्री ॥ १४५ ॥ १४६ ॥ ७ पेटी की पुत्री [दौहिती] का ८ रौदनी (दुलहिन) नवीन ॥ १४७ ॥ ९ अर्द्ध १० पालकी ११ एक बांस तो आप [जयसिंह] ने लिया और दूसरा बांस जोधपुर के राजा [अभयसिंह] को बकड़ाया १२ बड़ी १३ उचित १४ स्वेक १५ विष्णु भगवान् ने अवतार लिया सो तुम यहां

तुम देहु बैठि हाटक तुला करै न जोरि इम अरज किय ॥१४८॥
दोहा ॥

यह सुनि महिषी अमरकी, बोली नयनयै बैन ॥
हुहिताके बसुतै तुला, हमको उचित यहै न ॥ १४९ ॥

गीर्वाणभाषा ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ॥

श्रुत्वैवमुदिताऽमरस्य महिषी प्रोवाच जामातरं,
वस्वस्माकमकव्वगदलुचिन्तज्जातन्तथाप्यायतम् ॥

भावत्कम्भुवनम्भवेद्यदिसुभूभृद्गूरिभर्माकरं,

पौरटयो बहुशस्तुत्तास्तदिह कार्या जामिजामेययोः ॥१५०॥

ऋग्विणी ॥

एवमाकर्ण्य कूर्मेश्वरः साहस्यी स्वस्वसारन्तदोवाच कार्या तुला ॥
बुन्दीभृज्जाययाऽपीति नोरीकृतन्तत्कृता भागिनेयस्य राज्ञा दृठात् ॥

प्रायोदेशीयाप्राकृर्ताभिश्चितभाषा ॥

दोहा ॥

नाम भवानीसिंह निज, हो जामेयहु तत्थ ॥

ताकी तव हाटक तुला, किय कूरम दृठ सत्थ ॥ १५२ ॥

रैन मात जामातै प्रति, पुनि अकिखय चित प्रेयै ॥

१ सोने की तुला दोरदानों साथ जोड़ कर ॥१४८॥ २ पटरानी ३ राणा अमरसिंह की ४ नीतिमय ५ बेटी के धन से ॥१४९॥ प्रसन्नता से ऐसा सुन कर अमरसिंह की पटरानी जमाई से बोली कि हमारा धन तो बादशाह अकबर से युक्त होने में अनुचित गया अर्थात् ऐसे पुण्य में नहीं लग सका और उसी प्रकार उस [अकबर] के आधीन गया. हे उत्तम राजा जो आप की भूमि बहुत सोने की लान बाकी होवे तो आपके बहिन और भानजी की सोने की बहुत तुला करो ॥१५०॥ ऐसा सुन कर उस साहसवाले कछवाहों के पति ने उस समय अपनी बहिनको तुलादान करनेको कहा यह बुन्दीके राजाकी स्त्रीने भी स्वीकार नहीं किया तब वह तुला राजाके दृष्टसे भानजकी कीगई ॥१५१॥ २ भानजा ३ वर्ष की तुला ॥१५२॥ ४ राणा की माता ने ५ जमाई जयसिंह से ६ प्यार से

पुल *कालिंदी सरित पर, बंधौ सुगम विधेय ॥ १५३ ॥
 इन तव लिखि दिल्लीससौं, लित्रौ हुकम मंगाय ॥
 सठ्ठि सहस्र ६०००० मुद्रा खरचि, इन पुल दिय बंधाय १५४
 कुमार रान संग्रामकैं, जगतसिंह अभिधान ॥
 ताहूकै तिहिं दिन तैनय, भो प्रताप कुलभान ॥ १५५ ॥
 सुत सुत सुतकी मधुपुरहि, सुनी खबरि चहुवानि ॥
 दिय हाटक लखन द्विजन, मुदित बधाई मानि ॥ १५६ ॥
 कूरमपति पठयो तदनु, अंतहपुर आभैर ॥
 इत पत्नी चहुवानिहू, निज उदयादिकनैर ॥ १५७ ॥
 अभयसिंह जयसिंह ए, दुव २ पुनि दिल्ली आय ॥
 हाजरि साह हजूर हुव, लाह बिनय हित लाय ॥ १५८ ॥
 सक दग बसु सत्रह १७८२ समय, सेय रिझायो साह ॥
 सोहि करत दिल्लीस सब, कहत जोहि कछवाह ॥ १५९ ॥
 सूबा दुव २ जयसिंहकैं, आगरा रु उज्जैन ॥
 अब सूबा अजमेरको, बहुरि दयो हित बैन ॥ १६० ॥
 मतिमें नयमें मल्लें मैं, सबमें कूरम सेर ॥
 बिनु बजीर दब्बे बहत, जवन हिंदु सब जेर ॥ १६१ ॥

[पट्पात]

अभयसिंह मरुईस सुन्यो निज देस देवर दुख ॥
 सिक्ख साहसौं मंगि रचिय दरकुंच गेह रुख ॥

* जमुना नदी पर १ सुगमता से बंध सके तो पुल बनाओ ॥ १५३ ॥ † रुप-
 ये ‡ महाराणा की माता ने ॥ १५४ ॥ ॥ नाम १ पुत्र २ प्रतापसिंह नामक
 ॥ १५५ ॥ ३ पड़पोते की ४ मथुरा में ही ५ लाखों ब्राह्मणों को सोना दिया
 वा ब्राह्मणों को लाखों मुहरें दीं ॥ १५६ ॥ ६ जिस पीछे ७ जनाने को ८ प्राप्त
 हुई (पहुंची) ९ उदय है आदि में जिनके ऐसा नगर अर्थात् उदयपुरा ॥ १५७ ॥
 १० लाभ ॥ १५८ ॥ ११ सेवन करके ॥ १५९ ॥ १० ॥ १२ बुद्धि में १३ नीति
 में १४ सलाह में १५ सिंह (पलवान्) ॥ १६१ ॥ १६ उपद्रव (लूट-खसोट)

संग दियउ जयसिंह सेन वसुसदँस ८००० जुत बर ॥
 राजामल निज सचिवकर सिवदास *सहोदर ॥
 †कहि जाय राज्य मरुईसको सजव जमावहु जोर सन ॥
 समुभाय सबहि रहोर सठ पारहु तुम मरुपति पयन ॥ १६२ ॥

[दांहा]

आयो मरुपति गेह इम, सत्थ सचिव सिवदास ॥
 इत मेठयो कूरम अधिप, तँहँ इक हिंदुन त्रास ॥ १६३ ॥
 दिह्लामैं यह दुसह दुख, सहि सब कटत काल ॥
 गहि गहि हिंदुन बरस प्रति, कर मंगत चंडाल ॥ १६४ ॥
 बीस २० दम्म वसुमौन सौं, इक्क १ अवसुं सौं लेत ॥
 जर्न प्रति हेरत स्वपचै जर, दिन प्रति यों दुखदेत ॥ १६५ ॥

पादाकुलकम् ॥

दिवाकिंति तिनमें इक नायव, स्वपच ओर तस कथित करै सब ॥
 दिन प्रति करि हिंदुन हरबल्लो, स्वपच कहै स्वामिहिं जुरि संल्ली ॥ १६६ ॥
 हमरी यह गैरपत हे नायव, आई हासिला देन इहाँ अब ॥
 तब वह अखिख रैवामि जिम उत्तर, कथितै रीति सब हितुं गहै कर ॥ १६७ ॥
 कर गहि लिखि बंधै दैल कंठन, यह लिखि स्वपच तजै इक हौयन
 दूजे वरस बहुरि गहि लावै, अह प्रति दँद मंदध उपावै ॥ १६८ ॥
 हिंदुन हेरत फिस्त दान दैल, कस्त "राहि दिन प्रति कोलाहल ॥

* समा आई कटा ॥ १६२ ॥ ११३ ॥ १ अंगी (चांडाल) ॥ १६४ ॥ २ घनवान
 से दस रुपये सालियाना ३ निर्धन से एक रुपया ४ मनुष्य प्रति ५ अंगी
 [चांडाल] घन जेता था ॥ १३५ ॥ ६ इन अंगियों में एक नाई ७ हाकिम
 [अदालत] था ८ सय अंगी [चांडाल] उसका कहना करते थे ९ आगे करके
 १० सवार होकर ॥ १६६ ॥ ११ स्वामी [मालिक] कहै तिस प्रकार १२ ऊपर
 फर्काइ रीति से १३ से ॥ १६७ ॥ १४ यह कर लेकर कंठ में पत्र बांध देते
 १५ एक सय गज उसको चांडाल छोड़ देते थे १६ दिन प्रति १७ उपद्रव
 ॥ १६८ ॥ १८ घिता पत्र चालों को १९ रोक कर

स्वपचन प्रनति करहिं हिंदू सब, तेदपि बंड अप्पहिं छुट्टहिं तब १६९
 दिलिय यह दिनप्रति दुस्सह दुख, सब कर दयैं विना न लहैं सुख ॥
 कूरम नृप यह माफ करायो, लिखित लिखाय साह सन लायो १७०
 छाप वजीर करैं नहिं उद्धत, बहुत बेर सुनि टारि गयो बैत ॥
 द्विज इक दया बहादुर नागर, सा जावत दक्खिन सूबापर ॥ १७१ ॥
 जाको मनसुब सत्त ७६ जारी, तीन आयुन ३०००० भट संग तुखारी ॥
 वासों मिलि कूरम यह अकखी, रहैं काँनि हिंदुन तब रक्खी १७२
 कहि द्विज करन सिक्ख हम जैहैं, तब छपाय बल करि दैल लैहैं ॥
 जो वजीर सम्मुह पिल्लै दल, तो तुम करहु सहाय खंडि खल १७३
 यह कहि विप्र तास गृह पत्तो, संग सबहि सुभटन अनुगतो ॥
 वह वजीर बरखानमुहम्मद, हुसनअली सुहन्यौ जिहिं सय्यद १७४
 मद १५६२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

सुभट संग सहँसन तूरानी, इम वरजोर रहैं अभिमानी ॥
 यह द्विज बीर गयो तस आलप, रोके भट सु रुकेन बड़े रंय १७५
 दै पय खान मुहम्मद गदिय, इहिं दैल छाप करहु यह बहिय ॥
 लखी वजीर छाप यह लैहैं, जोर करैं अतिबल हनि जैहैं ॥ १७६ ॥
 इम विचारि पत्र सु छप्यो उन, हटि भग्गो तबतैं दुख हिंदुन ॥
 सक गुन अष्टसत्त इक १७८३ अंतर, किय वरजोर समुँद सु काँगर १७७
 यह जयसिंह अपूर्व किन्नी, नागर कित्ति बंदि इम लिन्नी ॥
 बहु औसी किन्नी कूरम बरै, कहि साहहि मिटवाय गया कर १७८
 [पट्पात]

१ तोभी ॥ १३६ ॥ १७० ॥ २७१ ॥ ३७० ॥ ४७० ॥ ५७० ॥ ६७० ॥ ७७० ॥ ८७० ॥ ९७० ॥ १०७० ॥ ११७० ॥ १२७० ॥ १३७० ॥ १४७० ॥ १५७० ॥ १६७० ॥ १७७० ॥ १८७० ॥ १९७० ॥ २०७० ॥ २१७० ॥ २२७० ॥ २३७० ॥ २४७० ॥ २५७० ॥ २६७० ॥ २७७० ॥ २८७० ॥ २९७० ॥ ३०७० ॥ ३१७० ॥ ३२७० ॥ ३३७० ॥ ३४७० ॥ ३५७० ॥ ३६७० ॥ ३७७० ॥ ३८७० ॥ ३९७० ॥ ४०७० ॥ ४१७० ॥ ४२७० ॥ ४३७० ॥ ४४७० ॥ ४५७० ॥ ४६७० ॥ ४७७० ॥ ४८७० ॥ ४९७० ॥ ५०७० ॥ ५१७० ॥ ५२७० ॥ ५३७० ॥ ५४७० ॥ ५५७० ॥ ५६७० ॥ ५७७० ॥ ५८७० ॥ ५९७० ॥ ६०७० ॥ ६१७० ॥ ६२७० ॥ ६३७० ॥ ६४७० ॥ ६५७० ॥ ६६७० ॥ ६७७० ॥ ६८७० ॥ ६९७० ॥ ७०७० ॥ ७१७० ॥ ७२७० ॥ ७३७० ॥ ७४७० ॥ ७५७० ॥ ७६७० ॥ ७७७० ॥ ७८७० ॥ ७९७० ॥ ८०७० ॥ ८१७० ॥ ८२७० ॥ ८३७० ॥ ८४७० ॥ ८५७० ॥ ८६७० ॥ ८७७० ॥ ८८७० ॥ ८९७० ॥ ९०७० ॥ ९१७० ॥ ९२७० ॥ ९३७० ॥ ९४७० ॥ ९५७० ॥ ९६७० ॥ ९७७० ॥ ९८७० ॥ ९९७० ॥ १००० ॥

कौटिके अरु कांदविके द्रव्य विक्रय ढिग धारै ॥

अनुक्रम आपन अवलि क्रेय निज निज बित्थारै ॥

सोहू साहहिं अखिख प्रबल मेटी कूरमपति ॥

इम करि किंति अनेक साह सेयो नय सम्मति ॥

लहि धरम मग्ग मनुमत समुभि श्रुति निदेस कछु अनुसरिय ॥

पटु बुद्धि भयो इहिं समय 'पै कहिहैं दैस' १० अनुचित करिय ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीप-
तिबुधसिंहचरिते उदयपुराधीशरांणासंग्रामसिंहरामपुरविजयन १
कोटाधीशमहारावभीमसिंहस्य वल्लभसंप्रदायानुयायिताहेत्वन्तर्हि-
तत्त्वकारणमरणाप्रख्यापन २ महारावमरणज्ञानकोटाहरणहेतु-
बुन्दीनगरसालमसिंहकोटानगरगमन ३ अकस्माद्रात्रिसमयगोकु-
लागतभीमसिंहमरपराजितसालमसिंहपलायनभीमसिंहबुन्दीह-
रण ४ आमैराधीशजयसिंहस्ययोधपुराधीशजितसिंहकनीविवाह-
न ५ कोटामहारावभीमसिंहदत्तावरखांसमरमरण ६ पुनर्बुधसिंहा-

१ लट्ठीक [कलई] और २ कंदोई हलवाई ३ बेचने की वस्तु पास पास रखते थे
अर्थात् मांस और मिठाई पास पास बिकती थी अनुक्रम से ४ बाजार में ५ पंक्ति
पांधकर ६ अपनी अपनी बेचने की वस्तु को फैलाते थे ७ कीर्ति ८ मनु के
मत [मनुस्मृति] को समझकर ९ कुछ वेद की आज्ञा के साथ चला १० पर-
न्तु ११ जयसिंह ने दश बातें अनुचित कीं सो आगे कहेंगे ॥ १७९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुन्दी के पति बु-
धसिंह के चरित्र में उदयपुर के महाराणा संग्रामसिंह का रामपुरा विजय
करना १ कोटा के महाराव भीमसिंह का वल्लभ मत धारण करके पड़दा में
रहने के कारण मरना प्रसन्न होना २ महाराव को मराहुआ जानकर कोटा
लेने के अर्थ बुन्दी से सालमसिंह का कोटे जाना ३ गोकुल से अचानक रा-
त्रि के समय आये हुए भीमसिंह से सालमसिंह का पराजित होकर भाग-
ना और भीमसिंह का बुन्दी लेना ४ आमैर के राजा जयसिंह का जोधपुर के
राजा अजितसिंह की पुत्री से विवाह करना ५ कोटा के महाराव भीमसिंह
का दत्तावरखांस के युद्ध में दक्षिण में मारा जाना ६ बुन्दी का फिर बुधसिंह

धिकाग्बुन्दोगमन ७ अर्जुनसिंहकोटापट्टप्रापणा ८ जयसिंहमारणा
 र्थसयवनेन्द्रप्रयाणा कर्तृसय्यदहुसनअलीछलमारकयवनेन्द्रमुहुम्भ-
 दशाहपुनर्दिल्लीगमनजयसिंहार्थाकबरपुराधिकारसमर्पणा ९ मरुदे-
 शोपरियवनेन्द्रसेनायानभीतपलायिताजितसिंहनिजयेष्टात्मजाभ-
 यसिंहदिल्लीप्रेषणा १० यवनेन्द्रनिदेशनिजानुजवखतसिंहकरमारित
 जनकाजितसिंहाभयसिंहयोधपुरपट्टाधिगमन ११ गृहीतयनेन्द्राज्ञा-
 भयसिंहनिजानुजवखतसिंहार्थराजाधिराजपदसहितनागोरदंगरा-
 जप्रदान १२ अभयसिंहस्य जयसिंहकनीपाणिग्रहणा १३ जय-
 सिंहस्यानुचितहिन्दुकरमोचन १४ जयसिंहानेकप्रशंसनीयकार्य
 गणनासहितदनुचितदशकार्यप्रदर्शनप्रतिज्ञानं षड्विंशो मयूखः
 ॥ २६ ॥

आदितश्चतुःषष्ट्युत्तरद्विशततमः ॥ २६ ॥

[दोहा]

इत कोटा अर्जुन नृपति, पापों त्रिंश्वरख प्राण ॥

के अधिकार में होना ७ कोटा में अर्जुनसिंह का गद्दी बैठना ८ जयसिंह को
 मारने के लिये बादशाह सहित चढ़ाई करनेवाले सय्यद हुसनअली को छल
 घात से मार कर बादशाह मुहुम्मदशाह का पीछा दिल्ली जाना और जयसिं-
 ह को आगरे का सूबा देना ९ मारवाड़ पर बादशाही सेना जाने के कारण
 डरकर भागेहुए राजा अजितसिंह का अपने बड़े पुत्र अभयसिंह को दिल्ली
 भेजना १० बादशाह की आज्ञा से अपने छोटे भाई बखतसिंह के हाथ से
 पिता अजितसिंह को मरवाकर अभयसिंह का जोधपुर की गद्दी पर बैठना
 ११ बादशाह की आज्ञा लेकर राजा अभयसिंह का अपने छोटे भाई बखत-
 सिंह को राजाधिराज की पदवी के साथ नागोर का राज्य देना १२ राजा
 अभयसिंह का राजा जयसिंह की पुत्री से विवाह करना १३ जयसिंह का
 हिन्दुओं के ऊपर से अनुचित कर का छुड़ाना १४ जयसिंह के अनेक प्रशं-
 नीय कार्यों की गणना के साथ उनके दश अनुचित कार्य बताने की प्रतिज्ञा
 का छब्बीसवां २६ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ चौसठ २६४ म-
 यूख हुए ॥

१ तीन वर्ष जीवित रहा

स्याम रु दुज्जनसल्लके, भो भू हित धमसान ॥ १ ॥
 अग्रैज स्यामहिँ मारिकै, भो नृप दुज्जनसल्ल ॥
 बुंदीपर दावा विरचि, हठि सु विचार तहल्ल ॥ २ ॥
 इत दिल्लिय कूरम अधिप, साह त्रि३हाँयन सेय ॥
 सक चउ४वसु सत्रह१७८४समय, आयो निल्लिय अजेय ॥ ३ ॥
 करि असाँत्य नगराज दिय, बुंदिय कुम्म पठाय ॥
 बुंदीपति इहिँ पर बिमनँ, रक्खत विरस रिसाय ॥ ४ ॥
 कछवाही प्रति नृप कहिय, अँनुज प्रबोधहु आज ॥
 राज तुम्हें जो दव्यनौ, तो रक्खहु नगराज ॥ ५ ॥
 भ्रातहिँ इम रानी भनत, कह्यो तमकिँ कछवाह ॥
 भगिनी तुमगी भुम्मिकी, चित्त न रक्खत चाह ॥ ६ ॥
 जामिपँ अलस प्रमाद जुत, अरु तुमगी मति एह ॥
 गेह द्वि२ भूपन विगरते, विगरयो इक्क१हि गेह ॥ ७ ॥
 हम जान्यो विगरत बिभव, लैहँ अबहु सुधागि ॥
 तुमगी मति भ्रम साँहिँ तो, हमहु दयो हित टारि ॥ ८ ॥
 यह कहि नृप जयसिंह तब, लिय नगराज बुलाय ॥
 रंच सिराही राँगिनी, इहिँ पर बुंदिय गाय ॥ ९ ॥
 चुंडाउति उर जो भयो, कुमार पदम अभिधान ॥
 आर्मय बस तिहिँ इन दिनन, किन्न महाप्रस्थानँ ॥ १० ॥
 नाथाउत कूरम नृपति, बुँल्लयो विविध रिसाय ॥
 राजकाज लग्गो करन, बुंदिय सालम आय ॥ ११ ॥

१ स्यामसिंह और दुज्जनशाल के भूमि के अर्थ २ युद्ध हुआ ॥ १ ॥ ३ घड़े
 भाई स्यामसिंह को ॥ २ ॥ ४ चादशाह की तीन वर्ष सेवा करके ५ अपने
 घर (आमैर) आया ॥ १ ॥ ६ प्रधान (कामदार) ७ जयसिंह ने ८ उदास ॥ १ ॥
 ९ बुधसिंह ने कहा १० छोटे भाई [जयसिंह] को समझाओ ॥ ९ ॥ ११ क्रोध
 करके १२ रहे बहिन ॥ ६ ॥ १३ बहिनोई ॥ ७ ॥ ८ ॥ १४ रानी को ॥ ९ ॥ पद्मासिंह
 १५ नामक १६ रोग के वश १७ परलोक गया ॥ १० ॥ १८ बुलाया ११ ॥

कछवाही सन याहिपर, कछु प्रसन्न बुंदीस ॥

चुंडाउति रठोरि सिंग, यहहि रही बनि ईस ॥ १२ ॥

दिल्लीसन बुंदीस जब, दुंढाहर धर आय ॥

चुंडाउति रठोरि तब, लिन्नीही बुलवाय ॥ १३ ॥

कछवाहीके डर दुहुँन२, रक्खि *निवाई नैर ॥

पटरानीके बचन बसि, अप्प रहिय आसैर ॥ १४ ॥

नाम भावानीसिंह निज, पटरानी किय पूत ॥

औरस वो कृत्रिम यहै, सु हैम न जान्यौं सूत ॥ १५ ॥

पादाकुलकम् ॥

सिख तब रानी सुतहिं सिखावहिं, पति ढिग भोजन काल पठावहिं

अरज कुमार असनहिं अकखहिं, भिन्न आल भोजन तबरक्खहिं १६

उर अस सवन यहै लखि आन्यौं, पै काहू न तत्व पहिचान्यौं ॥

छित्तरसिंह इंद्रगढ स्वामी, नृप ढिग मिलन आय भट नामी ॥ १७ ॥

भुज्जन नृप बेठो छित्तर सहै, रानी तबहु सुकलयो सुत वह ॥

छित्तर लग्गिताहि बैठावन, दिय तब नृप उत्तर छल दावना ॥ १८ ॥

खलु सुर अर्चन कछुक रहयो खिल, करि वैद इक १ थात भुज्ज-

हिं कैल ॥

दिन प्रति इम बढि बढि भ्रम दोरयो, सोतिन आदि सवन मन

मोरयो ॥ १९ ॥

रानी अब नृप सीस रिसावै, पुत्रहिं असन काल न पठावै ॥

॥ १२ ॥ १३ ॥ * निवाई नामक नगर में ॥ १४ ॥ १ कछवाही ने २ कछवाही के

उदर से उत्पन्न हुआ था या करतवी (बनावटी) था सो ३ ग्रंथकर्ता (सूर्यमल्ल)

कहते हैं कि यह हमने भी नहीं जाना ॥ १५ ॥ ४ भोजन करने के अर्थ ५ जु-

दे थाल में ॥ १६ ॥ १० ॥ ६ भोजन करने को ७ छितरसिंह के साथ ॥ १८ ॥

८ निश्चय ही ९ देवपूजन (कुमार के अर्थ देवताओं की कपूलायत करी थी सो)

करना १० वाकी है सो ११ वह पूजन करके १२ एक थाल में कुमार के साथ

१३ निश्चय ही भोजन करेंगे ॥ १९ ॥ १४ भोजन के समय

नृप जयसिंह यहाँ नहि जानैं, मिथ्याही भगिनी रिस मानैं ॥२०॥
 प्रीति दिखाय रह्यो नृप उप्पर, अरुचि धरैं रानीपर अंतर ॥
 *कुम्माहैं नहिं बूंदीस कहावैं, †पुत्तहिं लाखि ‡संतत दुख पावैं ॥२१॥
 सक चउ४बसु सत्रह१७८४संबच्छरैं, घल्लपो यह बिग्रह बूंदियघर ॥
 लोकहु बहु बदनीति मचाई, सुनि सुनि सब जयसिंह पचाई ॥२२॥

(पट्टपात्)

बूंदी लोकन बहु अनीति आमैर मध्य किय ॥
 सठ नाजर किसतूर नगर कुतवाल मारि लिय ॥
 पकरि पकरि परदार जार बहुतन गहि रक्खी ॥
 मार लूट मचवाय नगर लज्जा सब नक्खी ॥
 सुनि सुनि अनीति कूगम सहिय कहिय कछु न बूंदीस प्रति ॥
 जिम जिम सही सु तिम तिम जुलम अनय प्रचारयो नरनअति ॥२३॥

(दोहा)

दिन दिन अत्र कूगम हुमन, कह्यो कछूहुन जाय ॥
 अंधु छाँह जिम कछु अनख, राखी हृदय समाय ॥ २४ ॥
 सुता रान संग्रमकैं, ईडरपति भानेज ॥
 स्वसाँ सहोदर नाथकी, उपर्यम उचित अजेज ॥ २५ ॥
 लौ चर ताके लौंगली, आये जैपुर अँथ ॥
 सुभट केसरीसिंह पुर, सँलूमरिप के सत्थ ॥ २६ ॥
 सगपन ईश्वरिसिंहसाँ, कूरम सुतसाँ ठानि ॥
 कछुवाही भ्रातहिं कह्यो, मम सुत व्याह प्रमानि ॥ २७ ॥

॥ २० ॥ * जयसिंह को † पुत्र को ‡ निरंतर ॥ २१ ॥ १ सम्बत्सर (वर्ष) में ॥ २२ ॥ २ पराई स्त्रियों को ३ अनीति ॥ २३ ॥ ४ उदास ५ कुए की छाया के समान ॥ २४ ॥ ६ सगी बहिन ७ नाथसिंह की, जिसको मेवाड़ में नाथजी कहने हैं ८ विवाह के उचित ९ बिलंब रहित शीघ्र ॥ २५ ॥ १० ना-
 रियल ११ यहां १२ सलूवरके पति के साथ ॥ २६ ॥ २७ ॥

जयसिंहका भानजोंलिखे कन्या मांगना]सप्तमराशि-सप्तविंशमयूख[३०९७]

भ्रात स्वीये भानेजहू, व्याह उचित अब एह ॥

करिये सगपन रानके, कुमर सुता तस गेह ॥ २८ ॥

(गीर्वाणभाषा)

(इन्द्रवज्रा)

शुत्वैवमाहूय सलूमरीशं चुण्डाउतं केसरिसिंहसंज्ञम् ॥

राणेशसामंतचयोडुचन्द्रं प्रोवाच हुंढारधराधवस्तत् ॥ २९ ॥

[स्रग्धरा]

बुंदीधीशात्मजोपञ्ज्वलनकुलमणिर्भागिनेयोऽस्मदीयो,

युष्मज्जामातृभावंगमितभुचित इत्येवमालोच्य तस्मात् ॥

अस्मापष्टाऽब्दकायाप्युदयनगरनाथेन पट्टायनी सा,

राणेशेनादिराज्ञा लवजननभृता संविवाहया स्वपौत्री ॥ ३० ॥

(स्रग्विणी)

इत्थमाकर्ण्य बुन्दीनरेशस्तदाऽऽहूय चुण्डाउतम्प्रावदत्स्वम्मतम् ॥

राणाराजा ध्रुवनप्त्रिकोद्वाहकृन्नोररीकार्यमस्मन्निदेशं विना ॥ ३१ ॥

प्रायोदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

(दोहा)

कूरमपति यह बत्त सुनि, संभर भूपें समीप ॥

१ हें भाईरतुम्हारा भानजा भीरेराणा के कुमर के पुत्री है ॥ २८ ॥ ऐसा सुन कर केसरीसिंह नाम सलूमर के पति को बुलाया जो राणा के तारों रूपी उमरावों में चन्द्रसा रूपी था उससे हुंढाहड़ के पति ने विवाह सम्बन्धी वार्ता कही ॥ २९ ॥ यह अग्नि वंश का मणि बुन्दी के पति का पुत्र और हमारा भानजा है, इसकारण से निश्चय करके तुम्हारा जमाई होने के योग्य और उचित है सो विचारो इसका शरीर आठ वर्ष का है और वह उदयपुर के पति की कन्या छः वर्ष की है महाराणा लव के वंश को धारण करनेवाले आदि राजा हैं, सो अपनी पोती को अच्छे प्रकार से विवाहने योग्य हैं ॥ ३० ॥ इस प्रकार सुन कर बुन्दी के राजा ने उस सलूमर के पति चुण्डाउत को बुला कर अपना सिद्धान्त कहा कि मेरी आज्ञा के बिना राणा की पोती के विवाह का कार्य स्वीकार मत करना ॥ ३१ ॥ ४ राजा बुधसिंह के पास

कूरम पुच्छन मुकलयो, *कुंभानी भट दीप ॥ ३२ ॥

[पटपात]

दीपसिंह कछवाह जाय बुंदीस निकट तब ॥

यह सगपन अवरोध संधि अंजलि पुच्छयो सब ॥

कहिय बुद्ध सुनि कुमार आहिं मम जात नाहिं यह ॥

रानी कृत्रिम रचिय सोति सुत जानि गव्व सह ॥

जो चहत भूप जयसिंह अब वंस बरनसंकर करन ॥

तो उदयनैर व्याहहु सुतहिं निर्गमरीति यह उचित नन ॥ ३३ ॥

दोहा ॥

यह कहि सुदा रंजतमय, सत्तरि सँहस ७०००० मँगाय ॥

दिन्नी कूरम दीप हित, न्याय तथा अन्याय ॥ ३४ ॥

न लिय दीप तब कहिय नृप, जंपि सपथ छल जोरि ॥

हम थिति रखवहु सक्षय हित, लैहैं मंगि बहोरि ॥ ३५ ॥

दीपसिंह जान्यो बहुरि लैहैं द्रव्य मँगाय ॥

पँतो पुनि नृप पास पै, जुलम कहयो नहि जाय ॥ ३६ ॥

कूरम नृप सुभटहिं कहयो, पुच्छी सो कहिदेहु ॥

कहिय दीप तिन अलस करि, अबही कहयो न एहु ॥ ३७ ॥

अकिखय तब जयसिंह यह, रखत जामि पर रीस ॥

कुमरहिं ईम कृत्रिम कहत, बिरचि अनय बुंदीस ॥ ३८ ॥

यह कहि बुंदी ईस प्रति, कहि पठई कछवाह ॥

मम जनपद अब रहहु मति, चलाहु जैतय चित चाह ॥ ३९ ॥

*कुंभाडत शाखा के कछवाह उमरावा दीपसिंह को भेजा ॥ ३२ ॥ इरोकने का कारण § हाथ जोड़ कर ॥ यह कुमार मुक्त से उत्पन्न हुआ नहीं है + सौत को पुत्र वाली समझ कर गर्व सहित १ वेद की रीति से यह उचित नहीं है ॥ ३३ ॥ २ चांदी के रुपये ३ कछवाह दीपसिंह के अर्थ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ४ गया ५ परन्तु वहां जाकर यह जुलम की वार्ता नहीं कही ॥ ३६ ॥ ६ उमराव को ॥ ३७ ॥ ७ बहिन पर ८ इसकारण ९ अनीति ॥ ३८ ॥ १० मेरे देश में ११ जहां जी-

गीर्वाणभाषा ॥

इन्द्रवज्रा ॥

श्रुत्वेति बुन्दीनरपः प्रमादी कूर्मेश्वरम्प्रत्यवदहलेन ॥

युष्माभिरीहे प्रथमं रहस्यं तद्युष्मदुक्तं सकलं करिष्ये ॥ ४० ॥

अनुष्टुप् ॥

रहस्याहूय बुन्दीशं जयसिंहस्तदा नृपः ॥

पप्रच्छ जामिजोदन्तन्नम्प्रो नीतिपरायणाः ॥ ४१ ॥

शुद्धप्राकृतभाषा ॥

आख्या ॥

सोऊगा चविउ रणगा रसालं दुष्टकुलं कखु चिय होइ ॥

गागाभे औरसविष्टो राणीए कित्तिमो किहो ॥ ४२ ॥

गीर्वाणभाषा ॥

शालिनी ॥

शृण्वन्नित्यङ्कूर्मराजो महात्माप्यामर्षी प्रोन्नद्धभोगोवसर्पः ॥

तर्जन्नुग्रो जामिपम्प्रत्युवाचास्मज्जामेये ऽनौरसे कोत्र हेतुः ॥ ४३ ॥

चाहे वहां जग्रो ॥ ३२ ॥ यह सुन कर उन्मत्त बुन्दी के राजा ने कहवाहों के पति को पत्र से उत्तर दिया कि मैं पहिले आपके पास एकांत चाहता हूं कि-र आपका कहा हुआ सब कहूंगा ॥ ४० ॥ तब बुन्दी के राजा को एकांत में बुला कर उस नीतिनिपुण जयसिंह ने नम्र होकर भानजे का वृत्तान्त पूछा ॥ ४१ ॥

संस्कृत अनुवाद ॥

श्रुत्वा ऊचे राज्ञः शालं दुष्टं कुलं खलु एव भवति ॥ नन भूत औरसपुत्रो रा-
ज्या कृत्रिमः कुतः ॥ ४२ ॥

भाषानुवाद ॥

यह सुन कर राजा बोला कि हे साला मेरा श्रेष्ठकुल दुष्ट (दूषित) होआवे-
गा क्योंकि यह औरस पुत्र नहीं हुआ है राणी ने कृत्रिम किया है ॥ ४२ ॥

इस प्रकार सुन कर महाशय कहवाहों के राजा ने क्रुद्ध होकर फण उठाये
हुए सर्प के समान उग्र तर्जना करके वहिनोई (बुधसिंह) से कहा कि हमारे
भानजे के अनौरस होने में यहां क्या कारण है ॥ ४३ ॥

प्रायोदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ।

(षट्पात्)

कह्यो प्रकट कछवाह प्रीति तुमरी न जामिपर ॥

सेवत श्रीगोविंद बीज इत्यादि कउलैवर ॥

चुंडाउति पर चित्त तौस जो होहिं तनय अब ॥

देहो ताकहैं राज्य सोधि हमहू लिन्नी सब ॥

बसुंवरस पालि पुत्रहिं सविधि धिक मन सिसु मारन धरिय ॥

अभिंसाप अप्प अप्पत अब सु किन अलीकं जनमत करिय ॥४४॥

दोहा ॥

संभर अक्खिय एह सुनि, हमहिं कालिका आन ॥

कछु करि संकट टारिहौ, सो सब करहिं प्रमान ॥ ४५ ॥

कूरम अक्खिय कउल तुम, संपथन नहिं विस्वास ॥

लिखि स्वहत्थ अप्पहु लिखित, तब लैहैं असुतास ॥४६॥

चुंडाउति रठोरि कै, निपजहु पुत्र निसंक ॥

वाहि न दैहैं राज्य अब, अवरहिं लैहैं अंकं ॥ ४७ ॥

(षट्पात्)

सुनत एह बुंदीस कैर निज हत्थ लिखित किय ॥

चुंडाउति रठोरि जनित पैहैं नहिं बुंदिय ॥

तुम कैर अप्पहि ताहि करहु अप्पन मन इच्छित ॥

कहिहो जिहि कछवाह सूनु थप्पहि करि सिच्छित ॥

१बहिन पर २कारण ३हे वाममार्गियों में ४८४उस चुंडाउति के अब आप ५मि-
थ्या दोष देते हो सो जन्मते ही वनाश क्यों नहीं करा दिया ॥४४॥४५॥ ६तुम वा-
ममार्गी हो इसकारण तुम्हारे सौगनों का विश्वास नहीं है ८ अपने हाथ से
लिखावट लिखकर दो ९ तब उस लड़के के प्राण लेवेंगे ॥ ४६ ॥ १० दूसरे को
गोद लेवेंगे ॥ ४७ ॥ ११ कूड़ (मूर्ख) ने यह लिख दिया कि १२ चुंडाउति और
राठोड़ी के पुत्र लेवेंगे सो हम तुम्हारे हाथ में देवेंगे फिर तुम १३ अपना मन
का चाहा करना १४ हे कछवाह १५ सिद्धित

जयसिंह का जयपुर बसाना] सप्तमराशि-सप्तविंशमशुख (३१०१)।

दल दियउ एह जयसिंह कर सैकखी लिखि हहुन सबन॥
कोऊन लिखत औसी कुबिधि लिप्यो जिम संभर लिखन ४८

(शुद्धप्राकृतभाषा)

इम लिहिअं कत्तु तदो प्पिअवयणोहिं शिहाय संबन्धम् ॥
रगणा जयसिंहाणं सुज्जकुमारी शिअप्पजा दिद्धा ॥ ४९ ॥

(पट्टपात)

याहि बरस जयसिंह नगर जयपुर बसवायो॥
सित सहस्रं द्वादसिय १२ मकर रवि लगन मिलायो ॥
सिलप तंत्र अनुसार सबहि व्यवहार सधाये ॥
बारह १२कोस बिथार बिबिध प्रकार बधाये ॥
रचि जुकति दम्म कोटिन खरचि पुर अपुब्बं किन्नो प्रकट॥
हिंदुवसथान दूजो नहिन सहर प्रातिबिंबक सुघट ॥ ५० ॥
गीर्वाणभाषा ॥

भुजङ्गप्रयातम् ॥

विधायैवमग्रयम्पुरं कूर्मराजः श्रुतीर्धीर आसेव्य लब्ध्वा स्मृतीश्च॥
द्विजेन्द्रान् समाहृत्य धर्मानुगस्तत्सवर्णाश्रमश्रेय आविश्चकार ५१

१ पत्र २ साक्षी ३ बुधसिंह ने लिखा जिसप्रकार ॥ ४८ ॥

संस्कृत अनुवाद ॥

एवं लिखितं कृत्वा तदा प्रियवचनैर्निधाय सम्बन्धम् ॥ राजा जयसिंहाय

सूर्यकुमारी निजात्मजा दत्ता ॥ ४९ ॥

॥ भाषानुवाद ॥

तब ऐसा लिखित करके प्रिय वचनों से सम्बन्ध स्थापन करके उस राजा
(बुधसिंह) ने जयसिंह को सूरजकुमारी नाम अपनी पुत्री दी ॥ ४९ ॥

४ पौष सुदि बारस ५ शिल्प शास्त्र के अनुसार ६ विस्तार ७ कोट द युक्ति
९ रुपये १० अपूर्व ११ हिन्दुस्थान में १२ इसके सुडोल प्रतिबिंबवाला
॥ ५० ॥ धर्म को धारण करनेवाले कछवाहों के राजा जयसिंह ने इसप्रकार
प्रधान नगर [जयपुर] बसाकर वेद विहित कर्म करके स्मृतिशास्त्र पाकर ब्रा-
ह्मणों को एकत्र करके धर्म शास्त्र की मर्यादा से चलकर चारों वर्ण और आ-
त्म के कल्याणकारी मार्ग को प्रकट किया ॥ ५१ ॥ यह अग्रणी राजा बुद्धि

धिपारत्न १४ विद्याः समाकर्ण्य धौर्यस्ततो नीतिमेत्यप्रकृष्टाः कलाश्च ।
 यतद्वृद्धराज्यांगसप्तोपपुष्टो जनेनाननूतान्समाक्रम्य तस्थौ ॥ ५२ ॥
 मुखम्पुण्यभूमीश्वराः प्रक्षयमाणा वजीरश्च बहुद्विवेगत्र जग्मुः ॥
 विहायैव तन्मलेच्छपोप्यन्यभूपानियायोच्चमालंबमामैरमौलिम् ५३
 विधायाऽग्निहोत्राऽध्वराद्येकयज्वा नियम्याऽप्यधर्महृषीकेशभक्तः ॥
 सितारेशदिल्लीशसंस्पृष्टमंत्रः कृती पुण्यभूमौ बभूवाप्रयनामा ॥ ५४ ॥
 कृतो धासखः खानदोराऽभिधेन प्रणारयैव दिल्लीन्द्रसेनाधिपेन ॥
 महात्मा स विष्ण्वात्मजः कूर्मगजो रराजाखिलेष्वर्यमैको यथाहि

(कामक्रीड़ा)

तंत्रावापोपेतं स्कन्धावारं सर्वोच्चैकुर्वन्,
 वत्राज श्रीविष्णुत्रातो नीत्या दिल्लीशौन्मुख्यम् ॥
 आन्वीक्षिकया धर्मार्थार्थी चक्रे राज्यं कृताग्नि,
 भोजाचारं भेजे भूम्युभवाशीर्भजद्भूभर्ता ॥ ५६ ॥

से चौदह विद्याओं को पह नीति शास्त्र को प्राप्त हो चौसठ कलाओं को सीख यत्न करते हुए और बड़े हुए राज्य के सातों अंगों से पुष्ट होकर अपने से न्यून नहीं ऐसे राजाओं को देखाकर रहने लगा ॥ ५२ ॥ आर्यावर्त के राजा उनका सुहृत्ताकते थे और बड़े बड़े वजीर उसकी बुद्धि के वेग को नहीं पशु-चते थे बादशाह भी दूसरे राजाओं को छोड़कर आमेर के सुकूट (जयसिंह) को ऊंचा [बड़ा] आलंबन समझते थे ॥ ५३ ॥ नित्य यज्ञ करके नैमित्तिक यज्ञ का एक ही कर्ता पापों का निवारण करके ईश्वर का भक्त जिससे सितार-और दिल्ली के पति सत्ताह पूछते थे ऐसा चतुरों का अग्रणी (जयसिंह) आर्यावर्त में हुआ ॥ ५४ ॥ बादशाह के सेनापति खानदार्गों ने बड़ी नम्रता के साथ उस राजा को अपना मंत्री (खलाहकार) बनाया। विष्णुसिंह का पुत्र महात्मा वह कलवाहों का राजा सब से ऐसा प्रकाशमान हुआ कि जैसे दिन में अंजला सूर्य होता है ॥ ५५ ॥ राज्य वृद्धि और शत्रु वश करने की चिन्ता सहित, राजधानी को सब से उच्च बना कर श्रीविष्णुभगवान् से रक्षित जयसिंह नीति से दिल्लीश के सम्मुख गया और ब्राह्मणों के आशीर्वाद से राज नीति के अनुसार, धर्म और अर्थ [पुरुषार्थ] को चाहता हुआ वह तेजस्वी राजा शत्रुओं का नाश करके सोज के समान राज्य करता था ॥ ५६ ॥

(नकुटकम्)

मतिरुहुशारा उलवशादारेदतमिश्रहरिः,
समिदतलस्पृगर्णवविलङ्घन एकतरिः ॥
जयनयधार्यकार्यमननार्थ उदग्रनाति,
भुवि यशसा रराज जयसिंह इलाधिपतिः ॥ ५७ ॥

प्रायेदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

[पट्पात]

इम कूगम जयसिंह हिंदु सिंघन उप्पर हुव ॥
जाप धरम श्रुति जेजन भूरि अध्वरं विंथरि भुव ॥
निंदत निर्गम पिछानि जार तुरकान प्रजारन ॥
सहर सितागधीस मंत्रि बुल्लयो तिन मारन ॥
साहू नगेस लहि तव समय दिल्लीपति उप्पर दुसह ॥
सिंधिया बहुरि हुलकर सुभटं पिछे दुवरं दल अमित मह ॥ ५८ ॥
दोहा ॥

नृप साहू नवलकख ९००००० दल, सहर सिताग ईस ॥
पिछे हुलकर सिंधिया, दब्बन भुव दिल्लीस ॥ ५९ ॥
इन अवरंगाबाद लरि, पहिलौं अमल प्रचारि ॥
वह नागर सूबा अधिप, दयावहादुर मारि ॥ ६० ॥

भूपति राजा जयसिंह अपने यश से पृथ्वी पर प्रकाशता था जो बुद्धि के लि-
ये चन्द्र रूपा और उत्कट (उग्र) दग्धिरूपी अथवा अनीनि रूपी अन्वहार का
नाश करने को सूर्य रूप, युद्ध रूपी अथाह सलुद्ध को जांघने के लिये अहिनी-
य नौका [नाव] रूप जय और न्याय से धारण करने योग्य कार्य का विचार
करने में श्रेष्ठ और बड़े ऊंचे पदवाला शोभाचलान हुआ ॥ ५७ ॥ १ वेद २
देवपूजन ३ बहुत यज्ञ ४ भूमि पर विस्तार [कैला] कर ५ वेद की निंदा करने
वाले समझ कर यवनों का बल जलाने के अर्थ ६ सिनारा के दोनों उमरावों
को सेज ७ सेना के अत्यन्त उत्साह से ॥ ५८ ॥ १९ ॥ = चहू हिंदुओं के कर
छुटाने के पत्र पर छाप करानेवाला नागर जाति का ब्राह्मण ॥ ६० ॥

इत *गुज्जर धर जवन इक, सरबिलंद सप्रसाद ॥
 सूबापति वह साहको, नगर अहमदाबाद ॥ ६१ ॥
 सुं बैसु गाम सत्तरिसहस्र ७००००, आयस जास अधीन ॥
 मरहठन सोहू मिल्यो, लिखि पत्रन अघ लीन ६२ ॥
 उज्जइनी अकबरनगर, अरु पत्तन अजमेर ॥
 सूबा त्रय ३ जयसिंहकै, सो बुल्लत बल सेर ॥ ६३ ॥
 इत खटकत दिल्ली उदर, साह मुहुम्मद मूल ॥
 कंटक अरि काजीनकाँ, अनय अस अनुकूल ॥ ६४ ॥
 मंद नपुंसक रत मुदित, यौही पुनि अनुचर ॥
 रक्त कापिसायन रहत, सचिवहु मंद समार ॥ ६५ ॥
 मौजदीनतैं इक्कसे, भये पंच ५ दिल्लीस ॥
 दिन दिन बोरि कुरान दिय, रचिय नबी पर रीस ॥ ६६ ॥
 इत बुंदिय पति लिखित करि, रचि सालक सन साम ॥
 बिट्टी^१ हित जयसिंह वरि, आरंभिय उपर्याम ॥ ६७ ॥
 नगर निवाई हितुं लिय, रानी उभयर बुलाय ॥
 मुँज्जकुमरि जयसिंहकाँ, प्रथितैं दई परिनाय ॥ ६८ ॥
 संगानैर समीप यह, बुंदीपति किय व्याह ॥
 दायज बैसु त्रय लख ३००००० दिय, अधिक दिखाय उछाह ६९
 सक चउ वसु सत्रह १७८४ समय, तिथि तैपर्य सित आदि ॥

*गुजरात में प्रसन्नता सहित ॥ ६१ ॥ १ सो २ धनवान अथवा श्रेष्ठ धनवा-
 ले ग्राम ३ जिसकी आज्ञा में ४ पाप में ॥ ६२ ॥ ५ आगरा. वस जयसिंह
 ने ७ चलवान सेना को ८ बुलाई २ ॥ ६३ ॥ ८ काजियों का शत्रु ९ आसक्त
 ॥ ६४ ॥ १० वह धूल ११ हीजड़ों से रत [मैथुन] करने में प्रसन्न १२ चलन [चरता-
 च] १३ मद्य में आसक्त १४ उसका वजीर भी मूर्ख १५ कासी था ॥ ६५ ॥ १६
 खुदा [यावनी भाषा का ईश्वरवाची शब्द है] ॥ ६६ ॥ १७ साले जयसिंह से
 मिलाप [खुलाह] १८ बेटी [पुत्री] के अर्थ १९ विवाह ॥ ६७ ॥ २० से २१ सूरज-
 कुमारी २२ प्रसिद्ध ॥ ६८ ॥ २३ धन ॥ ६९ ॥ २४ फाल्गुन सुदि एकम

कूरम इम *जामात किय, पति चहुवान प्रमादि ॥ ७० ॥

पादाकुलकम् ॥

यह बिचार संभर उर आयो, कूरम रिस बसि लिखित करायो ॥
अब रिस गयें लिखित मुहिं अप्पहिं, थिर सुत अंक लैन नहिं थप्पहिं
बिंदी निज यह सोधि बिबाही, सत्य लिखित कूरम यह साही ॥
औरस सुत होहि सु हम लै हैं, दायादजहि अंक धरि दें हैं ॥ ७२ ॥
मम जामिज कृत्रिम जिहिं मानत, मारहिं तिहिं अब न्याय लि-
खित मत ॥

जामिप अंक अवर कोउ रक्खहिं, चुंडाउति न पुत्र फल चक्खहिं ७३
यह जयसिंह नियम अवगाह्यो, सत्य लिखित उप्पर दठ साहयो ॥
बुंदीपति अब दुमन बिचारैं, टेक न यह कूरम नृप टारैं ॥ ७४ ॥
बुंदी लिखित संग हन धोरी, जुलाम भयो चलहिं न अब जोरी ॥
उर दयितां भव सुत अंकूरी, सुगयो नृप लौ इम ठग मूरी ॥ ७५ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपति
बुधसिंहचरित्रे कोटामहारावार्जुनसिंहसरस्वामारिताम्रजश्यामसिंहदु-
र्जनशालनृपीभवन १ महाराणा संग्रामसिंहसुताया जयसिंहपुत्रेश्व-
रीसिंहेन सह संबंधभग्नान २ बुंदीमहारावगजबुधसिंहस्य स्वात्मज-

* जमाई † भूल से [बुधसिंह ने समझा था कि इस संबंध और डायजा देने
के कारण जयसिंह प्रसन्न होकर मेरे हाथ का लेख भुक्त पीछा दे देंगे, इस
भूल से) ॥ ७० ॥ ‡ क्रोध के वश § गोद ॥ ७१ ॥ १ पुत्री २ कछवाहे ने
इसे बात को पकड़ी कि यहाँ लिखावट जतन है ३ सपिंडी में से ४ गोद रख
देवेंगे ॥ ७२ ॥ मेरे ५ भानजे को ६ लिखावट के मत से ७ बहिनोई की गोद
॥ ७३ ॥ ८ उदास ॥ ७४ ॥ ९ बुयोई १० प्यारी चुंडाउति के उदर में पुत्र के
जन्म का अंकुर हुआ ११ ठगकीसी सूजी [झूठी आशा] लेकर ॥ ७५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुंदी के राजा
बुधसिंह के चरित्र में कोटा के महाराज अर्जुनसिंह के जे पीछे बड़े भाई रया-
मसिंह को मार कर दुर्जनशाल का राजा होना १ महाराणा संग्रामसिंह की
पुत्री की राजा जयसिंह के पुत्र ईश्वरसिंह से संगई होना २ बुंदी के महा-

भवानीसिंहकृतिमत्वप्रदर्शनपूर्वकोदयपुरसंबंधनिवारण ३ भवानी-
सिंहमारणावस्थायां दत्तजयसिंहचुण्डाउतिराष्ट्रकूटीजठरजातजय
सिंहदत्तदत्तकपुत्रार्थबुंदीराज्यप्रदानप्रतिज्ञाविषयबुधसिंहहस्ताक्षर-
करण ४ जयसिंहजयपुरनगरनिर्माण ५ दिल्लीन्द्रपञ्चयवनेन्द्रनि-
न्दनजयसिंहमन्त्रागतमहरष्टदिल्लीधराक्रमण ६ जयसिंहस्य बुधसि-
ंहपुत्रीविवहनं सप्तविंशो मयूखः ॥ २७ ॥

आदितः पञ्चपष्ठ्युत्तरद्विशततमः ॥ २६५ ॥

नाराचः ॥

इतैं अरीन जावदारुप नैर रानको हन्यौ ॥

सुनी अवाज कूर्मराज सज्ज भीरैको हन्यौ ॥

भनंकि भौरं भौर के ठनंकि अंदु गै गुरे ॥

कुं दार नैन चारके तुखा सज्ज संजुरे ॥ १ ॥

रावराजा बुधसिंह का अपने पुत्र भवानीसिंह को कृत्रिम बनाकर उसके
उदयपुर संबंध होने को रोकना ३ भवानीसिंह को मारहालने की अवस्था
में चुंडाउति और राठोड़ी के उदर से पुत्र उत्पन्न होयें उन पुत्रों को जयसिंह
को देकर जयसिंह के दिये हुए दत्तक पुत्र की बुंदी का राज्य देने की प्रतिज्ञा
का बुधसिंह का अक्षर करना ४ राजा जयसिंह का जयपुर नगर बसाना ५
दिल्ली के पांच बादशाहों की निन्दा और जयसिंह भी मल्लाह से आपछुए म-
रहटों का दिल्ली की भूमि को दाना ६ जयसिंह का बुधसिंह की पुत्री से
विवाह करने का सन्ध्यासवां २७ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ-
पैंसठ २६५ मयूख हुए ॥

इधर महाराजा के १ जावद नामक नगर को राजपूतों ने मारा [छुटा] जिसकी
२ खबर कछवाहों के राजा (जयसिंह) ने सुनी इसकारण ३ सहाय करने को
सज्जिन हुआ सो ४ अमरों का समूह उदर ५ जजारे पजकर ६ हाथी गुंडे
(हाथियों को सज्जिन करते समय उनका जमान पर लेटाकर रज भाड़ने हैं इ-
सी कारण उनको गुड़ना लिया है) ७ कुलटा (खांटी) ८ स्त्री के नेत्र चलने के
समान चल ९ घोड़े सज्जिन होकर एकत्र हुए; अथवा हु (पृथ्वी) जिसको वि-
दारण करनेवाले "द्विदारणे" इस धानु से दोर जावद का अर्थ विदारण है
अर्थात् अपने चरणों के आघात से भूमि को विदारण करनेवाले और नेत्रों के

चमू हजार अध्र बान ५० लौ कृपान भानकी ॥
 रिसाय कुम्भराय यों चल्गो सहाय रानकी ॥
 बुलैं नकीब दोयसै २००हुलैं हरोल हाँकरैं ॥
 भुकैं भैतालि भीर त्यों रुकैं समारैं साँकरैं ॥ २ ॥
 बजैं निसानें नाद सो दिसा दिसान बित्थरैं ॥
 सँकूक दंदसूककी फंटा हजार फुँकरैं ॥
 मवासं बास आसपास जास बास कंपये ॥
 चकार चीस कै पुरीसै दिक्करीसै चंपये ॥ ३ ॥
 चले मतंग अद्रि अंग स्याम रंग सज्जके ॥
 कुरंगों फाँद के चले तुंग जंग कैज्जके ॥
 चले दुबाह के सिपाह स्वामिधर्म संगलै ॥
 चली सु तोप सडि ६० त्यों चँटटि चक्र चीसलै ॥
 मिले प्रवीर पैलबाह पत्रवाह बेधते ॥
 कमान पँथके कमान पथकी निसेधते ॥
 भिरे भुँवौल भुमियाँ सु भागधेयै भेटलै ॥

रमान चलनेवाले [चपल] नेत्रों का धर्म ही चपल है इसकारण यह दूसरा
 ग्रंथ भी संगत है ॥ १ ॥ १ सूर्य के समान तेजवाली अथवा चमकती हुई तर-
 रारें लेकर २ सेना के अग्रभाग को बहाने की हाक करके ३ वीरों की पंक्ति
 खर्ता है जिनकी सकड़ाई [भीड़] से ४ पवन रुकता है ॥ २ ॥ ५ न-
 हारों का शब्द बजकर दिशा दिशाओं में ६ फैलता है जिससे ७ कूक स-
 हेत ८ शेषनाग के हजार ९ फण फुंकार करते हैं "यहाँ हजार फणों के
 गेग से सामान्य सर्प शब्द के होने पर भी शेषनाग का ग्रहण है" जिनकी
 रास से आस पाम के १० चोरों और लटेयों के स्थान धूजते हैं और चीस
 और ११ लाद [दिष्टा] करके १२ दिशाओं के हाथी १३ दबे ॥ ३ ॥ १४ लिप्यों
 की छलांग भरनेवाले १५ युद्ध के काम के १६ वीर १७ पलियों के खिचने की
 तीस करके [यह चाल पूर्वक खिचने के शब्द का अनुकरण है] ॥ ४ ॥ अत्यन्त
 तीर १८ वाहों से १९ पलियों को बंधने हुए मिले २० धनुष के मार्ग में (धान वि-
 ताधी गीति में २१ अर्जुन के धनुष का निषेध करते हुए २२ भुवाल (गोजा) औ-
 र भोमिवे २३ हासिल गिराज, भेट ले लेकर मिले

कहौंन ओज उन्नयो जु तौस फोज भेटलै ॥ ५ ॥
 फरकि केतु गैँन यों बिजेयें बैँन बित्थरी ॥
 सहाय देंन कुम्म सैन रान अँन संचरी ॥
 सुनी सु रान कान त्यों प्रयानँ सम्मुहो कियो ॥
 हिले मिले दुहूँ २ नरेस हेत हुल्लस्यो हियो ॥ ६ ॥

[षट्पात]

मिच्छन धाटि प्रपात रान जनपँद जावद सुनि ॥
 पुँनना सँहँस पचास ५०००० बँहँ क्रोधन जोधन चुनि ॥
 आभैरो नरनाह पँत हित चाह उदैपुर ॥
 दहवारी लग रान आय सम्मुह सुन आतुर ॥
 महिपाल उभय द्विय लाय मलि सुख सह पत्तन संचरिग ॥
 करि दल मिलौन कूरम गहिय सुपहुँ रान महलन सरिगँ ॥

[दोहा]

सक सर वसु सत्रह १७८५ सँना, लहि कूरम निज भीर ॥
 अति आदर राँनाँ कियउ, बँहँ प्रँशमन हमगीर ॥ ८ ॥
 इक जँमिप पुनि बैँल अतुल, बहुरि बढ्यो लहि कैँल ॥
 यातँ तँहँ प्रति नमू अति, भयउ रान भूपाल ॥ ९ ॥
 इक १ थाल किन्नाँ असन, पुँव्य रीति सब पेलि ॥

१ फिलीपतेज [पराक्रम] २ नहीं उठा कि ३ उस जयसिंह की सेना से टकर लेवै ॥ ४ ॥
 आकाश में ४ ध्वजा उड़कर ५ विजय करने के वचन फैले ६ राणा के घर में कछ-
 वाहे की सेना चली ७ महाराणा ने सम्मुख गमन किया ॥ ८ ॥ स्लेच्छों का
 ८ धाड़ा ९ पड़ना १० राणा के देश में ११ सेना १२ अंधकर क्रोधवाले १३
 प्राप्त हुआ १४ पुर में गये १५ सेना का जुकाम करके १६ वह प्रभु राणा १७ चला
 ॥ ७ ॥ १८ विक्रम के शक म सत्रहसौ पिन्धासी के सम्बत् में १९ विशेष
 नम्र होकर ॥ ८ ॥ २० जाभाता (जमाई) यहाँ 'जामि' शब्द का अर्थ 'पुत्री' है
 सो ही शब्दार्थ चिन्तामणि कारने लिखा है "जामिः. दुहितरि" बहुत २१
 सेना २२ समय पाकर ॥ ९ ॥ २३ पहिले की जुदा भोजन करने की रीति को
 हटाकर

कछु अंतर हिनमैं न किय, हिय तब हिंदुन हेलि ॥ १० ॥

कूरमहू करजोरि कहि, पैति नति करि पलटाव ॥

मन्नहु अप्पन सुभट सुहि, जिम सोलह १६ उमराव ॥ ११ ॥

मैं इनहुसौ अनुगतम, ममहित नहिं मरजाद ॥

विधि सब कैहौ बंदगी, पैहौ रान प्रसाद ॥ १२ ॥

यह कहि कूरम चमर गहि, कियउ रान सिर उठि ॥

रचि अँजलि तब रानहू, बरजि निहि हित बुधि ॥ १३ ॥

इत्यादिक किय अनुगपन, कूरम हित निकरबं ॥

जामिपं बिलु रानहु जप्यो, अवर न मम आलंब ॥ १४ ॥

(षट्पात्)

कूरम प्रति दिन इक कहिय सीसोद जोरि कर ॥

रामपुरेप संग्राम बदलि अब रहत टेक बर ॥

नैकन करत निदेस भुम्मि अदी पुनि भुगत ॥

सुनि अक्खिय जयसिंह वाहि हनिहौ रन उद्धत ॥

रामपुर देहु मोकँहँ नृपति मैं सेवन करिहौ सुदित ॥

कहि यह सलाम जयसिंह किय सुलक लैन लखखन प्रमित ॥ १५ ॥

महासुंदरी ॥

सुनि यों मन रानों खिसानों महा अहिर्ब्रस्त छुछुंदरि वैनो परयो ॥

दुवखेर कही हमरोही हुतो तब दैम्म त्रिलक्ष ३०००००० दैन्नैनों परयो

सुनि योंहू सलाम करी जयसिंह नयो तब रानकों नैनों परयो ॥

१ हिन्दुओं के सूर्य ने (यह महाराजा का विशेषण है) ॥ १० ॥ २ उत्तर में न-

अता का पलटा करके ३ आपका उमराव, जिसप्रकार सौलह उमराव हैं ति-

सी प्रकार ॥ ११ ॥ इनसे भी अधिक ४ तंबक ५ कलंगा ६ प्रसन्नता ॥ १२ ॥

७ हाथ जोड़कर ॥ १३ ॥ ८ सेवकपन ९ हितका समूह १० जमाई के बिना

॥ १४ ॥ ११ रामपुर का पति १२ प्रसन्न होकर चाकरी कलंगा १३ लाखों की

आमद के प्रधानवाला ॥ १५ ॥ छुछुंदर को पकड़नेवाले १४ वर्ष के समान छ-

छुंदर को पकड़कर छाँडने से सर्प अंधा होजाता है और खाने से मरजाता है

१५ रुपये १६ जयसिंह हुका तब राणा को भी रुकना पड़ा

लिय साहकों सेय जो रामपुरा सु कृती कछवाहकों दैनों परचो १६
(दोहा)

नीति निपुन भुव लोभ लागि, इम कूरम तँहँ आय ॥
लियउ रामपुर रानसों, करि नुति लिखित कराय ॥ १७ ॥
रान सचिव कायस्थ तँहँ, कगारँ छाप करी न ॥
तब कूरम गृह जाय तँस, पाई नीति प्रवीन ॥ १८ ॥
पटु प्रपंच इम रामपुर, लियउ नीति लागि लाह ॥
बहुरि रान सन अनुंग बनि, किय रहस्य कछवाह ॥ १९ ॥
(षट्पात्)

कहिय मंत्र कछवाह दैइव हिंदुन सुभ दायक ॥
मिहत जानियत मिच्छ निगम निंदक भुव नायक ॥
कबहु न सुनत कुरान नहिँन कलसाँ निमाज नैत ॥
काजिन उप्पर क्रुद्ध मुहँ नन जात महज्जत ॥
रत पान कापिसाँपन रहत मासूबँन जानत मँहत ॥
विधि थपि संड मोहँन बहत चित प्रपंच कछुहु न चहत ॥
अब विचारि हम एह मंत्रिँ बुल्लत मरहठन ॥
सजि प्रपंच तिन संग वोरि तुरकान हिंदु बँन ॥
हे नृप हिंदुन हेलिँ अण्ण इक छल रहहु अब ॥

१ वह चतुर कछवाहे को ॥ १६ ॥ २ स्तुति ॥ १७ ॥ राणा के प्रधान बिहारी-
दास कायस्थ ने ३ पत्र पर छाप नहीं की ४ उस बिहारीदास के घर ५ छाप
कराई ॥ १८ ॥ ६ खेचक बनकर ७ एकान्त में सलाह की ॥ १९ ॥ ८ भाग्य ९
वेद की निन्दा करनेवाले १० भूमि के पति ११ झुकते हैं (यावनी भाषा में पं-
रमेश्वर के वाक्य को कलसाँ कहते हैं अर्थात् धर्मोपदेश को नहीं झुकते) १२
गृह १३ सब पीने से १४ यावनी भाषा में प्रीति करनेवाले को आशक और
जिस पर प्रीति की जाये उसको माजूक कहते हैं उस माजूक को ही १५ पट्टा
जातने हैं १६ नपुंसकों से सैयुन करते हैं १७ राज्य प्रदेव को चित्त पर कुछ नहीं
घातने ॥ २० ॥ १८ सलाह करके बुलाने हैं १९ हिन्दुओं रूपी जल में यवनों
को डुबोकर २० हे हिन्दुओं के स्वयं

जयसिंह का संग्राम सिंह को लिखत दिखाना] सप्तमराशि-अष्टाविंशत्यूच [३०११]

भुग्गहु दिलिलिय भुम्मि सचिव हम करहिँ जेर सब ॥

मरहव पार संडहिँ अमल अप्पन चम्मलि वार इत ॥

यह अक्खि बहुरि कूरम अधिप लियउ हत्थ जामिप लिखित ॥ २१ ॥

दोहा ॥

लिखवायो पहिलै लिखित, संभरतैं जयसीह ॥

सो दिखाय संग्रामको, अक्खी सम्मत ईह ॥ २२ ॥

[षट्पात]

सुनहु रान संग्राम साल खट हय सत्रह १७७६ जब ॥

संभरपतिकैं सूनुँ भयो मम जामि जठर तब ॥

रखत जामिपर रीस कउल जामिप बिनु कारन ॥

कृत्रिम कहि सु कुमार मोहि सौंपत अब मारन ॥

हम कहिय क्यौं न जनमत हन्यौं अब इहिँ हनन प्रपंच अति ॥

पापहु तथापि तुम करहु पै मम जनपद अब रहहु मति ॥ २३ ॥

उत्तर पुनि उच्चरिय कउल जगदंब संपथ करि ॥

मैं नहिँ हनन समर्थ अप्प यह हनहु वंस औरि ॥

जुलमसीलैं तुम जामि कलह हमसह वह कथहिँ ॥

कछु तुमतैं नन कहहिँ अप्प थप्पत श्रुति अर्थहिँ ॥

यह अघ अरिष्ट तसमात अब कूरम जिम तिम सेट करि ॥

कहिहो जु रीस धरिहैं कथितैं नहिँ स्वतंत्र रहिहैं निवारि ॥ २४ ॥

दठ उत्तर सुनि हमहु हेतुं कृत्रिम बिच हरे ॥

१ चामल नदी के उधर २ चामल नदी के इधर ३ बहिनीई [बुधसिंह] की लिखावट हाथ में ली ॥ २१ ॥ ४ बुधसिंह से ५ राय देने की चेष्टा कही ॥ २२ ॥ ६ बुधसिंह के ७ पुत्र ८ मेरी बहिन के उदर से ९ मेरे देश में ॥ २३ ॥ १० सौगन ११ समर्थ १२ वंश के शत्रु को (वर्गसंकर होने के कारण यह भवानीसिंह का विरोध है) १३ जुलम करनेवाला स्वभाव १४ तुम्हारी बहिन का १५ आप वेद के १६ अर्थ का स्थापन करते हो इसकारण १७ पाप का उत्पात १८ हे कूरम (जयसिंह) १९ कहना ॥ २४ ॥ उस लड़के के जाली होने के २० कारण

पै' इच्छन तँहँ पत्त बहुत ऋत माँहि निवेरे ॥
 कहयो बुद्ध नृप कबहु निकट रानी मम नाई ॥
 यह जो तो किम अगग भये तदुदर दुवर्भाई ॥
 पुनि कउल एहँ वहँ हरि प्रनत करै न अघ इर्म कोप कित ॥
 वसुंवरस बहुरि न सुन्योँ बितैथ पुनि चुंडाउति अधिक प्रिय ॥२५॥
 कुंभांनी भट दीप बहुरि पुच्छन पठयो हम ॥
 रूपय सत्तरि सँहँस ताहि दिन्नै प्रछन्नतैम ॥
 तव मै भंडारेजँ छिन्नि भट दीप निकास्यो ॥
 पंच हेतु इम पाय भगिनि पुत्रहि कतै भास्यो ॥
 हम तव विचारि बहुवान हठप्रतिबंध अखिख्य नीति पर ॥
 करि लिखित देहु जिम हम कहत कृत्रिम तव मन्त्रहि कुमर ॥२४॥

(दोहा)

सीसोदनि ग्धोरि सुत, होहि सु तुमकाँ दैहिँ ॥
 जुँ तुम अंकै धरि थप्यहो, सु सुत मन्नि हम लौहिँ ॥२७॥
 हम जान्योँ यह लिखित हठि, न लिखहिँ बुद्ध नरेस ॥
 हत्यतै तव तरहिँ हम, इहिँ भल मारहु एस ॥ २८ ॥
 लिखि यहैहु दुँछर लिखित, मम कर दिन्नोँ मुँह ॥
 सब हड्डनकाँ सँखिधरि, वालिँस पुँगैव बुद्ध ॥ २९ ॥

शुद्धप्राकृतभाषा ॥

(अर्थ)

१ परन्तु २ एक भी प्राप्त नहीं हुआ ३ सुखता में ४ नहीं आई ५ उसके उदर
 से ६ बुधसिंह तो वामनार्गी और ७ राणी वैष्णव है ८ इसकारण ९ यह झू-
 ठ वचन ॥ २५ ॥ १० कुंभावत शाखा के उमराव दीपसिंह को ११ अत्यन्त
 छाने १२ नगर का नाम है १३ मत्स्य दीक्षा १४ पीछा वचन [प्रशुत्तर] ॥ २६ ॥
 १५ जो १६ गोद ॥ २७ ॥ २८ ॥ १७ दुष्कर [कठिनाई से किया जावे ऐसा]
 १८ मुँह १९ लाच्छि २० सुखों में २१ अष्ट बुधसिंह ने ॥ २९ ॥

संस्कृत अनुवाद ॥

तद्वा लिहि अवकज्जं कज्जं अहोहिं सच्चवयणोहिम् ॥
तिम चेयवि तुहोहिं कज्जाकज्जं वियज्ज सीकज्जम् ॥ ३० ॥

इन्द्रवज्रा ॥

सोऊणा संगामणारिस्सरोवि होऊणा सक्खी लिहिअम्मि तस्सि ॥
घेत्तूणा णीइं णिअलेहिणीए सो अप्पऊरीकरणां लिलेह ॥ ३१ ॥

उपजातिः ॥

खु पास्सए विन्दुमईसपट्टे अणोरसो तस्स धियं कुविट्ठो ॥
दिट्ठूणा लेहं बुहसीहकिद्धं संगामराणा लिहिअं मए वि ॥ ३२ ॥

(इन्द्रवज्रा)

ताणां भङ्गाणां विजिसोलहाणां १६ लेहं दले सो इय लोहिऊणा ॥
दिद्धं तदो कुम्मकरम्मि पण्णां लिद्धं हि तद्वा पिहुलं पसाअम् ॥ ३३ ॥
प्रायोदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

तस्मात् लिख अपकृत्यं कृत्यमस्माकं सत्यवचनेन ॥ तथैव युष्माभिरपि
कार्याकार्यं विचार्य स्वीकार्यम् ॥ ३० ॥ श्रुत्वा सङ्ग्रामनरेश्वरोऽपि श्रुत्वा सा-
क्षी लिखिते तस्मिन् गृहीत्वा नीतिं निजलेखिन्या सोऽपि आत्मोरीकरणं लि-
लेख ॥ ३१ ॥ खलु पार्श्वके विन्दुमतीशपत्रे अनौरसस्तस्य बुद्धौ कुपुत्रः ॥ दृष्ट्वा लेखं
बुधसिंहकृतं सङ्ग्रामराणेन लिखितं मयापि ॥ ३२ ॥ तेषां भटानामपि च षोड-
शानां लेखन्दले स इति लेखयित्वा ॥ दत्तं तदा कूर्मकरे पत्रं लब्धस्तस्मादपि
प्रचुरः प्रसादः ॥ ३३ ॥

॥ भाषानुवाद ॥

इसकारण से हमारा कृत्य अकृत्य होवे सो आप सत्य वचन से लिखो. तै-
से ही आप भी इस कार्य अकार्य का विचार कर स्वीकार करो ॥ ३० ॥ यह
सुनकर राणा संग्रामसिंह ने भी उस लिखित पर आप साक्षी होने का नी-
ति ग्रहण करके अपनी लेखिनी से स्वीकार लिखदिया ॥ ३१ ॥ निश्चय ही बु-
न्दी के पति के पत्र को देखा. उस (बुधसिंह) की बुद्धि में वह पुत्र अनौरस है
सो बुधसिंह के किये हुए लेख को देखकर मुक्त (संग्रामसिंह) ने भी लिख दि-
या है ॥ ३२ ॥ उन सौलह उमरावों से भी उस [संग्रामसिंह] ने वह लेख लि-
खवाकर वह पत्र कछवाहे [जयसिंह] के हाथ में दिया जिससे बहुत प्रसन्नता
हुई ॥ ३३ ॥

(दोहा)

*सभट रानकी सखिख इम, बहुल प्रपंच बनाय ॥
 बुद्ध लिखित इंदल सिर सबिधि, लिय कूरम लिखवाय ॥ ३४ ॥
 कलु दिन रहि कोतुक करत, नृप कूरम तिहिं नैर ॥
 पाय रान सन सिख पुनि, आयो पुर आमैर ॥ ३५ ॥
 गो कूरम जब रान गृह, ॥ बुद्ध तबहि बुंदीस ॥
 सह कुटुंब आमैर सन, रचिय प्रमान संगीस ॥ ३६ ॥
 द्विजवर गुरु जयसिंहको, रतनाकर अभिधान ॥
 कानीखोह मुकाम तैस, दिन्नै तत्थ मिलान ॥ ३७ ॥

(पट्टपात्)

जिहिं रतनाकर बिप सुगुन जयसिंह सिखायो ॥
 स्मृति रु निर्गम खटव, सत्थ बिबिध नृप धर्म बतायो ॥
 चउदह १४ पुनि चउसठि ६४ कला बिद्या पटु किन्नो ॥
 जयसिंह गं दारिद्र जोग भूसुर जिहिं भिन्नो ॥
 धारन कराय सब कुल धरम कलि भूपन सिरमोर किय ॥
 जिम जिम प्रताप कूरम जग्यो आचारिज तिम अहरिय ॥ ३८ ॥
 बिनु त्रि ३ संध्यं जलपान जंग्य पंचक ५ बिनु भोजन ॥

* उमरावों सहित † साजि ‡ बहुत § बुधसिंह के लिखे हुए पत्र पर ॥ ३५ ॥
 ॥ ३५ ॥ ॥ बुधसिंह ने १ क्रांथ सहित गमन किया ॥ ३६ ॥ २ नाम ३ उल्लर-
 रतनाकर का काशीखोह आस था ४ तहां मुकाम किये ॥ ३७ ॥ ५ वेद ६ जय-
 सिंह की जन्मपत्नी में दारिद्र योग गया हुआ [प्राप्त] था जिसको ७ इस ब्रा-
 ह्मण ने मिटाया = कलियुग के राजाओं में ॥ ३८ ॥ ९ तीनों मन्ध्या किये बि-
 ना जल नहीं पिया १० गृहस्थी के प्रति दिन करने के * पांच यज्ञ किये बिना

* पाटो होमश्चातिथानां सपर्या तर्पणं बलिः ॥ एते पञ्च महायज्ञा ब्रह्मयज्ञादिनामकाः ॥ इत्यमरः ॥
 अग्न्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम् । होमो देवो बलिर्भूति नृयज्ञोऽतिथिपूजनम् ॥ अर्थ—विधि पूर्वक वे-
 दपठाना ब्रह्मयज्ञ कहाता है, तर्पण करना है सो पितृयज्ञ है, वैश्वदेव का होम है सो देवयज्ञ कहाता है बलि
 अर्थात् जीवों को अन्न देना है सो भूतयज्ञ कहाता है और घर में आहुति अतिथि की सेवा करके, खान
 पानादि से सत्कार करना है सो मनुष्ययज्ञ कहाता है इन्ही प्रतिदिन कियेजानेवाले पांच यज्ञों का नाम महायज्ञ है,

बिनु स्मृतीन व्यवहार ख्यात नय बिनु वैसु खोजन ॥
 द्विज सुपात्र बिनु दान ध्यान हरि हर बिनु धारन ॥
 बिनु विधि काल व्यवाय मंल नय बिनु अरि मार्गन ॥
 बिन न्दान निगम पाठन बहुरि बिनु प्रपंच संगर विकट ॥
 इहिं द्विज प्रसाद कूरम इते नन रक्खे निज भुव निकट ॥
 जब कूरम जोधपुर चलयो व्याहन नय चातुर ॥
 तब सय्यद डर तकि एव पठयो अंतर्हपुर ॥
 नगर करौली नाह भूप जदुवंस जासभुव ॥
 दंगं बेहादुरदुग्ग धीर रक्खयो सु तत्थ धुव ॥
 अवरोध संग हो द्विज यहहु तिहिं तैंहं दिन्नो देह तजि ॥
 तब कुरम तार जेठो तनय भूसुर गंगाराम भजि ॥ ४० ॥

दोहा ॥

गंगारामहु अमिर्त मति, भो द्विजराज सुभाय ॥
 बहु मैख नृप किय जास बल, बलि जैपुर बसबाय ॥ ४१ ॥
 निर्वंसथ कानीखोह तस, रहिय आय बुन्दीस ॥
 कछवाही आमैर रहि, रचत स्वामिपर रीस ॥ ४२ ॥

(पट्टपात)

इत कूरम गृह आय कालकोविद प्रपंचकिय ॥
 मगहठन छन्न मिलि दई अरजी पुनि दिलिलय ॥

भोजन नहीं किया १ धर्म शास्त्र के बिना जिसका व्यवहार प्रसिद्ध नहीं हुआ २ बिना नीति के ३ धन नहीं लिया. सुपात्र ब्राह्मण के बिना दान नहीं दिया, विष्णु और शिव के बिना ध्यान नहीं किया, उचित समय के बिना ४ मैथुन नहीं किया, नीति की सलाह के बिना जन्मको नहीं मारा. बिना स्नान किये ५ वेद का पाठ नहीं किया, बिना ६ रचना [व्यूह] के अपंगु युद्ध नहीं किया ॥ ३९ ॥ ७ कृपा ८ जाने से पहिले ही ९ जनाने को १० नगर ११ बहादुर गढ़ नामक १२ जनाना के साथ १३ ब्राह्मण गंगाराम का संवन किया ॥ ४० ॥ १४ अपार बुद्धिवाला १५ यज्ञ ॥ ४१ ॥ १६ अ म ॥ ४२ ॥ १७ सनपचतुर

रचत दोरं मरहठ लूट मंडत चम्मलि लग ॥

जो भेजहु बल बित्त प्रबल हम लरहिं मंडि पग ॥

सुनि साह पुच्छि सचिवन सबन उचित मंत्र यह उच्चरहु ॥

कथ तौव खानदोराँ कहिय कहत कुम्म जिम तिम करहु ॥ ४३ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी-
पतिबुधसिंहचरिते महाराणा संग्रामसिंहजावदनामनगरधाटीपतनो
दन्तश्रवणासमकालससैन्यजयसिंहादयपुरगमन १ महाराणास-
काशाज्जयसिंहरामपुरप्रापणा २ दत्तकपुत्रबुन्दीदानबुधसिंहलेख-
विषयसाक्षीकृतमहाराणाजयसिंहजयपुरागमन ३ जयसिंहगुरुर-
त्नाकरप्रशंसाया सह महाराजजयसिंहप्रशंसावर्णनमष्टाविंशो म-
यूखः ॥ २८ ॥

आदितः षट्षष्ट्युत्तरद्विशततमः ॥ २६६ ॥

[दोहा]

इत कोटापति नृप उमँडि, संभरै दुज्जनसल्ल ॥

पायो कुम्म जु रामपुर, हठि लुट्यो रन हल्ल ॥ १ ॥

पादाकुलकम् ॥

पंच अठ सुनि ससि १७८५सम्मित सक, इक विग्रह कोटा हुव ओचक

१ दौड़ अधवा फैलाव २ सेना ३ धन ४ तहां ॥ ४३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दीके भूपतिबुध-
सिंहके चरित्रमें महाराणा संग्रामसिंह के जावद नामक पुर में धाड़ा पड़नेकी
खबर सुनने से सेना सहित जयसिंह का उदयपुर जाना १ महाराणा से रा-
जा जयसिंह का रामपुरा पाना २ दत्तक पुत्र को बुन्दी देने के बुधसिंह के लेख
पर जयसिंह का महाराणा की साक्षी कराकर जयपुर आना ३ जयसिंह के गु-
रु रत्नाकर की प्रशंसा के साथ महाराजा जयसिंह की प्रशंसा के वर्णन का
अठारहसवां २८ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ छःसठ २६६ मयू-
ख हुए ॥

५ चहुवाण ६ जयसिंह ने राणा संग्रामसिंह से पाया वह ॥ १ ॥

मेवाउत हड्डा भट *छित्तर, प्रबल सिपाह बहयो छक उप्पर ॥२॥
 महाराव भट यहै मत्त मन, घंटीपति राउत गिबब घन ॥
 कछुक बत्त उप्पर वह कोप्यो, लज्ज रु स्वामिधरम सब लौप्यो ॥३॥
 करउर अगग लख्यो जो रनकरि, तिहिँ कबंध जयसिंहहिँ संहरि ॥
 रत्ति निकसि हड्डा सु बडेरय, रामपुरप संग्राम सरन गय ॥ ४ ॥
 कोटापति सुनि एह कहाई, सरन न रक्खहु चोर सहाई ॥
 चंद्राउत सु सुनी न धरी चित, तब धंकि दुज्जनसल्ल बढयो तिता ॥
 हरिगीतम् ॥

करि हल्ल दुरजनसल्ल नृप तब रामपुर पर उप्परयो ॥
 बजि नैद मँदल हद सँदल भँह बँदल ज्यौँ भरयो ॥
 उडि केतु दंतिन पंति पंतिन सिंधु तंतिन लगगये ॥
 नखराल चालन बाजि जालन ज्वाल नालन जगगये ॥६॥
 ठननंकि घंटन घोर त्यों रननंकि कोचनकी करी ॥
 सननंकि सँतिन नास सास भननंकि पक्खर भल्लरी ॥
 विरुदैत वीर पटैत कइ कैमनैत सज्जित संक्रमे ॥

*छीतरसिंह ॥ २ ॥ बहुत गर्व से ॥ ३ ॥ मारकर ॥ ४ ॥ क्रोध करके उधर बढा ॥ ५ ॥ तब राजा दुर्जनशाल हल्ला करके रामपुरा के ऊपर उठा जब ५ भादवा के भरे हुए मेघ के समान ४ पूर्ण शब्दायमान होकर १ मँदल [ज्यों मृदंग के आकार 'मादल' नाम से वाद्यविशेष प्रसिद्ध है] का २ शब्द हुआ १ हाथियों पर ४ वजा की अनेक पंक्तियें उडकर ७ तांत के बाजों पर सिंधवी [यङ्गाराग] रागनी लगी ८ नखरावाली ९ चालों से घोड़ों के १० समूह की ११ नालों [खुरतालों] से * अग्नि जगी ॥ ६ ॥ हाथियों के घंट और १२ कवचों की कड़ियें बज्जी १३ घोड़ों के नाकों (फुरखों) से श्वास बजकर भालरों के सगान पाखरें बज्जी १४ विरुदाये (स्तुति किये) हुए कितने ही १५ पटा कैमनेवाले वीर और कितने ही १६ कमानवाले [धनुषधारी] सज्जित होकर १७ चले

* अग्नि शब्द पुल्लिङ्ग है परन्तु लोकलुटी से जहां तहां हमने स्त्रीलिङ्ग लिखा है जिसको अशुद्ध नहीं जानना चाहिये, इसीप्रकार देवता और दोहा आदि कितने ही स्त्रीलिङ्ग शब्दों को लोकलुटी के कारण पुल्लिङ्ग करके लिखे हैं उनको भी शुद्ध ही जानें क्योंकि "यद्यपि शुद्ध लोकविरुद्ध नो करणीयं नाचरणीयम्" यह प्राचीनों का मत है सो ही समीचीन है ॥

रन सैन लखि लागि लैन के गन गैन गिह्न के भ्रमे ॥७॥
 डगमगि अद्रिन कूट तूटत सेतु सागर लुप्पयो ॥
 दैर दिडिदै भुव पिडि कच्छप निडि निडिन रूपयो ॥
 नउवत्ति नादन बीर वादन छोनि छादन वित्थरयो ॥
 जिम भट्ट संबर धूलि डंबर एम अंबर उच्छरयो ॥ ८ ॥
 फटकारि सुंडिन मत्त गै नभ घत्त पच्छिन के करै ॥
 जिन भौन पव्वय प्रान गैव्वय दान निज्झर निज्झरै ॥
 असवार तोकै तुखार के भट चक्रचारै फिरावहाँ ॥
 अबलों सु सिक्खत पौन पै वह गौन रंचन आवहाँ ॥ ९ ॥
 तिन धार मार भैयार भार हजार भोगं प जैकयो ॥
 खुरतार अंगन भुम्मि फूटत ज्यों उहुंबर पकयो ॥
 खुरली सु खिलहत बीर के भुरली सु सिंधुव उच्चरै ॥

१ युद्ध करनेवाली सेना को देखकर ग्रीधनियों के २ समूह की ३ पंक्तियों
 लगकर ४ आकाश में अमने उड़ने) लगी ॥७॥ पर्वत हिलकर ५ शिखर तूटने लगे
 और समुद्र ने मर्यादा छोड़ी ६ भय की दृष्टि देकर भूमि को पीठ पर लिये हुए
 कच्छप कठिनाई से खड़ा रहा ७ नोवतों के शब्द ८ धीरों के वचन ९ भूमि
 को ढकनेवाले होकर फैले १० भादवे की मेवधारा "यहां शम्बर शब्द सा-
 मान्य जल का वाचक है परंतु भाद्रपद के योग से मेवधारा का ग्रहण है"
 के समान धूल [रज] का ११ आडंबर होकर आकाश में उछला ॥ ८ ॥ मस्त
 हाथी सुंडों को फटकार कर आकाश में कितने ही पक्षियों की घात करते हैं
 १२ बल के गर्ववाले जिन हाथियों का १३ प्रमाण पर्वतों के समान है उनके
 डाण (मदधारा) १४ झरणा के समान झरता है कितने ही घोड़ों को १५ वा-
 गों में उठाकर बीर १६ चक्र के चलने के समान [गोलकुंडा] फिराते हैं उस
 गति को १७ पवन अब तक सीखता है "पवन वात्या (बघूल्या) होकर गो-
 लाकार फिन्ता है सो माना हमीकी नकल करता है" परन्तु गति कुछ भी
 नहीं आती ॥१॥१८ उन बाणों की गति [दौड़] की मारके १९ अघंकर भार से
 हजार २० कणों का पति [शेषनाग] २१ गिरा उन घोड़ों की खुरतालों के २२ अ-
 ञ्भाग से पके हुए २३ जमर वृक्ष के फल की भांति भूमि फटी कितने ही बीर
 २४ शस्त्राभ्यास के खेल खेलते हैं और २५ वनियों में बड़े राग का उच्चार करने

किलकारि जुग्गिनि संग ठहै हलकारि भैरव हुंकारैं ॥१०॥
 भट भीमलों निज सीमतैं सुत भीम यों चढि संघरयो ॥
 लिय घेरि दुग्ग सु रामपुर दल फेरि संगरैं बित्थरयो ॥
 लागि अग्गि तोपन काल कोपन नैर लोपन मंडयो ॥
 खगि गोख जालन सौंध सालन दुग्ग गोतन खंडयो ॥११॥
 जरि दृष्ट पट्टन बट्ट वट्टन धूम धोरनि धुंधरे ॥
 दुरि ओक ओकन सोक के पुरलोक संसयमें परे ॥
 प्रांकार गिरि गिरि जात कहूँ छिकि बैप कपिसिरैं उच्छटैं ॥
 कहूँ फुट्टि खोमैन तोमै गिरि पगिखान पूरि सु उप्पटैं ॥१२॥
 दगि दाव तुट्टि लदाव मंडप धाव गिद्धनि ज्यौं चढैं ॥
 प्रासाद पत्थर सोर सत्थरैं ठहै थरत्थर के कढैं ॥
 छकि छिन्न तोपन छूट के परिकूट गोपूरतैं गिरैं ॥
 फुल्लिंग फालन जग्गि ज्वालन चित्रसालन के किरैं ॥१३॥

हैं, किलकार करके योगनियें साथ होती हैं और वीरों को ललकार कर भैरव हुंकार करते हैं ॥ १० ॥ १ भीमसेन के समान वीर होकर अपनी सीमा से महाराव भीमसिंह का पुत्र चढ कर २ चला ३ सेना का घेरा लगा कर ४ युद्ध फैलाया ५ काल के कोप के समान तोपों से ६ अग्नि लगा कर नगर का नाश रचा और गोले लग कर झगोले, जालियें ७ महल और जालाओं को गिराई ॥ ११ ॥ हाटों में चल जल कर मार्ग मार्ग में धुवां की धोर से अंधेरा होगया शोक के साथ ८ घरों घरों में छुप कर पुर के लोग ९ जीवन के संदेह में पड़गये कि जीवित रहेंगे या नहीं १० छोटा कोट गिरता है और कहीं पर ११ बड़ा कोट छिक कर १२ कांगरे उछटते हैं 'जो कोट धीस हाथ से नीचा होवे उसको प्राकार और इससे बड़ा होवे उसको बप कहते हैं और मतानर से धूल कोट का नाम भी बप है' कहीं पर १३ बुरजों के १४ स्तंभ गिर कर १५ लाइयों को पूरख करके उफलते हैं ॥ १२ ॥ अग्नि लग कर लदाव और मंडप (धुमज) लूट कर उनके १६ पत्थर औथनियों के समान आकाश में चढते हैं और १७ प्रासाद के साथ धुज कर महलों के पत्थर निकलते हैं, तोपों से कट कर १८ नगर के द्वारों से छूट कर उन के शिखर गिरते हैं और अग्नि लग कर १९ अग्निकण उडने से कितनी ही चित्रशालीयें गिरती हैं ॥ १३ ॥

छहरात गोलैन थंभ के थहरात छत्रिन छुटिकैं ॥

छिकि जात छप्पर छज्ज के टिकि जात टप्पर तुटिकैं ॥

अंगार छार अंगार द्वार बजार बीथिन उच्छरैं ॥

न गहैं निवानन छिज्जि नीर समीरं ग्रीखमलों सरैं । १४ ।

जरि जात पर परि जात गिदनि डोरि तुटत चंगज्यों ॥

भरिजात भंडन दंड के गिरिजात केकिय भंगज्यों ॥

धकि धाम धामन धुम्मतैं पुररामं बिबभल कुकयो ॥

इम हल्ल दुरजनसल्ल करि हरवल्ल भैल्लन भुकयो ॥ १५ ॥

दै दै निसैनिन बीर के हमगीर अट्टनपैं चढे ॥

के दोरि औरन तोरि अगलैं पोरि मगग लगे बढे ॥

वह हड्ड छित्तर आय चैत्तर धीर धारनमैं धरयो ॥

करि जंग कलु बिधि भारि खगग सु फारि फोजहिं निखस्यो १६

संग्राम नृप यह काम सुनि तब रामपुर तजि भज्जयो ॥

इत जिति दुरजनसल्ल हँतन लुटि पँतन गज्जयो ॥

बरजोर कूरममोरैं कौं गिनि भीति मानससौं भिरी ॥

जयसिंह वह लिय रानसौं इम आन अप्पन नाँ फिरी । १७ ।

१ गोलोंके गिरने[वरसने]से छतरियोंके थंभ धूज कर छूटते हैं, कितने ही छपरे और छाजे छिकते हैं और कितने २ टापरे तूट कर ठहरजाते हैं दरवाजों के बाहर बजार में और ४ गलियों में अंगारे और ३ भस्म उड़ती है निवाणों में छीज कर पानी नहीं रहा और ग्रीष्मऋतु के समान (गरम) ५ पवन १ चलने लगा ॥ १४ ॥ जैसे डोरी तूट कर ७ पतंग [कनकडवा] गिरै तैसे पंख जल कर ग्रीधनियें गिरती हैं कितने ही ध्वजाओं के दंड जल कर ऐसे गिरते हैं जैसे मरेहुए ८ मयूर ऊपर से गिरें ९ घर घर जल कर धुवां से घबराया हुआ १० रामपुर सूका इसप्रकार दुर्जनशाल हल्ला करके सेना के अग्रभाग को ११ भैलने को बढा ॥ १५ ॥ १२ बुरजां पर चढे और कितने ही १३ कँवाड़ों को और १४ आगलों (अगला, भागल) को तोड़ कर द्वार के मार्ग लग कर बढे वह हाहा छातरसिंह १५ चौक में आकर ॥ १६ ॥ १६ छातरसिंह के निकलजाने का कार्य सुन कर १७ हाथों से १८ नगर को लूट कर १९ कल्लुवाहों के पति (जयसिंह) को पलवान जानकर २० मन में भय हुआ [डरा] ॥ १७ ॥

(दोहा)

कोटापति नहिँ अमल क्रिय, कूरम नृप भय भार ॥

लुटि रामपुर *जाम लग, आयउ अप्प अगार ॥ १८ ॥

[षट्पात्]

चंद्राउत सीसोद नृपति संग्रामसिंह इत ॥

पुर बिंभोली आय रह्यो चिंतत प्रपंच चित ॥

मातुल हो परमार नाम विक्रम बिंभोली ॥

इहिँ कारन तँहँ आय खूब भज्जत कटि खोली ॥

धनकुमरि नाम जननीहु तस ही पीहर ईम तत्थ रहि ॥

दिन कछु बिहाय दिल्लिय गयो साहमुहुम्मद सरन गहि ॥ १९ ॥

(दोहा)

कछु बसुँ हुंडी नजरि करि, लिय निज भुम्मि लिखाय ॥

दिय कोटा आमैर दुव, बनि बनि पिसुन बताय ॥ २० ॥

कछु दिन रहि निज पुर कैम्पौं, पटा मुलक सब पाय ॥

सरनि मध्य जयसिंह सो, मार्यो चूक कराय ॥ २१ ॥

(षट्पात्)

तदनंतर सैक बान अठ सत्रह १७८५ संवच्छर ॥

अंमा अहर्गन पोस भयउ सुत पुनि कूरम घर ॥

रानाउति जाँठरज नाम माधव नृप नंदन ॥

सुनत खबरि जयसिंह घुम्मि मंडिय उच्छव घन ॥

दिय द्विजन दान रूपय अयुत १०००० कथिते रीति जप जज्ञ करि ॥

सुत प्रसवकर्म सदिय सकल आमनाय अनुसार सँरि ॥ २२ ॥

एक पहर पर्यन्त पहर ॥ १८ ॥ १ मांमां २ बीभोली नामक नगर में इहसकारण ४
 बिता कर ॥ १९ ॥ ५ घन ॥ २० ॥ ६ चला ७ मार्ग में ॥ २१ ॥ ८ जिस पीछे ९
 विक्रम के शक के १७८५ के वर्ष में १० अमावास्या के ११ दिन १२ उदर से
 उत्पन्न १३ कही हुई रीति से १४ जातकर्म १५ बंद के अनुसार चलकर ॥ २२ ॥

(दोहा)

कछवाही भ्रातहिँ कहिय, उदयनैर तुम *पत्त ॥
 भामजको संबंध भो, वा नहिँ अक्खहु अत्त ॥ २३ ॥

(पट्पात)

कहि कूरम तव कुप्पि भाम कृत्रिम तिहिँ भाखत ॥
 हमतैं ॥ इम नहिँ होय बदहु पतितैं जु करहिँ बत ॥
 कछवाही सुनि कहिय तुमहु कृत्रिम हम जानत ॥
 बिजयसिंह मम अनुज सत्य पै जग नहिँ मानत ॥
 यह अक्खि अनुज कटिवंधं गहि खंजर खेंचन करिय कर ॥
 भंभंति छुराय कूरम अंति आयो बाहिर दै अरर ॥ २४ ॥

(दोहा)

कछवाही पिच्छैं निकसि, हुँत निज सत्थ बुलाय ॥
 चहि संपुत्र स्यंदन चली, स्वामी निकट रिसाय ॥ २५ ॥

(पट्पात)

जामिपै प्रति जयसिंह तबहि चर भेजि कहाई ॥
 पहुँचे सब तुम पास भलैं विरचहु मनभाई ॥
 हत्या देत जु हमहिँ ततो हम करहिँ लिखित तकि ॥
 नतो अप्प गृह जाहु करहु चित चाह पाप पकि ॥
 यह सुनत भूप पच्छी कहिय अप्प निवेरहु कलह यह ॥
 हैं सदा लिखित अनुसार हम अवर न मन जानहु असह ॥ २६ ॥
 सुनत एह जयसिंह मुख्य मंत्रिय गजामल ॥
 पठयो अक्खि प्रपंच लैन भानेज छत्र छल ॥

* गये सो भानजे का पु यहाँ कहो ॥ २३ ॥ § बहिनोई [बुधसिंह]
 इस्की करतवी कहते हैं ॥ इसकारण १ मेरा छोटा भाई २ कमरबन्धा पकड़
 कर ३ छात्र विशेष ४ झिड़का देकर ५ जीघ ६ किवाड़ देकर बाहिर आगया
 ॥ २४ ॥ ७ जीघ ८ अपने साथ को ९ पुत्र सहित १० यथ पर चढके १० बुधसि-
 ह के पास ॥ २५ ॥ ११ बहिनोई बुधसिंह से १२ इसकारा भेजकर ॥ २६ ॥

जयसिंह का भवानीसिंह को सरवाना]ससमराशि-एकोनविंशमयुग (३१२३)

तब खत्री तँहँ जाय कहयो कारन रानी प्रति ॥

सुरभयो कलह समस्त *अनुज तुम पक्ष करिय अति ॥

कहिहो तँहँहि सगपन करहिं बुंदीसहु नहिं अब विमन ॥

करि लिखित दिन जयसिंह कर किन्न सबहि उररी करन । २७ ।

पादाकुलकम् ॥

तब रानी नृप हितुँ कहाई, भौमज निजहिं बुलावत भाई ॥

सुरभयो जो विग्रह हित सत्यहि, तो भेजहिं अप्पन सुत तथैहिं । २८ ।

तब बुंदीस कहयो रानी प्रति, तुमरो अनुज बलिष्ठ बढयो अति ॥

हम सुरभी उरभी सुन चिन्ही, अक्खी उन जिमतिम लिखि दिन्ही

यह सुनि जान्योँ साम भयो अब, समुभयो रानी द्रोह मिटयो सब ॥

तबहि भवानीसिंह स्वीय सुन, मातुलँ ढिग पठयो खली जुत । ३० ।

राजामल लै तिहिं तहँ आयो, कुम्भ सु ताकँहँ हतन कहायो ॥

दुर्ग माँहिं इक दुर्ग भपंकर, नाम चिल्हटोला काराघर ॥ ३१ ॥

तहँ बढाय बालक वह मारयो, नृप कूरम काहू न निवारयो ॥

एह कुमार हमहु अनुमान्योँ, पै असत्य सत्य न पहिचान्योँ ॥ ३२ ॥

कुटिल कुसीलँ लखत कछवाही, इम हम मति कृत्रिम भौवगाही

पुनि बुंदीस नष्ट मैति पिकखत, देखि हेतु अवरहु रँहत दिक्खत ३३

प्राचीनै न यह कथ इम रक्खी, योतँ हमहु अनिईचय अक्खी ॥

*तुम्हार छोटे भाई [जयसिंह] ने तुम्हारा बहुत पक्ष किया । उदास ? अंगी-
कार [स्वीकार] ॥ २७ ॥ २ बुधसिंह से मेरा भाई जयसिंह ३ अपने भानजे को
बुलाता है ४ तहाँ ॥ २८ ॥ ५ बलवान् ६ नहीं देखा ॥ २९ ॥ ७ अपने पुत्र को
मामा के पास राजामल खत्री सहित भेजा ॥ ३० ॥ ८ कैद [जेल]खाना ॥ ३१ ॥
९ राजा जयसिंह को किसीने नहीं रोका १० अन्यकर्ता (सूर्यमल्ल) कहते हैं
कि इस कुमार के लिये हमने भी अनुमान किया ॥ ३२ ॥ ११ बुरे स्वभाववा-
ला १२ कृत्रिमपन का ही धाह लिया अर्थात् करनेकी ही जाना १३ नष्ट बुद्धि
वाला १४ सत्य देखना है ॥ ३३ ॥ १५ ख्याति लिखनेवाले प्राचीन लोगों ने
इस कथा को इसीप्रकार रक्खी है ॥ ३४ ॥ १६ इसकारण हमने भी संदेहवा-

*दुत सुनि सूनू कैद हिय दाही, किन्नौ कलह कुपि कछवाही ३४
 पति सन कहिय हन्यौ तुम पुत्रहि, यातैं तजिहौ देह अमुत्रहि ॥
 इम कहि अन्न त्याग अवधारयो, व्याकुल नृप तब सोक बिचारयो ३५
 मति जड़ भूप कँउल निश्चित मन, नारिन नैक उदास सहै नन ॥
 बिनयादिक करि कोप बहावैं, अंतर तबहि इष्ट सुख आवैं ३६।
 ललैना मात्र कहैं सु न लुप्यैं, करैं प्रनति जब जब कोउ कुप्यैं ॥
 यह बुंदीपति सील अपूरब, तातैं करि करि प्रनति कही तब ३७
 सत्रुन हथ तुमहि सौँप्यो सुत, अब क्यों रिस हम कियउ कहा उत
 कहिहो पुनि सोही हम करिहैं, असन लेहु इच्छित अनुसरिहैं ३८
 यह सुनि दिय रानी प्रतिउत्तर, कुमार सु मम मंडहु यह कगारं ॥
 तब नृप लिख्यो कलह दुख टारक, कछवाहीको एह कुमारक ३९
 कलह उग्र रानी पुनि किन्नौ, निहिनै अन्न दिनै न बिच लिन्नौ ॥
 इत पुनि गरभ धरयो चुंडाउति, होवत जास जग्य जप आहुति ४०।

उति १ हुति २ अन्त्यानुपासः ॥ १ ॥

अब तत्कृत कूरम नृप याकँहैं, कब सुत होय मंगिहौं ताकँहैं ॥
 कुमार भयैं जामिजँ गति कैहौं, दुहितौ जो स्वसुतहिं तो दैहौं ४१।
 चोपाई ॥

कूरम इम हेरत जानि कैल, रक्खे भट जामिकँ रक्खवाल ॥
 घुमडि रहे डेरन जे घेरि, नृप सुत लोभ लयो मन फेरि ४२।

ली ही रक्खी है * श्रीम पुत्र को कैद सुनकर ॥ १ परलोक के अर्थ २ धार-
 ण किये ॥ ३५ ॥ ३ मूर्ख बुद्धिवाला ४ वाममार्ग में मन का निश्चय करनेवा-
 ला ५ नहीं चाहता ॥ ३६ ॥ ६ लीमात्र ७ विशेष नम्रता ॥ २७ ॥ ८ तुम्हारा
 चाहा हुआ करेंगे ॥ ३८ ॥ ९ वह कुमार मेरा था १० यह पत्र लिख दो ११ टा-
 लने [मिलने] वाली ॥ ३६ ॥ १२ कठिनता से १३ कई दिनों में ॥ ४० ॥ १४
 भानजे की गति हुई सो ही करूंगा अर्थात् मार डालूंगा १५ बेटी हुई तो अ-
 पने पेदे ईश्वरीसिंह को परणादूंगा ॥ ४१ ॥ १६ बालक जन्मने के समय को
 १७ पहरापत १८ बुधसिंह ने पुत्र के लोभ से जयसिंह से मन फेर लिया ॥ ४२ ॥

[षट्पात्]

तदनु ईश्वरीसिंह सुपहु जयसिंह पट्ट सुत ॥

रान कुमर जगतेस सुता व्याहयो हिन संजुत ॥

सर बसु सत्रह१७८५ साल माघ मिते लगन मिलायो ॥

जदहि उदैपुर जाय उचित उपयम करि आयो ॥

इत दबि मुखक मालव कियउ मरहठन मंडू अमल ॥

आजलों दूर सुनते इनहिं प्रबिसन अब लगगे प्रबल ॥ ४३ ॥

दोहा ॥

रन अवरंगाबाद रचि, पहिलैं कटक प्रचारि ॥

दयाबहादुर विप्र वह, सूदापति लिय मारि ॥ ४४ ॥

(षट्पात्)

इहिं द्विज दिलिय अंग मेदि हिंदुन दुख दिन्नों ॥

साह हुकम पुनि पाय कुंच दक्खिन सिर किन्नों ॥

तीन अयुत३०००० तुंखार सुभट निज संग सिधारे ॥

सहँस बीस२००००० पुनि साह कटक भट दिन्न करारे ॥

कोटा नरेस प्रति पत्र लिखि दुज्जनसल्लहु संग दिय ॥

इन जाय सरित रेवा उतरि कछुदिन पार मुकाम किय४५

कोटापति करि कपट तथ कछु काल विहायो ॥

द्विज डिग निज दँल रक्खि अप्प कोटा चलि अयो ॥

उत अवरंगाबाद लुटि मरहठ चलाये ॥

द्विज त्रि३ बेर दल पिल्लै पिल्लि रंचक ठहराये ॥

अति जोर बढिय मरहठ अरि तव द्विज सम्मुह भिल्लये ॥

पौंसक कृपान चोपरि प्रथिते खेत प्रान पैन खिल्लये ॥ ४६ ॥

१ जिस पीछे २ राखा संग्रामसिंह के पुत्र जगतसिंह की पुत्री ३ सुदि ४ वि-
वाह ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ५ आगे ६ घोड़ों [सवार] ७ सेना ८ मर्मदा नदी ॥ ४५ ॥

९ तहां कुछ समय बिताया १० अपनी सेना ११ ब्राह्मण तीन बार सेना भेजकर
१२ लड़ रूही पासों से युद्धचेत्र रूही १३ प्रसिद्ध चोपड़ में १४ प्राणों का दाव

दयावहादुर वीर बिप्र नागर सूबा पति ॥

खूब आरि रन खग मारि बहु सत्रु महामति ॥

तिल तिल तेकन तुष्टि बिरचि अच्छरि लगवाँहीं ॥

गंजि अरिन करि गरद मरद पत्तो दिवँ माँहीं ॥

जिम जिम प्रमाद मिच्छन जगिय भोगै न जिम जिम भुल्लये ॥

तिम तिम कटाच्छ तिरछे बिरचि दिल्ली जारन बुल्लये ॥ ४७ ॥

(दोहा)

मारि द्विजहिँ मंडत अमल, रेवा लंघि रिसाय ॥

मरहठन मालव लयो, उज्जइनी लग आय ॥ ४८ ॥

लै मंडू दसउर लियउ, निज निज थानाँ रक्खि ॥

सूबापति गुजरातको, सोहु मिल्यो हित सँक्खि ॥ ४९ ॥

तबके आवत दक्खिनी, भुव दब्बत बरजोर ॥

अब कूरम कहि मुक्कल्यो, तजहु रामपुर मोर ॥ ५० ॥

जानि इनहु जयसिंहको, रामपुर सु दिय छोरि ॥

अवर देस उज्जैन लग, बढि बढि लिन्न बहोरि ॥ ५१ ॥

कूरम तब मुक्कलि कैटक, अमल रामपुर किन्न ॥

मरहठन सँन छन्न मिलि, दिल्ली सिर भरदिन्न ॥ ५२ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी-
पतिबुधसिंहचरित्रे कोटामहारावदुर्जनशल्यरामपुरलुण्ठन १ राम-
पुरपलायितदिल्लीगतरावसंग्रामसिंहपुनारामपुरलेखन २ प्राप्तरा-

लगाकर खेला ॥ ४६ ॥ १ स्वर्ग में गया २ भोग आगने में ३ कटाच्छ ॥ ४७ ॥

॥ ४८ ॥ ४ हित की साच्ची [गवाही] सँ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५ अन्य ॥ ५१ ॥ ६ संना

भेजकर ७ से ८ भाग ॥ ५२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुन्दी के भूपति
बुधसिंह के चरित्र में कोटा के महाराव दुर्जनशाल का रामपुर को लूटना ?
रामपुर से भागे हुए राव संग्रामसिंह का दिल्ली जाकर पीछा रामपुरा लि-
खाना, २ जयपुर के राजा जयसिंह का रामपुरा भाकर पीछे आते हुए राव

मपुरप्रत्यागच्छजयपुराधीश जयसिंहस्य रावसंग्रामसिंहच्छलाघात-
मारणा ३ जयसिंहकनिष्ठसूनुमाधवसिंहजनन ४ जयसिंहस्य स्व-
भागिनेपञ्चुन्दीपट्टराजकुमारभवानीसिंहमारणा ५ जयसिंहपट्टकुमा-
रेश्वरीसिंहादयपुत्रविवाहन ६ गृहीतो जयनीकमहरदशपुरपुराव-
ध्याक्रमणवर्त्तनमेकोनत्रिंशो मयूखः ॥ २९ ॥

आदितः सप्तपष्ठ्युत्तरद्विशततमः ॥ २६७ ॥

[दाहा]

अभयसिंह मरुईस इत, मरुधर राज जमाय ॥
स्वामिधरम बेहि साहको, अतिजब दिल्ली आय ॥ १ ॥
इत नृप कानीखोह रहि, तज्यो वचन गहि गाढ ॥
सक खट वसु सत्तह १७८६ममय, आयउ अब आपाढ ॥ २ ॥

[पट्पात]

असित पक्ख आपाढ मास सनिवार चउदहसि १२ ॥
चुंडाउति उर कुमर भयो दहमास जठर बसि ॥
धात्रेयी नृप निकट उलवै सहितहि गहि आन्यो ॥
बुल्ली नीति विचारि जनन अवलग नहिं जान्यो ॥
पै अब न छन्न रक्खन उचित कोउ न पुनि काहै कुमरा ॥
॥ ३ ॥

अगँ जबहि *भीम लुट्टी भुव, तनया तब सूरजकुमारी हुव ॥
 गिर्भयसौ सुत सुत करि राखी, भावतसिंह भये सुत भाखी ॥ ४ ॥
 जँहँ सुताहिँ सुत सुत कहि ठानै, तिहिँ पुनि सुता कहँ जग मानै ॥
 सुतहिँ सुता कहि कहि जँहँ रखहिँ, ताहिँ बहुनि कोउ न सुत अखहिँ
 हुव संतान सबन यह जान्यौ, पुत्री सुत अबहि न पहिचान्यौ ॥
 पै छुनै रखै नहिँ भल मत, रूपांत कियँ कूरम इहिँ संगत ॥ ६ ॥
 हमरी मति सु फुँरत प्रकटावन, पुनि कहिदो सु करहिँ किं करपन ॥
 धात्रेय जु अनिरुद्ध नरेसह, देवकरन अभिधान हुतो वह ॥ ७ ॥
 ताकी इहिँ तनया धालेई, कोबिद नीति कही इस केई ॥
 सुहि पुनि नाजर अमर सुनाई, बंटहु सुत भँव प्रकट बधाई ॥ ८ ॥
 भावसिंह नृपको यह नाजर, बय नैय बृद्ध रु राजकाज बैर ॥
 अगँ नृप अनिरुद्ध समय जब, अंतहपुर कोउ बेलँ चलयो तबा ॥
 सिविका छोरि अपुब सयानी, रथहि चढी राजाउति रानी ॥
 चिकन ओट कछु लखत प्रपंचकै, बाहिर कढी अंगुली रंचकै ॥
 कहि तब नाजर अमर करौरी, छैरी तीन अंगुलि पर मारी ॥
 उपासँ अनिरुद्ध भूप दिय, नाजर तबहि जोरि कर अखिखय ॥
 दासी जन अंगुलि में मानी, रानी रथ आरुढ न जानी ॥

है ॥ ३ ॥ * कोटा के महाराव भीमसिंह ने १ पुत्री १ शत्रु के इस भय से कि
 अब इनके पीछे कोई पुत्र नहीं है इसकारण बूढ़ी को दवालेना चाहिये २ यह
 कह कर प्रसिद्ध किया कि भावतसिंह नामक पुत्र हुआ है ॥ ४ ॥ ३ जहाँ पु-
 त्री को ही पुत्र पुत्र कहकर रखते हैं ४ तो पुत्र को ५ पुत्री कहकर रखेंगे
 तो ६ उसको फिर कोई पुत्र नहीं कहेगा ॥ ५ ॥ ७ परन्तु ८ प्रसिद्ध करने से
 ९ जयसिंह इसको मांगता है ॥ ६ ॥ १० हमारी बुद्धि प्रसिद्ध करने में ही च-
 लती है ११ नौकरपन के कारन १२ धावधाई १३ नाम ॥ ७ ॥ १४ वेटी १५ नी-
 ति चतुर ने कई वार्ता कही १६ पुत्र के जन्म की ॥ ८ ॥ १७ अवस्था और
 नीति दोनों में बृद्ध १८ अष्ट १९ जनाना २० किसी जाग में ॥ ६ ॥ २१ अपूर्व
 २२ शहर आदि की रचना देखने को २३ थोड़ी सी ॥ १० ॥ २४ करड़ी (कहि-
 न) २५ छड़ी २६ ओलं मा ॥ ११ ॥

उम्मेदसिंहको मांगने पर राजाका नटना] सप्तमराशि-त्रिंशमयुख (३१२६)

यातँ रही अंगुली अकखँय, नहिँ तो लैतो कट्टि रीति नय ॥ १२ ॥
असो तुँजक हुतो वह नाजर, किन्नों तिहिँ यँहँ अरज जोरि कर
बुंदिय जो बारिधिँ बिच बोरहु, छन्नैँ रक्खि ततो नय छोरहु ॥ १३ ॥

(षट्पात्)

सुँ सुनि भूप बुंदीस कुमर जाहिर तब किन्नों ॥
हुँदुभि बज्जिग द्वार द्रव्य बिप्रन बहु दिन्नों ॥
गँ कन अरु नेवगिन कुम्म नृपसौँहु कहाई ॥
सत १०० सत १०० रूपय सवन दई जयसिंह बधाई ॥
बुद्धहि कहाय पठई बहुरि सौँपहुँ अब हम हत्थ सुँव ॥
गहि लिखित रीति लिखि बंधुँ गन धारहु अवरहि अंक धुव १४

[दांहा]

कहि पठई बुधसिंह तब, पच्छी वैयाज बिसास ॥
करन देहु जातक करम, पुनि भेजहिँ तुम पास ॥ १५ ॥

(षट्पात्)

जातकरम सब करिय तँनय उच्छव तदनंतर ॥
सुन्यौँ कुमर संसार नाम उम्मेदसिंह वर ॥
बहुरि कुम्म इक बनिकँ सचिव पठयो हीरामल ॥
कहयो देहु मुहिँ कुमर छोहँ तब कियउ रंग्यात छल ॥
अक्खिय रिसाय बुंदिय अधिप पुत्रहु कहिँ मंगे मिलत ॥

१ जय रहित २ न्याय की रीति से अंगुली काटलेता ॥ १२ ॥ ३ प्रबंधकर्ता (यह यावनी शब्द अनेकार्थ वाची है, जिसके अर्थ दबदबा शान शोकत प्रबन्धकर्ता आदि कई हैं) ४ समुद्र में डूबना होवे तो ५ नीति ॥ ११ ॥ ६ सो ७ नगारे वजे ८ ज्योतिषियों और ९ नेग पानेवालों ने जयसिंह से भी १० बुधसिंह का ११ सुन [पुत्र] १२ लिखावट की रीति से भाइयों के समुह में से १३ निश्चय किसीको गोद रखला ॥ १४ ॥ १४ छल से विश्वास देकर कहाई १५ जन्म समय के वेद विहित कार्य ॥ १५ ॥ १६ पुत्र के उत्सव का १७ जिस पीछे १८ बनिया १९ क्रोध करने २० प्रसिद्ध

बरजोर लेहु हो तुम प्रबल हम रन इच्छत खंग हत ॥१६॥
 सुनत एह जयसिंह घल्लि कर मुच्छ रिसायो ॥
 पन्नैग पय दब्ब्यो किं बुंघित सद्बूल खिजायो ॥
 तमकि भूप ततकाँल सचिव राजामल बुल्लयो ॥
 कहयो कहा करतव्य खिजि अब उन छल खुल्लयो ॥
 करि उचित लेहु खत्री कहिय गृहबाँसिन इन इनहु नैन ॥
 इच्छितहिं राज बुंदिय अपि प्रथित निबाहहु लिखित पैन ॥१७॥
 (दोहा)

तब छित्वर प्रति इंद्रगढ, कुम्म लिखी यह चाहि ॥
 देवसिंह भैजहु कुमर, बुंदी अप्पहिं ताहि ॥ १८ ॥
 प्रथम राज तुमकाँ मिलत, जो यह तुमहिं रुचै न ॥
 तो हम अवरहिं अप्पिहैं, बढहु न पिच्छैं वैन ॥ १९ ॥
 छित्वरसिंहहु तबहि लिखि, पठई कूरम गेह ॥
 हम किंकर बुंदीसके, अनुचित करहिं न एह ॥ २० ॥
 अवरहु गोपीनाथ कुल, नटयो अनुक्रम पाय ॥
 बुंदीतैं कूरम तबहि, सालम लिन्न बुलाय ॥ २१ ॥
 कहयो धरहु तुमरो कुमर, बुंदी गहिय बीर ॥
 लखहु एह जामिर्प लिखित, हम सहाय हमगारि ॥ २२ ॥
 सठ सालम यह लोभ सुनि, बुल्लयो कुमर प्रताप ॥

१ युद्ध करना चाहते हैं २ तरवार मारकर ॥ १६ ॥ ३ सर्प को पैर से दबाया
 ४ लिधों ५ भुल्ले सिंह को क्रोधित किया ६ क्रोध करके ७ तुरन्त ८ बुलाया
 ९ क्या करना चाहिये १० अपने घर में वास किये हुआओं को ११ मारो मत
 'यहां अधिक निषेध के लिये दो नकारों का प्रयोग है सो अन्य स्थानों में भी
 जहां 'नैन' शब्द आवै वहां अधिक निषेध समझना चाहिये' १२ चाहे जिस
 को बुंदी का राज्य देकर १३ प्रसिद्ध लेख [लिखावट] की १४ प्रतिज्ञा निवा-
 हो ॥ १७ ॥ १५ छीतरसिंह के नाम १६ जयसिंह ने ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ १७
 सालमसिंह को ॥ २१ ॥ १८ वहिनोई [बुधसिंह] की लिखावट ॥ २२ ॥ १९ बुलाया

नय बिचारि सोहू नटयो, उच्चरि दुँरित अमाप ॥ २३ ॥
जड़ सालम बुल्लयो जबहि, मध्यम कुमर दलेल ॥
करउरतैं आयो कुटिल, मन इच्छित लहि मेल ॥ २४ ॥
अभयसिंह इत मरुअधिप, बखसि साह बसु ज्ञात,
सरबुलंद सिर मुकल्लयो, दै सूबा गुजरात ॥ २५ ॥
दिल्लीतैं मारव नृपहु, आयो जैपुर अँतथ ॥
बरखनलग जैपुर बरयो, हो जयसिंहहु तत्थ ॥ २६ ॥
तब दरकुंचन आय तँहँ, मरुपति दिन्न मिलान ॥
इहिँ सुनि कारीखोइतैं, चढि आयो चहुवान ॥ २७ ॥
मरुपतिसौँ अति हेत मिलि, कहि सब लिखित कुँकाम ॥
जयनिवास उँपवन निकट, किय बुंदीस मुकाम ॥ २८ ॥
मुक्तादाम ॥

मिले मरुभूप रु बुद्ध विनोद, परस्पर डेरन आय प्रमोद ॥
सु द्वैरकरि गोठिनँ जिम्मन साजि, दये लिय दोउन रँबारन बाजि २९
मरु प्रभु डेरन कुम्महु आय, सुँतापति जानि मिलयो सरसाय ॥
कहयो करि पावन जैपुर जेबँ, मँमालय भोजन "कैं चलिये वाँ ३०।
कहयो मरुभूपहु यौँ सुनि तत्थ, चलैं हम बुद्ध बँलापति सत्थ ॥
ठगे इनकों तुम जानि प्रमत्त, हमैं इनतैं हित हेयँ न अत्त ॥ ३१ ॥
यहै सुनि कूरम अखिय एह, चुकयो मिलि जामिपतैं यहदेह ॥
यहै कहि लै मरुभूपहिँ जाय, दई बिनु जामिपै गोठि जिमाय ॥ ३२ ॥

१ पाप ॥ २३ ॥ २ दलेलसिंह को ॥ २४ ॥ ३ बादशाह ने धन का खजूना देकर
॥ २५ ॥ ४ मारवाड़ का राजा ५ यहाँ ३ कई वर्षों से वास किया हुआ ॥ २६ ॥
७ मुकाम ॥ २७ ॥ ८ जयसिंह को लिखावट कर देने का खोटा कार्य कर
कर ६ बाग के समीप ॥ २८ ॥ १० गोठें ११ हाथी घोड़े ॥ २९ ॥ २ अपनी
पुत्री का पति जानकर १३ रस युक्त [प्रसन्न होकर] १४ शोभा १५ मेरे घर १६
भोजन करने पर १७ जूय चलिये ॥ ३० ॥ १८ यह युधसिंह का विशेषण है १९
त्याज्य नहीं है ॥ ३१ ॥ २० बहिर्गोई से यह देह मिल चुका अर्थात् अब कभी
नहीं मिलसक्ता "यह काहु भाषा का कथन है" २१ बिना युधसिंह के ॥ ३२ ॥

चलो लहि कूरम सिकख कबंध, बधो नृप बुद्धहि फेरि प्रबंध ॥
 रहो तुम कूरमकी यह जानि, कछू करिहै मम भद्र प्रमानि ॥३३॥
 सु तो सब गो तुमरी लिपि संग, अबैं नैन रक्खहु राज्य उमंग ॥
 चलो मम सत्थहि जो चहुवान, ततो ईन्ह ठिल्लहि लै तुम थान ॥३४॥
 यहै हु न मन्निय बुंदिय ईस, रची मरुभूपतिहु कछु रीस ॥
 क्रम्यौ करि कुंचन धन्व कबंध, रच्यो धर गुंजर लैन प्रबंधा ॥३५॥
 इतैं सठ संभर मोह अरोहैं, क्रम्यौ निज डेरन कानियखोह ॥
 दई पुनि बुद्धहि कूरम कहाय, भयो सुत औरस सौंपहु माया ॥३६॥
 रु लै सुत सालम अंक दलेलैं, मनौ इहिं पुत्र गिनौं लहि मेल ॥
 न मन्निय फेरिहु बुंदिय नाह, कुप्यो गहि सुच्छ तबै कछवाह ॥३७॥
 दलेल बुलायउ सालम नंद, मिल्यो नृप कूरम प्रीति अमंद ॥
 वरवर गदिय पै बइठारि, कह्यो तुम बुंदिय भूप हैकारि ॥३८॥
 अबैं तुमकों दुहिता हम अप्पि, थिरां निज भुग्न भेजहि थप्पि ॥
 बिराजहु बुंदिय गदिय जाय, सबै हम रैन समेत सहाय ॥३९॥
 रहयो अभिसेक सुतो लहि काल, सबै सधिहै पुनि सनुनसाल ॥
 यहै कहि सालमसिंह बुलाय, प्रबोधितैं बुंदिय दिन्न पठाय ॥४०॥
 कह्यो बुधसिंहहिं आन न देहु, सबै तस राज्य रजु करिलेहु ॥
 सज्यो तब सालम बुंदिय सीस, हराम तजी नय धर्म हदीस ॥४१॥
 (दोहा)

१ बुधसिंह से कहा २ कल्याण ॥ ३३ ॥ ३ लिखावट के साथ ४ नहीं
 ५ जयसिंह को हठाका ॥ ३४ ॥ ६ चला ७ मारवाड़ से ८ गुजरात की भूमि
 लेने का ॥ ३५ ॥ ९ बुधसिंह १० अज्ञान [शूल] पर सवार होकर ११ ज-
 जसिंह ने कहलाया १२ लिखावट की रीति पूर्वक ॥ ३६ ॥ १३ सालमसिंह के
 पुत्र १४ दलेलसिंह को मोद लेकर पुत्र मान कर रहो ॥ ३७ ॥ १५ बहुत प्रीति
 से १६ ललकार करके कहा ॥ ३८ ॥ १७ अपनी [बुन्दी की] भूमि भोगने को
 १८ उदयपुर के राजा सहित ॥ ३९ ॥ १९ समय पाकर २० समझाकर ॥ ४० ॥
 २१ उस हरामी ने नीति और धर्म की २२ सीमा [मर्यादा] छोड़ दी ॥ ४१ ॥

बुधसिंहसे उसके नौकरोंका बदलना] सप्तमराशि-त्रिंशमयूख (३१३३)

यह सुनि कानीखोहतै, बुद्ध नरेसहिँ छोरि ॥

मुरि मुरि सालममै मिले, बहु भट सचिव बहोरि ॥ ४२ ॥

पद्धतिका ॥

इक बनिक नाम बानाँ १ अधर्म, किय मुख्य सचिव जोरत कुकर्म
यह जोधराज *जामिज अनीति, पलटयो सठ सालमपै सप्रीति ४३
सुखराम २ नाम कायत्थ स्वान, भरि लोभ चोधरी उदयभान ३ ॥

नागर द्विज इक जगदीस ४ नाम, हड्डा पुनि भिंतुव ५ हुव हराम ४४
भट अनय पुंज हड्डा भवान ६, थित नैर दुधारी जारा थान ॥

पुनि धाइजात सुभराम पाप, मुरि कियउ दुष्ट सालम मिलाप ४५
अरु सठ अलोदपुर पति अमान, मातुल सु महारामाँभिधान ७ ॥

इत्यादि सचिव भट सठ अनेक, टरि टरि सालम बिच गय सटेक ४६
इत किय प्रपंच कछवाह राय, दिल्ली सु अरज पठई लिखाय ॥

बुंदीस बुद्ध आलस बहत, चित अब न साह सेवन चहत ॥ ४७ ॥

नहिँ पुत्र आहि इनके निकेत, तसमात भ्रातजहिँ राज्य देत ॥

मुहुकम्म बंस सालम अठेल, बर कुमर तास मध्यम दलेल ॥ ४८ ॥

अति गुन प्रपंच रन पटु उदार, विक्रांत सुभग बर मति बिचार ॥

बुंदीस राज्य अब देत ताहि, अरु मरुप रान हम मतिहु आहि ४९

तसमात पटा मुद्रित कराय, मम निकट देहु हजरत पठाय ॥

सुनि साह मुहुम्मद अरज एह, लिखवाय पटा पठये सनेह ॥ ५० ॥

बुंदिय दलेलसिंहहिँ समप्पि, बुधसिंह पट्ट इहिँ देहु थप्पि ॥

तुम जाहु कुम्म मालव सु देस, आवत गिनीमँ रोकहु असेस ५१

पठये हम रुपय त्रि ससि १३००००० लकख, इन बल अनीकै विरच-

*भानजा ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ १ अनीति का समूह ॥ ४५ ॥ २ नाम ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ३
है ४ घर में ५ इसकारण से ६ भतीजे को ॥ ४८ ॥ ७ वीर = मेरी सलाह भी
है ॥ ४९ ॥ ९ इसकारण से १० छाप कराकर ॥ ५० ॥ ११ हे जयसिंह १२ सय
शतकों को ॥ ५१ ॥ १३ सेना

हु अपकख ॥

उज्जैन वार आवन न देहु, लागि पिढि समस्तन मारि लेहु॥५२॥
 कूरम नरेस तव भुज भरोस, हैं हम निचित अति मुदित होस ॥
 इम लिखि पठाय फरमान साह, कछवाह बांघि मंडिय उछाह॥५३॥

॥ षट्पात् ॥

बांघि साह फरमान हरखि जयसिंह महीपति ॥
 रूपय तेरह १३ लख पाय मंडिग दैल दुम्माति ॥
 मनतैं मिलि दक्खिनिन अक्खि उपपर साहायस ॥
 किय मालव पर कुंच बुत्थि आमिख जिम बायस ॥
 संगहि दलेल सालम सुवन लै मंडिग दक्खिन चलन ॥
 बुंदीस इत सु बिगरयो विविध मन्नि न उगगन अत्थमन॥५४॥
 किय बुंदीस बिचार जान मालव सालक जिय ॥
 बिजयसिंह निज अनुज कुम्म कारागृह रुक्किय ॥
 जाहि कहि बरजोर थिरहि जैपुर नृप थप्पहि ॥
 करि फोजन एकत्त योहि दारिद अब अप्पहि ॥
 यह किय प्रपंच बुधसिंह इत सो सब नृप जयसिंह सुनि॥
 वह बिजयसिंह सोदर अनुज पठयो हनि करि अनय पुनि५५
 धरमधोर जयसिंह करम अनुचित यह किन्नो ॥
 बिजयसिंह हनि अनुज भेजि जामिपे ढिग दिन्नो ॥

-
- १ मरहटों का पक्ष नहीं करनेवाला ॥५२॥५३॥ २ सेना ३ दुर्माति (बादशाह से रुपये लेकर उसीके शत्रु मरहटों से मिल जाने के कारण वह विशेषण दिया है) ४ बादशाह की आज्ञा ५ मांस के टुकड़े पर ६ काकपत्ती की भांति ॥ ५४ ॥
 ७ बुधसिंह ने ८ अपने साले (जयसिंह) के मालवे में जाने के विचार से ९ जयसिंह ने अपने छोटे भाई बिजयसिंह को १० कैद कर दिया था ११ जयसिंह को १२ सगे छोटे भाई को १३ अनीति करके सारकर बुधसिंह के पास भेज दिया ॥ ५५ ॥ १४ धर्म को धारण करनेवाले १५ बुधसिंह के पास

कहि पठई पुनि कुंम जाँमि भात रु तव सालक ॥

आयउ यह मम ईसँ प्रथित डुंढाढर पालक ॥

इहिँ विधि कहाय वह निज अनुज कँठक बुद्ध डिग दगध किया ॥
पुनि लिखि पठाय बुंदिय पुरहि प्रति सालम यह मंत्र प्रिय ॥५६॥

(दोहा)

हम जावत मालव पहुँचि, मिलि रुक्मन मरहठ ॥

बुंदिय धर तुम जतन बल, करि रखवहु नहिँ कँठ ॥५७॥

साह सुहुम्मद तुमहि सब, बुंदिय धर दिय वीर ॥

सठ बुद्धहिँ देहु न धसन, हड्डन पति हमगीर ॥ ५८ ॥

सालम प्रति यह लिखि सबलै, लै निज संग दलेल ॥५९॥

मालव उप्पर उप्परयो, मरहठन हिय मेल ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीप-
तिबुधसिंहचरित्रे बुधसिंहपुत्रोम्मेदसिंहजयसिंहयाचन १ बुधसिंह-
पुत्रदाननिषेधबुधसिंहदत्तकीकृतकरवरपतिसालमसिंहमध्यात्मजद-
लेलसिंहार्थजयसिंहबुन्दीसमर्पण २ प्रदत्तानल्पवित्तमरुधराधीशा-
भयसिंहयवनेन्द्रसुहुम्मदशाहाहमदावादोपरिप्रस्थापन ३ प्रेषितप्रा-

१ जयसिंह ने २ बहिन [कुछवाही] का भाई और तुम्हारा साला ३ मेरा पति
[जिसको तुम मेरा स्वामी बनाना चाहते थे वही] ४ प्रसिद्ध डुंढाड़ देश की
पालना करनेवाला ५ बुधसिंह की सेना के पास जजाया ६ यह प्यारा मंत्र
॥ ५३ ॥ ७ कष्ट नहीं है अर्थात् बादशाह की आज्ञा मंगवा देने के कारण अब
बूंदी की भूमि का यत्न करना कुछ कठिन नहीं है ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ८ सेना सहित
॥ ५९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायणे के सप्तम राशि में बूंदी के भूपति-
बुधसिंह के चरित्र में बुधसिंह के पुत्र उम्मेदसिंह के जन्म होमे पर उसको
जयसिंह का मांगना १ पुत्र के देने से बुधसिंह के नाहीं करने पर करवर के
पति सालमसिंह के मध्यम पुत्र दलेलसिंह को बुधसिंह की गोंद रखकर रा-
जा जयसिंह का उसको बूंदी देना २ मारवाड़ के राजा अभयसिंह को यष्ट-
त बन देकर बादशाह सुहुम्मदशाह का अहमदाबाद भेजना राजा ३ जयसि-

र्थनापत्रजयसिंहदलेलसिंहार्थबुन्द्याधिकाराज्ञापत्रलेखन ४ मरहट्ट-
वारणार्थोज्जयिनीप्रस्थातृजयसिंहस्य स्वानुजविजयसिंहमारणां
लिंशो मयूखः ॥ ३० ॥

आदितोऽष्टषष्ट्युत्तरद्विशततमः ॥ २६८ ॥

दोहा ॥

सक खट बसु सत्रह १७८६ समय, उज्जं मास अवदांत ॥
कूरम मालव कुंच किय, मनसिज तिथि १३ उमहात ॥ १ ॥
सुता भनाय अधीसकी, बुंदिय पति लघु बाम ॥
संगानैर समीप सो, ही असती रु हराम ॥ २ ॥
सस्सू यह जयसिंह की, सुज्जकुमारि प्रसूति ॥
पलटाई कूरम नृपति, अब नवीन रचि ऊँति ॥ ३ ॥

पञ्चभटिका ॥

रठोरि निकट जयसिंह राय, पहु दिय दलेलसिंहहि पठाय ॥
कहि यह सु पुंण्य तुमरो कुमार, इहिं गिनहु राज्य थंभन उदार ॥ १ ॥
सुनि यह दलेल सन अति कैसूर, कहि पुत्र मिली रठोरि कूर ॥
इम कूरम संगानैर आय, सस्सू पलटाई छल सहाय ॥ ५ ॥

ह का बादशाह को अरजी देकर दलेलसिंह के नाम पर बूंदी का फरमान में-
गाना ४ मरहट्टों को रोकने के अर्थ बलीण जाते हुए राजा जयसिंह का अ-
पने छोटे भाई कैदी विजयसिंह को मारने का तीसवां मयूख समाप्त हुआ
और आदि से दोसौ अड़सठ २१८ मयूख हुए ॥

१ कार्तिक के २ शुक्ल पक्ष में १ कामदेव की तिथि [ज्योतिषियों में त्रयोदशी
तिथि का स्वामी कामदेव है] ॥ १ ॥ ४ बुधसिंह की छोटी स्त्री ५ कुलटा [य-
हां अत्यन्त कुलटा होने के कारण असती, और हराम एकार्थ वाची दो श-
ब्दों का प्रयोग किया है] अथवा पति से विरुद्ध होने के कारण हराम पद दि-
या है तो यह अर्थ है कि वह कुलटा और स्वामी हरामी [अधर्मिणी] सांगा-
नेर के समीप थी ॥ २ ॥ ६ सूर्यकुमारी जननेवाली ७ क्रीड़ा [नया खेल रच-
कर] ॥ ३ ॥ ८ राजा दलेलसिंह को भेजा ९ यह तुम्हारा धर्म पुत्र है ॥ ४ ॥
१० बड़े अपराध सहित था तो भी ११ साम्राज्य को ॥ ५ ॥

इम दुव^२दलेल कूरम *अमान, मिलि नैर निवाई दिय †मिलान॥
 बुंदिय लिखि पठई पुनि बिचारि, सालम तुम मंडहु घर सम्हारि६
 हम मिलन प्रथम आवहु हजूर, पुनि भुग्गहु बुंदिय ‡कटक पूर ॥
 सुनि यह सठ सालम अनय सोम, कूरम ढिग आयउ मिलन काम७
 मिलि उभयरगाम भुड़वा मिलान, दिय कुम्म सालमहिं सिकखदान
 कहि जावहु बुंदिय, तुम निसंक, अब तव कुमार सिर पैट अंक८
 इहिं लै हम मालव जात आज, सूबा अवंति रक्खन समाज ॥
 सालम तुम जावहु गृह सधीग, बुद्धहि नन प्रविसन देहु बीर ॥ ९ ॥
 यह अक्खि सालमहिं सिकख अप्पि, मालव चलि कूरम कुंच मप्पि
 दल भरन भुम्मि फुट्टत दारि, चंचल मतंग हल्लिय चिकारि ॥१०॥
 बहि सजव तरारन लेत बाजि, उद्धत भट मंडन कपट आजि ॥
 रचि इम दरकुंचन कूर्मराज, कोटा धर संक्रमि प्रथित काज ॥११॥
 नदि कुसक तीर परि दल अनंत, दिस दिसन फुट्टि गय यह उदंत
 कोटा नृप दुज्जनसल्ल कूर, हित सचिव दोय^२पठये हजूर ॥ १२ ॥
 नागर द्विज बेणीराम नाम, रन चतुर व्यास दोलत्तराम ॥
 इम दुव पठाय कूरम अनीक^१, कोटेस रचिय प्रैनतिय कितीक १३

[षट्पात]

कुसक छोरि पुनि कुंच करिय अगै नृप कूरम ॥

सिंधु सरित^१ निर्वसथ बड़ोद किय तहँ सुकाम क्रम ॥

उज्जईनीके अनुग गोड़^१ उम्मट संभर गन^३ ॥

अरु कबंध^४ कछवाह^६ सुपहु खिच्चिप^७सुनि सेवन ॥

*अमाप (अत्यन्त) †सुकाम॥६॥‡पूर्ण सेना सं^१अनीति का मिलाप करने का
 ॥७॥२बुन्दी के पाट का लेख॥८॥३बुधसिंह को कदापि मत घुसने देना ॥ ९ ॥
 ४ सेना के भार से ५ चीत्कार शब्द [चीसली] करके ॥ १० ॥ ६ वेग सहित
 ७ सेना के उद्धत वीर मार्ग में कृत्रिम युद्ध करते जाते थे ८ चला ९ प्रसिद्ध
 कार्य के लिये ॥ ११ ॥ १० वृत्तान्त ॥ १२ ॥ ११ कछवाहे की सेना में १२ वि-
 शेष नम्रता ॥ १३ ॥ सिंधु नामक १३ नदी १४ ग्रास १५ सेवक १६ चट्टवाण

सूबाधिनैथ कुम्हड़िं सलुम्हि नृप ये सब आयउ निकैट ॥
सजि सजि मिलाप जयसिंहसैन किय सासन सुँखि सिर करैट १४

(दोहा)

निज गढ सोपुर गोड़ नृप, उस्मट पट्टनि ईस ॥
कोटापति चंडासि कुल, संभरवार बलीस ॥ १५ ॥
गढँगाघव बज्रंगगढ, ये सिद्धिग चहुवान ॥
नरउरपति कछवाह नृप, सुत गजसिंह सयान ॥ १६ ॥
पति ईडर रतलामपति, दुव रहोर दलेस ॥
इत्यादिक उज्जैनके, आये अनुगं असेस ॥ १७ ॥

(पादाङ्गुलकम्प)

सूबाबुंग नृप समय सयाने, मिलि जयसिंह सबहि सनमाने ॥
अरु कोटस पटालाय आपो, भीम जनकै भव सोक भुलायो ॥ १८ ॥
जान्यो दई दलेलहिं बुंदिय, होय यहै इनकै स्वीकृत हिय ॥
इम विचारि कोटा अपनायउ, बहु मुद डेरन जाय बढायउ ॥ १९ ॥
जयहरि लौ इम सवन बडे जैव, मंडुवपुर प्रविश्यो घर मालव ॥
प्रकट दिखात साह किं करपन, मिल्यो किंतव अंतरँ मरहठन २०
कछुदिन सँभर व्याज तँहँ कह्ये, बँहुल पिक्खि दक्खिन दल बह्ये ॥
लुँबि कटक अप्पन लुटवायो, मरहठन कँहँ विजय मिलायो २१
कछु धन बसन्नि निवेदन किन्ने, लोभ छन्न तिनके बचँ लिन्ने ॥

१ नृवा का पति [वापी] २ नमीर ३ जैने अकृश को ४ अपन मस्तक पर हाथी सहन करे तैम ॥ १४ ॥ ५ चहुवान ॥ १५ ॥ ६ राघवगढ ॥ १६ ॥ ७ सेना के ईश ८ सेवक ॥ १७ ॥ ९ नृवा के साथ चलनेवाले ११ पिना भीमसिंह के शरण का शोक मिटाया ॥ १८ ॥ १२ कोटावालों को स्वीकार होजाये इसकारण १३ कोट का अपना किया ॥ १९ ॥ १४ जयसिंह १५ अज्ञिता से १६ प्रवेश १७ छली १८ भीमर के मन ने शत्रुओं ने मिला हुआ था ॥ २० ॥ १९ युद्ध के भिन्न २० बहुत देणका २१ वल [जयसिंह] लोभी ने अथवा लोभक-रहे अपनी सेना को लुटवाई ॥ २१ ॥ २२ पत्न २३ वचन

वहे कूरम इम साह हरामी, किय मरहट्ट मेल भुव * कामी ॥ २२ ॥
(दोहा)

तदनंतर करि सिक्खगो, कोटापुर कोटेस ॥

अवर गहे हाजरि अखिल, नरउर आदि नरेस ॥ २३ ॥

इतिश्रां वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तगायणो सप्तमराशौ बुन्दी-
पतिबुधसिंहचरिते जयसिंहकांटागमनपूर्वकोजयनीगमन १ मण्डू-
पुरमरहट्टमिश्रितकपटिजयसिंहस्वानीकलुगट्टनमेकत्रिंशो मयू-
खः ॥ ३१ ॥

आदित एकोनसप्तत्युत्तरद्विशततमः ॥ २६९ ॥

(पट्टपात्)

इत बुंदिय अवनिस चाहि बुद्धह नृप चलिय ॥

कानीखोह भुकाय छोरि बुंदिय दिस छलिय ॥

रस बसु सत्रह १७८६सरत पाय अगहन सित पंचमि ॥

किय स्वदेसपर कुंच भुलि ज्यौं मृगथल जल भ्रमि ॥

चंद्रसू निवाई मग्न चलि भगवतगढ भोगे रहिय ॥

इत सुनि उदंत सालम यह गु बुंदियतजिसम्बुह बहिया ॥

उग्र अधिक कछवाह समय सरंधि रु सर साहस ॥

दठ गुन साह निदेस चाप चतुंग रंगरं ॥

* भूमि की कामनावाला ॥ २२ ॥ † जिसपीछे ॥ २३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तगायण के सालवें राशि में बुन्दी के भूपति
बुधसिंह के चरित्र में राजा जयसिंह का कोटे होकर उज्जयिनी जाना ? मण्डू-
पुर में बगइछों से मिलकर छली राजा जयसिंह का अपनी सेना को लुटवाने
का इकतीसवां ११ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ उनहत्तर २६९
मयूख हुए ॥

१ बुन्दी का राजा २ बुधसिंह ३ उकला (बहा) ४ सम्बत् ५ मृगशृष्णा के जल
से भ्रम कर लुगन्धन में जावे जैसे ६ चाटवृ ७ समाचार ८ सालसंसिद्ध ॥ ११ ॥
जयसिंह तो उग्र ९ जिसकी और समय है जो ८ बाधा है जिसमें दठ है जो
ही बाण है वादशाह की आज्ञा ही दठ प्रत्येक है १० बुद्ध के रसवाली सेना है

वन हड्डोतिय बिकट स्वान सालम दलेल सह ॥

लिखित बागुरा लागि गाढ मत कँउल फंद ग्रह ॥

मुखपन अलस लहि मोह मन बुद्ध सु मंत्र विवेक विन ॥

उनमत्त ऐन संभर अधिप इच्छत जल बुंदिय इरिन ॥ २ ॥

[दोहा]

सुनि इत आवत संभरहि, बनि सालम बुंदीस ॥

लै दल सम्मुह उल्लटयो, स्वामि हराम सँरीस ॥ ३ ॥

लहि सीमा बुंदिय मुलक, अड्डो ठड्डो आय ॥

यह सुनि सठ बुंदिय अधिप, बाम मुखो बिहसाय ॥ ४ ॥

जैतसिंह जाजव जंयी, दिल्लिय रन अंसु दिन्न ॥

तास देवसिंहह तनय, भक्ति स्वामि रस भिन्न ॥

नगर पलौधी धाम निज, वैरिसल्ल भव बंस ॥

कुसथल पंचोलास पुनि, ये दुव पुर उँतंस ॥ ६ ॥

साह समप्पे संभरहि, चोवनगढ गहि बाँह ॥

कुसथल पंचोलास ए, उभयइजाफाँ माँहि ॥ ७ ॥

तब संभर दिय जैत हित, कुसथल पंचोलास ॥

सय्यद सँन दिल्लिय समर, बिरच्यो जिहिँ दिवँ बास ॥ ८ ॥

तास देवसिंहह तनय, स्वामिधरम रत सूर ॥

ताके पुर कुसथल तबहि, आयउ बुद्ध जरूर ॥ ९ ॥

सो ही धनुष है हाडोती देश रूपी बिकट वन और सालमसिंह सहित दलेल-
सिंह ही स्वान [कुत्ते] हैं. बुधसिंह ने जयसिंह को लिखावट कर दी वह लि-
खावट ही १ बागर (फंदा) है जिसमें २ बाममार्ग की दृढता ही फंदों की गाँठें
हैं मन पर मुखपन और आलस्य रूपी मोह लेकर ३ बिना सलाह और बि-
ना विचार का वह चहुवाण राजा बुधसिंह रूपी उनमत्त ४ मृग बुंदी रू-
पी ५ ऊपर भूमि [मृगतृष्णा] का जल चाहता है ॥ २ ॥ ६ बुधसिंह को ७
क्रोध सहित ॥ २ ॥ ८ बुधसिंह ॥ ४ ॥ जाजव के युद्ध में ९ जय पानेवाला १०
मारागया ११ भीगा हुआ ॥ ५ ॥ १२ नगरों के मुकुट ॥ ६ ॥ १३ सिवाय (तर-
फों) में दिये ॥ ७ ॥ १४ से १५ स्वर्ग को गया ॥ ८ ॥ ९ ॥

सुभटोंका बुधसिंहकेलियेसभकरबुंदीआना]सप्तमराशि-द्वात्रिंशमयूख(३१४१)

विष्णुसिंह तनया बहुरि, अनुपम तनया आय ॥
ये संगहि रानी उभय२, पति प्रमत्त गति पाय ॥ १० ॥
पुरबाहिर पृतना परिगै, घन जिम डेरन घेर ॥
देवसिंह महिमानि दिय, बुद्धाहिँ गोठि द्वि२घेर ॥ ११ ॥
परि डेरन लग पांमरे, धाम स्वीय पधराय ॥
निज सरवस्व निवेदयो, देवसिंह हित दाय ॥ १२ ॥
यह सुनि पुर बलवन अधिप, अभयसिंह अति धीर ॥
निज दल सजि आयउ निडर, बुंदियपति ढिग वीर ॥ १३ ॥
अभयदेव ये भट उभय२, बैरिसल्ल भव वंस ॥
सम्मलि हुव बुंदीसकैँ, देह अरपि सजि वंस ॥ १४ ॥
यह उदंत सुनि इंद्रगढ, सुभट इंद्रसल्लोत ॥
देवसिंह छित्तर सुवन, आयउ दल उद्योत ॥ १५ ॥
कछु किसोर बय बसि कछुक, कूरम भय लहि कूर ॥
देव पृथक डेरा दये, दल संभरं तजि दूर ॥ १६ ॥
इत सठ सालम पिछि परि, कृतघन चिंति कुकाम ॥
पत्तन पंचोलास ढिग, किन्ने लरन सुकाम ॥ १७ ॥
कुल बंधव मुहुकैँमके, मिलि सब सालम माँहिँ ॥
पट्टोलीपुर पति प्रथितैँ, मिल्यो जवान सु नाँहिँ ॥ १८ ॥
तोप इक १ जंबूर सत १००, द्वैसत १०० सजि बंदूक ॥
मिल्यो आनि बुधसिंहमैँ, अनुचर धरम अचूक ॥ १९ ॥
त्योही इक १ नगराज तैँहँ, मुहुकम वंस वतंस ॥
सालममैँ न मिल्यो सुभट, पट्टु बिख्यात प्रसंस ॥ २० ॥

१विष्णुसिंह की पुत्री२वेधम के राघव अनोपसिंह की पुत्री ॥ १० ॥३पड़ाव से (सेना का डेरा) हुआ ॥ ११ ॥ ४ पाँवडे (पगमंडे) ५ अपने स्थान पर६स्नेह की रीति से ॥ १२ ॥ १३ ॥ ७ कवच लभकर ॥ १४ ॥ ८ वृत्तान्त ॥ १५ ॥ ९ देव-सिंह ने १० बुधसिंह की सेना को दूर छोड़कर ॥ १६ ॥ ११पुर ॥ १७ ॥ १८मो-कमसिंह के कुल के दांडे १९ विदित ॥ १८ ॥ १९ ॥ १४ मुकुट ॥ २० ॥

[पट्टपात]

सुनि ईत रन जयसिंह भीर सालम दल भेजिय ॥
 तीन सहस्र ३००० तुक्त्वार पंचउमराव सुख प्रिय ॥
 ईसरदापुर ईस नाम कोजुवशिसंक नर ॥
 सारसोपपुर स्वामि बिदित फतमल्लरबीरबर ॥
 साँवल ३ सुहाड़पुर पति सबल प्रबल अचल ४ नानेड़ि पति ॥
 बहादुरसिंह ५ कूरम बहुरि बुद्धानीपुर पति बिमति ॥ २१ ॥

[दोहा]

ब्रजभुव बासी सुभट वल्लि, नरुव वंस कछवाह ॥
 नामधेय सिरदारशनिज, सो दिय संग सिपाह ॥ २२ ॥
 पृथ्वीसिंह २ रु कनक ३ पुनि, उभय नरुव अवतंस ॥
 घासीराम ४ रसोरपति, वल्लि भट कूरम वंस ॥ २३ ॥
 सेरसिंह खिच्चिप सबल, पुनि जहव परतापर ॥
 हरिशतोवर अल्ला हुकम १, मारन करन २ मिलौप ॥ २४ ॥
 उदयसिंह १ पुनि रूप २ अरु, जोध ३ सुरत ४ भट जत्थ ॥
 सालम हित कूरम सजे, सोलंखी चउ ४ सत्थ ॥ २५ ॥
 आमैर पं पठये इते, लारि बुंदिय भुव लैन ॥
 विप्रह बहुरि प्रवास वसि, सब रक्खिय ढिग सैन ॥ २६ ॥
 नरउरपति गजसिंह सुवै, जयसिंहहिँ तँहँ जंपि ॥
 समर प्रपंची मम सचिव, चाहत जय अरि चंपि ॥ २७ ॥
 भेजहु तिहिँ इनसंग भल, कूरम तब सुसिकाय ॥
 संगहि दिय नरउर सचिव, नाम सु खंडेगाय ॥ २८ ॥

१ ब्रज युद्ध लुनकर २ घोड़े (घोड़ों के नवाग) ३ विजय बुद्धिवाला ॥ २१ ॥ ४
 ब्रज की भूमि में रहनेवाले उमराव ५ फिर ६ नरु के वंश का [नरुका] कछ-
 वाहा ७ नाम ॥ २२ ॥ नरुकों के २० कुट ८ पुनि ॥ २३ ॥ १० बुधसिंह को मारने
 और ११ सालमसिंह से मिलान करने का ॥ २४ ॥ २५ ॥ १२ आमैर के पति ने
 १३ मरहटों से युद्ध और १४ विदेश में चलने के कारण ॥ २६ ॥ १५ लुत १६ दवाकर

(पट्टपात)

सुभट मानसिंहोत कलह इम पंचमुख्य क्रिय ॥
 अवरहु सुभट अनेक सेन सम्मलि हुंत सज्जिय ॥
 करि यह दल दगकुंच मुलक मालव तजि मंडुव ॥
 जुरि आयउ जंघाल भीर सालम कुसथल भुव ॥
 करि दल मिलान सालम कटक हड्डन पति दिग मिलन हित ॥
 इन पंचभटन आय रु काहिय बुद्ध श्रवन धारहु बिदित २९

(दोहा)

अभयसिंह बलवन अधिप, पट्टनि भजिग एह ॥
 भीम हितु अति मन्नि भय, दुल्लभ मन्नत देह ॥ ३० ॥
 जाके बल जयसिंहतै, अव रन रचहु न एहु ॥
 दिनप्रति रूपय दौयसत २००, रहि वृंदावन लेहु ॥ ३१ ॥
 नहिं बुल्लयो बुंदिय नृपति, क्रम सब सहित कुबैन ॥
 राजाउत पंचन सरिस, निठुर दिखाये नैन ॥ ३२ ॥

(पट्टपात)

कूरमपति भट कुबच प्रकट सुनि सुनि बलवन पति ॥
 अभयसिंह अति बीर भयउ धकि प्रलय रुद्र भति ॥
 करखि मुच्छ डसि अधर निरखि पंचनपुडफनायो ॥
 पन्नगं पय चंप्यो कि मत्त मृगराज खिजायो ॥
 बुल्लयो बिदित भुज ठोकि बल गल्ल बजत गोदर डेरै ॥
 बुधसिंह आन कूरम बलैहिं केहरि हम गँडुरिकरै ॥ ३३ ॥

(दोहा)

॥ २७ ॥ २८ ॥ १ य मानसिंहोत राजावतों के नाम से प्रसिद्ध हैं २ शीघ्र ३
 शीघ्र चलनेवाले ४ सालमसिंह की सेना में ५ हे बुधसिंह सुनों ॥ २९ ॥ ६
 पाटन के युद्ध में भगा था ७ कोटा के राजा भीमसिंह से ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ८
 रीस (कोध) सहित ॥ ३२ ॥ ९ भांति १० मर्प को पैर से दबाया ११ बुधसिंह के
 सौगन है कि १२ कछवाहे की सेना को हम सिंह होकर १३ गाँडर (भेड़) के स-

ज्ञातन अग्यें हम भजत, गृहे रन अनुचित गाय ॥
 अदमनतें रन आहुरत, पव्वये हहुन पाय ॥ ३४ ॥
 हम हकारि बलवन अधिप, मुरि उडिग महि मुच्छ ॥
 फँटाटोप मंडिग मनहुँ, पन्नंग दव्वत पुच्छ ॥ ३५ ॥
 तव कूरम रुभटन तैसकि, मजिय जाय निज सैन ॥
 जुत सालम सब इक जुगि, लगि दल वंधिप लेन ॥ ३६ ॥
 देवसिंह छिखर सुवन, इंदगदप सुनि एह ॥
 भोरु पन्नि जगसिंह भय, गयो सपरिंकर गेह ॥ ३७ ॥
 हृदयनगयन हरिय कुल, ए वंधुव उमगाव ॥
 करन हीर खंडीगर्का, हुत आये रन दाव ॥ ३८ ॥
 हह गेव सामंत हर, साधव हर भट नोर ॥
 कुल बैलन अरु नाथ कुल, ये बैलुक नृप ओर ॥ ३९ ॥

शुद्धप्राकृतभाषा ॥

(आख्या)

विडहअसोहविपगी अन्तुग्रं वुंदीसपडुवं पिकस्य ॥
 सालमउत्तपयावो जिहो गिलिथो वुंदेसा भूवडसा ॥ ४० ॥
 मायो देशीया प्राकृती मिथिनभाषा ॥

मान ४० ॥ ३३ ॥ १ घर का गुज अनुचित फलकर २ हाहाओं के पैर पर्याप्त
 से लतात है ॥ ३४ ॥ ४ सालों सर्प ने पूछ दिया है कि ३ फल का आटोप (हल)
 क्या है ॥ ३५ ॥ ५ भोज करके ६ सेना की पंक्ति (परेड) घाँसी ॥ ३६ ॥ ७ घर-
 माल की लपट पर गया ॥ ३७ ॥ ८ सालसोत खाता के? सोलसो? सुभानि-
 ९ की ओर ॥ ३८ ॥

संस्कृत अनुवाद

विडहअसोहविपगी अन्तुग्रं वुंदीसपडुवं पिकस्य ॥ सालमपुत्रभाषा वंधो
 मिथिने वुधेय भूवडसा ॥ ४० ॥

एतेषां प्रमाणों के आधारे से जानसेवाया कि वह भाई को सुन्दरी के घर का
 यमि केवलकर का लपटिहवा क्या पुत्र प्रमाणमिह राजा सुषमिह में मिला (४०)

(दोहा)

राजसिंह अन्वये रतन, बंधव निज बरवीर ॥
 दोलतसिंहहु सज्जि दल, भट आयउ नृप भीर ॥ ४१ ॥
 हाजरि भट प्रथमहि हुने, महारिंह कुल मोर ॥
 असित पक्खके इंदु जिम, लग्यो घटन दल ओर ॥ ४२ ॥
 दस हजार पृतना बदलि, सब हुव सालम संग ॥
 दस हजार १०००० नृप निकट दल, रहिय रचावन रंगों ॥ ४३ ॥
 उभय पक्ख अरि मित्र तजि, समय जोर दरसाव ॥
 रहिय इंद्रगढ आदि बहु, उदासीन उमराव ॥ ४४ ॥
 सालम ढिग तेरह सहस्र १३०००, नृप ढिग दस निरधार ॥
 इत कुप्यो बलवन अधिप, भुज धरि बुंदिय भार ॥ ४५ ॥
 बुद्ध नृपति बरजत रह्यो, दोउन संपथ दिवाय ॥
 दड्डे भज्जन नाँ सुनै, लग्यो अंदर लाय ॥ ४६ ॥
 अभयसिंह अरु देव इत, अरु कछु संभर सैन ॥
 जिहिं बिच जे भट सज्ज किय, बरनत तिन्ह कविबैन ॥ ४७ ॥
 महाराम मातुल कुलज, मुखो जु सालम मेल ॥
 वाको सुत संग्राम १इत, सोहि सज्यो गहि सेल ॥ ४८ ॥
 प्रेमसिंह २सज्ज्यो प्रथिते, नाथाउत रन नूर ॥
 बखतसिंह ३जगभानु ४ बैलि, सजे हड अति सूर ॥ ४९ ॥
 साँवलदास ५ सजोर सजि, गोरे वंस उजियार ॥
 जोरावर ६कछवाह जुगि, परसुराम ७ परिहार ॥ ५० ॥
 बरजत नृप बुंदीसकै, सहठ दिवावत सौँह ॥

१ वंश ॥ ४१ ॥ २ कृष्ण पक्ष के चंद्रमा के समान ॥ ४२ ॥ ३ सेना ४ दुधसिंह के पास ५ युद्ध करने को ॥ ४३ ॥ ६ दोनों पक्षवालों से शत्रुता और मित्रता छोड़कर ७ तटस्थ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ८ सौजन्य दिलाकर ॥ ४६ ॥ ९ बहुवाण सेना ॥ ४७ ॥ १० दुधसिंह के मामा के कुल में उत्पन्न ॥ ४८ ॥ ११ प्रसिद्ध १२ पुनि ॥ ४९ ॥ १३ गौड़ वंश का प्रकाशक ॥ ५० ॥ ५१ ॥

अभयदेव संगहि इते, भटन तनंकिय भौहँ ॥ ५१ ॥
 देवसिंह अभमल्ल दुव, दुल्लह ललित उदार ॥
 अच्छरि दुल्लहनि अदरिय, जन्प इते जुद्धार ॥ ५२ ॥
 अवर भटन पिदरुयो समय, सालम अयुत अनीक ॥
 छोरहु नृपति न इक छिन, को जानैं वं कितिक ॥ ५३ ॥
 जो भूपहु सिर घात जड़, कूरम घल्लहिँ कूर ॥
 तो स्वयं स्वामि समीपही, सत्रुन गंजहिँ सूर ॥ ५४ ॥
 स्वामि दये न लरन संपथ, बेलि नृप तजन न बैस ॥
 नय विचारि इम इन निकट, सकल रहे सुभटेस ॥ ५५ ॥
 वीर जिते पहिलैं बढिय, तिन नैन मन्निय भौहँ ॥
 अथयसिंह संगहि उठिय, भयद फुरावत भौहँ ॥ ५६ ॥
 कहि कुवैन उठि कूरमन, निजदल पिल्लिय जाय ॥
 यह सही न बलवन अधिप, लगिय सोरविच लाय ॥ ५७ ॥
 अभयसिंह अरु देव इत, कुप्पि चलय जिम काल ॥
 सिर धैरसत अँजलोकसौं, पय परसत पायालैं ॥ ५८ ॥
 सालम अरु कूरम सुभट, जुरि इत प्रबल जरुर ॥
 बुंदिय दल सिर बगलैं, सकल चढे बढि सूर ॥ ५९ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीप-
 तिवुधसिंहचरित्रे ज्ञातदक्षिणगतजयसिंहत्यक्तकाणीखोहग्रामबुध-
 सिंहबुन्दीदिग्गमन १ आत्तसैन्यसालसिंहबुधसिंहसंमुखसरणा २

॥५२॥ १ जैनैनी २ अवा ॥ ३ ॥ ४ मारंगे ॥ ५ ॥ ६ सौगन २ पुनि ३ उत्तम नहीं है ॥ ५५ ॥ ७ कहे
 ८ सौगन नहीं माने ६ भय देनेवाले ॥ ७ ॥ १० अपनी सेना को भेजा ॥ ५७ ॥ मस्तक
 १२ ब्रह्मलोक से १३ चितता है और पैर १४ पाताल का स्पर्श करते हैं ॥ ५८ ॥ ५९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुन्दी के भूपति
 बुधसिंह के चरित्र में राजा जयसिंह को दक्षिण में गया हुआ जान कर राव-
 राजा बुधसिंह का काणीखोह नामक ग्राम को छोड़ कर बुन्दी की ओर आ-
 ना १ सालमसिंह का बुन्दी से सेना लेकर बुधसिंह के सम्मुख जाना २

बुधसिंह और सालमसिंहके युद्धका प्रारंभ] सप्तमराशि-द्वाविंशमयूख ३१४७)

सालमसिंहसहाय जयसिंहसैन्यसहित जयपुरसामन्तपञ्चककुसथ-
लारूपनगरनिकटसालमसिंहसंमिश्रणा ३ प्रत्यहद्विशतमुदासिंहसू-
र्वकबुधसिंहबुन्दावनवासार्थजयपुरसामन्तभक्षण ४ जयसिंहभी-
तित्यक्तबुधसिंहकतिपयबुन्दीसैन्यसालमसिंहमिलनकतिपयसाम-
न्तोदासीनभावतटस्थतासादन ५ सालमसिंहसैन्यभीतबुधसिंहस्य
युद्धाकरणार्थम्वसामन्तशपथदापन ६ देवसिंहाभयसिंहादिकतिप-
यसामन्तशपथमंगपूर्वकसमरसज्जभवनवर्णनंद्वाविंशोमयूखः ॥३२॥

आदितः सप्तत्युत्तमद्विशततमः ॥ २७० ॥

[दोहा]

सक हय वसु सत्रह १७८७ रामय, माधव दरस ३० मिलाप ॥

घटिय रुद्र ११ रविके चढन, उलटि समुद्रन आप ॥ १ ॥

[दुर्भिला]

दुव सेन उदगगन खगग समगगन अगग तुरगगन वगग लई ॥

माचि रंग उतंगन दंग मतंगन सजिज रनंगन जंग जई ॥

सालमसिंह की सहायता पर राजा जयसिंह की भेजी हुई सेना सहित जयपुर के पांच उमरावों का कुसथल नामक नगर के समीप सालमसिंह के सामिल होना ३ जयपुर के उमरावों का प्रतिदिन दोसौ रुपये लेकर बुन्दावनवास करने की बुधसिंह से कहलाना ४ जयसिंह के भय से बुन्दी की बहुधा सेना का बुधसिंह को छोड़ कर सालमसिंह में मिलना और कितने ही उमरावों का उदासीन भाव से तटस्थ रहना ५ सालमसिंह की सेना से डरे हुए बुधसिंह का अपन उमरावों को नहीं लड़ने के सौंगन दिलाना ६ देवसिंह और अभयसिंह आदि थोड़े से उमरावों का सौंगन नहीं मान कर युद्ध के अर्थ तैयार होने का बत्तीसवां मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ सितार २७० मयूख हुए ॥

१ वैशाख मास की २ अमावास्या के मिलने पर ग्यारह घड़ी दिन चढ़े पर समुद्रों का ३ पानी उलटा ॥ १ ॥ ४ उदय [उछलने हैं अग्रभाग जिनके ऐसे] खड्ग लेकर दोनों सेना के ५ सब लोगों ने घोड़ों की बागें आगे लीं अर्थात् घोड़े उठाये उस युद्ध में युद्ध जीतनेवाले सजे हुए ऊंचे हाथियों का ६ युद्ध हुआ

लागि कंप लजांकन भीरु भजाकन बाक कजाकन हाक बढी॥
 जिम मेह ससंबर यों लागि अंबर चंड अडंबर खेहचढी॥२॥
 फहरकि दिसान दिसान बडे बहर्गकि निसान उडैं बिथरैं ॥
 रसना अहिनापककी निकसैं कि परा भल होरियकी प्रसरैं ॥
 गज घंट ठनंकिय मेरिं भनंकिय रंग रनंकिय कोच करी ॥
 पखरान अनंकिय वान सनंकिय चाप तनंकिय ताप परी ॥ ३ ॥
 धमचक्र रचकन लागि लचकन कोल मचकन तोल कढ्यो ॥
 पखरांलन भार खुभी खुरतालन पैपाल कपालन साल बढ्यो ॥
 डगमगि सिलोच्चैय शृंग डुले भगमगि कृपानन अंगि करी ॥
 बजिखल्ल तवल्लन हल्ल उभल्लन भुम्मि हमल्लन घुम्मि भरी ॥४॥
 मचि घोरन दोर दुश्ओर समीरन जोर उमीरन घोर जम्प्यो ॥
 अभमल्ल उछाहन हड्ड हठी कछवाहन गाहन चाह क्रम्यो ॥
 सुर्वे जैत इतैं भट देव सही करि स्वांमि महीहित संग सज्यो ॥

जिस से १ लज्जित होनेवाले और भागनेवाले कायरों को कंप [धुजनी] लग
 कर २ बुढ़ करनेवाले वीरों के घबरावों की हाक बढी और ३ जल सहित मेघ
 के लमान भयंकर आडंबर से आकाश में खेह [रंजी] चढी ॥ २ ॥ ४ घडी
 ध्वजायें और छोटी ध्वजायें फरक फर दिशा दिशा में उड कर फैलीं सोमा-
 नों ५ क्षेपनाग की जिह्वा निकलती है अथवा होली की झाल फैलती है
 उल्ल श्रुद्ध से हाथियों की घंटा ६ नायक और ७ कनयों की कड़ियें पर्जी ८
 घोड़ों की पाखरों का भणकार चाणों का भणकार और धनुषों के खिचने से
 भय हुआ ॥ ३ ॥ उस बुढ़ में टकर लेने से भूमि में लचक लग कर भूमि को
 धारण करनेवाले ९ चाराह के झुकने का तोल कडा १० पाखरों वाले घोड़ों
 के भार से खुभी खुरतालों से ११ क्षेपनाग के कपाल में साल बढा १२ पर्वत
 छिन कर उनके शिखर डुलने लगे और १३ तरवारों से चमकी हुई १४ अग्नि
 गिरी, उस हल्ले के बहाव में ज्वाल के ऊपर १५ तवल्ल (कुठार विशेष) बज
 कर भूमि हमल्लों से घूमने लगी ॥ ४ ॥ घोड़ों की दौड़ से दोनों ओर का १६
 पवन चल कर अमीरों [सरदारों] का भयंकर चल जमा उस समय हठवाला
 ठाढा अजयसिंह कछवाहों को मारने की चाह से १७ चला इधर जैतसिंह का
 १८ पुत्र देवसिंह निरपय ही अपने १९ स्वामी [बुधसिंह] की भूमि के अर्थ स-

दुहुओर कुलाहक तोप दगी लागि भई बलाहक नंद लज्यो ॥५॥

उततैं कछवाहन उग्र उछाहन बेग सु बाहन बग लई ॥

बनि बुंदिय बालम जंग सु जालम संगहि सालम दौर दई ॥

परि रिद्धि कृपानन चंड चुदानन गिद्धि उडानन गूद गहैं ॥

गनं धीर गुमानन पीर प्रमानन वीर कमानन तीरबहैं ॥ ६ ॥

बढि बुत्थिन बुत्थि छई बसुधां लागि लुत्थिन लुत्थि परैं प्रजैरैं ॥

घटैं सेल घमाकन रंग रमाकन हड्ड सु हाकन होस हरैं ॥

लाखि खग उदगगन मग लगी जुरि अछरि जग प्रजापतिज्यौं

गलबाहैं करैं करि बीर बैरैं गमनैं गन गैवरकी गतिज्यौं ॥ ७ ॥

छननंकि उडानन बान छये ठननंकि गपंदन घंट घुरे ॥

फननंकि दुँवाहन टोप फटे रननंकि सिपाहन कोचै रुरे ॥

डुलि भैरव डैरुवतैं डहंकी डरि डाकिनि साकिनि चाँकिचली ॥

जिजत हुआ उस समय दोनों ओर १ कोलाहल करनेवाली अथवा खोटा ला-

भ करने (भारने) वाली अथवा कु (पृथ्वी) का लाभ करनेवाली तोपें चलीं जि-

नसे २ भादवा के ३ मेघ की ४ गर्जना लज्जित हुई ॥ ५ ॥ उधर से बड़े उत्साह

वाले कछवाहों ने घोड़ों की शीघ्र बागें उठाई और उनके साथ ही युद्ध में

जुलम करनेवाला सालमसिंह ६ बुन्दी का पति बन कर ७ दौड़ा, भयंकर चु-

हाणों के खड्गों के ८ निरंतर प्रहारों से उड़ते हुए भीलों ने गूद ग्रहण किया,

धीर लोगों के ९ समूह के घमंड की पीड़ा का प्रमाण करने के लिये वीरों की

कथाओं से तीर बहते हैं ॥ ६ ॥ जिनसे बूथें [मांस के टुकड़े] चढ़ कर १० भूमि

ढक गई और ११ लोथ (मृतक शरीर) पर लांथ गिर कर जलने लगी १३ यु-

द्ध में क्रीड़ा करनेवाले वीरों के १२ शरीरों पर भालों के घमाके होकर हाडा

लत्रियों की हाक उनकी चाहना मिशते हैं १४ उदग्र तरवारों को देख कर

अप्सरायें १५ जिसप्रकार दक्ष पजापति के यज्ञ में गईं तिसप्रकार इस युद्ध

के मार्ग में लगीं, वे गलबाहीं करके वीरों को बरती हैं और उनका समूह

१६ हाथियों की चाल के समान चलता है ॥ ७ ॥ छनंक शब्द करके उड़ने वाले

वाण छागये और ठनंक शब्द करके १७ हाथियों के घंटे बजे फनंक शब्द करके

१८ वीरों के टोप फटे और रणंक शब्द करके १९ सिपाहों के कवच वजे भैरव

के डैरु से २० चमकी हुई डाकिनियें और साकिनियें (देवी की दासी विशेष)

डर कर इधर उधर डुल कर चोंक कर चलीं

नचि नारद *नञ्चविसारद वहाँ बिबिंवारद भाँति मिले खुरली ॥८॥
 कटि खग कलापं रु दंत कटें कटि कुंभं मउत्तिन मेह फुरैं ॥
 तरिताँ तँजु तेग तहाँ तरकैं घन गज्ज मतंगज गज्ज घुरैं ॥
 बँक पंतिय दंतियँ दंत बढे चहुँओर अचानक अँभ चढे ॥
 कटिकैं उडि चातक घंट कढे प्रति पक्खर भेक अनेक पढे ॥९॥
 यह आनि सुमाँकरमैं बरखा बढि माधवंमास अँमा बिथुरयो ॥
 लाखि नायक सूरन हूरन हूरन अंगनँ अंग अनंगँ फुरयो ॥
 इत सूरन चंदन अँस्र चढे रस कैं इत हूरन राग रचे ॥
 उमहे इत सिंधुनकी ध्वनितैं सँसुँहै उत सिंजितैं सह मचे ॥१०॥
 इत डाकिनि दूति कँजाकिनि ओ इत साकिनि नाँकिनि या
 ससखी ॥

सब हूर सुहागिनि इक अभागिनि बुद्ध विभागिनि सो बिलेखी ॥

*नाचने में चतुर नारद नाचा और दाँ मेघों के समान शस्त्र चिन्हा जाननेवाले
 वीर मिले। हाथियों के कलावे [गरदन] कट कर दंत निकलते हैं और कुंभस्थल
 कट कर मोतियों का मेह होता है। शीजली के विस्तार वाले खड्ग चलते हैं और
 रमेघ की गर्जना के समान हाथी गर्जना करते हैं। युगलों की पंक्ति के समान
 १ हाथियों के दंत कट कर अचानक चारों ओर ७ आकाश में चढते हैं और
 हाथियों के घंटे कट कर चातक [पपीहा] के समान निकलते हैं और पाखरों
 रूपी अनेक मँडक बोलते हैं ॥ ९ ॥ इसप्रकार ८ पुष्पों की खान ऐसी वसंत
 ऋतु में ९ वैशाख मास की १० अमावास्या के दिन वर्षा बही, जहाँ ११ वी-
 रपतियों को देख कर १२ अप्सरा अप्सरा प्रति १३ प्रत्येक अंग में १४ कामदे-
 व बड़ा इधर वीरों के चंदन रूपी १५ रुधिर चढ़ा और उधर प्रीति करके अ-
 प्सराओं ने गाना रचा इधर वीर लोग १६ सिंधवीरागनी [बडाराग] की ध्व-
 नि पर उत्साहित हुए और उधर १७ सस्मुख [अप्लगाओं में] १८ भूषणों
 का शब्द हुआ ॥ १० ॥ १६ मुह्र कराने वाली इधर डाकिनी और इधर सा-
 किनी दोनों सखियों सहित २० अप्सराओं ने यात्रा की। यहाँ 'य' शब्द या-
 त्रा वाचक है यथा 'या यात्रायाम्' इति शब्दार्थवितामणौ ॥ वे सब हूरें सुहा-
 गिनी हुईं उनमें जो बुधसिंह के २१ वंश में आईं वही एक अप्सरा दुहागिनि
 रही सो २२ रोई (बुधसिंह डर कर मुह्र में नहीं आया इसकारण उसके घंट
 में आई हुई अप्सरा ही निर्भाग्य रही) उस अभागिनी ने

हुत हार सिंगार बिगारि दये धुपि अंजन रोदन वारि बटयो ॥
 कर कंकन फोरि मगोरि कलापहिं छोरि अलापहिं ताप सहयो ११
 यह आइय डाकिनीकी सिखई धँवहीन भई अन छोह छई ॥
 अति आरति अच्छरिकी लखिकैं हसि डाकिनि डिंडिम डक दई ॥
 सहनाइय सुंड़िनकी करिकैं गन बावन ५२ गावनमें गँहकैं ॥
 कटि मुंड रु रुंड किरैं^{१२} इतकों चँउस छि^{१४} न भुंड नचैं चहकैं ॥१२॥
 पखराँल तुरंगन पूर किते नखगोल कुरंगन फाल मचैं ॥
 भट वार कटारन पार करैं आसि आर अंगारन मार मचैं ॥
 फटकारि मतंगज सुंडि फिरैं कटकारि चुहानन रुंड क्रमैं ॥
 हलकारि चुरेलिनि होस हरैं ललकारि भयंकर भून अमैं ॥१३॥
 खँग धारन धार खिरैं खटकैं पलचोरिन भुंड कटैं कपटैं ॥
 खुरतारन भार खुदै पहुमी असवारन वार दटैं दपटैं ॥

१ शीघ्र हार शृंगार बिगाड़ दिओ और ३ राने का पानी (अश्रु बहने से उत्पन्न) क-
 ज्जल धुप गया, हाथों के कंकणों को फौड़ कर ४ कटिमखला (कण्णगती) को मरो-
 ड (तांड) कर और ५ गाना छोड़ कर दुःख सहा ॥ ११ ॥ यह अप्सरा ६
 डाकिनी के सिंगाने से बुधसिंह को बरने को यहां आई थी मो ७ पनि से
 हीन होकर ८ अत्यन्त क्रोध में हुई इस अप्सरा की अत्यन्त ९ पीड़ा देख कर
 डाकिनी हस कर अपनी डिमडिमी [वाच विशेष] बजाई धीरे धीरे हाथियों
 की कटी हुई १० सुंडों की सहनाइयें बना कर बावन और ५२ गावन में ११ प्रसन्नता
 की बोली बोलते हैं, रुंड और सुंड कट कर १२ गिरते हैं और इधर १३ चौंसठ
 योगिनियों का भुंड नच कर बोलते हैं ॥ १२ ॥ कितने ही १४ पाखरों वाले घोड़ों
 का समूह १५ नखरा करनेवाले १६ हिरणों की छलांगें अगते हैं वीर लोग वार
 से कटार पार करते हैं और १७ तरवारों की उजाळा से अंगारों की मार मच-
 ती है १८ हाथी सुंड को फटकार कर फिरते हैं और १९ सेना के जन्तु चुहाणों
 के समूह २० चलते हैं उन चुहाणों की हलकार [ललकार] चुड़ैलों की चोट को
 मिटाती है भयंकर ललकार से भून फिरते हैं ॥ १३ ॥ २१ तरवारों की धार
 पर तरवार की धार लग कर खिरती और खटकती है और २२ रांम ज्ञानि
 वालों का समूह शीघ्रता से कपटते हैं घोड़ों की खुरतालों से भार से ज़मी
 खुदती है और असवार अपने वार से २३ दौड़ते और दमाने हैं कितने ही वी

उपकारन कार किते उमहे सिव धारन काज गहैं सिरकों ॥
 दल मारन मार मिले हुवघाँ मद बारन बार चले चिरकों ॥ १४ ॥
 घमसानन बान उडाननलै अरि प्रानन पीवत काल अही ॥
 चहुवाननके करकी उपमा पवमान न मानस वहाँ निबही ॥
 करवालन चंड उडी चिनगी भट जालन भीर भिरैं भुंगसैं ॥
 बढि ज्वाला करालन लोक बरैं दिक्पाल कपालन साल बसैं ॥
 गजराजन ठाल ठहैं ठरवैं रत भाजन घाय भरैं भभकैं ॥
 लागि लाजन सूर लरैं लटकैं छटकैं भुव काजन लोहैं छकैं ॥
 कटि कालिक पीहैं किरैं कलिमँ फटि मस्तक खंड उडैं फबिकैं
 जिम सैलनशुंग खिरैं बिखरैं प्रतिमँल्ल पुरंदरके पबिकैं ॥ १६ ॥
 मथि मथैनि मँथ गहैं गतिसौं गन गिद्धनि गोदँ गिलैं गँहकैं ॥
 मनु ग्वालनि मट्ट दही मथिकैं नैवनीत निकारन वारनकैं ॥

र उपकार के १ काम पर २ उत्साह युक्त होते हैं और शिव को धारण
 कराने को मस्तक उठाते हैं सेना को मारने की मार से ३ दोनों ओर से
 मिले और ४ मस्त हाथियों के मद का पानी बहुत समय तक चला ॥ १४ ॥
 ५ युद्ध में उडान लेकर बाण ६ काले सर्पों के समान शत्रुओं के प्राण पीते
 हैं. वहाँ पर चहुवाणों के हाथों की उपमा ७ पवन और ८ मन से भी नहीं
 निभी ९ खड्गों से भयंकर अग्निकण उड़कर १० वीरों के समूह से भिड़कर
 ११ जलते हैं भयंकर ज्वाला बढकर लोक १२ जलते हैं और दिग्गजों के क-
 पालों में शाल बसते हैं ॥ १५ ॥ हाथियों के ऊपर से १३ बड़े झंडे गिरकर प-
 डते हैं और भरेहुए घाव १४ रुधिर के पात्र होकर उझलते हैं भागने की ल-
 ज्जा लगकर सरवीर लड़कर लटकते हैं और १५ भूमि के अर्थ गिरकर १६ श-
 खों से छकते हैं १७ कलेजा और १८ प्लीहा [तिल्ली] कटकर १९ युद्ध में २०
 गिरते हैं और जिसप्रकार २१ शत्रु २२ इन्द्र के २३ वज्र से पर्वतों के शिखर
 खिर खिरकर बिखरें तिसप्रकार फटे हुए मस्तकों के टुकड़े उड़कर २४ शोभा
 देते हैं ॥ १६ ॥ २५ विलोवणी रूपी २६ मस्तक को लेकर ग्रीधनियों का समू-
 ह उनको मथकर २७ भोजी [मास्निष्क] खाकर २८ प्रसन्नता की बोली बोलती
 हैं सो मानों ग्वालनी दही के २९ मटके को मथकर ३० मक्खन निकालने में

चहि मार दुधारै चलों चमकै असवार तुखारै कटैं उलटैं ॥
फटि मक्कुन ऊरु फटैं उछटैं कटि बाहुल बाहुल बाहु कटैं ॥१७॥

(दोहा)

इहि रन बिच बलवन अधिप, अभयसिंह अति वीर ॥
फतमल्लहिं खोजन फिरत, हुलसि हड्ड हमगीर ॥ १८ ॥
जबहि पंचपुजयसिंहके, ये कूरम उमराव ॥
बुंदीपति अगै बिदित, बुल्ले कुबच वढाव ॥ १९ ॥
इनहुमै फतमल्ल पँह, सारसोप पति मूर ॥
कहि कातर अभमल्लको गहयो बहुत मगरूर ॥ २० ॥
इहि कारन अभमल्ल अब, तिहिं हेरत गहि तेग ॥
दुरयो कहाँ कूरम दैरित, वीर बतावहु बेग ॥ २१ ॥

(पट्पात)

जिम नागहिं खगगीज सृगहिं सृगगीज महावन ॥
जंमहिं जिम जंभारि मधुहिं मानहुँ मधुसूदन ॥
पानी जिम पावकहिं तुनहिं पावक जिम तक्कत ॥
सजव कपोतहिं सेन हनन हेरत जिम हक्कत ॥

विलंब नहीं करती है. मारना चाहकर दो १ धारोंवाले चमकते हुए खड्ग चलते हैं जिनसे सवार और घोड़े कटकर उलटते हैं उन खड्गों से ३ जंघात्राण कटकर ४ जंघायें कटकर उछलती हैं और ५ दस्ताने [पाहुत्राण] कटकर ६ बहुत बाहु कटते हैं ॥ १७ ॥ १८ ॥ ७ छोटे वचन ॥ १९ ॥ ८ कायर ॥ २० ॥ ९ डरकर ॥ २१ ॥ जिस प्रकार १० सर्प को ११ गरुड़ और सृग को बलवान् १२ सिंह. जम्भासुर को जैसे १३ इन्द्र और जैसे मधु दैत्य को १४ विष्णु भगवान् १५ अग्नि को जैसे पानी और वृषों को जैसे अग्नि, कबूतर को जैसे बेगवान् १६ शिकरा (बाज पत्नी) मारने को हेरकर * चले तैसे अथवा

* इस छन्द में "हनन हेरत जिम हक्कत" इस क्रिया पद के आये पीछे फिर उपमा दी है सो समाप्तपुनरात्त दोष है परन्तु क्रिया के आये पीछे एक ही उपमा फिर दी जावे वहां यह दोष होता है किन्तु क्रिया आये पीछे फिर अनेक उपमा आजावे वहां यह [समाप्तपुनरात्त] दोष नहीं रहता सो ही यहां जानना चाहिये ॥

आखुँहिं विडाल तिमिरहिं अरुन नर रंकहिं दारिद्रनिभ ॥
 फतमल्ल रूप पौमिनि फिरत इम हेरिय अभमल्ल इहाँ २२
 (दोहा)

समुख पिक्खि फतमल्लसों, इम अक्खिय अभमल्ल ॥
 गीदर गाल वजायकैं, अब किन करत उभल्ल ॥ २३ ॥
 इम हकारि बलवन अधिप, मंडत वानन मेह ॥
 उफनावत आयो उमँडि, दँस न मावत देह ॥ २४ ॥
 (पदपात)

पय दव्वत अहि पुच्छ मुच्छ अँचत मयंद जिम ॥
 सोर मनहुँ सारोंत अँगि लगगत प्रचंड इम ॥
 हेलिं मयूख हजार १००० जेठ दुपहर जनु जगिय ॥
 प्रलय उग्र जिम प्रथित लाय अंखिन अति लगिय ॥
 कानन प्रमान वानन करखि कूरम देह सु सेह किय ॥
 मदमत्त लाखहु हड्डे मरद गड्डे पँद अंगद गतिय ॥ २५ ॥

[मुक्तादाम]

जुरयो अभमल्ल इतैं रुपि जुद्ध, अरयो फतमल्ल उतैं कँलि क्रुद्ध ॥
 उभै निज स्वामिनकी भुव आस, तकावत अकहिं चकैं तमासा २६ ॥
 उभै रन दच्छ वडे उमगाव, उभै उमँडे रसवीर उगाव ॥

१ चूहे काँ २ बिल्ली ३ अंधेरे को ४ सूर्य ५ रंक मनुष्य को दरिद्र हेरे तैसे फतहसिंह रूपी
 ५ हथनी को अथवा पक्षिनी (कमलनी) को अथवा सिंह रूपी वहाधी ने हेरा ॥ २२ ॥
 ॥ २३ ॥ ७ कवच में ॥ २४ ॥ ८ सूर्य ९ सिंह १० रजक का चारुद [तोड़ादार
 चंदक के कान में डालने के लिये चारुद को डूबा करके तेज करते हैं उसको
 'सापात' कहते हैं और मतान्नर से जामकी [तांडा] को भी सापात कहते
 हैं जो हिमजभापा में प्रसिद्ध है; अथवा रजक और सापात दोनों ही चारुद
 के नाम हैं जो अत्यंत प्रवृत्ता दिग्गमे के अर्थ वीरता के अर्थ में एकार्थवाची
 दो अवर्णों का प्रयोग किया है] ११ अग्नि १२ सूर्य १३ प्रलय का शिथ जैसा
 प्रसिद्ध है १४ अंगद के समान चरण रोये ॥ २५ ॥ १५ युद्ध में क्रुद्ध होकर १६
 सेना का तमासा ॥ २६ ॥

उभै जय थप्पनहारि उथप्पि, उभै उफनाय कुबैनन अप्पि ॥ २७ ॥
 उभै दल दुल्लह सज्जित अंग, उभै भैर अँचत सुच्छ अमंग ॥
 उभै अनुरूप रिक्कावत रंभ, उभै रन अंगनके जय खंभ ॥ २८ ॥
 उभै सिव दारिद मिह्नहार, उभै पल्लचारनके उपकार ॥
 उभै कमकावत खग्ग उदग्ग, उभै चलि प्रेत हसावत अग्ग ॥ २९ ॥
 उभै भँवतें तजि मोह अलुद्ध, उभै मन वृत्ति लगावत उँद्ध ॥
 उभै तुम वाहहु वाहहु अक्खि, उभै करि सूरजकोँ निज सँक्खि ३०
 उभै कनकाचल पायन बंधि, उभै दँम उच्चत संहारि संधि ॥
 उभै तुलसी धरि मस्तक आय, उभै जल गंग उमंग अचाय ॥ ३१ ॥
 उभै वृखँजानि जुरे इक धेनुँ, उभै करिराज कि इक्क करेनुँ ॥
 उभै इक सिंहनि ज्यौँ बनईसँ, जुगे इम क्रूरम हड्ड जपीस ॥ ३२ ॥
 मिले पहिलैं दुव तीरन मार, कढे सर दोउनरभेदि करार ॥
 चट्ठहिँ चंड प्रतंचन चाप, उहँ सलँभा जिम रोपँ अमाप ॥ ३३ ॥
 जहाँ करि बानन यौँ रन जोर, मिले पुनि सेलन द्वैरभट मोर ॥
 सु कंकटँ भेदि कढे घँट सारि, किधो तरु तेजँन अँग्ग कुदौँरि ३४
 चली अभमल्ल बरच्छिय अच्छ, पग्यो छिदि कूरम बैँजि दुपच्छ ॥
 वहाँ हय ओर चढ्यो कछवाह, रुप्यो अभमल्लहु पँब्बयराह ॥ ३५ ॥

१ बढे ॥ २७ ॥ २ भड्ड ३ अपने सदृश ४ रंभा नामक अप्सरा को 'डिंगल भा-
 पा में सामान्य अप्सरा को भी रंभा कहते हैं' ॥ २८ ॥ ५ शिव का स्वस्तकोँ
 रूपी दरिद्र मिटानेवाले १ साँस खानेवालों के ७ उदग्ग (उद्वलने) हुए अग्रमा-
 ग वाला ॥ २९ ॥ ८ संसार से ९ निर्लोभी १० ऊपर ११ साक्षी ॥ ३० ॥ १२
 सुमेरु पर्वत को १३ दंड देने में १४ नीति के प्रथम संधि गुण का संहार करके
 १५ पीकर ॥ ३१ ॥ १६ वृषभ १७ गऊ पर १८ हथिनी पर १९ सिंह ॥ ३२ ॥ २०
 टीडियों के समान २१ बाण ॥ ३३ ॥ २२ क्रवच को और २३ शरीर को फोड़
 कर २४ मानों वाँस के वृक्ष का २५ अग्रभाग २६ भुशि को फोड़ कर निक-
 ला ॥ ३४ ॥ २७ कछवाहे का घोड़ा दोनों पाखू से छिद कर गिरा २८ पर्वत की
 भांति ॥ ३५ ॥

बराच्छिन जंग अपुव्व बिधाय, लई अब खापनैतें हिमलाय ॥
 किधौ धनतें कढि बिज्जु कराल, किधौ बिलतें किल कुंडलिकाल ३६
 किधौ नभतें ससि द्वैज कला कि, कढी जमके मुखतें दसना कि ॥
 हली कि हुंतासनतें कढि हेति, मयूख नभोभैनि तें अथवेति ॥ ३७ ॥
 कढी ध्वनि ठपाकृतितें कि सकास, कढे मत गोतमतें कि समास ॥
 कटाच्छ किधौ कुलटा दग कुंज, पयोभव कोरकतें अलि पुंज ३८
 कलिंदकतें निकसी जमुना कि, प्रजापति तें परिपूरि प्रजा कि ॥
 गुनलैयतें कि चले सहदादि, सहानटकी जटतें प्रमथादि ॥ ३९ ॥
 हिमालयतें जिम गंग हिलोर, किटीश्वरके मुख दंतुलिकोर ॥
 अनंतक आननतें जिम जीह, सटांधुनि थंभदितें नैरसीह ॥ ४० ॥
 नवोदनके उरतें कि उरौज, उदैगिरितें कि दिवाकरौओज ॥
 कि अंजनिके उरतें हनुमान, परासरनंदनतें कि पुरान ॥ ४१ ॥
 सुराधिपके करतें जिम सबै, कढे धनु गाँडिवतें कि कलंब ॥
 सही कपिलाननतें जलु साप, लयायेन गायनतें कि अलाप ॥ ४२ ॥

अपूर्य बुध १ करके २ स्यानों से से ३ ठंही अग्नि ली (यह तरवार का विशेष-
 ण है) ४ मेष से विद्युत् [विजुली] की क्रांति ५ विश्वय ३ काला सर्प [यह आं-
 धी दुई तरवार की उपमा है] ॥ ३३ ॥ ७ दोज के चंद्रमा की कला [जहां जहां
 अकेला 'कि' आवै वहां किधौ, किना सानों अर्थ जानना चाहिये. प्रत्येक स्था-
 न पर इसका अर्थ लिखने से विस्तार होता है] ८ दाह ९ अग्नि से १०
 ज्वाला [भाल] ११ अथवा ११ सूर्य से किरणें प्रकाश करै जैसे ॥ ३७ ॥ १३
 व्याकरण की १४ समीपता से शब्द कहे जैसे १५ नेत्रों के कौनों से १६ कम-
 ल की कली से १७ अमरों का समूह ॥ ३८ ॥ १८ पर्वत विशेष १९ जमुना
 नदी २० ब्रह्मा से परिपूर्ण प्रजा निकले तैसे २१ मत, रज, तम, इन तीन
 गुणों से सहदादि चौधीस तत्त्व निकले तैसे २२ शिव की जटा से २३ गण
 निकले जैसे ॥ ३९ ॥ २४ वाराह के मुख से २५ शेषनाग के मुख से २६ गरु-
 द के केश धुजा कर थांभे से २७ बृसिंह निकले ऐसे ॥ ४० ॥ २८ कुच २९
 सूर्य का तेज ३० वेदव्यास से ॥ ४१ ॥ ३१ इन्द्र के हाथ से ३२ वज्र ३३ बाण ३४ क-
 पिलदेव के मुख से ३५ मानों आप निकला ३६ लय को जानने वाले कलावंत
 से ॥ ४२ ॥

अभयसिंह और कोजुरामका युद्ध सप्तमराशि-त्रयचिंशमयुद्ध (११५७)

धपी जनु नीरदतैं जलधार, महाबल माधवतैं मनु मार ॥
त्रिलोचनके करतैं कि तिसूल, मउत्तिय सुत्तिपतैं कि अमूल ॥ ४३ ॥
कढे इम दोउन २ खापन खगग, मिले प्रलयानल व्है रन मगग ॥
उभै करि लाघव दाव दिखात, परस्पर देत प्रहार निपात ॥ ४४ ॥
उभै फिरि मंडल टारत वार, मचावत झार दुधारन मार ॥
दई धपि संभर दाहिन अंस, परयो कटि कूरम ख्यातैं प्रसंसा ॥ ४५ ॥
(दोहा)

हठि कूरम फतमल्ल हनि, अभयसिंह बहुवान ॥
कूरम कोजुरामकों, पिक्खत गाहक प्रान ॥ ४६ ॥
ईसरदा पुरपति अतुल, वह कोजुव कछवाह ॥
अप्पहिं खोजत इक्खिकैं, अभिमुख रचिग उछाह ॥ ४७ ॥
मिलि दोउन २ किन्नी मुदित, नागफेन मनुहारि ॥
अक्खी पुनि अभमल्ल इम, कूरम सुनहु हकारि ॥ ४८ ॥
सब तुम मिलि हमरे सुनत, भूपहिं डारी भीति ॥
तुमहुमैं फतमल्ल तहैं, अक्खी अधिक अनीति ॥ ४९ ॥
काकोदरहिं कुपयकैं, कोउन जियत सकोप ॥
फननैं हन्यो फतमल्लकों, अब तव सिर आटोप ॥ ५० ॥
फबतैं बान फतमल्लके, छत्ति अभय छैत छेक ॥
जनुं छानन जय अरु अजय, बन्यो तितैंउ सबिवेक ॥ ५१ ॥

मानों २ मेघ से ३ जलधारा १ दौड़ी. बडे बलवान् ४ श्रीकृष्ण से मा-
नों कामदेव ५ शिव के हाथ से ६ जिसप्रकार सीप से मोती निकले तिस
प्रकार दोनों ने म्यानों में से तरवार लेकर ॥ ४३ ॥ ७ प्रलय की अग्नि के
समान ८ शीघ्रता से ॥ ४४ ॥ ९ चक्राकार (गोलकुंडा) १० दौड़के बलवा-
ण ने दहिने कंधे पर दी ११ प्रसिद्ध प्रशंसावाला ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ १२ सामने
॥ ४७ ॥ १३ अफीम की ॥ ४८ ॥ १४ भय ॥ ४९ ॥ १५ सर्प को कोधित करके
१६ फणों से उडवाव ॥ ५० ॥ अभयसिंह की छाती में १७ घायों के छिद्र करके
फतहसिंह के बाण ऐसे १८ शोभा देते हैं २० मानों इस युद्ध के जय और अज-
य छानने के लिये विचार पूर्वक २१ चालनी [खरखी] बनी है ॥ ५१ ॥

यातैं कोजुवराम अब, मिलि बुल्लयो रन माँहि ॥
जिनके वानन तुम छिदे, तिनतैं गब्वहुँ नाँहि ॥ ५२ ॥

[षट्पात]

यहै सुनत अभमल्ल खग कोजुव सिर झारिय ॥

सजि कोजुव इत संगि दड्ड उर तकि प्रहारिय ॥

याके खग उदग कटि बाहुलै कर कट्यो ॥

वाकी संगि अपुव्व चखिख हिय रौठक चट्यो ॥

अरि तबसिराहि बलवन अधिप पुनि असि झारिय मत्थ पर ॥

कटि टोप सीस कटिय सकल मनहुँ बिश्वंधव बंदि घर ॥ ५३ ॥

(दोहा)

कोजुवराम सु सिर कटत, वेग वसन सन बंधि ॥

कर इक्कशहि असिबर करखि, सिर झारिय जयसंधि ५४

कोजुवको दखिन कर सु, इम कट्यो अभमल्ल ॥

यातैं गहि कर वाम असि, झारी बहुरि उभल्ल ॥ ५५ ॥

टोप कटि तिगछी तरकि, तुटि परिय तरवारि ॥

अखिय तब अभमल्ल इम, बाहु नैक विचारि ॥ ५६ ॥

जिहिं करतैं असिवर जुगत, तिरछी तरकत तुटि ॥

जनि ताकाँ हरखैं जननि, क्यों बहु थालन कुटि ॥ ५७ ॥

कहि इम कोजुवगम पर, असि झारिय अभमल्ल ॥

सिव गहि लित्राँ उडत सिर, ढरयो यहहु रनल्ल ॥ ५८ ॥

ईसरदाके पतिहिं इम, बलवन पति हनि वेग ॥

साँवलदास सुहाड पति, तक्कयो झारत तेग ॥ ५९ ॥

सर्व मत करो ॥ ५२ ॥ कोजूराम के मस्तक पर ३ दस्ताना काट कर ४ पीठ को ५ मानों दो भाइयों ने घर का पंड किया ॥ ५३ ॥ वस्त्र व से शीघ्र यांच कर ७ श्रेष्ठ तरवार खेंच कर ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ वह युद्ध की दाल ८ गिरा ॥ ५९ ॥

(मुक्तादाम)

चयी यह दूतन भूतन चारों, सुनी सब कूम्भ साँवलदास ॥
 उदायुध उग्र दिवाकर अंस, रहैं इतनी साहि क्यों रघुवंस ॥६०॥
 मिलयो अभमल्लहु उद्धत मान, धपावत धारहिँ दै बलिदान ॥
 धप्यो कुवलाश्व कि धुँधुँदे धागि, किधौं रन रावन राम हकारि ६१
 किधौं बलपैं बल बासर्व क्रुद्ध, जटासुगपैं कि लृकोदर जुद्ध ॥
 कुं अर्थ भ्रमावत हथ कृपान, दिखावत संकरों अति दान ६२
 सुहाड़पैं हू इततैं गहि संगि, मिलयो अभमल्लहिँ भैल्ल उमंगि ॥
 नची तैंह तालिनि चांसठि ६४ नारि, रची इम हहु कूम्भ रारि ६३
 जहाँ तैंह आवहिँ आवहिँ जाप, जहाँ तैंह खूटत खगगन खापैं ॥
 जहाँ तैंह प्रेत डकारत जोर, जहाँ तैंह घायन घायल घोर ॥६४॥
 जहाँ तैंह नारदको अति नञ्च, जहाँ तैंह सूरन हूरन सञ्च ॥
 जहाँ तैंह भूतन भूख प्रकास, जहाँ तैंह गिद्धिनि गूद विलास ६५
 जहाँ तैंह डाकिनि डिंडिम डक्क, जहाँ तैंह धारनकी धमचक्क ॥
 जहाँ तैंह हथिन चैंड चिकार, जहाँ तैंह फेगविकीन फिकार ॥६६॥
 जहाँ तैंह फुटत भूँ अति जोर, जहाँ तैंह अंबक तंडैव तोर ॥
 जहाँ तैंह दिग्गज कातर गज, जहाँ तैंह सोहत सूरन सज्ज ॥६७॥
 जहाँ तैंह कातर कूकत कूक, जहाँ तैंह चाहत चंचल चूँक ॥
 जहाँ तैंह फुटत फलिनि मत्थ, जहाँ तैंह सूरन हूँन हत्थ ॥ ६८ ॥

दूतों रूगी भूतों ने यह २ स्वर १ कही ३ ऊँचे किये हैं शत्रु जिसने ४ सूर्यवंशी
 ॥ ६० ॥ मानों ९ कुवलाश्व नामक राजा ७ धुँधु नामक राजा को देख कर
 ९ दौड़ा ॥ ६१ ॥ = चलवान् इन्द्र क्रोधित हुआ ९ भीमसेन का युद्ध १० भूमि
 के ११ अर्थ हाथ में तरवार फिरोता हुआ ॥ ६२ ॥ १२ सुहाड़ का पति १३
 छच्छे उत्तमाह से मित्रा १४ वहाँ पर तालियों देकर चौंसठ योगनियं सचों
 ॥ ६३ ॥ १५ तरवारों से स्थान खूटने हैं ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ १६ तरवारों की
 धाराओं की. हाथियों की १७ भयंकर चीस १८ फेरियों [स्थालिनियों] के फेत्कार
 ॥ ६६ ॥ १९ भूमि २० तामे [बाघ विशेष] २१ लृप की रीति के. दिग्गजों की २२
 कायर गर्जना ॥ ६७ ॥ २३ छलवान् २४ हाथियों के साथ २५ अप्सराओं का हाथ
 [हथलेवा जुड़ता है]

जहाँ तँहँ खगगन खंडे खिरंत, जहाँ तँहँ गैवर गंज गिरंत ॥
 जहाँ तँहँ जुगिनिको जपकार, जहाँ तँहँ रुंडन मुंडन मार ॥६९॥
 जहाँ तँहँ साकिनि सोरें सुनाव, जहाँ तँहँ पंडित जंग प्रभाव ॥
 जहाँ तँहँ हत्थन बँत्थन जुष्टि, जहाँ तँहँ तेग तरकत तुष्टि ॥ ७० ॥
 जहाँ तँहँ सोनित साँ बढि साँद, जहाँ तँहँ प्रेतन भँच्छ प्रमाद ॥
 जहाँ तँहँ चाल चुरैल्लिनि चाँकि, जहाँ तँहँ भैरव भैरव भौंकिं ७१
 जहाँ तँहँ हड्डन जालम जोर, इतैं तँहँ दुस्सह कूरम ओर ॥
 सुहाड़ेंप कूरम साँवलदास, मिल्यो अभमल्लहिं पुंजें प्रकास ॥७२॥
 कहैं दुव बाइहु बाइहु कथ, रचैं रन त्यों रवि रुक्त रत्थ ॥
 सैंरें जलजंत्र कि घायन सोनैं, जुरैं इन दोउनतैं तँहँ जोन ॥७३॥
 लरैं अभमल्ल सु बुंदिय लाज, करैं उत कूरम जैपुर काज ॥
 बहैं असि बान बरच्छिन ब्रातैं, परैं मनु भद्व विज्जुव पातैं ॥७४॥
 थैइ थैइ नच्च कबंधन थूलैं, बनैं तँहँ कातरें पत्त बँधूल ॥
 मलंगत भैरव सोनितैं मत्त, छलंगत गिद्ध बनैं सिर छँत्त ॥ ७५ ॥
 नचैं निकसे हियेंपैं कढि नैन, सैंरोज कि सोन सिलीमुख सैन ॥
 कढैं फटि बुँकन टुकक बिकास, मनौ सुमैं किंसुक मांधव मास ७६

१ टुकड़े २ हाथियों के समूह ३ जय हो जय हो ऐसा शब्द ॥ ६९ ॥ ४ कोलाहल ५ बाधों
 से [दोनों हाथों को फैला कर अंक में भर कर बाहु खुद होता है] लड़-
 ते हैं ६ तरवारें फिसल कर तूटती हैं ॥ ७० ॥ ७ लोही का कीचड़ ८ खा-
 ने का ९ भयंकर १० गाजते हैं ॥ ७१ ॥ ११ जुलम करनेवाला १२ वह जुलम
 कछवाहों की तरफ नहीं सहने योग्य है १३ सुहाड़ का पति १४ प्रकाश का स-
 मूह ॥ ७२ ॥ १५ कुंदारा जलै जिस प्रकार १६ घाबों से रक्त चलता है ॥ ७३ ॥
 १७ समूह ॥ ७४ ॥ १८ बिना मस्तक वाले क्रियावान् शरीरों का १९ समूह २० का-
 घर २१ बगूले (वातु के गोटे) के पत्तों के समान २२ रक्त से मस्त होकर २३
 बत्र ॥ ७५ ॥ २४ छाती पर नेत्र निकस कर नाचते हैं सो मानों २५ लाज
 कमल पर २६ अथवा शयन करते हैं २७ चुकों (गुड़दों) के टुकड़े होकर फट कर
 निकलते हैं सो मानों २८ वैशाख मास में २९ दाक के (केसूला के) २८ पुष्प
 फूल हैं ॥ ७६ ॥

उडैं सिर अंबर पच्छिन पेलिं, करैं जनु कालिय कंदुक केलि ॥
 उछट्टहिं ढालनमें कटि अंत, भुजंग टिपारनमें कि भ्रमंत ॥७७॥
 रुंरैं सिर अद्द फटयो इहिं रारि, दयो जनु जुगिनि खप्पर डारि॥
 सिखा कटि सूरनकी फहरात, किधौं जयकेतु प्रभंजन पात ॥७८॥
 किंरैं फटि टोपनतैं करवाँल, फँटा बिनु लेत भुजंग कि फाल ॥
 सुहावत के भरि नक्क समूल, फबैं इसँभाव मनौ तिलफूल ७९
 लगैं असि ओठ भरैं कटि लाल, पके जनु बिबैं कि पुंज प्रवाल
 उडैं कटि दंतन ओघ अखंडे, खिरैं फटि हीरनके जिम खंड ॥८०॥
 किंरैं सह मुंति प्रहारनैं कान, बनैं सह मुत्ति सु सुंति बिधान ॥
 जहाँ भरि हत्थ गिरैं अति जुद्ध, किधौं फन पंचकके अहिं छुड ८१
 तिरैं बहु खेटैंक सोनितैं ताल, मनौ कि सरस्वति कछप माल ॥
 भुक्कैं बहु सूर भटक्कैन भार, गिरैं जिम आसव मत्त गमार ८२

पक्षियों को २ हटाकर आकाश में १ सस्तक उड़ते हैं सो १ जानों
 कालिका गैद ४ खेलती है, ढालों के ऊपर ५ आँतें गिरती हैं सो मानों
 टिपारों में ६ सर्प फिरते हैं ॥ ७७ ॥ इस युद्ध में आधा फटा हुआ सस्तक
 ७ गुड़ता [लुढ़कता] है सो मानों योगिनी ने खप्पर डाल दिया है ८ वीरों
 की चोटियों कट कर उड़ती है सो मानों ९ विजय की ध्वजा १० पवन से
 पड़ती है ॥ ७८ ॥ टोपों के ऊपर से लूट कर ११ तरवारें १२ गिरती हैं सो जानों
 १३ बिना फण सर्प उछलते हैं १४ मूल सहित नासिका कट कर ऐसी
 दीखती है कि मानों १५ आसोज मास में तिलों के फूल शोभा देते हैं ॥ ७९ ॥
 १६ तरवार लग कर लाल होट कट कर गिरते हैं सो मानों १७ बिम्बफल (रक्त
 फल विशेष) और १८ सूंगों (नग विशेष) का समूह है १९ बिना लूटे हुए दांतों
 के समूह कट कर उड़ते हैं सो मानों हीरों के टुकड़े होकर खिरते हैं ॥ ८० ॥ २०
 प्रहारों से २१ मोतियों सहित कान २० गिरते हैं सो विधान पूर्वक मोतियाँ स-
 हित २२ सीपें धनती हैं ॥ ८१ ॥ उस २३ रुधिर के तालाब में बहुत २४ ढालें
 तेरती हैं सो मानों २५ सरस्वती नदी में कच्छों की पंक्ति तिरती है (सरस्व-
 ती नदी के पानी का रंग लाल प्रसिद्ध है) २७ तरवारें चला कर 'डिंगल भाषा
 में तरवार के एक बार में दो टुकड़े होजावें उसको भटका कहते हैं परन्तु
 लौकिक में इसकी खड़ी खड्ग में होगई है इसीकारण यहाँ तरवार लिखा है'

डरावत डाकिनि दंत दिखाय, जरावत साकिनि लावत लाय ॥
 तिन्हें भट नाटकके नट तोर, गिनै रस अद्भुतही नहिँ घोर ॥८३॥
 गिरै कहूँ भज्जतँ भीरुन सीस, उठावत पूर्व बिहावत ईस ॥
 गिलैं तिनको नन गूदहु गिद्ध, बुरे इमँ जे कि मरे भय बिद्ध ॥८४॥
 मिले दुवर्षा गतिके रन माँहिँ, जयँ जुरनौँ तँहिँ नाँहिँ सु नाँहिँ ॥
 लगी गर बुंदिय जैपुर लाज, करै नहिँ अंग्घ सरै नहिँ काज ॥८५॥
 भयो बल साँवलको बल भाव, दयो अभमल्ल पुगँदर दाव ॥
 चली पबिकी छवि ते असि चंड, खुल्यो सिर साँवल ज्यों गिरि खंड ॥८६॥
 (षट्पात)

अभयसिंह सुत अथ प्रबल सुगतेस १२ पूरन ॥
 दासी औरस दुव रहि चले चाहत अरि चूरन ॥
 सारसोपके सुभट बह्वि पहुंचे सुहाड़ बल ॥
 भट साँवल के भंजि दबि नानेड़ी दयो दल ॥
 इन्ह इनत पिक्खि कूरम अचलँ दोउन ३ भुगन हूर दिय ॥
 उभै पुत्र भरत अभमल्ल अब लरि अचलेस समीप लिय ॥८७॥
 अचलसिंह तरवारि परिय अभमल्ल बाँजि पर ॥
 भरत खंय हय भुक्किय इनहु भारिय इहिँ अवसर ॥
 सूर अचलको सीस तगकि तुट्यो असि उच्छट ॥

॥ ८२ ॥ १ अग्नि लाकर वीर लोग उसका नटों के २ खेल की भाँति अद्भुत रस ही मानते हैं ३ भयानक रस नहीं गिनते ॥ ८३ ॥ ४ भागते हुए फिर कायों के मस्तक समझ कर ५ छोड़ देते हैं, और वे भय से विंच कर मरे ६ इसकारण बुरे हैं अथवा उन का स्वाद मजा) बुरा है ॥ ८४ ॥ ७ वहाँ बहुत कायों के महंतक गिरते हैं जिनको पहिले तो महादेव उठालेते हैं परन्तु नहीं करने की ही नहीं थी ८ प्राणों का आघ नहीं करते अथवा पाप नहीं करने ॥ ८५ ॥ साँवलदास का बल राजा ९ बलि की भाँति होगया उस समय अभयसिंह ने १० इन्द्र के समान दाव दिया ११ वज्र की छवि से तरवार चली ॥ ८६ ॥ १२ सुहाड़ की सेना में १३ नानेड़ी की सेना को १४ अचलसिंह ने १५ दोनों ॥ ८७ ॥ १६ घोड़े पर

लियउ भेलि लागि लाह नहि बहु मंडि *महानट ॥
 अचलहिं बिदारि अभमल्ल इम सुतन बैर कछयो सकल ॥
 बिनु बाजि जाय गंज्यो बलिय बुद्धानीपुर पति प्रबल ॥८८॥
 दोहा ॥

बीर बहादुरसिंह तब, बुद्धानी पुर नाह ॥
 अथ रहित अभमल्लको, इक्खत रचित उछाह ॥ ८९ ॥
 बेग हयहिं अपटाय बलि, सम्मुह आरिय संगि ॥
 अभमल्लहिं यह लगिय इम, अंग सिर पँवि कि उमंगि ९०
 ॥ पट्टपात ॥

लगत संगि अभमल्ल छति फुटन नन छोहिंउ ॥
 बिरचि बँपा बखसीस डंकि कूरम दल डोहिंउ ॥
 बिनाँ तुरग हठ बंधि तुमुल कोऊ नहिं तक्त ॥
 यह अचिर्ज सहि संगि बढयो सम्मुह अय बँक्त ॥
 जिम तुँला दंड खंभहि जुरत उर प्रविद्ध अभमल्ल इम ॥
 बुद्धानि नगर ईसहिं सविधि तुँलिल पटक्किय अवनि तिम ९१
 [दोहा]

परयो बहादुरसिंह इत, इत सु परयो अभमल्ल ॥
 इम कूरम भट पंचप अरि, हनि सुतो हरवल्ल ॥ ९२ ॥
 पञ्चभटिका ॥

चहुवान देवसिंहहिं बिचारि, सिरदार कुम्म नारव सम्हारि ॥
 नाथाउत चालुक प्रेम नाम, किय आहव नरउर सचिव काम ९३
 संग्राम नाम चालुक्य संग, जुरि करनसिंह कछवाह जंग ॥

* शिव ने ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ १ बरछी २ पर्वत पर ३ वज्र । ९० ॥ ४ मूर्छित नहीं
 हुआ ५ मंज्रा ६ कूद कर ७ मथा = आश्चर्य है कि बरछी को सहन करके ९
 पोलता हुआ १० तफ्फ़ी की डांडी किसी खंभे से बांधी जावे तैसे ११ बेधन
 होकर १२ तोल (डंठा) कर भूमि पर पड़की ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ १३ नरुका १४
 सोलंखी १५ कार्य ॥ ९३ ॥

परिहार*परशुधर बल अचंड, जिय जोध चालुकहिं दुसह दंड ९४
 गंजन अरि साँवलदास गोर, उडि रूपसिंह चालुक्य और ॥
 जोरावर नारव कुम्म जत्थ, गुरतैस बीर चालुक्य सत्थ ॥ ९५॥
 बखतैस दड असि करत बाह, बलि उदयसिंह चालुक्य चाह ॥
 जगभालु दड अति मैचित्र जंग, सजि कूरम पृथ्वीसिंह संग ॥ ९६॥
 (दोहा)

इम बुंदिय आमैर भट, रचिग परस्पर रारि ॥

जुद्ध मिले जल दुद्ध जिम, अंबन बगग उपारि ॥ ९७ ॥

[मुक्तादाम]

चली असि बान बरच्छिन चोट, लगे कति लेत कबुत्तर लोट ९८
 उलटिग सत्त समुदन आपे, प्रकटिय कूरमको यँह पाप ॥
 थरकिय त्यों अतलादिक थान, लरकिय सेस फटा लचकान ९९
 तरकिय कच्छप पिडि सत्रास, वनै जनु अंडकटाह विनास ॥
 टिकयो किरि तुंडहिं दंतुलि टारि, चिकयो दिकैकुंजर पुंज चिकारि
 छुटै सिर छत्तिन छत्तिन छेकि, कडै बनतै जिम कुकत केकि ॥
 करकहिं कोचनको असि कटि, फरकहिं बिजैजुव ज्यों घन फटि १०१
 खरकहिं ढालनके कटि खंड, दरकहिं तौलनसे ध्वजदंड ॥
 छरकहिं छोनिय छिछिन रत्त, बरकहिं बाहुल टोप विघटत ॥ १०२॥
 भरकहिं इकहिं इक भटकि, थरकहिं रुंड लरकहिं थकि ॥
 गरकहिं खंजर पंजर गोदि, जरकहिं जोर महाभट मोदि ॥ १०३॥

* परशुराम ॥ ९४॥ नरका कछवाह ॥ ९५ ॥ आश्चर्य युक्त युद्ध करनेवाला
 ॥ ९६ ॥ दुग्ध ॥ घोड़ों की चार्गे उठा कर ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ १ जल २ जपसिंह
 का ३ कण ॥ ९९ ॥ ४ मानों ब्रह्मांड का विनाश (प्रलय) होवेगा ५ चाराह का
 मुख ६ दिग्गजों का समूह चीसली करके दूटे ॥ १००॥ चत्रियों की छातियों
 को फोड़कर मयूर कनखों को फाट कर १० खड्ग ११ पिजुली ॥ १०१॥ १२ ताड़ वृक्ष
 के समान १३ भूमि को १४ रक्त की झीछों [पिचकारियों] से १५ दस्ताने १६
 विशेष घात से ॥ १०२ ॥ १७ शस्त्र विशेष [एक प्रकार की छुरी] १८ क्षीर
 को ग्राह कर १९ प्रसन्न होकर गिराते हैं ॥ १०३ ॥

हाडों और कछवाहों का युद्ध] सप्तमराशि-त्रयस्त्रिंशमयुद्ध (३१९५)

प्लवंगेन प्रोथे सनंकिय स्वास, भनंकिय भेरि बलाहक भास ॥

रनंकिय कोचन रोचन रुंड, भनंकिय अक्खर पक्खर झुंडा ॥ १०४ ॥

खनंकिय हँडुन हँडुन खग्ग, फनंकिय फेनिल सेस समग्ग ॥

छनंकिय बान उडानन छूट, ठनंकिय घंट करी कटिकूट ॥ १०५ ॥

इतै तँह देव उतै सिरदार, हमल्लन भल्लन देत प्रहार ॥

उभै २ भपटावत सत्तिन सूर, उभै अधिबीर महा ममरूर ॥ १०६ ॥

(दोहा)

महाचंड अरु चंड मनु, दोऊ भट जम दास ॥

असु दल गाहक अँकुरे, रन मारी भव रास ॥ १०७ ॥

[षट्पात्]

देवसिंहके सुभट हनिय सिरदारसिंह खट ॥

नारवके रन रूपि देव सद्धिय द्वादस भट ॥

द्विगुन जोर लखि दुतहि अक्क पडिलै तिन्ह अँदरि ॥

अरु मंडल भिर्देवाय प्रथम पठये स्वधर्म परि ॥

हाकिनि पिसाच यह कूक दिय सु सुनि सोर नारव सुभट

दस १० मान उग्र अडे दुसह बहुरि आनि ठँडे बिकट ॥ १०८ ॥

१ घोड़ों के २ फुरणों [नासिक. गों] से ३ नोबत ४ मेघ की शोभा से वजी ५ कबचों से शोभायमान धड़ ६ नहीं गिरे हुए अर्थात् हाथी घोड़ों पर लगे हुए पाखरों के समूह वजे ॥ १०४ ॥ ७ हाडा क्षत्रियों के खड्ग ८ शरीर के हाडों पर वजे; या हड्डों के शस्त्र हाडाओं पर ही वजे [क्योंकि यहां दोनों ओर के युद्ध करने वाले हाडा ही थे] ९ भागों सहित शेष के सब फल फेन [भाग] सहित होकर फूटकार करने लगे [यहां फेनों के योग से फलों का ग्रहण है] १० हाथियों के कुंभस्थल कट कर ॥ १०५ ॥ ११ घोड़ों को १२ वीरों के पति [स्वामी] ॥ १०६ ॥ १३ सेना के प्राणों के ग्राहक १४ लड़े हुए १५ युद्ध में महामारी (प्लेग) का नृत्य हुआ अर्थात् मनुष्यों के समूह का नाश करनेवाली महामारी का नृत्य हुआ ॥ १०७ ॥ १६ सूर्य ने १७ देवसिंह के वीरों का आदर करके १८ सूर्य मंडल का भेदन कराकर १९ नरुके २० दश का प्रमाण वाले अर्थात् दश भट आ २१ लड़े हुए ॥ १०८ ॥

(दोहा)

सुभट अष्टनिज सटिकें, देवसिंह हुत दाय ॥

नारवके ते दश१०निगलि, नारव लिय निषराय ॥ १०९ ॥

(पट्टपात)

अब उन्नततम अंस उपर दिनकरें आरोहत ॥

चित्र जंग द्विप चच्छु मुदित सारथि सह मोहत ॥

देवसिंह सिरदार जय रु राधये मिले जहँ ॥

विरचत दुवर्द्धल वंधि तुमुल थल रंग जंग तहँ ॥

सत्तन खलीनें खंचिय अरुन चुक्कि संकति फनिपति चक्रिय ॥ ११० ॥

दुवर्द्धांम अधिक मंजोग सुख तेंदिन चक्क चक्रिकन तक्रिय ॥

जिम दोशाचल लैन उठयो अंजनि सुत लौसक ॥

अचवनें जिम अंभोधि विदित आतापि विनौसक ॥

चंडी जिग चंडपर खान मुष्टिक संकरखनें ॥

पन्नगपर कि भुंपर्खा गरवि तैन हिमकर आसन ॥

इम बैरिसल्ल कुल उदरन लरि समीप नैरव निचउ ॥

मानों कि भीम दह पय मुररि दुस्सासन उप्पर दिचउ ॥११

भुजंगप्रयातम् ॥

मिते बाँहिके भानुके वंस मज्झी, दुहूँ फोजमें जोरतें मोरें वज्झी
दुहूँ तोरके जोरतें भुग्मि दव्वी, इतें शोभुखा भेरि वज्जे अरव्वी ॥१२॥
भयो सेस रंकेसके बेस भिन्नो, किंटी दंतुली टारिकें तुंड दिन्नो ॥
कढ्यो पैपाल पाताल त्राता नं कांड, सख्यो वैच्छ बीभैच्छ दोले-
थ सोऊ ॥१२३॥

हठी जूटतें मेरुके कूट हल्ले, चहुँ कोदं सप्तोदके श्रोत चल्ले ॥
भजे लोक रंगगादि लोकेसं भों नें, नगें ईनकों खासके लाभा लोने
भये राग सिंधूनके लोग भिन्ने, नची जुगिनी ताल बेतान दिन्ने ॥
खिरें हड्डिपें खग बुल्लै अखंडें, मनो फगमैं चंचरी दंड मंडें ॥ १२५ ॥

उभैर मंडली धावें बाजी उड़ावें, उभै वारकी मारमें नाहिं आवें ॥
इतैं लज्ज बुन्दीसकी ठाकि ठिल्लैं, उतैं ख्याल्ह जैसिंहके जोर
खिल्लैं ॥ ११६ ॥

उभै जेठके भानके मानें उगगे, परैं फोजके ओजके अंसु पुगगे ॥
वकी डाकिनी डक्क डैरों बजाये, घने भेदके मेद भेराँ अघाये ११७
फिरैं फेकरी चंड फेरंडे फुल्ले, भिरैं भूत के रंतमें मत्त भुल्ले ॥
भ्रमैं गिद्धनी चिलहनी मेद भख्लैं, रमैं पंकमें कंक नाँ संक रक्खैं
तपैं रंगी बाजीनके तंग तुहैं, छिपैं भीरुँ बिदाव केँ चाव छुहैं ॥
उलट्टी नटीलौं गिरैं को उछहैं, फिरैं रीस केँ ईसके सीस फहैं ११९
कटी के पंताका उडी अँवभ कहैं, चँमू मेघके जोर ज्यों मोर चहैं ॥
भुकेँ झंड बेतंडपैं बात अंपैं, किधौं सैलके संग खज्जूरि कपैं १२०
बन्यों संकुली सत्थ लै बँथ बाँहीँ, निभयो पोनेपैं वहाँ सैदागोन नाँहीँ

१ दौड़ में २ घोड़ों को उड़ाते हैं सो दोनों ओर के प्रहारों में नहीं आते इधर तो बुध-
सिंह की लज्जा के अर्थ (कि हमारे कारण से ही उसकी लज्जा रह जावे) शत्रुओं
के ठोक कर ३ हटाते हैं और उधर जयसिंह के जोर से लड़ाई का अंजल खेलाते
हैं ॥ ११६ ॥ दोनों ही ज्येष्ठ मास के सूर्य के ४ समान उदय हुए जिनकी ५
ताप की ६ किरणों के पहुंचने से सेना गिरती है उन फौजों के गिरने से डा-
कनियें डीव बजाकर चकने लगतीं और बहुत प्रकार के ७ मांसों से भैरव ८
पुष्प हुए ॥ ११७ ॥ स्यालनियें फिरती हैं और भयंकर ९ स्याल फूलते हैं १०
जधिर में मस्त होकर श्रुते हुए मून परस्पर भिड़ते हैं और उड़ती हुई श्रीधनि-
यें और नीलें भांस खाती हैं उस लोही भांस के कीचड़ में कंक [डीव] पक्षी
निःशंक होकर झीड़ा करते हैं ॥ ११८ ॥ ११ युद्ध में तपे हुए घोड़ों के तंग तूट-
ते हैं १२ कायर लोग भागकर उत्साह छोड़कर छिपते हैं और कितने ही बल-
ही हुई नटी के समान उछट कर गिरते हैं और क्रोध करके शिथ की गुंडमा-
ला में गणहूए मस्तक भी फटते हैं ॥ ११९ ॥ १५ सेना में कटी हुई १६ घबजा
जैसी दीखती है जैसे मेघ के जोर से १७ आकाश में मयूर चढ़ते हैं १७ पवन
लगने से १८ हाथियों पर कड़े ऐंसे दीखते हैं जैसे १८ पर्वत के शिखर पर ख-
जूर का वृक्ष कांपता है ॥ १२० ॥ २० एक दूसरे को सुजाओं में भरकर यह
सेना ऐसी २१ सरगई कि जिसमें होकर पवन का २१ सदागोन [निरंतर ग-

गद्दे कोद कटार के पार गोदें, खुरों बाजि के घुम्निकें भुम्मिखोदें
 फिर के गदा मारि गै मत्थ फारें, चिरें कुंभ मुत्तीनको रंगचोरें ॥
 कटें हाथि होदेनके उर्ध्व कच्छो, मुरें तारकी बग ज्यों बारमच्छी
 किते कुपि होदेनमें सूर कुदें, मगोरें निमादीनके कंठ मुदें ॥
 भिदें त्यों गजाजों के जीव भुलें, बढे मोदमें के पदप्रलत बुलें १२३
 नदें १२ भंभंकी फुट्टि भेगी नगारे, बढें के बिदारें दहा हाथ हारे ॥
 चढी अग्नि जंगी चिनगी चमकी, सिकी आर संसारकी बुद्धिसंकी
 तपें पक्षखरी बाजि दज्जैं तरकैं, जपें राम के घुम्निकें भुम्मिजकैं
 खिरें हड्ड के झुंड के खंड खंडी, मनो बुद्धि ओरेनकी मेघ मंडी ॥ १२५ ॥
 चलें रोपें त्यों चाप जीवों चट्टें, नचें खेचरी भूचरी प्राण नट्टें ॥
 बहें बेगतें तेग सैनाह बहैं, किधों सैबुकी पंतिमें तंति कट्टें ॥

मन] नहीं हो सका "पवन का नाम ही सदागति है वह मार्गक नहीं हुआ"
 कटार ग्रहण करके उसका १ कोना [नोक] सांस में २ पार करते हैं और कि-
 तने ही घोड़े फिर कर भूमि का लोदने हैं ॥ १२१ ॥ कितने ही गदाओं से
 ३ हाथियों के भस्तक फाड़ते फिरते हैं और चिरेहुए ४ कुंभस्थलों से ५
 मोतियों का रंग चुराते हैं अर्थात् हवेलरंग के मोतियों को रुधिर से लाल
 कर देते हैं ७ घोड़ों को हाथियों के हादों से ६ ऊपर निकालते हैं वे घोड़े
 सूत के तार की बाग से ८ पानी में मच्छी जुड़े तैसे खुड़ते हैं कितने ही धी-
 र कांध करके हांदे में कूदते हैं ९ हाथी के सवारों के कंठ परोड़ कर प्रसन्न
 होते हैं १० कितने ही महावत भिड़कर जीव रूलते हैं कितने ही हाथियों के
 ११ पैरों में दब कर सूँछिन होकर बोलते हैं ॥ १२१ ॥ १२ संभ [फूटे बाजे के शब्द का
 अनुकरण है] करके कितने ही १४ नोयत और नगारे १२ वजते हैं कितने ही फ-
 देहुए हाथ हाथ करते हैं १५ युद्ध संबंधी अग्नि चढ कर उसकी चिनगारियों
 चमकीं जिन ही ज्वाला से ११ जल कर संसार की बुद्धि संकित हुई ॥ १२४ ॥
 पालरों वाले घोड़े तप कर १७ जलते हैं तड़कते हैं अथवा कूदते हैं और कि-
 तने ही राम राम करके घूम कर भूमि पर १८ गिरते हैं कितने ही हाडों के
 झुंड दुकड़े दुकड़े होकर खिरते हैं सो मानों मेघ ने १६ ओलों (गडों) की वृष्टि
 रची है ॥ १२५ ॥ ज्यों २० वायु चलते हैं त्यों पलुव की २१ मल्लिका चढकती
 है खेचरी भूचरी [देवी की दासी विशेष] नचती है और प्राण २२ नष्ट होते
 हैं वेग से तरवारें पहकर २३ कायच कटते हैं सो मानों २४ लायन की पंक्ति

भरें सुंढि हत्थीनके सुंढ झुकै, कटैं प्रीथ बाजीनके कंक कुक्कै
 भई रुंधि त्रैलोक्यको सुंधि भारी, छई स्वर्गकी सीमला भीमछारी
 तकैं वीर कायारस आयास तंदा, चढी राति सोपै अर्मा नष्टचंद्रा॥
 सजी दैव त्रैजामके पुब्ब संका, वनैं भौनकैं विष्फुरी चंद्र बंका॥
 सबैं संकुली ध्यांत संग्राम सीमा, भैचक्री फिरी आर अंगार भीमा
 दिपैं वहां कटारी उडो अंबभ दीसी, सुही चंद्रको मोहिनी रोहिनीसी
 जरैं गैन गिद्दीनके नैन नैककी, सुही मैंगकी तीनइतारा थरककी
 उडैं हीर जो कांलिनी इरक१ उगैं, प्रभा जासैं अंधारपैं मारपुगैं
 क्रमैं गैन के भउ जैया जोर कहैं, गृहाकांरि आदित्य जे चयारि४ चहैं
 छुटयो कटि त्रैमूल उछीनैं छोहैं, सुही तीनइतारीनतैं पुष्य सोहैं॥

मैं तांत निकलती है ॥ १२६ ॥ सुंढें कटने से हाथियों के समूह झुकते हैं और
 घोड़ों के १ फुरसे [नासिका] कट कर २ सांसाहारी पत्ती पिघोष कूकते हैं
 इसप्रकार तीनों लोकों को ३ गोक कर भारी सुंधि हुई और वह ४ भयंकर
 भस्मी स्वर्ग की सीमा तक छागई ॥ १२७ ॥ ५ जरीर के साथ ६ परिश्रम
 होने से वीर ७ आलस्य अथवा निद्रा को ताकते हैं उस समय नष्टचंद्रा ८
 अयाचास्या के समान दिन में ही रात्री होगई ९ रात्रि के पहिले ही दैव ने
 यह १० संघा कर दी जो ११ सूर्य के बिना और चंद्रमा से १२वां भू (पंध्या)
 रात्री वही ॥ १२८ ॥ संग्राम की सब सीमा १४ अंधेर से १३ भरगई उस स-
 मय ज्वाला और १६ अंगारों की १७ भयंकर १५ नक्षत्र मंडली [तारा मंडल]
 फिरी, 'अब यहां नक्षत्रों का रक्त वर्णन करते हैं' यहां १८ आकाश में चढी
 हुई कटारी दीखती है सो ही चंद्रमा को १९ मोहनेवाली रोहिणी शोभा दे-
 ती है 'रोहिणी चंद्रमा की छी है इसकारण उसको चंद्रमा को मोहनेवाली
 कही है' आकाश में भीधनियों के नेत्र और २० नासिका जलते हैं सो ही २१
 सृगसर नक्षत्र के तीन तारे ठहरे, वहां हीरा उडता है सोही २२ आर्द्रा नक्षत्र
 का एक तारा उद्य हुआ २३ जिसकी कान्ति की मार अंधरे पर पहुँचती है
 ॥ १३० ॥ कितने ही तीरों के भाले २४ प्रत्यंचा के जोर से निकल कर आकाश
 में फिरने हैं सो २५ वर के आकार २६ पुनर्वसु के चार तारे चहैं हैं छूटा हुआ
 त्रिशूल कट कर २७ नक्षत्र शोभा देता है सोही २८ पुष्य नक्षत्र के तीन तारे
 दीखते हैं [पुष्य नक्षत्र त्रिशूल के आकार है] १३१ ॥

छुटें चक्र वहे बक्र आयास छाजें, भुजंगी भ जो पंचधनारेन जाजें
गृहाकारवहे पंच अंगार उडें, मघा जो मनो हंकि आई हंडुहें ॥
जरंते उडें कालिका पालिकापै, ति पुंभोत्तराफगुनी रिच्छ द्वैरद्वै
उडें आ जै हंथ लग्गी अंगारी, भ पंचाल जो हस्त नक्षत्रभारी
वडें अंभ सुती बनै इक्क १ चित्रा, प्रवाली चडें रवाति इक्क १
पवित्रा ॥

धकंती कंभी अंभतै अंभ धवि, बिसाखा सु चोऽरिच्छंकाखीव-
नावै ॥ १३४ ॥

उडें त्यों तिते मौनके के अंगारे, ति ज्यों धिते नच्छत्रके चवारि४तारे
चली कानतै कुंडली व्योम चानो, सुनासीरके रिच्छंके ते भै तीनों ३
इंली बक्रपै रुद्र संख्या ११ अंगारे, ति ज्यों सिंहलंगूज त्यों मौनतारे

टेहे चलने के १ परिश्रम से चक्र छूटना है सो ही रसर्प के आकार वाले [अश्लेषा] ३
नक्षत्र के पांच तारे ४ शोभा देते हैं (मनांतर से अश्लेषा के ७ तारे भी मानते
हैं) ५ घर के आकार होकर पांच तारे उडते हैं सो ही मानी मघा नक्षत्र चल
कर ६ हंडुडा [मालकुंडा] खल विशेष पर आई है ॥ १३२ ॥ ७ कालिका
देवी के ८ पलंग पर जलते हुए अंगारे उडते हैं ९ वे पलंग ही १० पूर्वाफा-
लगुनि और उत्तराफालगुनि नक्षत्रों के दो दो तारे बनते हैं [ये दोनों नक्षत्र
दो दो तारों के होते हैं] कटे हुए ११ हाथों के अंगारे लग कर उडते हैं सो १२
हस्त नक्षत्र के १३ पांच तारे हांते हैं [हस्त नक्षत्र हाथ के आकार होता
है ॥ १३३ ॥ १४ आकाश में मोती चढता है सो ही चित्रा नक्षत्र का एक ता-
रा होता है आकाश में १५ मृगा चढता है सो १६ पवित्र रवाति नक्षत्र का
एक तारा हांता है १७ घोड़े के मुख से जलती हुई १७ लग्नम १९ आकाश
में जाती है सो २० चार तारों के विशाखा नक्षत्र का २१ डोल (आकार) ब-
नाती है ॥ १३४ ॥ २२ उतने ही प्रमाख के तिलनंरु अंगारे उडते हैं २३ वे २४
अनुराधा नक्षत्र के (चामर दंड के आकार) चार तारे हांते हैं कान से चली
हुई कुंडली २५ आकाश में दीवती है सो कुंडल के आकार २६ इंद्र के २७
नक्षत्र (ज्येष्ठा) के तीन २८ तारे हैं "ज्योतिष में ज्येष्ठा नक्षत्र का देवता रुद्र
है" ॥ १३५ ॥ २६ टेही तरवार पर ग्यारह संख्या के अंगारे हैं सो ३० सिंहपु-
च्छ के आकारवाले ३१ मूल नक्षत्र के तारे हैं

जरै अबभगैदंत दो + ओर सौ जो, दिपै पुब्व आखाढ सो ऽ रिच्छ द्वैर को
 अंगारी उभै २ अबभ काहू उछारी, कढे उत्तरा द्वैर भं मंचानुकारी ॥
 इतभै उडै अबभ ओरै अंगारे, त्रिकोणाभ जे ते भिजि तान इतारे ॥
 भं गोविंदको ज्यौ कहयो मग त्यों भो, मृदंगै लख्यो चो ४ ध-
 निष्ठा भ ज्यौ भो ॥

उडै चर्म सो १०० चंद्र माला अंगोहयो, सुही छैत बारीसको रिच्छे
 सोहयो ॥ १३८ ॥

महोरारि अकैदुके संग मने, छदतारे रहे कृत्तिका अंत छेत्रे ॥
 त्रिजामाहि पुंवा भई यो त्रिजामा, परी फैलि ज्यौ अस्त्र उद्देद पामा
 हठी वीर जौसिंहके धूँक हुक्के, कुँडू सौलमी सूर फेरुँ कुक्के ॥
 फिरै भंगमली यंगुली गिद्ध फुल्लै, भ्रमै पिगला सेन भा लेन भुल्लै ॥ १४० ॥

आकाश में ३ हाथी के दांतां + ओर के दंत जलत हैं सो (गज दंत के आकार) १ दा-
 ताओं का १ पूर्वाषाढा नक्षत्र होता है ॥ १३९ ॥ १ आकाश में दो अंगारे किसीने उछा-
 ले सो २ उत्तराषाढा नक्षत्र के दो तारे ३ मंच के आकार हुए आकाश में और अ-
 नारे उडते हैं सो ४ त्रिकोण के आकार ५ अभिजित नक्षत्र के तीन तारे दी-
 खत हैं ॥ १३७ ॥ ७ विष्णु भगवान् का ६ नक्षत्र "ज्योतिष में अवध नक्षत्र
 के देवता विष्णु हैं" जग के आकार अवध नक्षत्र दृष्टा ८ मृदंग के आकार
 चार तारों का धनिष्ठा नक्षत्र दृष्टा ९ ढाल के ऊपर के चांद (फूल) १० चंद्र हुए
 उडते हैं सो ही ११ गोलाकार सौ तारों का वरुण का १२ नक्षत्र शतभिषा
 शोभायमान है "ज्योतिष में शतभिषा नक्षत्र का स्वाामी वरुण है" ॥ १३८ ॥
 १३ उस काल रात्रि में १४ सूर्य चंद्रमा के साथ माने हुए इसकारण कृत्तिका
 नक्षत्र के अंत तक पूर्वाभाद्रपद १ उत्तराभाद्रपद २ रेवती ३ अश्विनी ४ भर-
 णी ५ कृत्तिका ६ धेनु नक्षत्र १५ छुपे रहे अर्थात् नहीं दीखे "य नक्षत्र वैशा-
 ख मास में सूर्य के आस पास रहने हैं और अमावास्या का दिन होने के आ-
 रण सूर्य चंद्रमा का साथ होना लिखा है" १६ रात्रि के १० पहिले ही इसप्र-
 कार की १ दराज हुई यह ऐसी फैली कि जैसे १९ रुधिर में पासा रंग २० प्रकट हु-
 या ॥ १३९ ॥ जयसिंह के धीरों रूपी १ उबलू बोले २२ उस नष्टचंद्रा अमावा-
 स्या में २३ सालमसिंह सम्बन्धी २४ गीदड़ बोले २५ भागलों (भागनेवाले-
 कापरों) रूपी २६ बागल (बमगोंदट) प्रफुल्लित हुए २७ वह सेना कोचर पची
 फी २८ क्रान्ति को लेना नहीं भूलकर अमती है ॥ १४० ॥

हाडों और कछवाहों का युद्ध] सप्तमराशि-त्रयलिङ्गशतचुल (३१७३)

भन्यौ वैरिसल्लोत भूतेसँ भायो, जग्यो देवकव्याद जो जैत जायो।
नरुजात सँ गात यौ लीलिलिन्नौ, नही ईस जच्चयो सु पै सीस
दिन्नौ ॥ १४१ ॥

[दोहा]

गिरत गिरत नौरव गजब, हुँत मंडिग सिरदार ॥
देवसिंह किय छकित दै, असि उपवीतँ उतार ॥ १४२ ॥
अब सुँ देव हनि नारँवहिँ, खाय इक्क तस खग्ग ॥
धप्यो प्रबल हरबल्ल धुँर, फिरत मचावत फग्ग ॥ १४३ ॥

(षट्पात)

अग्गै तच्छकँ उरग बहुरि पय पुच्छ बिदबिबयँ ॥
अग्गै बरँ बारूद छोरि पौबक सिर छबिबय ॥
अग्गै दिनेँकर असह मुररि उत्तर मग लिद्धो ॥
अग्गै छुधितँ मयँदँ बहुरि विच्छिय अँल बिद्धो ॥
अग्गै सु देव आहव अडर अरु नौरव अति उप्फन्यो ॥
जयसिंह मान भँजँक सँजव बेतालन रँजँक वन्यो ॥ १४४ ॥

[निःशाखी]

१ वैरीशाल के वंशवाला २ शिव के मन भाया ३ देवसिंह
“कव्याद सिंहे” इति शब्दार्थचिन्तामणिः ॥ ४ जैतसिंह का पुत्र (देव-
सिंह) जगा ५ नरुका से ६ गात्र (शरीर) ७ लीला (खेल) से =
शिव ने उसका मस्तक नहीं माँगा ८ परन्तु ॥ १४१ ॥ १० नरुके सरदा-
रसिंह ने ११ शीघ्रता की १२ तरवार से जनेऊ दी (जनेऊ के आकार शरीर
को काट देने को जनेऊ उतार कहते हैं) ॥ १४२ ॥ ११ वह देवसिंह १४ नरुके
को १५ प्रथम ॥ १४३ ॥ पहिले ही १५ तत्काल सर्प था और फिर चरण से उस
की पूँछ को १७ दवाई १८ पहिले ही श्रेष्ठ बारूद था और फिर १९ अग्नि के ऊपर
ढाला २० पहिले ही नहीं सहने योग्य सूर्य था और फिर झुड़कर उत्तर दिशा
का मार्ग लिया ॥ २१ पहिले ही झुला २२ सिंह था और फिर बीछ के २३ डंक
से बीधा गया इसप्रकार देवसिंह पहिले ही २४ युद्ध में निर्भय था और फिर
२५ नरुका सरदारसिंह बहुत बड़ा इसकारण जयसिंह के मान को २६ मिटा-
नेवाला होकर बेतालों को २७ शीघ्र २८ प्रसन्न करनेवाला हुआ ॥ १४४ ॥

नारवकों देवा निगलि अगमें उफनाया ॥
 इत नरउर नृप के सचिव चालुक चंपाया ॥
 प्रेमसिंहहु वै पलट हुत दाव दिखाया ॥
 झल्लरिलों झननंक ते तेगा तरकाया ॥ १४५ ॥
 सूरों हूरों सत्यन्है गलनत्थ मिलाया ॥
 खंडेराय खिलहारहु रन फग रचाया ॥
 पातं गदा के पुंढली फटकार फनाया ॥
 घाय हवकै रंग के जलजंल चलाया ॥ १४६ ॥
 खेह गरही मेहलों अंबीर उढाया ॥
 फूल कलेजे फिफरे फवि फाँक फुलाया ॥
 गोली गोटे गुलालके बहुओर चढाया ॥
 डेरों डिंढिम डाकिनी डफ डक बजाया ॥ १४७ ॥
 गनिका ज्यो नचि जुगिनी थेई थरकाया ॥
 भैरों गायक भायकै आलाप उठाया ॥
 नाथाउत प्रेमहु निडर खग खेल खिलहाया ॥
 दोऊ फग उदगमें इस कोतुक आया ॥ १४८ ॥

नरुके को खाकर देवसिंह आने १ घड़ा २ सोलंखी को दवाया ३ शीघ्र ४ खज्ज विशेष ॥ १४५ ॥ वीरों और ५ अप्सराओं ने साथ होकर ६ उस फाग में कितनी गदाओं का पड़ना ही ७ पोटली का फटकारना ८ शोभायमान हुआ और कितने ही घाय उबरते हैं सो ही रंग के ९ फुहारे चलाये ॥ १४६ ॥ मेघ के समान अंधेरा करके धूल उड़ती है सोही १० गुलाल उड़ाई उस गुह में कलेजे और फेंकरो की फाँके हैं सो ही फूले हुए फूल हैं और गोलियों रुबी ११ गुलाल गोटे चौरफ चढाए और भैरव के वाद्य डैरव और डाकिनियों के वाद्य डिंढिमियें चजे सो ही उस फाग में डक बजाये ॥ १४७ ॥ और वैश्याओं के समान थेई थेई करके जोगिनियें चली और बाधन ही धैरवों ने १२ कलावंतों की भांति आलाप ली, नाथात्त प्रेमसिंह ने भी निर्भय होकर त-रवार का खेल खिलाया १३ उदग (उधलते हुए शस्त्रों की धधका निरंकुश फाग में इसप्रकार खेल पर आये ॥ १४८ ॥ इसप्रकार तीरों से धालियों को

छेदैं तीरन छत्ति यों बीरन विरमाया ॥

सेल घमाकों संकुलै छाकों कि छकाया ॥

दोऊरमारत दाव जे घन घाव छुमाया ॥

नरउर मंत्री प्रेमकाँ बहु वार बचाया ॥ १४९ ॥

खंडे खंडेरायके हुत प्रेम दबाया ॥

चंचल चंड चमकिकैं ग्रीवाँ गरकाया ॥

सिवकाँ दै सिर प्रेमका गतप्रान गिराया ॥

चालुककाँ नरउर सचिव हनि यों रु हकाया ॥ १५० ॥

देखि निरंकुस देव इहिँ सजिन ससुहाँया ॥

धर दोउन धमचक्रदै फनमाल फिराया ॥

हहून मंसँ निहारहाँ हडा हठ आया ॥

जिम लगैं तिम लौ चलेँ खग पान पचाया ॥ १५१ ॥

कंकट टोपों कटिकैं कठि जात अधाया ॥

ज्यों सबनीगँर सब्जुमें चाहि तंत्र चलाया ॥

यों असि उच्छट देवकी रन चित्रै रचाया ॥

खंडेराय खिलहारकाँ खगों बल खाया ॥ १५२ ॥

(दोहा)

नरउर पतिको सचिव हनि, खंडेराय सु नाम ॥

बहुरि देवसिंह बढयो, कूरम दल जय काम ॥ १५३ ॥

(षट्पात्)

छेद कर बीरों को १ बिलसाया (आनंद पूर्वक ठहराया) भालों के प्रहार २ भ-
र गये (अवकाश रहित होगये) लो मानों मय के प्याजों से तुम दिया है ३
प्रेमसिंह का ॥ १४९ ॥ प्रेमसिंह को खांडेराव ने ४ तरवार से शीघ्र दबाया
५ गरदन में छल गया ६ लम्बुख आया ७ जहाँ पहुँच हठ पर आते हैं तहाँ ह-
थियों पर मांस नहीं रहता तरवार के पाण से पचाया हुआ मांस ऊटों के
तरवारों लगती हैं तहाँ से छे जाती हैं ॥ १५१ ॥ वे खड्गदलयन और टोपों को
काट कर ८ भूखे ही निकल जाते हैं जैसे कि १० खाजन देखनेवाला खाजन में
तांत चलावै वह झुखी ही निकल जाती है ११ युद्ध में आदर्य किया ॥ १५२ ॥

महाराम नृप *माम मूढ पहिलैं जु पलट्यो ॥

सुत ताके संग्रामसिंह कूरम दल कट्यो ॥

करनसिंह कछवाह चाहि तिहिं ओर चलायो ॥

पानी मानहु प्रलय उदधि सत्तन उफनायो ॥

रामकात खग्न आरत रूपटि बाँजि दपटि सम्मुह कट्यो ॥
त्रयनैनं निरखि बयरैय तदिनं पय पय प्रति जय जय पढ्यो ॥५४

इत संग्राम असंक करन कूरम उत उद्धत ॥

इत बुंदिय जय आस उत सु जैपुर जय इच्छत ॥

दोऊ जुरि जस बाव घाय खग्न घाय छुमाये ॥

बहुरि मान अच्छरिन लुब्ध आयास लुभाये ॥

वीर रु रउट्ट बीभंछ बलि अति अचिज्ज रस उप्पज्यो ॥

नञ्जत अनेक मुंडन निरखि भालचंद्र तदिन भज्यो ॥५५॥

करभन ग्रीवा कटत उनहिं बेताल उठावत ॥

अंत्र तलं आरोप बीन लय लीन बजावत ॥

मनुजैन रुंड मृदंग ढोल बज्जत हय ढँहर ॥

गोमुख गति गज मुंडि मचत संगीत मनोहर ॥

॥ १५३ ॥ *राजा बुधसिंह का मामा. मानों सातों ? ससुद्रों से प्रलय का पा-
नी बढा २ घोड़े दौड़ा कर ५ उस दिन ३ शिव ने अवस्था का ४ वेग देख कर
पग पग प्रति जय जय का शब्द पढा ॥ १५४ ॥ ५ कछवाहा करणसिंह उपजि-
यों की दौड़ से घूमे ८ फिर इन लोभियों (अप्सराओं से विवाह करने के लो-
भियों) ने ९ अपने युद्ध के परिश्रम पर उनमानवाली अप्सराओं को विवाह
के लिये लोभ युक्त की वहाँ वीर रत्न, गौंदर रत्न, १० बीभत्स रस और ११ आ-
श्चर्य (अद्भुत) रस उत्पन्न हुए और शिव की मुंडमाळा में अनेक मस्तकों को
नाचते हुए देख कर राहु से ग्रहण होने की मुंका करके १२ शिव के ललाट का
चन्द्रमा उस दिन भागा १५५ ॥ १३ ऊँठों की गरदन कटती हैं जिनको उठा-
कर उनके आंतों की १४ तांत पका कर पेनाल लय में लीन होकर उस बीया
को बजाते हैं १५ मनुष्यों के रुंडों की मृदंग और घोड़ों के १६ अस्थिपंजरों [ह-
ड्डियों के पीजरों] के ढोल बजाते हैं हाथियों की कटी हुई मुंडों को १७ गोमुखों

गायत पिसाच जुगिनि गंहकि तदकि सुसिर आनंद तत ॥
करि तांत खंड सीसक किलकि हल्लीसक डाकिनि हलत १५६
(दोहा)

रन दोऊ या विधि रचत, सजि करन रु संग्राम ॥
आजि न रुके लै अडर, ताजिन बग तमाम ॥ १५७ ॥
कुपि हनिय कूरम करन, सोलंखी उर संगि ॥
प्रतिभट पर अति भट यहहु, इततैं बढिय उमंगि ॥ १५८ ॥
भारिय खग चालुक भपटि, बैल ह्य दपटि अचूक ॥
किय सिर कूरम करनको, टोप सहित द्वै टूक ॥ १५९ ॥
हनि याहि रु भल्ला हुकम, खिच्चिय सेर खपाय ॥
लिय अब गाम रसौर पति, घासीराम निरौय ॥ १६० ॥
कूरम घासीराम तब, सिर भारिय सैमसेर ॥
कहत खिन बह सिर कियउ, सिव निज माल सुमेर १६१
समर परयो संग्रामको, देवसिंह द्रुत देखि ॥
कूरम घासीरामको, पूगो सखुह पेखि ॥ १६२ ॥
देवसिंहके उर दुसह, द्रुत कूरम खग दीन ॥
पैठो कटि नागोद पुनि, तरकि पंसुली तीन ॥ १६३ ॥
इहि अंतर देवहु अतुल, तस सिर भारिय तेग ॥

(बाध विशेष) की भांति लेकर मनोहर संगीत मचाते हैं जहाँ १ प्रस-
जता की धोली से पिशाच और जोगनियें गाती हैं तहाँ २ फूँक से बजने
वाले (बंशी आदि) ३ खाल से बदेहुए (दोल आदि) बाजे बज कर कटेहुए
मस्तकों के ४ तांत नजीरे करके ५ घूम के नाच से किलकारी करके बाक-
नियें चलती हैं 'खियों के सखुह' के नाच का तांत हल्लीखक है ॥ १५९ ॥ ६
युद्ध में नहीं के ७ घोड़ों की बागें ८ करड़ी, करके (घोड़ों की बागें करड़ी
करना दौड़ाने का लुचक है) ९ कछवाह करणसिंह ने जोध करके १० बरछी
बाध पर बह अत्यन्त बीर इषर से बढ़ा ॥ १५८ ॥ ११ खंचल घोड़े को दौड़ा
कर ॥ १५९ ॥ १२ रत्नीय ॥ १६० ॥ १३ खड्ग १४ समय १५ अपनी मुँहमाला को
खुमेर ॥ १६१ ॥ ॥ १६२ ॥ १६ बंदर का कंधा [पेटी] कट कर ॥ १६३ ॥ १६४ ॥

हनि रसोर पतिकों हुलासि, बढ्यो बहुरि अति बेग ॥ १६४ ॥
 हरियसिंह तौवर हठी, पुनि जहव परताप ॥
 करनसिंह रहोर कुल, ये अरि पिक्खि अमाप ॥ १६५ ॥
 *लिखत इन्हें मानहुँ लिखे, खग मसिचान खरकोन ॥
 आयो देव सु उपरहि, प्रलय माँहि जिम पोन ॥ १६६ ॥
 तबहि देवके खंध तकि, तौवर आरिय तेग ॥
 तीनन इइन हनिकें तऊ, बीर न भो हत बेग ॥ १६७ ॥
 जैतसुवन के इस जबर, तीन इलगिय तरवारि ॥
 अरु खट ६१८ आमैरके, मरद लये रन मारि ॥ १६८ ॥
 अब सु देव अति लोह छकि, परयो मूरछित प्रान ॥
 हूरनकों हौसहि रही, यँह आयुहि बलवान ॥ १६९ ॥
 सालम दल सागर मथ्यो, अभय देव अति लाग ॥
 तोउ न लह्यो जय रतन, यँह बुंदीस अभाग ॥ १७० ॥
 सठ सालम इक खाल बिच, दुरयो रह्यो भय दाव ॥
 बुंदिय दल सम्मुह बढे, आमैरे उमराव ॥ १७१ ॥

(षट्पात)

परसुराम परिहार जोध चालुक अति जुष्टिय ॥
 साँवल गोर सजोर रूप चालुक्य अहुष्टिय ॥
 जोरावर नरु बंस लरिय चालुक्य सुरत सह ॥
 बलि हड्डा बखतेस उदय चालुक लिय अगगह ॥
 जगभानु हड्ड उद्धत जुरयो कूरम पृथ्वीसिंह सन ॥
 सजि माँहि माँहि दुव दल सुभट लगगे इस लगगन खरन ॥ १७२ ॥
 ॥ १६५ ॥ * देख कर १ देखे १ सिचाण (वाज, शिकरा) पच्छि ने § तीतर
 पच्छियाँ को ॥ १६५ ॥ १६७ ॥ १ जैतसिंह के पुत्र के ॥ १६८ ॥ २ अप्सराओं
 को इसके चरने की चाहना ही रही अर्थात् मरा नहीं ॥ १६९ ॥ ३ समुद्र को
 ४ जय रूपी रतन नहीं मिला सो बुधसिंह का अभाग्य था ॥ १७० ॥ ५ नाले में
 बिपा रहा ६ आमैर के ॥ १७१ ॥ ७ लड़े में आने ॥ १७२ ॥

[जिः शाणी]

दोऊ ओर दुबाह यों असि बाह अछकैं ॥
 डेरों डाहलें डिडिमी डकौं डक डकैं ॥
 सेल भचकैं संकुले अति घाय उबकैं ॥
 सीस कपाली संग्रहैं काली सु किलकैं ॥ १७३ ॥
 खूब बजाई खगनैं धारा धमचकैं ॥
 कुककैं क्रोड़ कसदिकैं कमठेस मचकैं ॥
 नीसासा नासानुगी आसांगज तककैं ॥
 भोगी भोग न झिलिसकैं भुम्मी अकबकैं ॥ १७४ ॥
 चौहों दिस रोहों रुके छोहों भट छकैं ॥
 जैड़े जंजीरन जरे बड़े गज बकैं ॥
 तांजी तंगन तोरिकैं फालों फरकैं ॥
 मेह अहंवर मंडती रज अंवर डकैं ॥ १७५ ॥
 के सूरन थकैं कलह के हूरन तकैं ॥
 गात नमावैं गिहनी गिलि गूद गजकैं ॥
 के घायक पायक कटैं सायक सकसकैं ॥
 खंधे खेलह खिलहारके भट सेल भचकैं ॥ १७६ ॥
 खंड चटकैं खुप्परी लागि लुत्थि लटकैं ॥
 सेलों मार सुमार वड़े असवार उचकैं ॥
 धुकि हत्थी धीरन धरैं जंजीरन जकैं ॥
 लंकलककैं बरछी लगत छलि घाय छकैं ॥ १७७ ॥
 रीस बटकके अगके के सीस पटकैं ॥

१ वीर २ बाघ विशेष ३ अवकाश रहित ४ शिव ॥ १७३ ॥ ५ बराह ६ नासिका के साथ चलनेवाले निश्वास से ७ दिशाओं के हस्ती ८ शेष नाग ९ व्याकुल होकर फणों पर भूमि नहीं भेल सका ॥ १७४ ॥ १० चारों दिशा ११ रोक से १२ क्रोध १३ जाड़े [मोटे] १४ घोड़े ॥ १७५ ॥ १५ खारभंजन [द्वंग] १६ बाण ॥ १७६ ॥ १७ जंजीरों से बांध कर पकड़ लेते हैं १८ कांपते हैं ॥ १७७ ॥

के कंकट संकट कटें के तेग तटकें ॥
 सिर फट्टें धर उल्लटें कटि नैन फड़कें ॥
 हय हट्टें पप उच्छटें रय भंग रड़कें ॥ १७८ ॥
 लोही बूढ़नि लालकी धारा धकधककें ॥
 के डाकिनि खप्पर भरें के साकिनि छकें ॥
 चंड कृपानी चंचला चढि अम्भ चमकें ॥
 यों अंबर आयुध उडैं जिम नाग लटकें ॥ १७९ ॥
 बीरों बीर बरबरी तरवारि तरकें ॥
 दो हथिन आरैं दपटि के बथन हकें ॥
 के प्रबक बंबक बजें के ढोल ढमकें ॥
 के जंबुक मंडें केवल के कंक किलकें ॥ १८० ॥
 के बंदी लुल्लै विरुद रसबीर उबकें ॥
 मूर ढरकें सम्मुही नभ हूर धरकें ॥
 तीर दुसाराँ निकखसैं रनधीर रंटकें ॥
 के मातर मातर कहैं के कातर चककें ॥ १८१ ॥
 सार सलककें संकुली तपि घोर तुपककें ॥
 के कंकट आटोपकें के टोप चमककें ॥
 धाये बहल धूमके छाये छिति ढककें ॥
 अपि बरकें के भुकें पय कपि लारककें ॥ १८२ ॥
 घाय हबककें के हकें हथीन हलककें ॥

१ कबच से घिर हुए रेवण हत होकर दौड़ते हैं ॥ १७८ ॥ ४ साँवन की डोकरी (वीरपण्डरी) के समान लाल रक्त की धारा निकलती है ॥ ५ भयंकर खड्ग रूपी ६ विद्युत् [बिजुली] ७ आकाश में ८ सर्प ॥ १७९ ॥ ९ बीरों बीरों में १० मर १० नगारे ११ गीदड़ १२ घास (कुवा, लुहमा) ॥ १८० ॥ १३ माट १४ बीर रस १५ दोनों ओर फट कर १६ लड़ते हैं १७ माता माता १८ कायर ॥ १८१ ॥ १९ अरु २० कितने ही टोप कटते हैं तब कितनेक २० कबचों को २१ मस्तक पर दक करते हैं २२ घुड़ के पादल दौड़ कर २३ भूमि को दक करते हैं ॥ १८२ ॥ २४ हाथियों के हकें के [सौ हाथियों के समूह को हलका कहते हैं]

गीत अलापों जुगिनी लौ जात ललकैं ॥
 ग्राम सुपै गंधारमें तीखे स्वर तकैं ॥
 ज्यों नर त्यों हैवर उडैं ज्यों गैवर जकैं ॥ १८३ ॥
 धाताँ अग निम्मानके अभिमान असकैं ॥
 पानी भुस्मि पताललों जिम थाल थरकैं ॥
 अग्घे अग्घे होहु यों बेंडे भट बकैं ॥
 त्यों त्यों पय पछे लगैं छत्ती धक धकैं ॥ १८४ ॥
 समय घोर संहारको इहिरीति उबकैं ॥
 कौन पिता को पुत्र यों नाँते सब थकैं ॥
 उवैरिबेमें इकसे मन भीतें मुरकैं ॥
 जिम तिम प्यारे जीवकों तजनों नन तकैं ॥ १८५ ॥
 कलबल्ली बानी कढैं भ्रमि भीरु भटकैं ॥
 पाय अटकैं पैगडों लारि लुँथि लटकैं ॥
 अंत उलज्मै अंतसों जिम फंद जरकैं ॥
 इक भटकै इककों पखरैत पटकैं ॥ १८६ ॥
 केते होदन कंगुराँ खुरताल खनकैं ॥
 कपि कलेजे के कढैं के ढँहर डकैं ॥
 पिडि सचककैं पंसुली रीठकैं वररककैं ॥

१ गाती हैं २ तो भी गंधार ग्राम में तीखे स्वर से गाती हैं राग के समूह को ग्राम कहते हैं वे तीन हैं, यथा

“षड्जग्रामो भवेदाहो मध्यमग्राम एव च ॥

गान्धारग्राम इत्येतत् त्र्यामत्रयमुदाहृतम्” ॥

३ घोड़े ४ हाथी गिरते हैं ॥ १८३ ॥ ५ ब्रह्मा संसार ६ जनान के अभिमान में ७ अशक्त होता है अर्थात् जितने अनुग्रह मारे जाते हैं इतने पीछे पनाये नहीं जाते ८ आगे बढ़ो आगे बढ़ो ॥ १८४ ॥ ९ नाश का १० लस्यन्ध ११ बचने में १२ भय से ॥ १८५ ॥ १३ कलराई हुई १४ घोड़ों के पागड़ों (रकायों) में १५ मृतक शरीर ॥ १८६ ॥ १६ शरीर का पिंजर १७ पीठ की लंबी हड्डी

केते हूल कृपानकी बौतूल बबककैं ॥ १८७ ॥
 फट्टै मुंडन फाँक ज्यों दारिम दररकैं ॥
 कंध कफौली कर कटैं करकोचै करकैं ॥
 कट्टे किरत नितंब के जिम कच्छप जकैं ॥
 कटि जंघा सत्थी कटैं हत्थी हनि हककैं ॥ १८८ ॥
 वंजन प्रेत बनात के गहकांत गटककैं ॥
 केते टोप कंटाहकैं पय लोहित पककैं ॥
 उँबी सिँधी अंगुली बहु सोकि बटककैं ॥
 खाजे पूँपी खल्लके ताजे करि तककैं ॥ १८९ ॥
 खुरमाँ खंडी खुप्पी चवखैं धँमचककैं ॥
 भेजा भात भरायकैं गिलि जात गँजककैं ॥
 फैले घेउर पिप्परन छैले बनि छककैं ॥
 बुकका ठोर बनायकैं छुँकका भरि हककैं ॥ १९० ॥
 भुँजन अैसे भूत गन करि केक किलककैं ॥
 जिहिँ वेलों संके जुरत वंके अकबककैं ॥

१तरवार की हूल से२पापडा (पावला)॥१८७॥३हुनी४हाथ का कयच (दस्ता-
 ना) ५ कटेहुए नितंब (हुँगे) गिरते हैं सो कियों कच्छप पड़े हैं ६ नितंबों के
 नीचे की जाड़ी जंघा को (जाँघ) और उससे नीचे की ओर पुडनों से ऊपर
 की पतली जंघा को सझी (साथल) कहते हैं ॥ १८८ ॥ प्रेत७ भोजन के पदा-
 र्थ घना कर ८ प्रसन्नता की बोली बोल कर खाते हैं सो कितने ही कटेहुए
 टोपों के ९ कंटाह बना कर १० रक्त रंग पानी में पताते हैं, उन में अंगुलियों
 खपी ११ दाँवी (जब, गेहूँ का फल) और १२ फलियाँ सेक कर खाते हैं और
 खाल (चर्म) के ताजे ताजे खाजे १३ पुडियाँ बना कर देखते हैं ॥ १८९ ॥ १४
 उस मुख में कटी हुई छोपरियों के खुरमे करके खाते हैं और भेजा खपी भा-
 त मिला कर १५ खारभजना (गजक) निगलते हैं फैलेहुए फीफों के घेवर
 बना कर १६ रसिक होकर तृप्त होते हैं और बूकों (बुड़दों) के ठोर बना कर
 उनसे १७ मुख भरकर चलाते हैं ॥ १९० ॥ १८ इस प्रकार के भोजन करके कि-
 तने ही भूतों के समूह फिलकारिये करते हैं १९ उस समय दंडे पीर भी मुख

फाटि वक्रतर निकलें के टोप चटकैं ॥
 फील छटकैं फाँदते खग हड्ड खटकैं ॥ १९१ ॥
 भुल्ले के मग भाँवरी पग पंक्त खचकैं ॥
 छुम्मे खेतपाल लो घन रत्त घुटै ॥
 चाहे रत्त चटै छिकैं चउस छिछ ४ चहकैं ॥
 काय उभकैं के कटैं भरि पाय रुभकैं ॥ १९२ ॥
 लगैं अंबर लायसी के घाय टपकैं ॥
 के बटके बटके करैं भटकेन भूमकैं ॥
 नाच न चुपैं डकिनी लो डौच डचकैं ॥
 ज्वाल भरकैं के जरी गजढाल ठरकैं ॥ १९३ ॥
 वीर वक्रतर पारके दै तीर तमकैं ॥
 दंत दमकैं हीरै लो चिनगी कि चमकैं ॥
 सत्त लोक उपपर सिकैं धर सत्त धमकैं ॥
 परि अष्टौ दिक्पालके कप्पाल कसकैं ॥ १९४ ॥
 के भुक्कैं गाफिल कटैं लागि नैन पलकैं ॥
 सेस करकैं संकुली फनैपति फरकैं ॥
 घायन सत्ये स्वास के भरि फनै भमकैं ॥
 छोह गहरी छोरि के सिर फोरि ससकैं ॥ १९५ ॥
 भुल्लि भटकैं के भिरैं कंलि खान कटकैं ॥
 सहिलौ पय मंजारलौ हिंजीर ठमकैं ॥
 वंवे ठहकैं वीरैं में के वंवे ब्रह्मकैं ॥

कामन की संकल और घटताते हैं १ हाथी ॥ १९१ ॥ २ अँधल (बल्लर) खाकर ३
 बीच में तुलते हैं ४ रक्त की घुंटे ५ पीकर ६ जरीर ॥ १९२ ॥ ७ आकाश में
 ८ घाव ९ तरपारों से १० सुख में बचा आस ११ हाथियों के नीलाग्न गिरते हैं
 ॥ १९३ ॥ १२ तीरों को खँच कर १३ हीरों की भाँति १४ जलते हैं १५ नीचे
 के रातों लोक धुलते हैं १६ कपाल (खोपरी) ॥ १९४ ॥ घोष नाग की रीढ़का
 पीठ की हड्डी हटती है और १७ कर्णों की ध्वनि पुरकती है १८ भाग १९ घमंड
 ॥ १९५ ॥ २० तुल में २१ स्त्रियों के पगों के नूपुरों के समान २२ साँकलों धज-
 ती हैं २३ मगारि २४ पौर रत्त में २५ तासे बजते हैं

पिष्टि कसकैं*कच्छपी धर धुजि धसकैं ॥ १९६ ॥

वे दंतुलि वाराहकी बहु भार वरकैं ॥

लैं के घायल लैकलकी सँटि निष्ठि सरकैं ॥

के रजपूतों बल कटैं धूतों परि धक्कैं ॥

पत्तें खरकैं जुगिनी के रत्त छरकैं ॥

तक्यो जिन तैसो तुँमुला ते फेरि न तककैं ॥

तँदिन पंचोलासपैं नर नास न थक्कैं ॥

पौं बुंदी आमैरकी अति लाज अटक्कैं ॥

हड्डे कूरम हड्डेसों हरवल्लन हकैं ॥ १९८ ॥

[दोहा]

इहि अंतर अवसेस अब, दुवर्नाडी दिवसेमें ॥

बुंदी भट छिजत बहयो, विजय कूरमन वेसैं ॥ १९९ ॥

इति श्री वंशभारकर महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमगाथो बुंदी-
पतिबुधसिंहचारित्रे बुधसिंहदत्तेलासिंहोभयभूपसेनासमरतद्वयप्रच्छ-
त्रार्सनबुधसिंहकुत्सारुपापन १ चाहुमानाभयसिंहसारसोपठककुर-
फतहसिंहसरदाठककुरकोजूराममुहाड़पतिभ्यामलदासकूर्माचलसि-
हबुढानीपतिबहादुरसिंहमारगानन्तरमरगा २ बुंदीजयपुरवीरगन्त

* कच्छपी की ॥ १९१ ॥ १ दांतों २ कंठ ३ लांछन होकर ४ धूतों के ऊपर ५
पत्र ६ रक्त ॥ १९७ ॥ ७ संकुलित मुख ८ उस दिन ॥ १९८ ॥ ९ चाकी १० दंड
घड़ी ११ सूर्य मरने १२ अष्ट ॥ १९९ ॥

श्रीवंशभारकर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें गाथि में बुंदी के कृपति
बुधसिंह के परिश्रमे, बुधसिंह और बहेलसिंह बुंदी के दोनों राजाओं की
सेना का युद्ध होना और युद्ध के अंग से द्विप कर बैठ हुए बुधसिंह की निदा
की लड़ना १ नष्टवाण अभयसिंह का सारसोप के ठाकुर फतहसिंह को मारना
अभयसिंह का सरदा के ठाकुर कोजूराम को मारना अभयसिंह का
खुदाय के पति, रयामलदास को मारना अभयसिंह का कछदाह पृथ्वी-
सिंह को मारना अभयसिंह का बुढानीपति बहादुरसिंह को मार कर मा-
रा जाना २ बुंदी और जयपुर के घोरों का युद्ध करना ३ नष्टवाण के

५ वन ३ चाहुमानदेवसिंहस्य नरुकासरदारसिंहहनन ४ देवसिंहस्य प्रे-
मसिंहहन्तृनरउरसचिवखण्डेरावमारणा ५ बुधसिंहमातुलपुत्रसं-
ग्रामसिंहस्य कूर्मकरणासिंहासुहरणा ६ रसोरपतिघासीरामस्य सं-
ग्रामसिंहहननदेवसिंहतन्मारणा ७ हतपट्कूर्मदेवसिंहमूर्च्छासादन ८
दृष्टकुल्याप्रच्छन्नबुन्दीपतिसालमसिंहबुधसिंहसेनोपरिजयपुरसैन्य-
समाक्रमणा ९ मुहूर्तावशिष्टास्ताचलचुम्बिनि मरीचिमालिनि हत-
बुधसिंहसैन्यकूर्मकटकविजयवर्णनं त्रयस्त्रिंशो मयूखः ॥ ३३ ॥

आदित एकसप्तत्युत्तरद्विशततमः ॥ २७१ ॥

[दोहा]

नृपके वरजत जे निडर, अभय देव जिम आय ॥
तिल तिल बुंदिय बीर ते, तुष्टे असिन अधाय ॥ १ ॥
तिनमें इक १ जैतह तनय, देवा लारन उदार ॥
मिच्छु न तउ मूरछि मरद, सुत्तो लि ३ असि समार ॥

(षट्पात्)

पश्यो अभयहरि प्रथम पारि पंचपहि राजाउत ॥
पुनि निज संगहि परिगं सुगत पूरन दोऊरसुत ॥
हह देव पुनि हनिय नैरुव सिरदार स्वतंत्री ॥

यसिंह का नरुके सरदारसिंह को मारना ४ देवसिंह का प्रेमसिंह को मारनेवाले
नरवर के सचिव खंडेराव को मारना ५ बुधसिंह के मामा के बेटे भाई संग्राम-
सिंह का कछवाहें करणसिंह को मारना ६ रसोर के पति घासीराम का सं-
ग्रामसिंह को और देवसिंह का घासीराम को मारना ७ देवसिंह के छे कछ-
वाहों को मार कर मूर्च्छित होना = बुंदीवाले सालमसिंह को एक नाले में
झिपा हुआ देख कर बुधसिंह की सेना पर जयपुर की सेना का घटना ९ बुध-
सिंह की सेना के मारेजाने पर दो घड़ी दिन चाकी रहने जयपुर की सेना के
जय पाने का तैर्तासवा १३ मयूख हुआ और आदि से दोसौ इकहत्तर २७१
मयूख हुए ॥

१ तरवारों ने मृत होकर ॥ १ ॥ २ नृत्य नहीं की तोभी ३ मूर्च्छित होकर ४
तीन तरवारों की मार मर्दित ॥ २ ॥ ५ अभयसिंह ६ पट्टे ७ स्वतंत्री (अपने
अधिकार में रहनेवाला, अपना अपने अधिकार में लेकर) नरुके सरदारसिंह को

खिजि पुनि खंडेराय सारि नरउर पति मंत्री ॥

हनि पुनि रसोर पति वह हुलसि कूरम घासीराम कलि ॥

जहन्न कबंध ताँवर जुरे वहे ते अरि तीनश्चलिं ॥ ३ ॥

(बोहा)

खरगन डम उमराव खटक, मारि देव बसि मोहं ॥

रिपु रुडन मंचक रसिक, लरि सुतो छकि जोह ॥ ४ ॥

करन हुकम अरु सेर इन, तीनन रहनि बलि तेग ॥

नाथउत्त संग्राम नर, निनु सिर नच्छयो वेग ॥ ५ ॥

बदलेहू यह वप्पकै, नामी बदल्यो नाहिं ॥

सीस अथ बुधसिंहकै, वै पत्तो दिव माहि ॥ ६ ॥

(पट्टपात)

परसुराम परिवार पश्यो चालुक्य जोधहिं हति ॥

चालुक्य रूपहि चक्रिख परचो साँवत गोर्न मनि ॥

जोरावर नरु जात सुरत चालुक हनि सुतो ॥

उदयसिंह हनि परिग हृष्ट वस्वतेस विरुत्तो ॥

जगभानु हृद जुज्झत हृष्यो कूरम पृथ्वीसिंह कँड ॥

लगि माँहिं माँहिं छिज्जे लारत तोउ न कोप समात तँहें ७

(दोहा)

बुंशीपतिको भद्र बलि, नाम सु जहाँराय ॥

अति उद्धत हनि पंचप्रसरि, तुष्टयो असिन अघाय ॥ ८ ॥

चारहसे १२०० इत्यादि बलि, दुवरादिस परिग हुंवाह ॥

भट हजार १००० घायल भये, निडर देव तिन नौह ॥ ९ ॥

१. युद्ध में २ बलवानों को अथवा फिर ॥ ३ ॥ ४ मुर्खा के ३ वंश होकर ५
मुर्खों के ४ वंश स्त्री संघ (च्यारपाई) के ऊपर ॥ ६ ॥ ५ ॥ ६ पिता के बह-
राने पर स्त्री ७ स्वर्ग में गया ॥ ८ ॥ ८ शौच वंश के चित्रियों का माण्ड ९ पिता
भक्त करने वाला (जुगल) होकर ॥ १० ॥ १० धीरे ११ उन चापलों का निर्भय

(षट्प्रातः)

कुसथल पंचोलास भयउ इम जंगभयंकर ॥
चरम अद्रि ढिग चपल हंकि पहुँचत रवि हँवर ॥
विखस रारि हुव बंध बुत्थि पैत्थरि बट उब्बट ॥
हुँवघाँ सौँ लखि दाव खेत खोजन भेजे भट ॥
कुशापन कृसानुँ चिति होम करि लाये डेरन घायलन ॥
जैपुर नरैस जयसिंह जय बुंदीपति अनजय बिमन ॥१०॥

[दोहा]

बित्तो इम आहव विकट, जित्तो सालस जोर ॥
सोधत अब घायल सुभट, आगम निस दुहुँ ओर ॥
त्रिअसि घाय जैतह तनयँ, देख्यो घुस्मत देव ॥
निज सिबिका पठवाय नृप, आन्योँ वह ढिग एवं ॥१२॥
सुनत पराजय खग सजि, खिजि तँहँ भोप खवास ॥
पासवान रघु दुहुँन पुनि, बिरच्यो लरि दिवँ बास ॥१३॥
बरजतहू तिल तिल बढयो, कटि अरिन अति कोप ॥
स्वामि हारि सहि नहि सक्यो, भलभल नापितँ भोप ॥१४॥
कछु अनीकँ बुंदीसको, अभय संग इम लगि ॥
यह रन करि अब हारि गिनि, पलटयो द्रोहन पगि ॥१५॥
समय घोर परखे सुभट, बदले सब नय बोर्य ॥
घायहु सेके घायलन, सालम दल बिच सोय ॥ १६ ॥
रहे मँनुज बुंदीस ढिग, इक सहँस अनुकूल ॥

पति देवसिंह था ॥ १ ॥ २ चपल घोड़ों को हाँक कर सूर्य के १ अस्ताचल के समीप पहुँचते ही ४ मार्ग और बिना मार्ग बूझें ३ कैल कर ५ दोनों तरफ से ६ सुरदों को ७ चिता की अग्नि में ८ विजय नहीं होने से उदास हुआ ॥१०॥
६ रात्रि के आने पर ॥११॥ १० जैतसिंह के पुत्र देवसिंह को तरवारों के तीन घावों से ११ इसप्रकार घूमते हुए को ॥१२॥ १२ स्वर्ग में ॥१३॥ १३ नाई ॥ १४ ॥
१४ सेना १५ अभयसिंह के साथ ॥१५॥ १६ नीति को डुबो कर ॥१६॥ १७ मनुष्य

सालाम बिच दल नव सहस्र ६०००, मुरपो बहुरि अघ मूल १७
इहिं अंतर अंधार अति, कुहुं निस आगम कीन ॥
बुंदीपति मतिमंद बुध, नौंती बिपति नवीन ॥ १८ ॥

(षट्पात्)

जिहिं बुंदिय हित देवसिंह मैनेन रन मारिय ॥
जिहिं बुंदिय हित समरसिंह बर दुर्ग बिधारिय ॥
जिहिं हित सूरजमल्ल रतन रानां खिजि खदो ॥
जिहिं हित भोज सजोर लरि रु सूरति जय लदो ॥
जिहिं हित जयीस संभर सता साहजिहाँको सीस दिय ॥
बुध धर्वहिं छोरि जारन बिखय तदिन वह बुंदिय तकिय १९

(दोहा)

बुंदी पति बहुविधि बिगारि, असो भयउ असत ॥
अच बिनु हल जिम अंधकी, बरनी जाय न बत ॥ २० ॥
कूरम दल इत बिजय करि, सालाम सहित सहास ॥
अमल किन्न आमैरको, कुसथल पंचोलास ॥ २१ ॥
इम कुसथल अनिरुद्ध सुव, पाय अनादर उच्च ॥
बिमैना रत्ति बितायकै, कोटाको किंय कुच्च ॥ २२ ॥
संभर देव सु जैतसुव, असि त्रयधायल अंग ॥
छुटी जानि स्वकीय छिति, सिबिका चढि हुव संग ॥ २३ ॥

॥ १७ ॥ १ नष्टचन्द्रा अघावास्या की रात्रि २ बुलाई ॥ १८ ॥ ३ मैना
को ४ श्रेष्ठ गढ़ का विस्तार किया ५ सुरत नामक शहर में जय करनेवाले ७
चहुवान शत्रुशाल ने = पति बुधसिंह को छोड़ कर, जारों से भोग करने को
उस बुन्दी ने जारों को उस दिन देखा ॥ १९ ॥ १० अशक्त (नाताकत) ११ जि-
स प्रकार बिना स्वर की साहयता के हल् अक्षर नहीं बोला जाता तिस प्रकार
उस अन्ध की बात नहीं कही जाती ॥ २० ॥ १२ हास्य सहित ॥ २१ ॥ १३
इसकारण १४ बुधसिंह १५ उदास होकर राजि बिता कर ॥ २२ ॥ १६ अपनी
१७ भूमि छुटी जानकर

(पट्पात)

चढि चल्लिय चहुवान छोरि बुंदिय छत्रार्धम ॥

कोटा निबसथ मंगरोल किय तँहँ मुकाम क्रम ॥

हो दुबशरानिय संग पुर सु कोटा पठवाई ॥

पठयो सालिक पास कुमार निज रु यह कहाई ॥

तुम देवसिंह जिहिँ तिहिँ तरह याहि जिवावहु छत्र अव ॥

जयसिंह जोर पिकखहु जबर गुमर तोर मंडत गजब ॥२४॥

[दोहा]

सेवा सु हरी ग्रामको, गुज्जर गेंदा गोत ॥

जिहिँ निज धावर धाइ जुत, पलनाँ लिय धरि पोत ॥२५॥

चुडाउत सीसोद भट, भारतनाम सुभाय ॥

कढन छत्र नृप कुमारकै, सो दिय संग सहाय ॥ २६ ॥

[पादाकुलकम्]

धावर भारतसिंह पिंथाये, चम्मलि उत्तरि सजव चलाये ॥

ढब्भिय नाम बिंदुमति ग्रामह, आय उहाँ बिरचिय विश्रामह ॥२७॥

जहँ दलसिंह हड्ड भोजाउत, जतनन रक्खे गेह बिनंय जुत ॥

कुमर उमेद रति यँहँ कट्टी, प्रात लगिय बेघम मग पेट्टी ॥ २८ ॥

गिरिबैर घंटिय लंघि बेग गति, पहुँच्यो बाल नैर बेघम प्रति ॥

देवसिंह सातुल बेघम हुत, जाय बधाय लयो उच्छव जुत ॥२९॥

इत सालम लागि पिछि उडायउ, मंगरोल बुद्धहिँ पहुँचायउ ॥

पच्छो मुरि आयउ बुंदिय प्रति, अमल रंक्काय कियउ जय उन्नति ३०

॥२१॥ १ अधम (नीच) लत्रिय २ ग्राम ३ अपने साले बेघम के रावत देवसिंह

के पास ४ घमड और प्रताप से ॥ २४ ॥ ५ धाऊ ६ पालक [उम्मेदसिंह] को

पलने में धर लिया ॥ २५ ॥ २१ ॥ ७ छिपेहुए अथवा दौड़े ८ बुन्ही का ग्राम

॥ २७ ॥ ९ यतना से १० नन्नता सहित ११ शीघ्रता की दौड़ से ॥२८॥ १२ अष्ट

पर्वत (आडावला) की घाटी लांघ कर १३ माँमाँ ॥ २९ ॥ अपना अधिकार

॥ ३० ॥

दिन्नी मुलक दलेल दुहाई, सेठकों नृपता अधिक सुहाई ॥
 छत्रमहल विच रहि छत्राधम, कियउ राजधानी भुग्नन क्रम ॥३१॥
 भुल्लि गुनहँ इम अँस भुलायो, मनहु राज पीठिनतँ पायो ॥
 भुल्लत कर दासिन भक भोरन, कनक पउत कँनक हिंडोरन ॥३२॥
 मंगरोलतँ इत मति मुदह, बिनु सुधि चल्पो करमँ जिम बुँदह ॥
 स्पंदनँ सत १०० बौरन बत्तीसह, बहलदँल डेरा इकबीसह ॥३३॥
 पुनि सतसत्तरि १०० सँकट प्रमानह, रुचिरँ पालकी तखतरवानहँ ॥
 इत्यादिक बहु रँखत सुहाये, खरचहीन तत्थहि रखवाये ॥ ३४ ॥
 अप्प चल्पो जित मुँह तित अँसै, 'पै न बिचार कोन गृह पैसै ॥
 गहन लंघि तँरज गिरि घंटिय, भूखन भंजि बैलहिँ जर बंटिय ॥३५॥
 राजा इम पहुँच्यो प्रमाद रँड, ग्राम प्रेमपुर व्है मधुकरगढ ॥
 कछुदिन तत्थ रहयो केउलेसँह, देखन चहयो रानको देसह ॥३६॥

(दोहा)

असित जेठ तेरसि १३ दिवस, सिद्धियोग रविवार ॥
 मधुकर गढतँ बुद्ध नृप, मुरि चल्ल्यो मेवार ॥ ३७ ॥
 कुसलसिंह भट रानको, भँसरोर गढ धाम ॥
 तत्थ बँभनी सरित तट, किन्ने जाय मुकाम ॥ ३८ ॥

पादाकुलकम् ॥

सगनाउत भट भँसरोर पति, बहु भँज कुसलसिंह रचि विन्नति ॥

१ दुष्ट का २ राजा पन ३ अधम (नीच) लघ्निय ॥ ३१ ॥ ४ अपराध भूल कर ५
 दामियों के हाथों के झोलों से ६ कनकसिंह का पोता ७ स्थान के हिंदुगलाद
 पर ॥ ३२ ॥ ८ मतिमुद ९ ऊँट के समान १० बुधसिंह ११ राध १२ हाथी १३ दल
 पादल यह पडे डरे का विशेषण है ॥ ३३ ॥ १४ छत्रह (गाडियों) १५ सुन्दर
 १६ तखतरवाँ (खास) नरवान विशेष १७ सामग्री (सामान) ॥ ३४ ॥ १८
 जिधर मुख हुआ उधर १९ परन्तु २० पर्वत का नाम है २१ सेना को ॥ ३५ ॥
 २२ बावलापन के हठ से २३ वाममार्गियों का पति ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ २४
 चम्हर्या नामक नदी के किनारे ॥ ३८ ॥ २५ बहुत सन्तान वाला

सम्मुह आय नजरि हय किन्ना, अरु तिहिँ नृपहु बाजि इक १ दिना ३९
रत्ति इक १ पिच्छैँ बेघम रहि, चाहवान गो उदयनैर चहि ॥

आय रान संग्राम मन्नि सुहँ, मोहिछा मगरी लग सम्मुह ॥ ४० ॥

मिलतहि मुद बुंदीस बढायो, चरन रान प्रति हत्थ चलायो ॥

रान सुहत्थ पकरि अनुरत्तो, मुसकिलाय छत्तिय मय मत्तो ॥ ४१ ॥

इहिँ विधि प्रकट कियो अति अहर, अरु बिमना क्रूरम हित अंतर

प्रविस्पो पुनि बुद्धहिँ लौ पत्तन, महिमानी पठई संकोचन ॥ ४२ ॥

इति श्री वंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायणो सप्तमराशौ बुन्दीप-

तिबुधसिंहचरित्रे संग्रामहततत्तप्राप्तगणानया सह समराङ्गान्वेषणा

त्यक्तबुधसिंहबुन्दीसुभटसालमसिंहमिलन १ सालमसिंहकुसथला-

धिकारानन्तरप्रद्रुतबुधसिंहकोटादिगगमन २ कोटामुक्तपत्नीद्वयबु-

धसिंहस्वकुमारोम्मेदसिंहबेघमप्रेषणा ३ मंगरोलमुक्तगजरथादिप-

रिकरबुधसिंहोदयपुरगमनं चतुस्त्रिंशो मयूखः ॥ ३४ ॥

आदितो द्विसप्तत्युत्तरद्विशततमः ॥ २७२ ॥

(दोहा)

१ घोड़ा ॥ ३९ ॥ २ सुख मान कर ॥ ४० ॥ ३ मोदशराना के चरणों में हाथ बढाया

४ प्रीति युक्त हुआ १ हँसकर छाती के लगा कर ७ हृदय में मदमत्त हुआ ॥ ४१ ॥

८ जयसिंह के कारण भीतर से उदास था ९ नगर में गया १० अपने घर

पर आने के संकोच से महिमानी भेजी ॥ ४२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के राजा बुध-

सिंह के चरित्र में युद्ध में मरनेवाले और घायलों की गणना के साथ युद्धक्षेत्र

को हेरने का वर्णन और बुन्दी के उमरावों का बुधसिंह को छोड़ कर सालम-

सिंह से मिलना १ कुसथल में सालमसिंह के अमल करने पर बुधसिंह का

कोटा की ओर जाना २ बुधसिंह का अपनी दोनों राणियों को कोटे और कु-

मर उम्मेदसिंह को बेघम भेजना ३ बुधसिंह के हाथी रथ आदि सामान को

मंगरोल में छोड़ कर उदयपुर जाने का चौतीसवां ३४ मयूख समाप्त हुआ

और आदि से दोसौ बहत्तर २७२ मयूख हुए ॥

इत कूरम सालव अवनि, सुनि कुसथल संग्राम ॥

कंदन मन्नि निज भटनको, कुप्पि फिरयो जयकाम ॥१॥

पादाकुलकम् ॥

मनहुँ बैग्य बिचिछ्य चटकायो, जानि प्रलय भूतस जगायो ॥

कुच्च कलह जयसिंह मानि किय, कोटा सीम मुकाम आनि किय २

हो दलेल संगहि सालम सुत, चहयो राज जिहिं स्वामि धरम च्युत

वा जुत नृप कूरम उफनायो, इम द्रुत सरित कुसक तट आयो ॥३॥

कुसकहि गयो मिलन कोटापति, बिरचिय समय जानि अति बिन्नति

हय गज बसन नजरि करि दह्वा, तजि नृप धरम खुच्यो अघ दह्वा ॥४॥

पञ्चभटिका ॥

उज्जैन अनुग नृप करि इकत, तनि मंत्र जाल जयसिंह तत ॥

लिय बुद्ध हितुं जो दल लिखाय, दिय प्रकट बंघि सबहिन दिखाय ५

कहि रानहु छप्प्यो लिखित एह, लिखवाय सखि निज भटन लेह

अब निजनिज छापन तुमहु अंकि, स्वी करहु हुकम दिलीस संकि ६

कोटस छाप तब प्रथम कीन, द्रुत ओर नृपन पुनि छापदीन ॥

सूबानुग भूपन सबन सखि, राजा लिखाय लियटेक सखि ७

पुनि तिहिं मुकाम कूरम प्रवीन, क्रमजुत दलेल अभिसेक कीन ॥

कोटस हथ पहिलै कराय, बलि तिलक हथ अवरन बिधाय ८

करि बहुरि अप्प कर तिलक कुम्भ, सिर धरिय छत्र नग ललि-

त लुम्भ

पुनि डोरिय चामर अप्प पानि, बुन्दीस रावराजा बखानि ॥ ९ ॥

१ नाश ॥ १ ॥ २ बाघ (सिंह) को ३ बिच्छू ने काटा ४ शिव को ५ युद्ध होना

मान कर जयसिंह ने कूच किया ॥ २ ॥ ६ स्वामि धर्म से गिर कर ७ नदी

॥ ३ ॥ ८ राजाओं का धर्म छोड़ कर ९ पाप के खड्गे में फसा गया ॥ ४ ॥ १०

सेवक ११ जयसिंह से १२ पत्र लिखवाया था वह ॥ ५ ॥ १३ लाज १४ लेख

॥ ६ ॥ १५ सहा के साथ चलने वाले (सेवक) अर्थात् उज्जैन के सूपे के राजाओं

ने ॥ ७ ॥ १६ दलेल सिंह के १७ कराके ॥ ८ ॥ नगों की १८ सुन्दर लड़कियाँ ॥ ९ ॥

जयसिंहका अपने उमरावोंको पटादेना]सप्तमराशि-पंचत्रिंशमयुद्ध(३१६३)

अरु कोटापतिसों कहि अठेल, बुन्दीस गिनहु अब यह दलेल ॥
जो आवहिं बुंदिय सुभट छुट्टि, तो ताहि न रक्खहु लेहु छुट्टि॥१०॥
हय अट्ट सप्त इक १७८७ अब्द मान, बनि बिंसद जेठ तेरसि १३
विधान ॥

इम करि दलेल अभिसेक अंक, समपानुकूल्य कूरम निसंक११
निज कृष्ण कुमरि तनया सु नाम, लांगलि फिलाय ताके ललाम
मन्नि सु दलेल जामात स्वीय, गज इक१अरोहि दोऊरंगरीय१२
कोटेस पटालयं किय प्रपान, थिर हुव त्रय३इक१हि तखत थान॥
सिरुपाव बाजि दुव२दुव२नवीन, कोटेस दुहुनकी नजर कीन १३
तदनंतर कूरम तोरें तिकख, कोटेसहिं कोटा दियउ सिकख ॥
उज्जैन अनुग अवरहु असेस, दै सिकख रु पठये स्वरुव देस १४
कूरम दलेल जुत बिरचि कुच्य, आयउ भुव कुसथल गुंमर उच्च॥
संग्राम भुम्मि तँहँ लखि समस्त, आत्मीय भटन बंटिय अन्नस्त१५

[दोहा]

हहु अभय पहिलैं हरियँ, सारसोप पति स्वास ॥
वाके सुत रतनहिं दियउ, पत्तन पंचोलास ॥ १६ ॥
अजितसिंह कोजुव तनय, ईसरदापुर ईस ॥
कुसथल पुर ताकाँ दयो, हठि जयसिंह मँहीस ॥ १७ ॥
साँवलदास सुहाड़पति, सुत सोभाग सनाम ॥
वाहि पलोधी पुर दियउ, कूरम नृप जय काम ॥ १८ ॥
नाह नगर नानेडिको, आहव मृत अचलेस ॥

१ नहीं डिगै जैसा (यह दलेलसिंह का विशेषण है) २ बुन्दी के उमराव॥१०॥
३ प्रमाण वाक्य सम्बन्ध में ४ शुक्ल पक्ष ५ विधि पूर्वक ॥ ११ ॥ ६ पुत्री ७
नारियल ८ अपना जमाई॥१२॥ बड़े हाथी पर दोनों राजा सवार होकर १०६
रों में ॥ १३ ॥ ११ जिस पीछे १२ प्रताप की तीख से ॥ १४ ॥ १३ बड़े घमंड से १४
अपने उमरावों को १५ निर्भय होकर बाँटी ॥ १६ ॥ १६ अभयसिंह ने १७ लिखा
१८ पुर ॥ १९ ॥ कोजूराम का १८ पुत्र २० सृपति ने ॥ १७ ॥ १८ ॥ २१ युद्ध

सुवन तास हरिसिंहको, *बसुग्रामक दिय बेस ॥ १९ ॥

सुवन बहादुरसिंहको, पुर बुढानी पाल ॥

दस १० ग्रामक तिहि हित दये, दुंढाहर गिनि ढाल ॥ २० ॥

घासीराम रसोर पति, पुतहि ग्रामक पंच ॥

दिय भूपति जयसिंह दुत, पहु रचि नीति प्रपंच ॥ २१ ॥

कपंच १ प्रपंच २ अन्त्यानुपासः ॥ १ ॥

अभयसिंह आत्मज अधन, नाथूरामह नाम ॥

पलटयो सठ रनके प्रथम, सालमसौ करि साम ॥ २२ ॥

यातैं नहि बलवन लियउ, मिल्यो जानि इन माहि ॥

नाथूरामहि मन्नि निज, विस्वास्यो गहि माहि ॥ २३ ॥

देवसिंहकी मेदिनी, इस बंटी कछवाह ॥

देवहु गिनि बुद्धहि अधन, कोटा गयउ सचाह ॥ २४ ॥

पुनि तेजि पंचोलासको, किय जयसिंह प्रयान ॥

प्रविश्यो जैपुर निज नयर, उद्धत विजय अमान ॥ २५ ॥

सोरठा ॥

स्वीय जननिके सत्य, उदयनैर ही जो अबहि ॥

तनया बुल्लिय तत्य, कारन व्याह देखेलेके ॥ २६ ॥

दोहा ॥

सुत समेत जयसिंहसौ, रानाउति सु रिसाय ॥

वरख छियासी नद माघ बिच, पत्नी पीहर जाय ॥ २७ ॥

ही तबत तत्यहि सुन्यो, अब तनया आव्हान ॥

सालम सुतके व्याहको, यातैं पठई सा न ॥ २८ ॥

में मरा * आठ खतम ग्राम दिये ॥ १९ ॥ † पालन करनेपाला ॥ २० ॥
१ प्रभु (राजा) ने ॥ २१ ॥ २ पुत्र ॥ २२ ॥ ३ भूमि ४ बुधसिंह को निर्ध-
न जान कर ॥ २४ ॥ २५ ॥ ५ पुत्री को जयपुर ललाई ॥ २६ ॥ ६ गई ॥ २७ ॥
७ पुत्री का बुलाना य उसको नहीं भोजी ॥ २८ ॥

कूरम पुनि काहि मुकलिय, नहिं यह सालम नंद ॥

हे अब यह बुंदीस *सुब, अधिप दलेल अमंद ॥ २९ ॥

हुकम साहे लिखवाय हम, दिय इहिं राज्य दिवाय ॥

जिहिं रखन हम रान जुत, सब कछवाह सहाय ॥ ३० ॥

यातैं कछु न विचार अब, इहिं ललाट नृप अंक ॥

तनया देहु पठाय तुम, सोक बिहाय निसंक ॥ ३१ ॥

निज रानी प्रति पल इम, पठयो कूरम पाल ॥

पै कुमरी कछु रोग पगि, आय संकी नहिं हाल ॥ ३२ ॥

इति श्री वंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी-
पतिबुधसिंहचरित्रे जयपुराधीशजयसिंहस्योज्जयनीतो बुन्दीदिगं-
मन १ बुंदीराज्याभिषिक्तदलेलसिंहेन सह जयसिंहस्वसुतासन्बध-
करणा २ दृष्टकुसस्थलयुद्धक्षेत्रमृतस्वभटतत्सूनुबुंदीग्रामवितरणा ३
दत्तभूमिजयसिंहजयपुरगमनदर्शन पञ्चत्रिंशो मयूखः ॥ ३५ ॥

आदितस्त्रिसप्तत्युत्तरद्विशततमः ॥ २७३ ॥

(देही)

इत नृप प्रविश्यो उदयपुर, स्वसुर हवेली पास ॥

औधे छज्जनके महल, उतरयो तत्थ उदास ॥ १ ॥

मोदक फल भोजन अमित, पुनि रूपय सत पंच ५०० ॥

* बुन्दी के पति का पुत्र है ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुन्दी के राजा बुधसिंह के चरित्र में, जयपुर के राजा जयसिंह का उज्जयिणी से बुन्दी की ओर आना १ दलेलसिंह के बुन्दी का राज्याभिषेक करके अपनी पुत्री का दलेल-सिंह से संबंध करना २ राजा जयसिंह का कुसस्थल के सुताम युद्ध क्षेत्र को देख कर आने पर हुए हमरायों के पुत्रों को बुन्दी के ग्राम जागीर में देना ३ जागीरें दिये पीछे जयसिंह के जयपुर जाने का पैंतीसवां ३५ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ तिहुत्तर २७३ मयूख हुए ॥

१ बुधसिंह २ मेघम की हवेली [जहां पर अब रेजीडेंसी है] के पास ३ औधे जागीरों के महल (अब भी इसी नाम से प्रसिद्ध हैं) ॥ १ ॥ २ छद्दह (मिठाई) ५ पात्र

महिमानी इम मुकलिय, रान बिरचि हित रचें ॥ २ ॥

बिपति अतीव बिचारिकैं, इकत करि उमराव ॥

कहिय रान बुधसिंहकैं, द्रुत धर आवन दाव ॥ ३ ॥

पंचन कहि तब रान प्रति, बिधि कोटैस बुलाय ॥

मंत्र रचहु नृप तीनै मिलि, पहुमी लैन उपाय ॥ ४ ॥

पादाकुलकम् ॥

पहु बिचारि इम रान मंत्र पन, कोटा पति बुल्लिय इहिं कारन ॥

पुनि गिनि बुद्धहिं जनक जामि पति, अंतहपुर बुल्लिय मंडिय मति ५

रीति सु सुनि कूरमपति रानी, रान सहोदर जामि रिसानी ॥

जनक जामि मम भुवा जियत नन, अंतहपुर बुल्लहु जिहिं कारन ६

बिनु कारन बुल्लहु नन बुद्धहिं, कछु मन्नहु कूरमपति कुद्धहिं ॥

जामि बचन सुनि रान सोचि जिय, बुद्धहिं निज अवरोध न बुल्लिय ७

इहिं अवरोध गमन अवरोधहु, सुनि रु गमन चित्यो बिनु सोधहु ॥

बिष्णुसिंह पुर बंसवहाला, भगिनी तस गुन रूप सुभाळा ॥ ८ ॥

नाम गुमान कुमरि सुभ लच्छन, बहुरि सील गुन विनय बिचच्छेन

वच्छेर दुवरके पुब्ब बिधौई, संभरपति सौं तास सगाई ॥ ९ ॥

संपति बिनु पुनि व्याह सुहायो, पत्र दूत द्रुत अगग पठायो ॥

मंगिय सिक्ख रान प्रति मुद्धह, बरजिय तदपि रान नृप बुद्धह ॥ १० ॥

पहुमी निज हित मंत्र प्रचारन, कोटापति बुल्लिय तुम कारन ॥

अरु मम भटहु धरन तजि आये, अप्पन हित हम मंत्र उपाये ॥ ११ ॥

१ थोड़ा सा स्नेह करके ॥ २ ॥ २ एकत्र ॥ ३ ॥ ४ उदयपुर, कोटा और
बुन्दी के तीनों राजा मिल कर ॥ ४ ॥ ४ पिता की बहिन (भुवा) का पति ५
रायले (जनाने) में बुलाने की ॥ ५ ॥ ६ राना की सगी बहिन ७ पिता की
बहिन ॥ ८ ॥ ८ बहिन के ९ अपने जनाने में नहीं बुलाया ॥ ७ ॥ १० जना-
ने में जाने का रोकना सुन कर उदयपुर से जाना बिचारा ११ अष्ट भाग्य
वाली ॥ ८ ॥ १२ बिचक्षण १३ दो वर्ष पहिले १४ की थी ॥ ९ ॥ १५ मृद ने ॥ १० ॥
॥ ११ ॥

तुमको रचत अनवसर उपनय, मन्नुहु तो इक बचन नीति मय ॥
 मम सालिय पानिग्रह मंडहु, बंधुनकैं ओरहु तनया बहु ॥ १२ ॥
 जो हिय रुचहिं व्याहितिहिं अत्थहि, सजहु भुमि उद्यम हम सत्थहि
 संभरकहि यह पुब्ब सगाई, बलि छोरैं नन होत बडाई ॥ १३ ॥
 हठि हठि रान बराजि पुनि द्वारयो, बुद्ध पुद्ध नयै तउ न बिचारयो।
 पुनि कहि रान आत कोटा पति, आये तुम घर हमहिं लज्जअति १४
 यातैं कछु बिरचत उपाय अब, तुम इत जात कोन करिहैं तब ॥
 यह जो दृढ व्याहि रु द्रुत आवहु, जो बरै सचिव रक्षिख तिहिं
 जावहु ॥ १५ ॥

मयाराम तब अप्प पुरोहित, अवनि उपाय काज रक्षिखय इत ॥
 अप्प बिबाह हरख उफनायो, चहि दिस दक्षिखन द्रुतहि चलायो १६
 करहिं न व्याह बिपति बिच कोऊ, संभर पति अच्छोगिनि सोऊ
 मही सरित उत्तरि प्रमत्त मन, पहुँचिय बंसबहाला पत्तन ॥ १७ ॥
 सावन असितैं सत्त बसु ८७ संवत, सद्धि लगन एकादसि ११ संगत ॥
 व्याहिय विष्णुसिंह भगिनी बत, राउल अजब सुता रमनी रंत १८
 बहु विधि राउल हरख बधाये, स्वागत सवन अपुब्ब सपाये ॥
 रैचि बरात आश्विन लग रक्षिखय, अरु पुनिहू जावहु नन अक्षिखय
 धरिय वरैनि तत्थहि आधानह, यातैं तहैं रक्षिखय बहुवानह ॥

अभयसिंह मरुधर नरेश इत, चहि बिछीस निदेशैं करन चित २०
 सूबापति गुज्जरधर स्वामी, ग्राम सहैस सत्तरि ७०००० अनुगामी ॥
 प्रबल अहमदाबाद नगर पति, सरबिलंद जितन करि सम्मति २१
 सक मुनि बसु अत्यष्टि १७८७ मास ईस, द्रुत हंकिय गुजरात पहु-

१ बिजा समय २ बिबाह ३ बिबाह ४ हमारे साइयो के ॥ १२ ॥
 ॥ १३ ॥ कृष्ण बुधसिंह ने लोकी ५ नीति नहीं बिचारी ॥ १४ ॥ ६ अष्ट ॥ १५ ॥
 ७ भूमि के ॥ १६ ॥ ८ मही नामक नदी ९ पुर में ॥ १७ ॥ १० यदि पक्ष ११ सन्तो-
 ष युक्त ॥ १८ ॥ १२ हुल्ला बाहुनि पूर्वक ॥ १९ ॥ १३ हुल्लहिन ने १४ मर्ने १५ बाइशाह
 की आज्ञा ॥ २० ॥ १६ गुजरात के १७ सूबा के साथ ॥ २१ ॥ १८ आश्विन मास १९ शीघ्र

मि दिस ॥

विदित बिजय वसमी सनि बैसर, बिटि अहमदाबाद लयो बर २३
अंग कलुक तोपन रचि जाहिर, बुल्लयो बहुरि डाक दै बाहिर ॥
लाखि आवत रहोर लारन हित, बहिरन सब हंकि यमसन्नचित २३
ऊदाउत चंपाउत उदत, मेरतिषा कृपाउत दह मत ॥

जैताउत मुनि जैतवालाउत, बल्लहाउत करनोत जोरजुत ॥ २४ ॥

पाताउत रु कलाउत प्रतिभट, बढि धूहड रानाउत रन बट ॥

भहाउत रु महेषे विनु भय, रूपाउत रु सताउत अतिरय ॥ २५ ॥

गोगाउत रु करमसीउत जहँ, देवराज रनधीर बसि तहँ ॥

बाहडदेवउत रु पोकरीनाँ, बंहाउत हुमंडि दह मरनाँ ॥ २६ ॥

जोधे रतन केसरी कुल भव, धंधल अरु सिंधल अरि बन दव ॥

भूपतिउत रतनोत बडे भर, मंडनउत चुंडाउत अर्सिकर ॥ २७ ॥

बरसिहोत नराउत अति बल, सोहड रायपालउत अतिभल ॥

रनमल्लोत मंडलो रनरत, मुदित आरमल्लोत लारन मत ॥ २८ ॥

बहुरि चंद्रसेनोत महाबल, इत्यादिक संजुरि चित उज्जल ॥

नृप अभमल्लहि हथ दिखावत, लगे लारन मुच्छन कर लावत २९

सरखुलंद सूरज कर सखिखय, निडर मिच्छ उततौ हय नखिखय

१ दिन २ अष्ट अहमदाबाद को घेर लिया ॥ २२ ॥ ३ जोश दिलाकर ॥ २३ ॥ (अब यहाँ राठोड़ी की लाखा गिनाते हैं) ॥ २४ ॥ ४ शात्रु से युद्ध करने वाले ५ उदयपुर के महाराजा प्रतापसिंह दिखा के दिनों में गोरवाड में 'लोयाणा' के पर्वतों में रहे थे तब प्रसन्न होकर लोयाणा के ठाकुर को 'राखा' की पदवी दी थी जो अब भी राणा कहलाता है जिसके वंशवाले राणा बत कहलाते हैं और राव रिद्धमल के वंश में राणा नामक एक प्रसिद्ध पुरुष हुआ था उसके वंशवाले राणा बत कहलाते हैं सो अब भी विद्यमान हैं और इसी जाति से प्रसिद्ध है परन्तु इस समय इनके अधिकार में कोई ठिकाना नहीं है ॥ बड़े योग वाले ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ७ शात्रु रूपी यनों की अग्नि ८ हाथ में तरवार रखने वाले ॥ २७ ॥ ९ युद्ध में पीठि करने वाले ॥ २८ ॥ १० लाञ्छी करके ११ नल्लच्छ ने

आकुल भोगे सहस्र अकुलाने, दुग मंगि पव्यप कूट दुलाने ॥ ३० ॥
घने घुमंड वगग ईषि घोरन, रारि मधिग मिच्छन रहोरन ॥

किलक प्रेत डाकिनि गन किन्नी, लोस्स्य व्यैक्ति चउसछि ६४ न
लिन्नी ॥ ३१ ॥

डिगि बीचिन सिंधुन जल डोहयो, अरुन अब्व सप्तक अवरोहयो ॥
कटि कंकट निकसत वपु कैसै, जिहंग गन कंचुक तजि जैसा ॥ ३२ ॥
कटि कटि कुंभ तिरत सोनित किम, जल अगार्ध घट उडुपै पुं-
थुल जिम ॥

अली इमाम होत इत औरव, इत हरि अच्छुत भूतनार्थ भव ॥ ३३ ॥
भूत किलकि कहूँ हय भरकावत, गो कि चोर लखि ग्वाल चलावत
कहुँ भट चरन रकावेन अटकत, मूढचित्त भोगन जिम दुर्मत ॥ ३४ ॥
फटित केतु ईभन फहरावत, रंभा तरु कि अद्रि लहरावत ॥

गुटिका भ्रमत सीति यह रक्खिय, मनहु कुद सैरघाभिधमकिखय ॥ ३५ ॥

निर्मय होकर छोड़े डठाये १ कर्तव्यता ये मूढ़ (अब क्या करना चाहिए) हो-
कर शेष नांग के हजार फण घषराये और पर्वत हिलकर उनके र निखर
ले ॥ ३० ॥ बहुत घमंड से घोड़ों की बागें ३ खिच कर (घोड़े दौड़ा कर) मटेप्यों
और राठोड़ों के युद्ध हुआ वहाँ प्रेतों ने और डाकिनियों ने फिजक करी ७
सौ सठ शरीरों से घोषजिनों ने ४ नृत्य किया ॥ ३१ ॥ ४ तरंगों ने पल कर
लसुव के जल को तथा और सूर्य के सारथि अरुण ने दर्ग दो ७ लाग घोड़ों
के खरूर दो = रोका ९ कज्ज कट कर बीरों के अंग ऐसे निकलते हैं जैसे १०
सर्पों का समूह कांवरों छोड़ कर निकलता है ॥ ३२ ॥ जैसे १२ गहरे जल में
घड़ा (कलश) तिरै अथवा १४ पड़ी १३ मान तिरै तैसे ११ हाथियों के कुंभ-
सक लटक कर रुधिर में तिरते हैं उधर (मछेन्द्रों की ओर) तो अली और इ-
माम आदि पैगम्बरों के १५ शब्द करते (नाम लेते) हैं और उधर (राठोड़ों) में
विष्णु धिक्कु और १६ भिव शिव करते हैं ॥ ३३ ॥ कहीं पर भूत मिल कर
१७ घोड़ों को समकाने हैं सो मानों चारों को देख कर १८ गड्डों को ग्वा-
ल बनाते हैं जैसे मूर्त चिसवाला दुर्मति भोगों में पड़ा रहे तैसे १९ पागड़ों
में भरण बलभ कर वीर लटकने हैं ॥ ३४ ॥ पटीहुई ध्वजा २० हाथियों पर
उठती है सो मानों २२ पर्वतों के ऊपर २१ कल का पृथ फोका खाता है औ-
र कोमित दृष्ट २३ मधुनचित्तों के समान दिनभिनाती हुई गोलियां अमरी

निकसत*गोद कपाल हितु इम, मंजुमदन मञ्जुजाल हितु जिम
बहु आयुध आयुध पर बज्जत, लखि कल्लरि ई देवालय लज्जत ३६
इम रन करि रहोर बढे अति, मिच्छन इनत धन्वपति सम्मति ॥
सरबुलंद लखि प्रबल भज्यो सठ, हारयो तजि गुजरात सहित
दठ ॥ ३७ ॥

बंलि दिल्लीपति अमल बढायो, इम मरुभूप जित्ति रन आयो ॥
सुदित भयो सुनि साह सुहुम्मद, सरबुलंद दक्खिन गय दुम्मद ३८
हुम्मद १ दुम्मद २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

बुंदिय पति इत स्वसुर गेह रहि, दुलहनि तत्थहिं रदिय गमन चहि
कत्तिय भास कुच्च अप्पुन किय, दायज बंसु बहुविधि राउलदिय ३९
दंतिथ गह्वेराव सु दंतद, मास रहत बारह १२ मर्यमतद २ ॥

नृपके इभपांजन वह नांयो, अंचत निगह जोर उफनायो ॥ ४० ॥
यह सुनि रान लयो वह हत्थी, सहस्र १००० भेजि रूपय चर सत्थी ॥
इत कोटेस उदैपुर आयउ, अधिप रान सह मंत्र उपायउ ॥ ४१ ॥

मयाराम दिपाधर्म तत्थहि, बुल्लयो कुंबच कुंनय अघ सत्थहि ॥
कहा रान पुच्छत कोटेसहि, दब्बयो इन पहिले नृप देसहि ॥ ४२ ॥
इनकी लखि अवरन मन चल्लयो, तबहू इत न मुच्छ कर घल्लयो
कगौर लखि जयसिंह कथित किय, इनहिं पुच्छि लहिहो किम
बुंदिय ॥ ४३ ॥

॥ ३५ ॥ † मधु मक्खियों के छातों (सुषाल के छातों) से सुंदर † मेष
निकलने के समान मत्तकों से * भेजे (मस्तिष्क) निकलते हैं कितने ही श-
स्त्र शस्त्रों पर बजते हैं जिनको देख कर § मंदिरों में बजती हुई आलारे
लज्जित होती हैं ॥ ३५ ॥ १ मारवाड़ के राजा की सलाह से ॥ ३७ ॥ २ पुनि
१ मारवाड़ का राजा ४ दुर्मद (भाग हीन होकर) ॥ ३८ ॥ ५ घन ॥ ९ ॥ १
गाह्वेराव नामक हाथी ७ दिया ८ मदमस्त ९ बुधसिंह के मदायतों से १० न-
हीं आया ११ सांफलों को खैयती हुआ ॥ ४० ॥ १२ हलकारे के साथ ॥ ४१ ॥
१३ नीच ब्राह्मण १४ अनीति और पाप के साथ १५ छोटे बचन बोला १६ बुधसि-
ंह के देश का ॥ २२ ॥ १७ पत्र १८ कहना

यह सुनि महाराव धंकि उठ्यो, रानहु विप्र अधमपर रुठ्यो ॥
 इम नृपकाज बिगार विप्र यँहँ, पहुँच्यो मगहि मद्दय संभर पँहँ ४४
 इम पुनि बुद्ध उदैपुर आयो, विपति जोर सब शुंमर बिहायो ॥

सम्मुह आय रान हित सजिय, लै प्रविश्यो पत्तन चहि लाजिय ४५

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमराशौ बुन्दी-
 पतिबुधसिंहचरित्रे बुंदीहरणमन्त्रहेतुमहाराणासंग्रामसिंहस्य को-
 टामहारावदुर्जनशल्योदयपुराकारणा १ पाणियहणहेतुबुधसिंहवां
 सबहालागमनबुधसिंहपुरोहितकटुवचनश्रवणदुर्जनशल्यक्रोधकर
 णा २ योधपुराधीशाभयसिंहाहमदाबादविजयन ३ बुधसिंहोदयपुर
 प्रत्यागमनवर्णनं षट्तिंशो मयूखः ॥ ३६ ॥

आदितश्चतुःसप्तत्युत्तरद्विशततमः ॥ २७४ ॥

(षट्पात्)

रान नगर बिच रहिय हड्ड भूपति इक १ हाँयन ॥

सर सत५००रूपय नित्य रान पहुँचात मान मन ॥

सभा समय संभरहु जात पहुँ रान निकट जब ॥

अदब रक्खि अति अग्य तखत तजिदेत रान तब ॥

लैजात आय सम्मुह सरल डकासन बैठत उभय २ ॥

संभरहिँ मन्नि पाहुन संमुद बिनु बुंदिय धारत बिनय ॥१॥

१ क्रोध करके(भीतर से) जल कर) २ बुधसिंह के पास ॥४४॥ ३ घमंड छोड़ा ॥४५॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुंदी के भूपति
 बुधसिंह के चरित्र में बुंदी लेने की सलाह करने के अर्थ महाराणा संग्रामसिं-
 ह को कोटा के महाराव दुर्जनशल्य का उदयपुर बुलाना १ बुधसिंह का विवाह
 करने के अर्थ वांखवाले जाना और बुधसिंह के पुरोहित के कटु वचनों
 से दुर्जनशल्य का क्रोधित होना २ जोधपुर के राजा अभयसिंह का अहमदा-
 बाद को विजय करना ३ बुधसिंह के पीछा उदयपुर आने के वर्णन का छत्ती-
 सवां ३९ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ चौहत्तर २७४ मयूख हुए ॥
 ४ एक वर्ष ५ प्रभु ६ एक गद्दी पर ७ हर्ष सहित ॥ १ ॥

पादाकुलकम् ॥

बुद्ध पुरोहित मंत्र बिगारयो, नृपति रान हित तदपि न टारयो ॥
 अक्खिय पुनि बुंदिय जब अई हैं, तुमहिं भूप जावन तब दैहैं ॥ २ ॥
 अवनि दैन कूरम प्रति अक्खहिं, रानाँपनको गँव्व न रक्खहिं ॥
 जब स्वाधीन राजनिज जोवहिं, सुख सह निंद हमहु तब सोवहिं ॥ ३ ॥
 तोलों खरच स्वकीय मानँ तत, दिन प्रति दम्भ पंचसत ५०० प-
 हुँचत ॥

कहि नृप कुम्भं खुसामदि कैहो, लागि हमरे हित बुंदिय लैहो ॥ ४ ॥
 प्रनय रावरेतैं कूरम पति, मम भुव जो दैहैं न टेक मति ॥
 तो रन करि लैहो कि तंतक्खिन, प्रीति तथा कगिहोँ परपक्खिन ॥ ५ ॥
 सुनियह रान सुजान नीति सैम, कहिय आज दिल्ली कर कूरम ॥
 अकबरपुर अजमेर अवंतिर्ये, सूबा तीन अर्धीन साह किय ॥ ६ ॥
 मित्र खानदोराँ जिहिं मन्नत, सेनानी जु जवन पति सम्मत ॥
 साहहु जास कथितैं सिर धारत, बलि अवरन जिहिं सैम न बि-
 चारत ॥ ७ ॥

पुनि निज बनिबनिस्वसुर साल प्रिय, अकबरतैं अबलों धन संचिय ॥
 अरु बहु मुलक अप्पन न असो, जास सचिव राजामल जैसो ॥ ८ ॥
 राय कृपारामहु बकील रतैं, जास कथितैं जवनेस न लुप्पत ॥
 गृह जाके दिल्लिय उमीर गन, पहुँचत कर जोरत किं करपन ॥ ९ ॥
 जिनकी अरजसाहप्रति जंपत, बसुँ अधिकार मिलत तिनकोँ बत ॥

१ तो भी ॥ २ ॥ ३ भूमि पीछी देने का शर्वा ॥ ४ ॥ आप के खरच के प्रमाण माफिक
 बुधसिंह ने कहा कि ५ जयसिंह की ॥ ४ ॥ ६ नन्नता ७ उसी समय ८ जय-
 सिंह के शत्रुओं से प्रीति करूंगा ॥ ५ ॥ ९ से १० जयसिंह पर दिल्ली के हाथ
 हैं (यहां लक्षणा से दिल्ली के पति का ग्रहण है) ११ आगरा १२ उज्जैन ॥ ६ ॥ १३
 सेनापति १४ जिस जयसिंह का कहना १५ जिसके बराबर ॥ ७ ॥ ८ ॥ १६ अनु-
 कूल १७ जिसका कहना ॥ ९ ॥ १८ धन और अधिकार सन्तोष दायक मिलते हैं

द्वै २ द्वै २ सत १०० * सिविकां जिहिं द्वारह, वढि पंतिन ढकिजात
वजारह ॥ १० ॥

बैठक जाहि खास खिलबत्तिय, रमत साह सतरंज हुलसि हिय ॥
जिनके घर अैसे वकील जन, थिरन उथपि स्वामिजय थप्पन ॥ ११ ॥
जंग बिरचि तिनतैं को जितहिं, बिनुहित काहि बिगारहि † बितहिं
इहिं कारन तिनतैं रन उचित न, अवर उपाय रचहिं बहु अप्पन ॥ १२ ॥
§ भेद उपाय कोहु नहिं संभव, लगौं नहिं बिनु समय जास लव ॥
यातैं साम दान अनुसरिहैं, कूरमसौं तुमसौं हित करिहैं ॥ १३ ॥
बिनु नैय समय होत नहि चाही, संसर टेक नाहक तुम साही ॥
निज दठ तो मम गज्य नसेहौ, प्रज्ञ तुमहु को फल तब पेहो ॥ १४ ॥
सच्च कहत नृप मुँह रिसायो, चलन हुकम सत्यहि पहुँचायो ॥
हे सब अनुंग मूढ हथजोरे, न चलहु इम काहू न निहोरे ॥ १५ ॥
सक बिक्रम अठ रु बसु सत्रह १७८८, बाहुल मास वृथा करि
बिग्रह ॥

अनखिं चलयो संभरं अज्ञानी, बरजत रह्यो रान हित बानी ॥ १६ ॥
जदैपि मुरयो न रान तउ सज्जन, गज भूखन सिरुपाव बाजिगन ॥
पठये मितैं दसतुर बुद्ध प्रति, इनअखिखय हम करजदार अति ॥ १७ ॥
इनके दम्भ पठावहु यातैं, वनिंकैन दै हम करज बिघातैं ॥
तिनकी तीस सहस ३०००० मुँद्रा तब, जानि बिपत्ति रान पठई
जब ॥ १८ ॥

करज भारि तिनकरि कउलेसँह, बुद्ध चलिय पैसुमति नरेवसह ॥

* पालकिये † जिसके द्वार पर ॥ १० ॥ ११ ॥ ‡ धन ॥ १२ ॥ § परस्पर
द्वेष कराना (फोड़ तोड़) १ लेशमात्र ॥ १३ ॥ २ बिना नीति ३ युद्ध की ४ तु-
म बुद्धिमान हो ॥ १४ ॥ ५ मूढ़ ६ सेवक ७ हाथ जोड़नेवाले ॥ १५ ॥ ८ कार्ति-
क मास में ९ क्रोध करके १० सुधसिंह ॥ १६ ॥ ११ तो भा १२ दस्तूर के मा-
फिक ॥ १७ ॥ १३ वनियों को देकर १४ रुपये ॥ १८ ॥ १५ घासमागियों का
पति, १६ पशु की बुद्धि और मनुष्य के वेष से.

द्रुत*बाहुल मेचक चउत्थि४दिन, आयउ चलि। श्रीद्वार ईदुइन१९
 इकसत१००दम्भ भेट हैरि अप्पिय, थाँवल गाम मुकाम सु थप्पिय
 यसि तत्थ रु दुव२मास बिताये, लंघन पुनि चालीस लगाये ॥२०॥
 अधिका अफीम बढयो नृप अगँ, पैसे त्रिश्मित नित्य हित पगँ ॥
 पुनि अंतम मद्य अवद्यहु पीवहिँ, जड़ बिनु भूख आयुबल जीवहिँ २१
 अमन लेत सत्तम७अहुम८दिन, तुच्छ बहुत सोपै न पवँ तिन ॥
 इहिँ विधि अन्न अरुचि पर आये, लंघन तब चालीस४०लगाये २२
 तबहि अफीम मद्य दुव त्यागे, लै पुनि पथ्य लाभ भुव लागे ॥
 बिगचि कुच्च बह ग्राम विहायो, लुट्टन रानाँ मुलक लगायो ॥२३॥
 सठ नृप नहि पगकरँ समुझायो, बहु बहु लूट प्रपंच बनायो ॥
 रानहु सुनि गिनि बुद्ध गिसानों, बुद्ध सु कैउलन हत्थ विकानों २४
 दुव२मितान कुंपासणि किन्नै, दुव२त्रय३पुर गंधेगहु दिन्नै ॥
 पथ इहिँ रुकन चलन प्रमत्तो, पुर वेधम स्वसुरालय पत्तो ॥ २५ ॥
 बसु बसु रात्त इक्क १७८८ मित संबत, गँउर चउत्थि ४ सँहरूप
 भास गत ॥

मंजुँ गिन्यों न जुद्ध करिभरनौ, स्वसुर अन्नजीवन लिय सरनौ २६
 पगदुव सँदय हृदय देवहु पुनि, सालक निज बुद्धहिँ आवत सुनि
 अभिमुख जाय निजालय आनै, बिनय प्रीति कर जोरि बखानै २७
 बुद्ध मुखग महलन बरावायो, अप्प लालवारिय कढि आयो ॥
 रखत सुराजवाग खिल गखिय, अब कँसैनिभिहोहु न अविखय २८

*काता बरि चौथ के दिन नाथद्वारे में हाडों का राजा आया ॥ १९॥ १ विष्णु-
 गवाज के भेट क्रिये थाँवला नामक ग्राम में ॥ २०॥ ३ तीन पैसों भर ४ वह अभम
 बुधमिद मद्य भी पीता था ॥ २१॥ २२ ॥ ५ परगहन उल लुट्ट राजा को नहीं
 समझा ॥ ६ अथवा उस सूरज ने परगह को नहीं समझा ७ सूरज जानकर ७ पा-
 भियों के हाथ बिक गया ॥ २४ ॥ ८ मुकाम ९ मसुरे के घर में गया ॥ २५ ॥ १०
 सुकला ११ पौष मास १२ सुन्दर ॥ २६ ॥ १३ दयावान् हृदयवाले देवसिंह ने १४
 सामने १५ अपने घर ॥ २७ ॥ १६ सामग्री (सामान) १७ याकी का ॥ २८ ॥

देवसिंहका बुधसिंहको रखना] सप्तमराशि-सप्तत्रिंशमयूख (३२०५)

बुंदिय लोक विचार बिहीनों, क्रम लुट्टन तत्थहि अति कीनों ॥

राउत देव तिनहि बरजाये, पै न रहे तब ग्रहन पठाये ॥२९॥

सठ बुद्धहु सुनि रोकि न रक्खिय, उपालंभ देवहिं प्रति अक्खिय ॥

धरनि विपत्ति लोक सम धारत, बलि अत्थहि आधार विचारत ३०

लुट्टन खान देहु तुम सालक, क्यौं मोरैन पकरात कृपालक ॥

जो सुनि देव तबहु कर जोरे, माफकरहु ओगन कहि मोरे ॥३१॥

अति सहनत्व देव अब लीनों, बुद्ध हितुं बनि अधिक अधीनों ॥

पंचहजारि ५००० ग्राम दिय पंचक ५, रुपय अठ ८ नित्य सु न

रंचक ॥ ३२ ॥

निबहनको यह देव निवेदिय, जड़ संभर तोउ न धप्पत जिय ॥

करजहु करि रक्खै नहिं कोऊ, समुझी तुच्छ मूढनृप सोऊ ॥३३॥

अगग त्रिलकख हजार अठारह ३१८०००, भुगते दम्म करज

सह भारह ॥

वसु सत ८०० नित्य दये इक १ वैच्छर, तीस सहस ३००००

हंय हित उदारतर ॥ ३४ ॥

विभव देव जिहिं करज बिलायो, तोऊ अब गृह नजरि बतायो ॥

हो सब हेय अधम नृप हडा, विरचिय तदपि देव हित बंहा ॥३५॥

[मनोहरम्]

बुंदीके बिनामति विडारि देवेके जे,

तिन्हें राखि बहु बेरन विपत्ति विकलायो नाँ ॥

याहीतें रिसाय राँन छीनि लीनी बेधम,

कहायो नाँहि रक्खहु तथापि लास तायो नाँ ॥

१ परंतु ॥२९॥२ (उरहना) ओलंभा ३ फिर ॥ ३० ॥ ४ हे साल ५ मेरे लोकों को

॥ ३१ ॥ ६ सहनशीलता ७ बुधसिंह से ८ पांच ग्राम पांच हजार रुपय

सालाना आमद के ९ वह कमती नहीं थे ॥ ३२ ॥ १० बुधसिंह का ॥ ३३ ॥

११ एक वर्ष पर्यन्त १२ योदे सोल्ल लिये जिनके ॥ ३४ ॥ १३ सब प्रकार से स्वाज्य

पा १४ पण ॥ ३५ ॥ १५ निर्वृत्ति १६ निष्काल देने योग्य १७ महाराणा ने

पाघ पावलीनकी रु पैसेनकी पैनई,
मिली पै मजबूती मानि मन मुग्धायो नाँ ॥
चौँडासों सपूत बैप्प राउलके बंस कोऊ,
धर्म धुर धोरी धीर देवासो दिखायो नाँ ॥३६॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमराशौ बुंदीपतिबुध-
सिंहचरित्रेमहागणासत्थोपदेशक्रुद्धत्पक्तोदयपुरमार्गप्राप्तनाथद्वारथाँ
वलाग्रामगतबुधसिंहचत्वारिंशल्लङ्घनोपायमद्याहिकेनन्हसन १ मेद-
पाटग्रामलुण्टाकबुधसिंहश्वसुरदेवसिंहगेहवेधमगमन २ सोढापरि-
तव्ययस्त्रगृहरक्षितबुधसिंहराउतदेवसिंहप्रशंसनं सप्तत्रिंशो मयूखः
॥ ३७ ॥

आदितः पञ्चसप्तत्युत्तरद्विशततमः ॥ २७५ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

याहि वरस दुरभिच्छँ भयो अति, नहिँ तन अन्न धनीहु धरैँ नति
इक १ रूप्य उपधान्य जतन इत, मूल्य विक्रयो द्वैसत २०० टकेन
मित ॥ १ ॥

अब नृप तजि जन जान लगे इम, तरु अपत्र अफलहिँ पच्छियँ तिम
मनहुँ ताल सुक्कैँ जल मच्छे, इम नहिँ गये छद्मातक ७ अच्छे ॥२॥

१ पगरखियाँ (जूतियाँ) २ चूड़ा के बिना ३ बापा रावल के वंश में ॥ ३६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में बुधसिंह के चरित्र में
महाराणा के सत्य उपदेश करने पर क्रोधित होकर बुधसिंह का उदयपुर छोड़
कर नाथद्वारैँ होकर थावल नामक ग्राम में चालीस लंघन करके अमल और
मद्य को कम करना १ मेवाड़ के ग्रामों को लूटने हुए बुधसिंह का अपने ससुर
देवसिंह के घर वेधम में जाना २ असह खरच भुगत कर बुधसिंह को अपने
घर में रखने की राउत देवसिंह की प्रशंसा का सँनीसवाँ ३७ मयूख समाप्त
हुआ और आदि से दोसौ पद्यहत्तर २७५ मयूख हुए ॥

४ दुमिल (कहत) ५ धनवान भी नज़र धारण करते थे ६ अड़क धान्य (सा-
याँ, मळाचा आदि) ७ एक रुपये का दोसौ टकों भर ॥ १ ॥ ८ मनुष्य ९ वि-
ना पत्ते और बिना कलों के वस्त्र को पत्ती छाँदे जैसे १० सूखे तलाव में ॥ २ ॥

* पादि गजादि रस्वत अब आयो, मंगरोल रक्खयो सु मँगायो ॥
 नृप कोटैस सोहु पठयो नन, खान खरच दै जाहु कह्यो घन ॥ ३ ॥
 इम ठाँठाँ बहु विभव रह्यो अब, संभरकोँ निंदत जिहान सब ॥
 पै अफीम आसव तजि पक्के, छुधा बढाय असन बहु छक्के ॥ ४ ॥
 अगहि तजि कोटापति आहुति, आई निज पीहर खुंडाउति ॥

हुति १ उति २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

कोटापुरहि रही कछवाहिय, अबसु नृपहु बेघम अवगाहिय ॥ ५ ॥
 जैतसुवन उत देव जंग जय, गिनि बुद्धहि अधन रु कोटा गय ॥
 तत्थहि घाय अच्छ हुव तत्तौ, पुनि कोटैस सभा वह पैतो ॥ ६ ॥
 महाराव तब कहिय वैप मत, सारधलकख १५०००० पटा तुमरो
 गंत ॥

इम दुवलकख २००००० पटा अबदैहँ, अरु अच्छव तुमरे घर अहँ ७
 अब बुंदीस नामहु न अकखहु, रीति अदब दुगुनौ यह रक्खहु ॥
 यहै सुनत देवा रिस आयो, दरबीकर जिम पुच्छ दबायो ॥ ८ ॥
 उठ्यो भट भुज ठोकि अचानक, इत उत परिग सभा विच ओर्दक
 नक १ दक २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

अरु उत्तर बुल्ल्यो असंक उग, पति क्रूरम अगँ दिल्ली पुर ॥ ९ ॥
 बुद्ध रु भीम उभय करि इकत, त्रय ३ नृप इक्क १ थाल जिम्मिय
 तंत ॥

हे सम जनक जैत तँहँ हाजरि, कह्यो तिनहिँ कूरमपति हितकरि
 सुभट जैत तुम मिलहु भीम सन, अब न बिरोध सौम हुव अप्पन

* स्मरण † हाथी आदि सामान ॥ ३ ॥ ‡ ठाम ठाम (जगह जगह) ॥ ४ ॥

१ बुधसिंह ने निर्धन बेघम का धाह लिया ॥ २ ताता (चंचल) ३ गया ॥ ४ ॥

४ घमंड की बुद्धि से ५ गया ६ निर्मलता से; अथवा घायल हुआ उससे अच्छे होने के उत्सव में; अथवा तुमारे घर तक सन्मुख आयेगे 'अच्छम् अभिसुखे'

इति शब्दार्थचिंतामणिः ॥ ७ ॥ ७ सर्प ॥ ८ भय ॥ ९ ॥ १ बुधसिंह और

२ भीमसिंह को १० तहां ११ जयसिंह ने ॥ १० ॥ १२ मिलाप

सु सुनि भीम*अघो कर किन्नौ, द्रुतहिं जैत उत्तर तब दिन्नौ ११
हड्डनकी जननी रे अघहिय, भामिनि गिनि बुंदिय तैं भुगिय ॥
यातैं स्वामिहराम अधम अति, मिलहिं तोहि किम धरम स्वच्छ
मति ॥ १२ ॥

कहि इम दिय उठेलि ताको कर, बाँके सुतहिं कहत इम अकखर
अप्पन स्वामि तोहिन सुहावहिं, तोन हमहिं तव आश्रय भावहिं ॥ १३ ॥
देव न इम पैरिखद बिच दृष्ट्यो, फिरि धकि उठत घाय इक फट्यो
महाराव कर जोरि मनायो, यह मन्न्यो न मुररि तउ आयो ॥ १४ ॥
फटत घाय अंतक गद फैलिय, कतिक मास बिच त्रिदिववास किय
इम भट देव धरम अवधारयो, बिपति सहि रु धन अनय बिहारयो ॥ १५ ॥
कलियुग काल भयो यह भीखम, है इक जीह कहैं कोलों इम
दोवत कुल मुहुकम्म हरामी, निकस्यो वैरिसल्ल कुल नामी ॥ १६ ॥
बुध इत गरभ जानि नव बाला, व्याहि जु रक्खिय बंस बहाला ॥
ताके उदर कुमर उद्गम हुब, धरिय नाम जिहिं चंद्रसिंह ध्रुव ॥ १७ ॥
मधुगर्त अमा सत्त बसु ८७ संवत, मातुलं घरहि बाल यह भो बतैं
इहिं असु धारिय मास अठारहि १८, बेधम नौयसक्यो इक १ बारहि
चुंडाउति रानिय इत बेधम, गर्भ धर्यो सु भयो पुनि उद्गम ॥
संवत मान अंक बसु सत्तह १७८९, अरु सित बाँहुल भालचंद्र
अह १४ ॥ १९ ॥

*हाथ आगे किया (हाथ आगे बढ़ाया) †जैत सिंह ने जीत ही ॥ ११ ॥ १ स्त्री जान कर ॥ १२ ॥ २ उस जैत सिंह के पुत्र को इस प्रकार कहते हो ॥ १३ ॥ ३ इस प्रकार सभा में देवसिंह नहीं दवा ॥ १४ ॥ ४ काल रोग ५ स्वर्ग में ६ धारण किया ॥ १५ ॥ ७ कलियुग के समय में यह देवसिंह भीष्म के स्वामन हुआ ॥ १६ ॥ ८ बुधसिंह ने ९ नवीन स्त्री को १० जन्म ॥ १७ ॥ ११ चैत्र मास की अमावास्या को १२ मामा के घर में १३ संतोष दायक, अथवा बालक के होने की वार्ता हुई १४ प्राण १५ नहीं आ सका ॥ १६ ॥ १६ जन्म [उत्पन्न] १७ कार्तिक सुदि १८ शिव का दिन (ज्योतिष में चौदस तिथि के स्थानी शिव हैं) ॥ १९ ॥

भृगु बासर इम हुव कुमार भव, दीपसिंह नामक अरि बनदव ॥
इत जैपुर साहस अधिकाई, बलि जयसिंह जु सुता बुलाई ॥ २० ॥
कृष्णकुमारि नाम अति अगगहँ, अभयसिंह मरुपति साली यह ॥

गह१ यह२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

माधव बहिनि बडी लहि मेलहिँ, दई सबिधि परिनाय दलेलहिँ २१
तब कूरम घर व्याह अनंतर, बसि जामात सुता इक १ बच्छर ॥
अंक अठ सत्रह १७८९ सक आगम, सिक्ख पाय जयसिंह जनक सम
आई अब बुंदिय कछवाही, बाहिर रहि यह टेक निबाही ॥
स्वसुर स्वकीयँ पापमति सालम, छत्रमहल रहत जु छत्राधम ॥ २३ ॥

लम१धम२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

जो यह राज्य हथ निज जानै, काहूको न कैथित उर आनै ॥
सुत तिय जानि रुमानि स्वसुर मुँह, सो तिहिँ बेर गोहु नहि सम्मुह २४
कछवाही इहिँ अनख रिसाई, कूर स्वसुर प्रति यहै कहाई ॥
मैं बुधसिंह तनयकी नारी, किंकर तुम मम भाखितकारी ॥ २५ ॥
स्वसुर मन्नि सम्मुह सठ नौयउ, कर जोरि न पुनि विनय कहायउ
नृप महलन रहिकै अति उन्नति, भुगत राज्य अंध बनि भूपति २६
बसहु छोरि महलन पुर बाहिर, जो सुख चहत होहु कठि जाहिर
चैवि इम ताहि निकारन चाही, बहु सिपाह पठये कछवाही ॥ २७ ॥
पुनि सालम निकस्यो अति सोचत, निर्जन सहित करजोरि
अधिक नत ॥

चत १ नत २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

जान्योँ अबहि प्रतिष्ठा जैहँ, कछवाही इच्छित अब कैहँ ॥ २८ ॥

१ शुक्रवार २ हठ की अधिकाई से ३ फिर ॥ २० ॥ ४ आग्रह (आदर) से ५ माधो-
सिंह की ॥ २१ ॥ ६ व्याह के पीछे ७ जमाई और बेटी ८ वर्ष ९ पिता से
॥ २२ ॥ १० अपना ॥ २३ ॥ ११ कहना १२ छुख ॥ २४ ॥ १३ मेरा कथन (कहा)
करनेवाला ॥ २५ ॥ १४ नहीं आया ॥ २६ ॥ १५ इसप्रकार कह कर ॥ २७ ॥ १६ अपने
लोकोँ सहित १७ नम्र होकर १८ करि हैं (अपना चाहा हुआ करैगी) ॥ २८ ॥

इम बिचारि पुर बाहिर आयो, बलि तत्थहि निज निलय बनायो
स्वबैसि राज्य इम करि दठ साहिय, अब महलन प्रविसी कछ-
बाहिय ॥ २९ ॥

प्रथमहि फल सालम यह पायो, अब नव नव पैहैं अकुलायो ॥
इत मरुपति गुजरात विजय करि, धर मारव पुनि आय गरब
धरि ॥ ३० ॥

बुद्ध उदंत सुनि रु लिखि कग्गर, पुर बेघम पठये चर सत्वर ॥
बेघम रहे मरुप चर मासन, तउ न जबाब लिख्यो जड़तासन ३१
इम दस १० बेर मरुप दैल आयउ, पै इक १ दल न बुद्ध सन पायउ ॥
यह सुनि भो मरुभूप उदासह, रहि इत बेघम नृपहु निरासह ३२
बुद्धि बिगारि उंदबेग बढ्यो अति, रहन लग्यो एकांत मंद मति ॥
स्वीय जनहु नहि निकट सुहावहि, काम परहि तब टेरि बुलावहि ३३

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी
पतिबुधसिंहचरित्रे कोटामहारावोपरिपरिषत्क्रुद्धविदीर्णतबुन्दी
सुभटदेवसिंहमरण १ बुधसिंहपुत्रद्वयप्रसव २ परिणीतजयसिंह-
कन्यबुन्दीनवनृपदलेलसिंहबुन्द्यागमन ३ बुधसिंहोन्मादगदवर्णन
मष्टत्रिंशो मयूखः ॥ ३८ ॥

आदितः षट्सप्तत्यधिकद्विशततमः ॥ २७६ ॥

१मकान २अपने आधीन ॥ २९ ॥ ३ मारवाड़ में ॥ ३० ॥ ४ बुधसिंह का वृत्ता-
न्त सुन कर ५ पत्र ६ हलकारा ७ शीघ्र भेजा ८ सूखता से ॥ ३१ ॥ ९
मारवाड़ के राजा के पत्र ॥ ३२ ॥ १० चित्तभ्रम ११ अपने लोक भी ॥ ३३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में बुन्दीके राजाबुधसिंह
के चरित्र में बुन्दी के उमराव देवसिंह का सभामें कोटा के महाराव पर क्रोध
करने के कारण घाव फटकर मरना १ बुधसिंह के दो पुत्रोंका उत्पन्न होना २ बुन्दी
के नवीन राजा दलेलसिंह का राजा जयसिंह की पुत्री से विवाह करके बुन्दी
आना ३ बुधसिंह को चित्तभ्रम होने की बीमारी के वर्णन का अष्टतीसवां ३८
मयूख समाप्त हुआ ॥ और आदि से दो सौ छहत्तर २७६ मयूख हुए ॥

जयसिंह के अवशुणों का कथन] सप्तमराशि-एकौन चत्वारिंशमयूख (१२११)

पादाकुलकम् ॥

इत जयसिंह प्रताप बढ़यो अति, *प्रथित कहैं सु करैं दिल्लिय पति॥
अदबहु लिखैं बिसेस साह अब, कगगरमाँहिं लिख्योहु जो न कब१
जँहँ राजाधिराज उपपद जुत, लिखत राजराजेंद्र लग्यो हुत ॥
तिम तिम बढ़यो सबन सिर कूरम, तहाँ अवर कोउन हुव तासम२
किय रूपय कोसन कोटिन धन, सहँसन गज हय चतुर मँदुरन।

घन१ रन२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

जो नहि साह वजीर सके करि, सो जयसिंह करैं बल संभरि ३
स्मृतिन सुधाय न्याय बिसतारैं, बिप्रन अग्घ बिसेस बढारैं ॥
बाहिर इम धरमानुग दीसैं, पै सु रच्यो न पिष्ट कँहँ पीसैं ॥ ४ ॥
जो निज धरम रच्यो कँरूमहिय, क्यों तब कर्म अधर्म इते किय ॥
हन्यो प्रथम शिवसिंह स्वीयसुत, जोहु तास जैननी निज तिय जुत५
पुनि जननी निज स्वर्ग पठाई, भट बरैं बिजयसिंह बैलि भाई ॥
पुनि भानेज सत्य जो होतो, अरु असत्य सिंसु हो तउ सोतो॥६॥
पुनि संग्राम रामपुर स्वामी, हन्यो दग रचि होय हैरामी ॥

*प्रसिद्ध (एकान्त में कहना करना स्नेह का, और प्रसिद्ध में कहना करना दवाव का सूचक है) ॥ १॥ १ पदवी (खिताब) थी २ शीघ्र ॥ ३ गजशाला और हयशालाओं में हजारों हाथी घोड़े करदिये ४ बल से भरकर; अथवा अपने बल को संभाल कर ॥ ५ ॥ ५ धर्मशास्त्रों को दिखा कर ६ आघ (आदर) ७ ऊपर से इस प्रकार धर्म के साथ चलने वाला दीखता था, परन्तु ८ उस धर्म में रचा (रंगा) नहीं था ९ पिसे हुए को पीसता रहा ॥ ४ ॥ यदि १० जयसिंह का हृदय धर्म में रचा हुआ था तो इतने अधर्म के काम क्यों किये ११ अपने पुत्र शिवसिंह को मारा १२ उस शिवसिंह की माता और जयसिंह की स्त्री सहित ॥ ५ ॥ १३ जयसिंह की माता को मारी १४ अष्ट वीर १५ फिर अपने भाई बिजयसिंह को मारा १६ अपने भानजे और बुंदी के कुमर भवानीसिंह को मारा १७ यदि वह कृत्रिम था तो भी बालक था ॥ १ ॥ १८ संग्रामसिंह चंद्रावत को १९ अधर्मी होकर दगा से मारा

सत्त अठ सत्रह १७८८ * मित संवत, तेरह लख १३०००००
साह रूपय तत ॥ ७ ॥

लै अरु मकितव मिल्यो मरहठन, सो मुखो न अबलग अधर्म सन
ठन १ रन २ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

साह तोस बिस्वासहि रखै, यह तउ मंल दक्खिनिन अक्खै ॥ ८ ॥
ऐसी लखि अक्खिय निंदा हम, अरु अच्छीहु करी बहु कूरम ॥
अब नव वसु सलह १७८९ मित संवत, आयो पुनि मालवधर
उद्धत ॥ ९ ॥

षट्पात् ॥

अब हायन नव अठ ८९ विसद बाहुल दर्पक १३ दिन ॥
आयउ पुर उज्जैन अवनि दब्बत कूरम इन ॥
सत्तलख ७००००० साह सन वपार्जरूपय मंगाय बलि ॥
मरहठन किय मेल किय न हित साह मंडि कालि ॥
दलै लिखिय रान संग्राम प्रति तुमहु सेन भजहु अंतुल ॥
यह आय भुम्मि दब्बन समय मिलि मरहठन बल बिपुल १०
दोहा ॥

सुनत रान संग्राम यह, दैल पठयो सु दैराज ॥
सबन सिरोमनि निज सचिव, धाइधौत नगराज ॥ ११ ॥

दराज १ गराज २ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

बिनु सादड़ि अरु बेदला, सर्व सुभट दिय संग ॥

ते दसउर आये त्वरित, अवनी लोभ उमंग ॥ १२ ॥

* प्रमाणवाले १ तहां ॥ ७ ॥ १ छली ५ से १ उस जयसिंह का २ सलाह
॥ ८ ॥ ९ ॥ ३ संवत् ४ कार्तिक सुदि ५ कामदेव की तिथि (ज्योतिष में
तेरस तिथि का स्वामी कामदेव है) ६ भूमि को ७ कड़वाहों का पति ८ छल
से ९ बादशाह का हित रख कर युद्ध नहीं किया १० पत्र ११ तुलना रहित
१२ घट्ट ॥ १० ॥ १३ सेना १४ बड़ी १५ घाय भाई ॥ ११-॥ १६ सादड़ी के
राजराणा और बेदला के राव बिना १७ शीघ्र ॥ १२ ॥

दसउरतैं पुनि कुंच करि, आयउ पुर उज्जैन ॥
कूरमसों दित मिलन करि, संग रहिय बस सैन ॥ १३ ॥

षट्पात् ॥

*बुल्लयो तब नगराज देवसिंहहु बेघम पति ॥
तबहि देव करि कुंच चलो सहसत्थ बेग गति ॥
तबहु मंदे बुंदीस चलो निज सालक संगहि ॥
सोधी यह कुम्म सन मिलि रु लौहैं स्वकीय भदि ॥
जयसिंह व्याहि तनयां जु पै पट्ट दलेलहिं थप्पिदिय ॥
पिक्खहु तथापि जइबुद्ध मति लैन जातनिज वसुमतिर्य ॥ १४ ॥

दोहा ॥

देवसिंह निज जामिपहिं, आत देखि अकुलाय ॥
नगर सलूमरि नाह प्रति, लिखि दल अग पठाय ॥ १५ ॥
जामिप आवत संग मम, निज हठ मन्नै नाहिं ॥
कूरमको आसय लिखहु, यातैं हम थित आहिं ॥ १६ ॥
जु सुनि केसरीसिंह जब, नगर सलूमरि नाह ॥
पुच्छिय यह जयसिंह प्रति, कहिय कुप्पि कछवाह ॥ १७ ॥
तुम सु रान घर मुख भटैं, अरु छत्रै नहि येहु ॥
चिति सु बत्त रु रहहु चुप, श्रैवनन मुंदन देहु ॥ १८ ॥
सुं सुनि सलूमरि पति लिखिय, देवसिंह प्रति पत्त ॥
आवन देहु न बुद्ध यैहैं, रस नहिं कुम्म बिरत्त ॥ १९ ॥

षट्पात् ॥

॥ १३ ॥ नगराज ने बेघम के पति देवसिंह को * बुलाया
१ मूर्ख २ सोची (विचारी) ३ जयसिंह से ४ मेरी भूमि लेदेगा ५ पुरी व्याह
कर ६ अपनी भूमि लेने को जाता है (यह कवि की वक्रोक्ति का यत्न है)
॥ १४ ॥ ७ वहिनोई को ८ पत्र लिखकर ॥ १५ ॥ ९ यहाँ ठहरे हुए हैं ॥ १६ ॥
॥ १७ ॥ १० उसराव ११ कानों को बंद करलो ॥ १८ ॥ १२ सो १३ जयसिंह
प्रतिकूल है ॥ १९ ॥

देवसिंह तब यह*उदंत बुधहिंतु निवेदिय ॥
 तबहु अंध बुन्दीस नाहिं पछो प्रयान किय ॥
 यह लिखि देव उदार कुंच विरचिय बेधम प्रति ॥
 ताहि बिगारन तबहि मुरयो बुधसिंह हीन मति ॥
 यह सुनत राम संग्राम धकि देवहिंतु बेधम लई ॥
 सद्धत बिमूढ जामीस सुख सालक बिच यह गति भई ॥२०॥
 दोहा ॥

नगर फुरक्काबाद पति, नाम मुहुम्मद मिच्छ ॥
 कूरमपति वासौं कियउ, अगग बइर रन ईच्छ ॥ २१ ॥
 अब बुंदिय आमैरकै, जवन वहै लखि जुद्ध ॥
 भल कगगर भेजत भयो, बेधम पुर प्रति बुद्ध ॥ २२ ॥
 सहजराम खत्रिय सचिव, ताको लौ दल तत्त ॥
 बेधम आय रु बुद्धसौं, मिल्यो लख्यो सु प्रमत्त ॥ २३ ॥
 वह तँथापि बहुदिन रह्यो, मंग्यो दल सु मिल्यो न ॥
 व्है उदास निज गेह तब, गो खत्रिय करि गो न ॥ २४ ॥
 सक नभ नव सत्रह १७९० समय, द्वादसि१२माघ वलच्छ ॥
 तजिय रान संग्राम तँनु, दान समय नय दँच्छ ॥ २५ ॥
 तबहि उदैपुर पट्ट लहि, हुव रानाँ जंगतेस ॥
 बुद्ध सु इत देवहिं बिपति, अँदय दई जड़ एस ॥ २६ ॥
 सक नभ नव सत्रह१७९०समय, अब फगुन अवदात ॥
 मंगलवार चउत्थि ४ मिलि, प्रकटत समय प्रभात ॥२७॥
 चुंडाउति रानी जठैर, रहि नव ९ मास प्रमान ॥

*वृत्तांत १ वहिन के पति का ॥ २० ॥ २ बुद्ध चाह कर ॥ २१ ॥ ३ कागद (पत्र) ॥ २२ ॥
 ४ तहाँ पत्र लेकर ॥ २३ ॥ ५ तोभी ॥ २४ ॥ ६ शुक्लपक्ष. दान में, समय में
 और नीति में ८ चतुर संग्रामसिंह ने ७ शरीर छोड़ा ॥ २५ ॥ ९ जगत्सिंह १०
 निर्देय ने ॥ २६ ॥ ११ शुक्लपक्ष ॥ २७ ॥ १२ उदर से

✽ बुद्धिता हुव बुंदीसकैं, दीपकुमरि अभिधान ॥ २८ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी-
पतिबुधसिंहचरित्रे जयपुरनृपजयसिंहस्तुतितदनुचितकर्मगणान् १
सज्जसैन्यजयसिंहावन्तिगमनबुधसिंहप्रमदन २ उदयपुरमहारा-
णासंग्रामसिंहमरणानन्तरजगत्सिंहतत्पट्टाधिवेशनवर्णनमेकोनच-
त्वारिंशो मयूखः ॥ ३९ ॥

आदितः सप्तसप्तत्यधिकद्विशततमः ॥ २७७ ॥

पट्पात ॥

इत यह हड्ड प्रतापसिंह सालम जिहो सुव ॥

अनुजहिं गिनि अवनसै भूप सम्मलि कुसथल भुव ॥

आयो तव नृप याहि नाहि अहरि सुह लायो ॥

अब तिहिं कोटा आय रानि प्रति मंत्र रचायो ॥

विसवासि ताहि तिय बुद्धकी कछवाही यह मंत्र किय ॥

हम देत खरच तुम जाय दृढि बल दक्खिन आनहु बलिप ॥ १ ॥

तव प्रताप दृढ तिकख मिल्यो दक्खिन मरहडन ॥

लखि श्रीमन्त अनीक अतुल आरंभ मुदित मन ॥

बाबा पंडित रामचंद्र १ संध्या राणजिय १ ॥

शुद्धी १ नाम ॥ २८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के राजा
बुधसिंह के चरित्र में, जयपुर के राजा जयसिंह की स्तुति और उनके अनुचि-
न कार्यों की गणना १ जयसिंह का सेना सज कर उजीन जाना और बुधसिं-
ह का प्रसाद २ उदयपुर में महाराणा संग्रामसिंह का देहांत होकर महाराणा
जयसिंह के पाठ बैठने के वर्णन का अनुचालीमर्वा ३९ मयूख समाप्त हुआ
और आदि में दोसरी भिनहन २७७ मयूख अंत ॥

२ जयपुर (बहा) पुर १ छोटेबाई को बुन्दी का राजा जानकर बुधसिंह की
गुह्य ४ भूमि में २ बुधसिंह ने ३ बुधसिंह की स्त्री कछवाही ने ॥ १ ॥ ७
पुनः के पति की स्तुति और आरंभवाली सेना को देनकर मन प्रसन्न हुआ,

पुण्यापतिके पासवान बैलमें पति ए वियर ॥

इनतैंहु अधिक श्रीमंतके दैल मालिक उमराव हुवर ॥

आनंदराव परमार १ अरु हुलकरराव मलार २ हुव ॥ २ ॥

दोहा ॥

इन च्यारि ४ न दल मुख्य लिखि, मिलि प्रताप अति मोद ॥

दम्म लक्ख खट ६००००० दैन किय, बुंदियपर स विनोद ॥ ३ ॥

इत कूरम कछु कज्ज बसि, मालव अवनि बिहार्य ॥

सालम सुवन दलेल सह, जैपुर पतो जाय ॥ ४ ॥

मरद्वहन परताप मिलि, दै खट लक्ख ६००००० सु दम्म ॥

दल दुस्सह लायो लरन, कंत्रल बुंदिय कम्म ॥ ५ ॥

सक इक नव सत्रद १७६१ समय, अमा रू माधव मास ॥

बुंदी विंटिय आनिकै, गहत औरक तमें घास ॥ ६ ॥

भुजङ्गप्रयातम् ॥

बढे दक्खिनी त्यों लगे नैर बुंदी, खुर्छोपक्खरों घुम्मि है ॥ भुम्मि खुंदी

भोगी ज्वालिक्का दीपकी मालिकासी, दगी नालिका कालिका

बालिकासी ॥ ७ ॥

ढट्यो पोन भंडेनमें गोण हंक्खो, बढ्यो घोर अंधार संसार ठंक्खो ॥

१ पुना के पति के पास रहनेवाले २ सेना में ये दोनों पति थे ३ सेना-
पति ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ कछुवाहा जयसिंह कुछ कार्य वश होकर ५ मालवे की
भूमि को छोड़कर ६ सालमसिंह के पुत्र दलेलसिंह सहित ॥ ४ ॥ ७ रूपे
= बुंदी के बुद्ध के ९ कार्य पर अर्थात् बुंदी में युद्ध करने को लाया ॥ ५ ॥
११ वैशाख मास की १० अमायास्या के दिन १२ सूर्य को १३ राहु ने ग्रसा (ग्रहण
हृआ) उस समय बुंदी के घेरा लगाया ॥ ६ ॥ दक्षिणी बढकर बुंदी नगर के
लगे सो १४ बांड़े घूमकर खुर्छों से और पाखरों से भूमि को घुंदी (कुचली)
और दीपमाला के समान १५ ज्वाला १६ प्रज्वलित हुई और कालिका की
पुत्रियों के समान १७ तापें दगी ॥ ७ ॥ भंडों में नहीं चल सकने के कारण
पवन रुक्तगया और भयंकर अंधेरा बढकर संसार बकशया.

चलै *लोल गोला भूगें अग्नि िभारै, दुबाजू छिके कोट दैद दरारै
परै गोख अटाल तुटै पताका, उडै छद्दकै भद्रमै ज्यौ बलाका ॥
छिके त्यों गिरै थंभ प्रसाद छत्री, पताका उडै अब्म व्हैव्है पतत्री ९
उडै गैन गिद्धी लगै पच्छ अग्नी, लखै चंगके पुच्छ ज्यौ राललग्नी
डिगै कोल त्यों व्याल पाताल डोलै, अकूपारकी भारसों पिछि
बोलै ॥ १० ॥

चलै तोप प्रीकारको लोप मंडै, शिरै खोमके तोम के खंड खंडै ॥
जरै हट्ट बाजार यों हेति जग्गी, मनाँ राल को तूलमै अग्नि लग्गी ११
कहाँ दैद पाटीर कारी कँवारी, बुझावै कहाँ डारिके नीर नारी ॥
चिनंगी उडै चित्रसारीन चंडै, मनाँ बाग खद्योत प्रद्योत मंडै ॥ १२ ॥
बडे पट्ट अटालिका पौत बजै, घनी बालिका पालिका छोरि भजै
कहाँ भारसों धेनु हंभारै कहै, बरै द्वार आगारपै छार बहै ॥ १३ ॥

*चपल गोले चलकर अग्नि की ज्वाला जगती है जिससे कोट दरारें देकर दोनों
ओर फूटता है ॥ ८ ॥ उन गोलों से १ भरोखे २ छतें बुरजें गिरकर ध्वजायें गिरती
हैं और जैसे भाद्रपद मास में १ वक (बगुले) उडें तैसे छादित होकर उडती
हैं, थंभे ४ महल और छतरियें छिककर गिरती हैं और १ आकाश में ध्वजा ६
पत्ती होकर उडती है ॥ ९ ॥ पांखों में ७ अग्नि लगकर अधनियां आकाश
में उडती हैं सो मानों ८ पतंग (कनकउवा) के पूछ में राल लगी होवे
वैसे दीखती हैं ९ बराह डिगता है १० पाताल में शेषनाग हिलता है और
भार से १ कमठ की पीठ बोलती है "अकूपारः कूर्मराजः" इति शब्दार्थचि-
न्तामणौ ॥ १० ॥ तोपें चलकर १२ कोट का नाश करती हैं और कितनी ही
१३ बुरजों के १४ समूह के टुकड़े टुकड़े करती हैं, बाजार में दुकानें जलकर
ऐसी १५ ज्वाला (झाल) उठी कि मानों राल में १६ किना १७ खई में अग्नि
लगी है ॥ ११ ॥ कहीं पर १९ चन्दन की की हुई कँवाड़ियें (रुपाट विशेष) १८
जलती हैं, सो मानों बाग में २० जुगनू २१ प्रकाश करते हैं ॥ १२ ॥ छतों के बडे
पाटों के २२ पड़ने का शब्द होता है जिससे बहुत स्त्रियें २३ पलंग लेले कर
भागती हैं, कहीं पर ज्वाला से गउवें २४ करुणामई शब्द करके निकलती हैं
२५ घरों के जलने से दरवाजों पर २६ भस्मि (राख) बढती है; अधवा जलने
से घरों के द्वार पर भस्मि बढती है ॥ १३ ॥

फरकें कहीं गोख प्रासाद फुट्टें, तरकें ध्वजादंडके खंड तुट्टें ॥
 गिरें दोहरे तेहरे गेह गोलैं, घने*पीठापल्लवंक बीथीन डोलैं १४
 धुनैं धप्पि गोपानसीखप्पराली, उडैं मेदपैं ॥ इह ज्यों गिह आली
 हुते ज्यों रहे त्यों सबै लोक हारे, मिली ओट बुंदी परे कोटवारे १५
 इतैं ॥ दुग्गपैं बीर दैदैं निसैनी, बढे बंदरी सेन ज्यों लंक लैनी ॥
 भज्यो सालमाँ सौ गह्यो खूब ठोक्यो, जनानाँ लुटयो रारि थानाँ
 न रोक्यो ॥ १६ ॥

किते बीर जैसिंह जे अत्थ रक्खे, तके सम्मुहे रागपैं जानि तक्खे ॥
 हरामनिँ हड्डेनकी हारि होतैं, जनी अप्पनी बिप्फुरे जंग जोतैं १७
 मची मार बाजारमैं बाढ बज्ज्यो, लग्यो कंप भीरूनकोँ नीर लज्ज्यो
 मिले दक्खिनी कूरमी बीर मत्ते, कराकैं वजे हाडकी आड कत्ते १८
 बढयो धंत आरत्त बीथी वजारैं, उडैं मुंड त्यों रुंड नच्चैं अखारैं ॥
 कढे नैन नच्चैं गिरैं भौह काला, मनोँ कंजके भोरके भौर माला १९
 बडैं हत्थ केते बनैं लुत्थि बत्थो, बनैं अच्छरीतैं घने लुत्थि बत्थी ॥
 बजी चाप टंकार भंकार भेरी, घने दक्खिनी कूरमी सेन घेरी २०

*बहुत चोकियें (बाजोट) ॥ पर्यङ्क (पलंग) गलियों में डोलते हैं ॥ १४ ॥ मिथालें "गो-
 पानसी तु बलभी ल्हादने वक्रदारुणि" इत्यमरः ॥ जलकर उनका ऊपर से छपारों
 की पंक्तियें उडती है सो मानों मांस के ऊपर ग्रिधों की ॥ बड़ी पंक्ति उडती है ॥ १५ ॥
 *दुर्ग (गढ़) पर लंका को लेने के लिये १ बंदरों की सेना लड़ी जैसे २ सालम-
 सिंह भगा जिसको पकड़ कर खूब ठोका ॥ १६ ॥ ३ यहां रक्खे थे वे ४ राग
 के ऊपर तत्त्वक सर्प के समान सम्मुख हुए ५ अधमी हाडाओं की हार होते ही
 उस मुह को देखकर अपनी ६ उत्पत्ति को "जनिरुत्पत्तिरुद्धवः" इत्यमरः ॥
 ७ भूल गये अर्थात् हाडा क्षत्रियों में जन्म लेकर भागना नहीं चाहिये था सो
 भूलकर भाग गये ॥ ७ ॥ ८ कछवाहे वीर मस्त होकर मिले, हड्डियों की आड पर
 ९ तलवारों के कड़ाके वजे ॥ १८ ॥ १२ गलियों और बाजारों में १० घोवों से
 ११ रुधिर का समूह बढा (यहां आरत्त का आकार समुच्चय अर्थ में है) १३
 मानों कमल के गुच्छे पर भ्रमरों की माला है ॥ १९ ॥ १४ अप्सराओं से गाढ
 आलिंगन करके (अंग भिड़ाकर) मिलते हैं १५ नोषत भयंकर शब्द से बजी ॥ २० ॥

भुकैं सत्थ द्वैरहत्थतैं मत्थ भारैं, कुलात्ती किधौ चक्क भंडा उतारैं॥
कढें पार लै लार अंतैं कटारी, मनौ गौरू नागिनी हत्थ भारी२१
बहैं नारि अच्छी कि अच्छी बरच्छी, मिलैं कोचको फारि ज्यौं
वारि मच्छी ॥

वजी रीठ बुंदी सु वैसाख अढे, सजे दक्खिनी तौवके घाव सढे २२
घनौ चक्कको देखनौ अक्क चाह्यो, सुपैं पर्वमें गाहकी राह साह्यो ॥
सक्यो देखि यौ नहि स्वभानु सारैं, नतो तद्विनां जाम अह्यो ८
निहारैं ॥ २३ ॥

कहौ मोह आरोप कुकैं कथासी, वकैं वारुनी मत्त ज्यौं ग्राम बासी।
किते उल्लटैं फाटि छत्ता कंवारे, मनौ द्वार भंडार ही के उघारै ॥२४॥
भरकैं कढें खुर्पीरी फुटि भेजे, फरकैं कहौ पिप्परे के कलेजे ॥
भिर दक्खिनी बुद्धके काज भारी, मिलीजित्ति ओकरूमी सेन मारी२५
पट्टपदी ॥

मिलि प्रताप मरदुह जित्ति बुंदिय जस लिन्नौ ॥

दोनों सेना झुककर दोनों हाथों से भस्मक उतारती हैं सो मानों २ चाक के ऊपर १ से कुम्हारी भांडा (कलश) उतारती है और आंतों को साथ ले कर कटारी पार निकलती है सो मानों ३ गारडू (कालबेलिये) के हाथ में बड़ी सर्पिली है ॥२१॥ ४ नाड़ियें (नसं) बहती हैं और कवचों को फाड़कर बरछियें बहती हैं सो मानों पानी में मच्छियें बहती हैं. (यहां बरछी के कवच को फोड़ने की उपमा के संबंध से मच्छी के जाल को तोड़कर निकलना समझना चाहिये; अथवा जैसे जल में मच्छी निकले तैसे कवचों को फोड़कर शरीर में बरछियें निकलती हैं) प्रताप देनेवाले ॥२२॥ ७ सूर्य ने इस सेना को बहुत देखना चाहा परन्तु उपराग में उस (सूर्य) के ८ ग्राहकी ९ राहु ने पकड़ लिया; अथवा गुह्य के ग्राहकी सूर्य को ग्रहण में राहु ने पकड़ लिया इसकारण १० राहु के वश में होकर नहीं देख सका नहीं तो उस दिन ११ आठ पहर देखता ॥२३॥ कहीं पर १२ सूर्य में १३ कथा करने के समान कूकता है जैसे १४ मय में मत्त होकर गांवों में रहनेवाला (ग्रामीण) कूकता है १५ हृदय रूपी भंडार के कपाट खोले हैं ॥२४॥ १६ खोपरी १७ और कहीं कहीं कई केफरे और कलेजे फड़कते हैं, १८ बुधसिंह के अर्थ १९ कछवाहों की सेना को ॥२५॥

गहि सालम निज *जनक बंदि हुलकर वसि किन्नो ॥
 सालमको सरबस्व सज्ज निज करन सुहाई ॥
 नगर नैनवा जाय दई निज नाम दुहाई ॥
 बुंदिय छुराय मरहठ इत रस ६ मुकाम तथहि रहिय ॥
 दिस दिसन बत्त फुटिय दुतहि कविन वाह दक्खिन कहिय २६
 ॥ दोहा ॥

सहर लुटिय सालम गहिय, फिरिय बुद्ध नृप आन ॥
 अरु चउसत ४०० दुहुँ ओरके, परे सुभट गत प्रान ॥ २७ ॥
 कछवाही कोटा नगर, यह सुनि बुंदिय आय ॥
 दिय महिमानी दक्खिनिन, दुवरदिन सेन रखाय ॥ २८ ॥
 कछवाही मल्लार कर, मरखी बंधिय रानि ॥
 अरु ताकी तियकी अंतुल, किय भावैज समकानि ॥ २९ ॥
 तँहँ हुलकर मल्लार तव, संधा लिय हित प्रगि ॥
 बुंदिय जो जैहँ बेहुरि, लैहँ तो दठ लगि ॥ ३० ॥
 अवरहु त्रय ३ दलके अधिप, तिनहूँकोँ हित धारि ॥
 दिन्ने हय सिरुपाव दुत, रानी सुनय विचारि ॥ ३१ ॥
 कछवाहीप्रति सिक्खकरि, तदनंतर जय तोर ॥
 प्रबल बीर पच्छे पलाटि, उमडिय दक्खिन ओर ॥ ३२ ॥
 कटक सु डब्भिय ग्राम कढि, रहि बिंझोलिय रैन ॥
 वेधम कंगर बुद्ध प्रति, लिखे मिलन जस लैन ॥ ३३ ॥

॥ षट्पात् ॥

मिलन न आयउ तबहु बंधि कंगर बुंदिय पति ॥

तब उपपरि मरहठ गये दक्खिन सबेग गति ॥

*प्रतापसिंह के पिता सालमसिंह को शीघ्रा २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ मरखी (रक्षा) बांधी
 ? वहुत २ भोजाई के सज्जन ३ अदब ॥ ३१ ॥ ४ प्रतिज्ञा ५ फिर जावेगी तो ॥ ३० ॥
 ६ सेनापति ७ श्रेष्ठ नीति विचार कर ॥ ३१ ॥ ८ जिसपीछे ९ चढे ॥ ३२ ॥ १० पत्र ॥ ३३ ॥

इत बेघम तजि महल बुद्ध आराम बास किय ॥
 रान कटैक तिन दिनन आनि तत्थहि मिलान दिय ॥
 हति जानि रान संग्रामकी नृपहु सोक अखन गयउ ॥
 मिलि धाइभ्रात नगराज नमि करन जोरि हाजरि भयउ ॥३४॥
 दुवहुदुवहु हय सिरूपाव नृपहि नगराज निवेदिय ॥
 आय रान मृत जानि नृपति यह अखिख नाहि लिय ॥
 तदनु साहिपुर ईस नाम उम्मेद जंग जय ॥
 तास जनक तिन दिनन मरिय यातैं तत्थहु गय ॥
 केसरीसिंह डेरन तदनु गिनि सलूमरि पं ताहि गय ॥
 इम रान भटन सनमानि अब नृप निज उपबर्न आहि गय ॥३५॥
 ॥ दोहा ॥

धाइभ्रात जिम नजरि किय, इनहु दुहुन तिन किन्न ॥
 नाहि सु लिय बुंदिय नृपति, दुवरतिन हित हय दिन्न ॥३६॥
 इत बुंदिय लिन्नी सुनत, कुपि नृपति कछवाहा ॥
 बाससहँस २०००० चतुरंग बलि, पठये सज्जि सिपाह ॥३७॥
 सालम सुवन प्रताप तब, चतुरंगह सुनि चाँस ॥
 नैननगरै तजि भज्जिगो, पुनि मरहठन पास ॥ ३८ ॥
 अरु कछवाही सुनत यह, आवत भ्रात अनीकैं ॥
 बुंदिय तजि बेघम गई, रही न टेक रतीक ॥ ३९ ॥

नीक १ तीक २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

॥ सारहा ॥

कछवाही निज किन्न, डक १ मास बुंदिय अमल ॥

१ बाग में २ महाराणा की सेना ने ३ मुकाम किये ४ राणा संग्रामसिंह का देहांत जानकर ५ बुधसिंह ॥ ३४ ॥ ६ जिस पीछे ७ उम्मेदसिंह का पिता (भारतसिंह) ८ जिस पीछे ९ पति १० अपना बाग है वहां गया ॥ ३५ ॥ ११ सेना १२ फिर ॥ ३७ ॥ १३ सेना आने की खबर सुनकर १४ नैणवा नगर को छोड़ कर ॥ ३८ ॥ १५ भाई जयसिंह की सेना ॥ ३९ ॥

लौरेँ बिनुहि पुनि लिन्न, द्रुतहि आय जयसिंह दल ॥ ४० ॥
 कूरम कोट कराय, याहि वरस पुर टौंक इत ॥
 *दोसा दुग्ग बनाय, † प्रथित निवाई दुग्ग पुनि ॥ ४१ ॥
 ॥ हरिगीतम् ॥

इतको उदैपुर रान नृप जगतेस ‡ कालहि जानिकैं ॥
 ब्रजकुमारि नामकऽजामि निज तिहिं व्याहजोग्य प्रमानिकैं ॥
 कोटेस दुरजनसल्लकाँ बरि ताहि व्याहन बुल्लयो ॥
 इन लिखिय कूरम उग्रहै अवकास उदैहको गयो ॥ ४२ ॥
 यह जानि रान पठाय प्रतिवच कुम्भ जो अग्र कुपिकैं ॥
 हम गेह व्याहन आत तुम भुव लौहिं लज्जहिं लुपिकैं ॥
 इकलिंग आन हमैहु तो तुममाँहिं व्है रन रोरिहै ॥
 जोपै भुवापति जैपुरेस तथापि तेगन तोरिहै ॥ ४३ ॥
 कोटेस यह सुनि कुंच करि पहुँच्यो उदैपुर प्रीतिसौं ॥
 जगतेस तिहिं निज जाँमि दिय परिनाय हित रस रीतिसौं ॥
 यह व्याह चंद्र रु अंक सत्त रु इक्क१७९१संवतमें भयो ॥
 आपाढ भैरवक पक्ख नवमियलग्न उच्छव उन्नयो ॥ ४४ ॥
 कोटेस नृप इम व्याहि दुलहनि स्वीय पत्तन संचरयो ॥
 इक जानि रानहिं याहि इत जयसिंह जालम व्है जरयो ॥
 इत रान भैट जयसिंह सगताउत्त बग्घह पुत्तहो ॥
 जिहिं ग्राम पिप्पलिया जु स्वामिय काम स्पंदेन जुत्तहो ४५
 दुवरपुस्त हिंतुं वकील उत्तम हो उदैपुरको वहे ॥

॥ ४० ॥ * नगरका नाम है प्रासिद्ध ॥ ४१ ॥ ‡ समयऽअपनी बहिन १ जयसिंह २
 विवाह का समय ॥ ४२ ॥ १ उत्तर ४ उदयपुर के इष्टदेव एकलिंग नाम के शि-
 व हैं ॥ ४३ ॥ ५ बहिन ६ कृष्णपत्नी ७ उठा (छाया) ॥ ४४ ॥ ८ अपने घर को च-
 ला ९ उमराव १० बाघसिंह पुत्र था जो स्वामिके कार्य में ११ शीघ्रता करनेवा-
 ला था (स्पन्दनं जवने" इति शब्दार्थचिन्तामणिः ॥ १२ दो पीढ़ी से

साहू सिताराधीसपैं जु*अनीस † अब्दनतैं रहै ॥
 तिहिं तथ † साहुव छत्रपति आदाब अति करि अहैरैं ॥
 बइठारि गदिय कोनपैं काका कहैं रु कही करैं ॥ ४६ ॥
 संग्राम रान † निपात सुनि तिहि सिक्ख साहू सों चढ़ी ॥
 जयसिंहसों यह जानि बाजेराय मंत्रियहू कही ॥
 मम मात पूरब जात जात जु न्हान तित्थ बिधान सों ॥
 तिहिं लौ उदैपुर जाहु एह उदंत अक्खहु रान सों ॥ ४७ ॥
 तुम रान कूरम सों कहाय यहै कहावहु साहसों ॥
 मम मात कासिय जात जो दैहै न कर रहि राहसों ॥
 स्वच्छंद मग्गहुमैं कहों रुकिहै न दैल जुत जायहै ॥
 पुनि फल्गुगय सिर पारि पिंडन अध्व इच्छित आयहै ॥ ४८ ॥
 जयसिंह बग्घहनंद यों सुनि तास मातहिं संगलै ॥
 आयो उदैपुर ओ मिल्यो वह रान हितु उमंगलै ॥
 करजोरि अक्खिय पेसवा नृप साहु मंत्रिय आहि जो ॥
 तसमांत आवत रावरे घर पुंढव तीरथ चाहि जो ॥ ४९ ॥
 सुनि एह सम्मुह जाय रान अतीव अहैर अहरी ॥
 महिमानि मंडि दिवाय डेरन कानि मातहिलों करी ॥
 अवरोधमाहिं बुलाय प्रीति बढाय बिन्नति अक्खई ॥
 सुनि रान बिन्नति बात मंत्रिय मात मोदमई भई ॥ ५० ॥
 गज बाजि बस्त्र बिसेस रान निवेदि ताहि घनौ नयो ॥

* निरन्तर † वर्षों से ‡ छत्रपति पदवी वाला राजा साहू ॥ ४६ ॥ § पतन (देहान्त) १ पूर्व दिशा की जात्रा को जाती है २ विधि पूर्वक तीर्थ स्नान करने को ३ वृत्तान्त ॥ ४७ ॥ ४ मार्ग में स्वतन्त्र ५ सेना सहित, फल्गु गया में पिंड करके चाहे हुए ६ मार्ग से आवंगी ॥ ४८ ॥ ७ से ८ है ९ इसकारण से अर्थात् साहू आप के वंश में है और यह उसके मंत्री की माता है इसकारण आपके घर आती है १० पूर्व दिशा के तीर्थ ॥ ४९ ॥ ११ बहुत आदर से १२ माता के समान १३ जनान में ॥ ५० ॥ १४ भेट करके

पुनि जाय डेरन सिकखदै सँग स्वीय सेनहुकों दयो ॥
 नगरी सलूमरि नाह केसरिसिंह मुख सु संगभो ॥
 जयसिंह पुनि वह बग्य नंदन संग उच्च उमंग भो ॥ ५१ ॥
 खुरतार मारन भुम्मि देत दरार दारिम पक्कज्यो ॥
 नवलकख ९००००० दलपति मंत्रिजननी चंड संगहि चक्कज्यो ॥
 बहरक दंति बडेनपै फहरकि फैलतसी फिरै ॥
 भिलि फेट भंड भूपेटपै पवमान चंचलहू चिरै ॥ ५२ ॥
 श्रियमंत मात सुखेन यो सह सेन जेपुर संचरी ॥
 कछवाह रांघहु आय सम्मुह कानि रांनहि लो करी ॥
 जयसिंह प्रीति बढाय तास दिवाय डेरन मोदसो ॥
 बेतंड बाजि उदंड दुवशकिय भेट बंदि विनोदसो ॥ ५३ ॥
 महिमानी दै अति अग्यसो अवरोधे मध्य बुलायकै ॥
 सकुटुंब सम्मुह जाय मंदिर लाय मत्थहि नौयकै ॥
 बइठारि गहिय ताहि अप्पुन अल्प आसनपै रहयो ॥
 नग बस्त्र नैय निवेदिकै हम दास कूरम यो कहयो ॥ ५४ ॥
 तनया सु कृष्णकुमारि अप्पन जो दलेलहि अप्पई ॥
 गहि ताहि हत्थन कुम्भ यो थिर तास अंकहि थप्पई ॥
 कहि मोर पुत्रिय बुंदि भूप दलेल रानिय है यहै ॥
 तस लज्ज भुम्मि सुहागकी तुमको सु अज्ज अभै यहै ॥ ५५ ॥
 हैयहै १ भैयहै २ अन्त्यानुपासः १ ॥

तिहि लाय हिय श्रियमंत मातहु अखिख प्रीति पैरा पगै ॥

॥ ५१ ॥ १ पकी हुई दाड़िम के समान २ भयंकर सेना ३ भंडे बड़े
 हाथियों पर ४ पवन चंचल है तो भी प्रदेगी करता है अर्थात् उन भंडों में हों
 कर जीवता से निकल नहीं सकता ॥ ५२ ॥ ५ सुख से ७ गई ८ राजा ९ राना ने
 की जैसी १० हाथी ११ नमस्कार करके ॥ ५३ ॥ १२ जनाने में १३ घर (महल) में
 १४ मस्तक नमाकर १५ आप छोटे आसन पर बैठा १६ नवीन ॥ ५४ ॥ १७ पु-
 त्री १८ दलेल सिंह को विवाही १९ उस की गोदी में बिठाई ॥ ५५ ॥ २० परम

रूपये पचीस हजार २५००० छोरिय जे न बुंदियकों लगैं ॥
जब कुम्म मालव पैत तत सु साह छन्नहिं मेलकैं ॥
निब्बै हजार ९०००० लिखायलिय ठहराय दम्म दलेलकैं ॥ ५६ ॥
तब दक्खिनि न नृप साहुसों अरजी कराय निदेसलैं ॥
यह अंक थपिय बुंदिपैं कहि कोउ नाहिं बिसेस लैं ॥
तिनमाहिंसों श्रियमंत मात बं छोरि दम्म इते दये ॥
पुनि अक्खि पुत्तिप लाय च्छर्त्तिय नेह बीज वये नये ॥ ५७ ॥
श्रियमंत मातहि रक्खि यों जयसिंह जैपुर मासलौ ॥
पुनि साह हितु लिखाय मग कर माफ, तास प्रवासलौ ॥
बलि तास डेरन जाय कूरम राय बंदनकैं बली ॥
सजि स्वीय सेनहु संग दै वह पंथ पूरव मुक्कली ॥ ५८ ॥
भट रानं केसरिसिंह ओ जयसिंह तत्थहि ए रहे ॥
दल ओर संगहि तास दै पुनि मास जैपुर जे रहे ॥

एरहे १ जेरहे २ अं यानुप्रासः १ ॥

नगगे सलूमरि नाह केसरिसिंह धुंत अधीर ज्यों ॥
जयसिंह बग्घहनंद हो यह वेदपांठक बीर त्यों ॥ ५९ ॥
सनमान दोउनको कियो कछवाह डेरन जायकैं ॥
हय हत्थि कूरमसों तिलैं पहुँचे उदैपुर आयकैं ॥
मल्लार अरु परमार ए करि कैंद सालमकों इतैं ॥
तजि नैर बुंदिय कुंच कैं पहुँचे ति मालवमें तितैं ॥ ६० ॥
परमार दौलतसिंह इक्क १ सु सेन दक्खिन संगही ॥

१ जयसिंह मालवे में गया २ तहां बादशाह ने छाने ३ दलेलसिंह से रूपये
ठहरा लिये ॥ ५६ ॥ ४ आज्ञा लेकर ५ इसको बुंदी पर गोद रखवा है; अथवा
रूपयों का यह अंक बुंदी पर स्थापन किया ६ अब ७ पुत्री कहकर ८ छाती से
लगा कर ॥ ५७ ॥ ९ विदेश में रहने तक का १० नमस्कार करके ॥ ५८ ॥
११ धूर्त १२ वेद का पाठ करने वाला अर्थात् वेद के मतानुसार चलनेवाला
॥ ५९ ॥ १३ ते (व) ॥ ६० ॥

यह रान हो उमरावहो अरु नीति जंग अभंगहो ॥
 तिहिं अक्खि सालमसिंह मो कँह लेहु जामिन उहे अबैं ॥
 हुवलकख २००००० रूपय लेहु सो इन्ह देहु जावहुँ मैं तवैं ६१
 जितनैं उदैपुरमैं रहौ अरु रानको जस बवथरैं ॥
 मम पत्र लेहु लिखाय ओ लिखिदेहु तुम इनको करैं ॥
 इनको अमात्यहु इक्क १ रूपय लैन संगहि लीजिये ॥
 तिहिं ग्राम पंचहजार ५००० को हम देहिं सत्य पतीजिये ६२
 तुमकोहु बुंदिपको पटा मिलिहै हजारपचीस २५००० को ॥
 सुनि एह दोलतसिंह पत्र लिखाय सालम हीसको ॥
 अरु अप्प राव मलारसौ परमारसौ इम अक्खई ॥
 हुवलकख २००००० रूपय देहिं पै गृह लैहिं तो लिखि सो दई ६३
 हम रान जामिन बीच जो नहिं देहिं तो हम देहिंगे ॥
 बलि रान भूप बलिष्ठ जे इनतैं निवरिहु लैहिंगे ॥
 परमार यौ लिखि पत्र जो परमार हुलकरको दयौ ॥
 निज संग हुलकर दास भट्ट महादिंदव सु पै लयो ॥ ६४ ॥
 पुनि जे उदैपुर आय दक्खिन सेन सौ इम सिक्खकैं ॥
 सुनि रान चाहि सिराहि दोलतसिंहको तब तिकखकैं ॥
 लिखि पंत बुंदि दलेलको दैम दम्म सालम मंगये ॥
 बदल्यो दलेलहु बँप्प हितु कैपद दोय २ हु नाँ दये ॥ ६५ ॥
 तब सुभट दोलतसिंह जुत करि सिक्ख सालम रानसौ ॥

१ सालमसिंह ने दोलतसिंह से कहा १ मरहठों को ॥ ६१ ॥ ३ तुम
 तो मुझसे लिखवा लो और मरहठों को तुम लिखदो ४ कामदार ५ विश्वास
 करो ॥ ६२ ॥ ६ उस दुःख वाले सालमसिंह को "ही विषादे" इति शब्दार्थ-
 चिन्तामणौ ॥ और स सहित अर्थात् विषाद सहित जो सालमसिंह था उस
 का पत्र लिखा गया ॥ ६३ ॥ ७ फिर ८ बलवान् है सो ९ महादेव ॥ ६४ ॥ १०
 पत्र ११ दंड के रुपये १२ बाप से दो १३ कोई भी नहीं ॥ ६५ ॥

राजाओंका एका करनेका विचार] सप्तमराशि-चत्वारिंशमयुग (१२२७)

चालि नैनवा निज नैर आयउ भीरु उब्बरि प्रानसों ॥

निज कोसतैं दुव लक्ष्म्वर २००००० रूप्य देस दक्खिन मुक्कले ॥

पुनि कुंम्म आयस पाय दोउनकोंहि दिन्न पटा भले ॥ ६६ ॥

ससि अंक सत्त रु इक्क १७९१ संवत्त मास कत्तिय गोरमैं ॥

कछवाह किंय सब भूप इक्कत जानि दक्खिन जोरमैं ॥

मेवारमैं आगोंच नामक ग्राम सर्व मिले तहाँ ॥

अरजी लिखाय पठाय दिल्लिय सेन भेजहुगे यहाँ ॥ ६७ ॥

सुनि साह सेन समस्त संजुत खानदोरह मुक्कलयो ॥

यह मास अगहन कृष्ण पंचमि ५ चंड चंक्रहिं लै चलयो ॥

हुत आय मालव देसमैं बुलवाय कूरमहू लयो ॥

बिनु रान तब सब भूप संजुत सोहु मालवमैं गयो ॥ ६८ ॥

तिहिं साल बिच इत नैर बेघम पोस मास अमा जहाँ ॥

कछवाह रानिय देह हानिय दान कै रु करी तहाँ ॥

इत को नबाव रु कुंम्म मालवमैं मिले अति प्रीति सों ॥

सब हिंदु भूपन सत्थ लै रन मंत्र मंडिय रीतिसों ॥ ६९ ॥

अभमल्ल नृप मरुईस बीकानैर भूपति सत्थही ॥

कोटेस दुरजनसल्ल सोपुर भूप गोर समत्थही ॥

रतलाम भव्बुवके रु ईडरके कबंधहु संजुरे ॥

बुंदेल नृप द्वतियादि भूप भदोर भंड पै बिप्फुरे ॥ ७० ॥

रवि मेल बीर बघेल बंधुव भूप सम्मलि सज्जयो ॥

नगरी करोलिय भूप जहव सेन संजुत सों ठायो ॥

पुनि रूपनैर कबंध भूप जु पाय लगिय आनिकैं ॥

१ जयसिंह की आज्ञा पाकर ॥ ६५ ॥ १ शुक्ल पक्ष में ३ आगोंचा के पास ही हुरड़ा नामक पुर में इकट्ठे हुए थे ॥ ६७ ॥ ४ भयंकर ५ सेना ६ साथ ॥ ६८ ॥ ७ बेघमपुर ८ अमावास्या ९ जयसिंह मालवा देश में मिले ॥ ६९ ॥ १० एकत्र हुए ११ पति ॥ ७० ॥ १२ खड़ा हुआ १३ रूपनगर का ॥ ७१ ॥

पुनि आय नैर बनाय भूपति जोर मिच्छन जानिकैं ॥ ७१ ॥
 बजरंग राघव दुग्गको महिपाल खिचियहू मिल्यो ॥
 नगरी सिगोहिय देवग नृप आनि आयसकों मिल्यो ॥
 रचि चक्र टट्टिय आय भट्टिय नैर जैसलमेरको ॥
 बलि नैर पट्टिनि भूप उम्मत आय आतहि बेरेंको ॥ ७२ ॥
 कछवाह नरउर नाह मिच्छ नबाबहू कितने कहों ॥
 मिलि खानदोरह सों सबै परि तत्थ रुंधि दिसा चहों ॥
 सबकों सिराहि रु खानदोरह सेन दक्खिनपैं सज्यो ॥
 मरदुह सेनहु पिक्खिकैं चहि रठ्ठ सम्मुह ठहें गज्यो ॥ ७३ ॥
 रचि मंत्र मंडित रामचंद्र मलार ओ परमार त्यों ॥
 राणांजि सम्मलि संधिया बढि जंग जीत विचार त्यों ॥
 दलमांहींसों पखरैत अठ्ठ हजार ८००० कट्टि रु यों कही ॥
 तुम जाय जैपुर देस लुट्टहु त्योंहि मिच्छनकी मही ॥ ७४ ॥
 असवार अठ्ठ हजार ८००० वे तव सीम जैपुर जायकैं ॥
 टोडा रु टोंक विगारि लुट्टिय कुम्भ आन उठाय कैं ॥
 नगरी निवाइय लुट्टिकैं पुनि लुट्टि मालपुरा लयो ॥
 लंवा रु डगिय लुट्टि पट्टलि दाव दुंढवपैं दयो ॥ ७५ ॥
 तिहिं माहि जारि नराननैर रु जाय सौलिय लुट्टई ॥
 मौजाद पत्तन लुट्टिकैं हलसूरि धत्तन दै लई ॥
 इम रारि खगगन आरि मारि विगारि जैपुर देसमें ॥
 पुनि नैर संभर आदि लुट्टिय साहके अवसंसमें ॥ ७६ ॥

१ बजरंगगढ़ और रावोगढ़ का २ लुकम को भेला ३ सेना की टाटी (थोड़ी सी आड़)
 रच कर ४ आते समय ॥ ७१ ॥ ५ मेलच्छ (यवन) ६ चारों दिशा रोक कर ७ राष्ट्र (राज्य)
 की चाहना करके ॥ ७३ ॥ ८ पाखरां वाले ९ मेलच्छों की भूमि को ॥ ७४ ॥ १०
 पुरका नाम है ॥ ७५ ॥ नराना नामक नगर को जलाकर ११ साली पुर को
 लूटा १२ घातें १३ बाकी में ॥ ७६ ॥

दक्षिणियोंसे खानदोराका भागना] सप्तमराशि-चत्वारिंशमयुख (३२१९)

जिम कुम्म भो यँहँ साहको मरहठु नाँहिँ गिँने मिले ॥

तिम तेहु दक्खिन बीर मन्नि रु ग्राम जैपुरके गिले ॥

असवार मान हजार अठ्ठन लूट यौँ इत मंडई ॥

उत रामचंद्र मलार ओ परमार बँगनकोँ लई ॥ ७७ ॥

निज सुत्त साह अनीकपैँ पबिपात पब्बय ज्यौँ परैँ ॥

बजि बंब आनक त्यौँ अचानक कूँटि बिभल ए करैँ ।

तब ज्यौँ हुते तिम साहके उमराव भीरुक भगगये ॥

लचि कुम्ममोरँह खानदोरह लज्जि मैँगहि लगगये ॥ ७८ ॥

तब सेन भज्जत साहको दखिँनीन खगगन खंडयो ॥

उडि खेह अंबरँ यौँ छई जिम मेह संबैर मंडयो ॥

अँचलाहु लक्खनँ फोजकी धमचक्क धक्कनतैं धुकी ॥

बढि व्याधि दिग्गज दंत तुट्टि समाधि संकरकी चुकी ॥ ७९ ॥

फररकि फीलँन केतु त्यौँ थररकि अंबर अँच्छरी ॥

वररकि दह बराह भूँ दररकि कच्छप भो दैरी ॥

तरवारि दक्खिन सेनकी दल मारि दिल्लियको दयो ॥

हँग मीचि भज्जत साहके दल राह बुंदियको लयो ॥ ८० ॥

लगि पिठ्ठि दक्खिनके अनीकँन लाग चम्मलिलौँ करी ॥

इत अगग आय रु साहकी पृँतना धुँनी वह उत्तरी ॥

१ जिसप्रकार जयसिंहको बादशाह का ही हुआ समझें २ मरहठों से मिला हुआ नहीं समझें इशप्रकार दक्षिणियों ने जयपुर के देश को लूटा ३ प्रमाण ४ घोड़ों की बागें उठाई ॥ ७७ ॥ ५ बादशाह की सोती हुई सेना पर ६ पर्वत पर वज्र पड़े जैसे ७ नगारे और ढोल ८ ठोक कर ९ कायर १० कछवाहों का मुकुट जयसिंह (यहां स्वार्थ में 'ह' प्रत्यय किया है सो सब जगह ऐसा ही जानो) ११ लज्जित होकर मार्ग ही लगे ॥ ७८ ॥ १२ मरहठों ने १३ आकाश में १४ जलधारा १५ भूमि भी १६ लाखों सेना की १७ पीड़ा ॥ ७९ ॥ १८ हस्तियों पर १९ अक्षर २० भूमि २१ भय युक्त हुआ; अथवा गुफा रूप होकर अपने अंगों को भीतर समेट लिये २२ नेत्र बन्द करके ॥ ८० ॥ २३ सेना ने २४ चामल न दी तक पीछा किया २५ सेना २६ वह नदी (चामल)

दुव अंक सत्रह १७९२ मान संबत पक्ख *उज्जल पोसमें ॥
 निज बंधु भूप अमान मन्नि रु रान उप्फानि रोसमें ॥
 देल पंति दुद्धर बंधिकै जगतेस साहिपुरा लग्यो ॥
 चहुँ ओर सोर सजोर वहाँ घनघोर तोपनमें दग्यो ॥ ९२ ॥
 तब रान सम्मलि होनको जयसिंह जैपुरसौ चढ्यो ॥
 सुनि एह साहिपुरेसको अति सोक कूरमको बढ्यो ॥
 तब दंड रूपय लक्ख १००००० साहिपुरेस अप्पिय रानको ॥
 करि कुंच रानहु गो उदैपुर रक्खि बंधुव मानको ॥ ९३ ॥
 इहिँ साल मेचक माघमें दबि रोग दुस्सहतेँ गरयो ॥
 निज नैनवापुर माँहिँ अंध सु मंद सालमहूरमरयो ॥
 मरुभूप दिल्लिय आय इत गुजरात जिति उछाहसौ ॥
 अरजी करी कर जोरि बुद्धहिँ दैन बुंदिय साहसौ ॥ ९४ ॥
 तँहँ खानदोरह जो नबाब जबाब पेस न होनदै ॥
 जयसिंहको मँति मित्र यौ अरजी सु लग्गन जो न दै ॥
 नव९मास बुंदिय काज यौ मरुभूप दिल्लियमें रहयो ॥
 बखसीस किन्न बिसेस पै यहतो न साह करयो कहो ॥ ९५ ॥
 तब कुप्पिकै बिनु साह आयसँ सेन धँन्वप सज्जयो ॥
 सब देस लुटत साहको मरुदेस गर्वित वहे गयो ॥
 दुव अंक सत्रह १७९२ साक यौ सितपक्ख फँगुनमें भई ॥
 इत साह दक्खिनमें मिल्यो यह जानि कूरमकी लई ॥ ९६ ॥

*पौष सुदि पक्ष में नहीं मानने वाला (निरंकुश) ? सेना की पंक्ति, दुर्धर्ष (दुःख से धर्षण करने में आवै ऐसी) बांधकर ॥ ९२ ॥ २ जयसिंह के आने का ॥ ९३ ॥
 ३ माघ बादि पक्ष में ४ बुधसिंह को बुन्दी देने की ॥ ९४ ॥ ५ इच्छा मित्र (अपनी इच्छा से मित्र था जयसिंह का किया हुआ मित्र नहीं था) अथवा बुद्धि से मित्र था ॥ ९५ ॥ ६ बादशाह की बिना आज्ञा ७ मारवाड़ का पति ८ फा-
 ल्गुन शुक्ल पक्ष में ॥ ९६ ॥

जयसिंहका बाजेरायको बुलाना] सप्तमराशि-चत्वारिंशमशुक्ल (३२३३)

तबही नवाव उमीरखाँ चुगली सु दोउनकी करी ॥
प्रभु खानदोरह कुम्भमोरह यों हरामिय अदरी ॥
मिलि सत्रु सेननसों गये अरु लाभ दक्खिनतैं लयो ॥
हुव कोटि २००००००० रूपय देस मालव मंडि साहुवकों दयो ९७
चुगली सु जानि रु कुम्भहू पुनि पत्र दक्खिन मुक्कल्यो ॥
श्रियमंत आवहु बेग द्यौं हम दोरै दिल्लियको दल्यो ॥
श्रियमंतहू नृप साह मंत्रिय बंघि पत्र सु बेगलै ॥
दलैं दर्प दुद्धर बंधिकैं गति काल कीलिय तेगलै ॥ ९८ ॥
दोहा ॥

नृप साहुव नवलकख ९०००००० दल, नगर सितारा नाह ॥
सज्जित भो ताको सचिव, बाजेराय दुबाह ॥ ९९ ॥
॥ षट्पात् ॥

बाबा पंडित रामचंद्र हुलकर मल्लारह ॥
रागांजिय संध्या रु प्रथित अमंद पमारह ॥
अबहु मुख्य करि इनहिं चढि रु श्रियमंत चलायउ ॥
सालम सुवन प्रताप सोहु संगहि भट आयउ ॥
कूरमहिं जानि आब्हानकरे इम दक्खिन सन उप्परिय ॥
तद्विन अपार दल भार तकि फैनपति फेनन फुंकरिय १००
परिय १ करिय २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥
गरद गैनें बित्थरिय जरदै जैम जैनक रंग किय ॥

१ हे प्रभु २ जयसिंह ॥ ६७ ॥ ३ फैलाव ४ बादशाह के मंत्री राजा (जयसिंह)
का ५ सेना, घमंड से, अथवा सेना के घमंड से ६ दुःख से धर्यणा की जावे
ऐसी ७ समय की गति को खड्ग से कीली ॥ ९८ ॥ ८ वीर ॥ ९९ ॥ ९ पुत्र १०
जयसिंह को बुलाने वाला जानकर ११ उस दिन १२ सेना का अपार भार
देखकर १३ शेषनाग भागों से फूटकार करने लगा ॥ १०० ॥ १४ आकाश में
गरद फैलकर १५ शनैश्चर के १७ पिता (सूर्य) का रंग १६ पीला कर दिया

मरद मंत्रि उम्मादिय दरद भूदार दह दिय ॥

पंच अयुत ५०००० पक्खरिय सहँस १००० दंतावल्लं सज्जिय ॥

दल पदाति दक्खिनिय गरुबि दुवलक्ख २००००० गरज्जिय ॥

बहुबिधि निसान भेरिय बजिय बल्ल नकीव हंकत बढिय ॥

पेसवा प्रुथितं बिप्र सु बलिय चामर बैर बित्तैर चढिया १०१ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी-
पतिबुधसिंहचरित्रे बुधसिंहपत्नीकूर्मीसंमतिमहाराष्ट्रपत्तपव्ययुतमु-
द्रकीलितसालमसिंहतदात्मजप्रतापसिंहबुन्दीहरणा १ कूर्मीमल्लार-
रक्षाबन्धन २ प्रेपितायुतद्वयसैन्यजयसिंहस्य युद्धमन्तरापि पुनर्दलेल-
सिंहबुन्ध्यधिकारप्रापणा ३ कोटामहारावदुर्जनशल्यस्य राणा जग-
त्सिंहजामिपाणिग्रहणा ४ तीर्थयात्राप्रस्थितसिताराधीशसाहूमन्त्रि-
बाजेरायजनन्या मार्गागतोदयपुरजयपुरसत्कारस्वीकरणा ५ महारा-
णा सुभटदौलतसिंहस्य माहाराष्ट्रकीलितहड्डसालमसिंहमोचन ६
जयपुराधीशजयसिंहस्य स्वप्नोन्नीतसमीपराजस्थानान्तर्वर्तिराजपुत्रै-

१ धीर साहू का मंत्री उत्साहित हुआ २ बाह की दाढ़ में
पीड़ा की ३ पाखरों वाले सवार ४ हाथी ५ पैदल सेना ६ गर्व करते ७ नगारे
८ नाँवत ९ सेना को १० पेसवा पदवी वाला प्रसिद्ध ब्राह्मण ११ श्रेष्ठ चम-
रों को १२ विस्तर (कैला) कर चढ़ा ॥ १०१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के राजा
बुधसिंह के चरित्र में, सालमसिंह के बड़े पुत्र प्रतापसिंह का बुधसिंह की रा-
णी कछवाही से मिल कर मरहटों को छ लाख रुपये देकर सालमसिंह को कैद
करवा कर बुन्दी छुड़ाना १ राणी कछवाही का मल्लार के राखी बांधना २
जयसिंह का बीस हजार सेना भेज कर बिना ही युद्ध किये बुन्दी पर दलेल
सिंह का पीछा अधिकार कराना ३ राणा जगत्सिंह का कोटा के महाराव दु-
र्जनशाल के साथ अपनी बहिन का विवाह करना ४ सितारा के अधीश सा-
हू के मंत्री बाजेराव पेसवा की मत्ता का तीर्थ यात्रा जाते समय उदयपुर
और जयपुर में अत्यन्त आदर सत्कार हाँसा ५ महाराणा के उभयपदौलतसिंह
का हाड़ा सालमसिंह को मरहटों की कैद से छुड़ाना ६ राजा जयसिंह का
राजपूताना के राजाओं को मेवाड़ में खारी नदी के समीप एकत्र करना ७

श्रीमंत पैसवाका उदैपुर आना] सप्तमराशि-एकचत्वारिंशमयूख(६२३५).

कत्तीकरणा ७ उदयपुराधीशमृतेराजस्थानाशेषक्षमापालसहितदिल्लीसे
नापतिखानदोराख्यस्य महाराष्ट्रोपरिदक्षिणादिगमन ८ महाराष्ट्रगात्रि
रणापराजितससैन्यखानदोरापलायन ९ खानदोराजयसिंहयोर्दिल्ली
न्द्रान्महाराष्ट्रमालवदेशदापन १० महाराणाजगत्सिंहस्य शाहपुरेशवेष्ट
नलक्षमुद्रादण्डादान ११ आहूतजयसिंहसहाराष्ट्रसैन्यदिल्लीप्रस्थान
वर्णनं चत्वारिंशो मयूखः ॥ ४० ॥

आदितोऽष्टसप्तत्युत्तरद्विशततमः ॥ २७८ ॥

॥ दोहा ॥

कटकबिप्रदरकुंचकरि, आयउ लौनावाड़ ॥

सु सब रान जगतेस सुनि, लगि बधावन लाड ॥ १ ॥

जब काका निज जनकको, बुल्लि तखत अभिधान ॥

बहुरि सलूमरि नाह बियर, पठये प्रेम प्रमान ॥ २ ॥

मिलन गये श्रीमंतसौं, तब भवह सम्मुह आय ॥

मुख रान भट मन्त्रिकैं, बियैरलिप अगग बढाय ॥ ३ ॥

प्रथम लिखिय श्रीमंत प्रति, जैपुर नृप बरजोर ॥

सजि मिलाप तुम रान सन, आवहु पुनि हम ओर ॥ ४ ॥

यातैं उप्परि पेसवा, प्रथम उदैपुर पत्त ॥

उदयपुर के महाराणा के बिना राजपूताना के सब राजाओं को साथ लेकर
दिल्ली के सेनापति खानदोरां का मरहठों पर दक्षिण में जाना ८ मरहठों के
रतिवाह से पराजय पाकर सेना सहित खानदोरां का भागना ९ खानदोरां
और राजा जयसिंह का बादशाह से मरहठों को मालवा देश दिलाना १०
महाराणा जगत्सिंह का शाहपुरे को घेरकर एक लाख रुपयों का दंड लेना
११ जयसिंह के बुलाने से मरहठों की सेना का दिल्ली पर जाने के वर्णन का
पचासीसवां ४० मयूख समाप्त हुआ और आदि से दांसौ अठहत्तर २७८
मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ अपने पिता (संग्रामसिंह) का २ तखतसिंह नामक ॥ २ ॥ ३ दोनों
को ॥ ३ ॥ ४ जयपुर के बलवान् राजा (जयसिंह) ने ॥ ४ ॥ ५ ॥

सम्मुह आयउ कोस दस१०, रानहु हित अनुरत्त ॥ ५ ॥
 आसिरवादहि अगग यह, लिखतो गुंमर लसंत ॥
 पै नमिकैँ यँहँ रान प्रति, किय सलाम श्रियमंत ॥ ६ ॥

॥ प्लवङ्गमम् ॥

रानहु बिरैचि प्रनाम मिल्यो अति मोदसौं,
 वाजेरायहिँ लाय बधाय बिनोदसौं ॥
 आहड ग्राम समीप सिविरेँ दलको करच्यो,
 हो जँहँ चंपकबागँ अप्प तँहँ उत्तरच्यो ॥ ७ ॥
 पुनि पठई महिमानी रान बहु रीतिसौं,
 रूप्य पंचहजार५००० बैसन गज बीति सौं ॥
 दूजे दिन श्रियमंत सभा रचि बुल्लयो,
 बिपहु गो तब बेग नेह बिँथरच्यो नयो ॥ ८ ॥

॥ देहा ॥

तबहु द्वार प्रछन्नतक, आयउ सम्मुह रान ॥
 दूजी गद्विष बिप्र हित, बिछवाई सु बिधान ॥ ९ ॥
 तिहिँ उठवाय रु पेसवा, बिनु गद्विय गय बैठि ॥
 रच्यो अदब यह रानको, प्रीति अतुल हिय पैठि ॥ १० ॥
 गद्विय पर रानाँ रहयो, सिर दुवर चमर ढराय ॥
 चमर इक्क१हुव बिप्र सिर, बलि हित बत्त बढाय ॥ ११ ॥
 रान कहिय नमनीय तुम, तब द्विज कहिय सचाँव ॥
 मोहि गिनहु नृप रावरो, जिम सोलह१६ उमराव ॥ १२ ॥
 रान तबहि जर जीन जुत हय चउ४हत्थिय एक१ ॥

श्वमंड से शोभित होकर खड़ा होवै सो आशीर्वाद देता है और छोटा होवै सो सलाम करता है तथा लिखता है ॥ ६ ॥ ३००० बैसन (पड़ाव) ५ चंपाबाग ॥ ७ ॥
 ४ वज्र ७ घोड़ा ॥ ८ ॥ ८ भीतर के द्वार (डोदी) तक ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ ९ नमस्कार करने योग्य (पूज्य) १० उत्साह सहित ॥ १२ ॥

श्रीमंत पैसेवाका उदैपुर आना] सप्तमराशि-एकचत्वारिंशमयूख (३२३५)

कत्तीकरणा ७ उदयपुराधीशमृतेराजस्थानाशेषक्षमापालसहितदिल्लीसे
नापतिखानदोराख्यस्य महाराष्ट्रोपरिदक्षिणादिगमन ८ महाराष्ट्रगात्रि
रणापराजितसैन्यखानदोरापलायन ९ खानदोराजयसिंहयोर्दिल्ली
न्द्रान्महाराष्ट्रमालवदेशदापन १० महाराष्ट्राजगत्सिंहस्य शाहपुरेशवेष्ट
नलक्ष्ममुद्रादण्डादान ११ आहूतजयसिंहमहाराष्ट्रसैन्यदिल्लीप्रस्थान
वर्णनं चत्वारिंशो मयूखः ॥ ४० ॥

आदितोऽष्टसप्तत्युत्तरद्विशततमः ॥ २७८ ॥

॥ दोहा ॥

कटक विप्रदरकुंचकरि, आयउ लौनावाड़ ॥

सु सब रान जगतेस सुनि, लगि बधावन लाड ॥ १ ॥

जब काका निज जनकको, बुल्लि तखत अभिधान ॥

बहुरि सलूमरि नाह बिप२, पठये प्रेम प्रमान ॥ २ ॥

मिलन गये श्रीमंतसौं, तब बह सस्मुह आय ॥

मुख प रान भट मन्निकै, बिप२लिप अगग बढाय ॥ ३ ॥

प्रथम लिखिय श्रीमंत प्रति, जैपुर नृप बरजोर ॥

सजि मिलाप तुम रान सन, आवहु पुनि हम ओर ॥ ४ ॥

यातैं उप्परि पैसेवा, प्रथम उदैपुर पत्त ॥

उदयपुर के महाराणा के बिना राजपूताना के सब राजाओं को साथ लेकर
दिल्ली के सेनापति खानदोरा का मरहटों पर दक्षिण में जाना ८ मरहटों के
रतिवाह से पराजय पाकर सेना सहित खानदोरा का भागना ९ खानदोरा
और राजा जयसिंह का चादशाह से मरहटों को मालवा देश दिलाना १०
महाराणा जगत्सिंह का शाहपुरे को घेरकर एक लाख रुपयों का दंड लेना
११ जयसिंह के बुलाने से मरहटों की सेना का दिल्ली पर जाने के वर्णन का
आखीसवा ४० मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ अठहत्तर २७८
मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ अपने पिता (संग्रामसिंह) का २ तखतसिंह नामक ॥ २ ॥ ३ दोनों
को ॥ ३ ॥ ४ जयपुर के बलवान राजा (जयसिंह) ने ॥ ४ ॥ ५ ॥

सम्मुह आयउ कोस दस१०, रानहु हित अनुरत्त ॥ ५ ॥
 आसिरबादहि अगग यह, लिखतो गुंमर लसंत ॥
 पै नमिकैं यँहँ रान प्रति, क्रिय सलामं श्रियमंत ॥ ६ ॥

॥ प्लवङ्गमम् ॥

रानहु बिरैचि प्रनाम मिल्यो अति मोदसों,
 बाजेरायहिँ लाय बधाय बिनोदसों ॥
 आहड़ ग्राम समीप सिविर दलको करघो,
 हो जँहँ चंपकबागँ अप्प तँहँ उत्तरघो ॥ ७ ॥
 पुनि पठई महिमानि रान बहु रीतिसों,
 रूप्यय पंचहजार५०००बँसन गज बीति सों ॥
 दूजे दिन श्रियमंत सभा रचि बुल्लयो,
 विप्रहु गो तव बेग नेह बिथरघो नयो ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

तबहु द्वार प्रछन्नतक, आयउ सम्मुह रान ॥
 दूजी गहिय विप्र हित, बिछवाई सु बिधान ॥ ९ ॥
 तिहिँ उठवाय रु पेसवा, बिनु गहिय गय बैठि ॥
 रच्यो अदब यह रानको, प्रीति अतुल हिय पैठि ॥ १० ॥
 गहिय पर रानाँ रहयो, सिर दुव२ चमर ढराय ॥
 चमर इक१हुव बिप्र सिर, बलि हित बत्त बढाय ॥ ११ ॥
 रान कहिय नमनीय तुम, तव द्विज कहिय सचाँव ॥
 मोहि गिनहु नृप रावरो, जिम सोलह१६ उमराव ॥ १२ ॥
 रान तबहि जर जीन जुत हय चउ४हथिय एक१ ॥

१ घमंड से शोभित होकर खड़ा होवै सो आशीर्वाद देता है और छोटा होवै सो सलाम करता है तथा लिखता है ॥ ५ ॥ २ करके छेरा (पड़ाव) ३ चंपाबाग ॥ ७ ॥
 ४ बस्त्र ७ घोड़ा ॥ ८ ॥ ८ भीतर के द्वार (ढोदी) तक ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥
 नमस्कार करने योग्य (पूज्य) १० उत्साह सहित ॥ १२ ॥

राणाकावाजेरावकोसातलाखरुपयेदेना]सप्तमराशि-एकचत्वारिंशमयूख३२३७

नग जराय भूखन नवल, बिप्राहिँ दिय सबिवेक ॥ १३ ॥

मूढ लख १५०००० इक १ साल प्रति, स्वीकरि दक्खिन दम्म ॥

दियउ परगन बनहड़ा, तिनमैं लिखि हित कम्म ॥ १४ ॥

ताँल मध्य इक रानकैं, जगमंदिर प्रासाद ॥

ताहि दिखावनकी कही, बाँसर दूजे बाँद ॥ १५ ॥

रान पिंसुन बनि कोउ तब, बाजेरावहिँ अक्खि ॥

लै जावत मारन तुमहिँ, रान कपट हिय रक्खि ॥ १६ ॥

दक्खिन मंत्रियं एह द्विज, हो तथीपि सुनि एह ॥

मूरख सच्ची मन्त्रिकैं, किय रोखैरुन देह ॥ १७ ॥

पठई यों कहि रान प्रति, मैं छलघात मरौ न ॥

कैलिहि मंड सज्जहु कटक, करहिँ साम अब कोन ॥ १८ ॥

॥ पद्धतिका ॥

यह सुनत रान हुव सोक लीन, पठये पुनि दुव २ भट १ वे प्रवीन ॥

तखतेस रु केसरिसिंह तथ, जाय रु द्विज बंदियँ जोरि हत्थ ॥ १९ ॥

कहि रान अधिक सनमान कीन, अप्पन न होहु अमरख अधीन ॥

किहिँ मूढ कहिय यह दोह कैत्थ, सोकहहु अप्प सब बिधि समर्थ २०

जो कहहु नाहिँ तजि देहु रोस, नाइक न देहु अभिसाप दोस ॥

श्रियमंत तदपि भो नहिँ प्रसन्न, तव सत्त लख ७००००० दिय दम्म

छन्न ॥ २१ ॥

संग्रामरानकी मात अगै, चहुवानि मरी निज भुगि भैग ॥

१ नवीन २ ब्राह्मण बाजेराव पेसवा को विचार पूर्वक दिये ॥ ३ ॥ ३ डेढ लाख रुपये

४ हित के कार्य के लिये ॥ १४ ॥ १ पीछोला नामक तालाब में १ महल ७ दूसरे दिन

८ वचन ॥ १५ ॥ पहले ९ राणा का चुगली करने वाला बनकर ॥ १६ ॥ १०

यह ब्राह्मण दक्षिण का सलाहकार था ११ तो भी १२ क्रोध में खाल शरीर कि-

या ॥ १७ ॥ १३ युद्ध रच कर ॥ १८ ॥ १४ ऊपर के कहें हुए १५ ब्राह्मण को नमस्कार

किया ॥ १६ ॥ १६ क्रोध के १७ वचन १८ स्वार्थ ॥ २० ॥ १९ मिथ्या दोष २०

रुपये ॥ २१ ॥ २१ आगे २२ भाग (घंट)

तब हुव बिलखख ३००००० मित * कनक दान, सो रानदयो बिप्रहि
सयान ॥ २२ ॥

दल कुंच कियउ लै बिप्र दाम, श्रियद्वार आय किय प्रभु प्रनाम ॥
सतपंच ५०० दम्भ किय भेट तत्थ, बल्लभ कुल बंदिय पुनि समत्थ २३
गोस्वामि नाम गोवर्द्धनेस, विरचिय तिन अगगहु नति बिसेस ॥
तिनकोहु १ दम्भ सतपंच ५०० अपि, मरहट्ट चलिप दलकुंच मपि २४
पुनि होय जाजपुर नगरपास, बल कियउ केकडिय दंग वास ॥
उततै सुनि कूरम भूप आय, चतुरंग चक दुदर चलाय ॥ २५ ॥
धमि नैर कृष्णागढ निकट धाम, भिटिय दुव २ भंभोलाव ग्राम ॥
पठई तब कूरम राह अक्खि, हम मिलहि रानघर रीति रक्खि ॥ २६ ॥
पठई कहि बिप्रहु नहि प्रमान, है रान सुपहु साहु समान ॥
जे कबहु मिच्छ अनुचर बनैन, अनुचर सदाहि तुम लोभ अनै ॥ २७ ॥
जिहि हेतु मोहुको अधिक जानि, पै मिलहि अज्ज समंता प्रमानि ॥
तुम जानत गादिय दै उठाय, पै बैठहि दुवर इक १ पीठ पाय ॥ २८ ॥
हम तत्थहु दक्खिन ओर होय, दै बाम तुमहिं हम मिलहिं दोय ॥
जयसिंहहु यह सुनि प्रबल जानि, इक आसन स्वीकारि मिलिय आनि
चढि उभयर चक हुव सज्ज आय, तिन बीच इक पटंगुह तनाय ॥
तामाहिं मिले दुवर गर्जन छोरि, बैठे इक १ आसन जाँनु जोरि ३०
द्विज किय तहँ हुक्काजंत्र पान, लागि बुद्धि कुम्भ मनबिच रिसान ॥

* सुवर्ण दान ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ † नम्रता ‡ रुपये ॥ २४ ॥ १ सेना का १
नगर दुःख से धर्षणा की जावे ऐसी ३ चार प्रकार (हाथी, घोड़े, रथ, पैदल)
की सेना ॥ २५ ॥ २६ ॥ ४ यह तुम्हारा कहना प्रमाण नहीं है ५ अष्ट राजा १
सितारा के पति साहू के समान है ७ यवनों के ८ लोभ के घर ॥ २७ ॥ २८ इस का
रण मुझ को बड़ा मानो परंतु आज १० बराबर के मान कर मिलेंगे ११ एक
आसन (गद्दी) पर ॥ २८ ॥ १२ तहां हम दहिनी ओर रहकर १३ एक गद्दी पर
बैठना स्वीकार करके ॥ २९ ॥ १४ मिलाप के स्थान पर दोनों सेना सज्ज हो
कर रही १५ डेरा १६ हाथियों से उतर कर १७ घुड़ने मिला कर ॥ ३० ॥ १८ धूम

[जयसिंहका बाजेरावसे मिलना] सप्तमराशि-एकचत्वारिंशमयुख (१२३६)

पुनि सुभट मुख्य निज निज बुलाय, बैठारि मिसल*आयत बनाय ३१
दक्खिन भट हाजरि सबहि तत्थ, इक्क १ न मल्लार आयउ समत्थ ॥
संधा जिहिं बुंदिय लैन लिन्न, द्विज बाजेरावहु बचन दिन्न ॥३२॥
श्रियमंत यहाँ मिलि पलटि पोन, कछवाह बुंदि छोरहु कह्यो न ॥

योन १ ह्योन २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

सालम सुत संजुत आसु उठि, इहिं कारन हुलकर चलिय रुठि ३३
श्रियमंत कुम्म इम मिलि सुभाय, अब निज निज डेरन उभय २आय
यहँ सुनिय विप्र रुठिय मल्लार, गय तबहिनिहोरन प्रकटि प्यार ३४
अक्खिय तब हुलकर अत्थ आय, तुम बुंदिय लैन न किय उपाय
करि सपथ लैन पुनि देहु बैन, तुम संग न तो अब हम चल्यो ना ३५
नृप साहु सपथ तब विप्र बुल्लि, लौहो अब बुंदिय तेग तुल्लि ॥
विचमै कछु बांसर जान देहु, दोउन २ मनाय लिय अक्खि एहु ३६
कूरम रु विप्र पुनि मिलैन कीन, लाहि कूर्म हौर्द रचि मंत्र लीन ॥
उततै दल लक्खन तुम बनाय, आवहु इत जैपुर हे सहाय ॥३७॥
अब ही न लारन अवकास अँच्छ, दक्खिन अमार्थ तुम नीति दँच्छ
मिलि बहुरि दैहिं मिच्छन मिटाय, जँव करि दल सज्जहु गंह जाय
कूरम गय जैपुर अक्खि एह, श्रियमंत सुरयो दक्खिन सनेह ॥
दुव अंक सत्त इक १७९२ सक दुरंत, यह भयउ मास फगुन
उदंत ॥ ३९ ॥

दाकुंच तँदनु कगि द्विज प्रयान, बेधम ठिग आय रु दिय मिलैन
(धुआं) लगने से जयसिंह मन में रिसाया ॥ ३१ ॥ १ तहाँ २ स-
मर्थ ३ प्रतिज्ञा ॥ ३२ ॥ ४ शीघ्र उठकर ५ रोष (क्रोध) करके ॥ ३३ ॥ ६ ब्राह्मण
(बाजेराव) ने ॥ ३४ ॥ ७ यहाँ आकर फिर बुंदी लेने का ८ सौजन्य ॥ ३५ ॥
राजा साहु का (सौजन्य) १० दिन ॥ ३६ ॥ ११ मिलाप १२ जयसिंह का अवि-
प्राय ॥ ३७ ॥ १३ अच्छा १४ हे दक्षिण के मंत्री १५ दल (चतुर) १६ शीघ्रता
करके सेना सजो ॥ १७ ॥ १७ दूर है अन्त जिसका; अथवा बुरा है अन्त जिस
का १८ अन्त ॥ ३८ ॥ १९ जिस पीछे २० सुकास

यँहँ भट प्रताप हड्ड सु अभंग, श्रियमंत चैरहु लै इक्क१ संग ॥४०॥
 बुन्दीस निकट गय नमिय वीर, सब यह उदंत जंपिय सधीर ॥
 कथ पेसवाहु यह तव कहाय, तुमतेँ न जुदे हम बुंदिराय ॥४१॥
 अबतो हम आये लोभ ठानि, लैहँ पुनि बुंदिय लेहु मानि ॥
 बुंदीस मिलन हित कछु कहाय, टारी सु बिप्रइम दलँ लिखाय ॥४२॥
 तदनंतर दक्खिन द्विज प्रपत्तँ, गो हड्ड प्रतापहु संग तँत ॥
 इत दिलिय कूरम कुजस उड्डि, श्रियमंत मिलन सुनि साहरुड्डि ॥४३॥
 तव साँह निजामनमुलक बुल्लि, आयउ नबाब सुनि तेग तुल्लि ॥
 हो यह कलीजखाँ नाँम वीर, गाजुद्दीखाँ सुत रन रँभीर ॥४४॥
 वह भट द्रुत दिलियनैर आय, बलि साह हितु सिजँदा विधाय ॥
 जवनेसहिँ कूरम कुपित जानि, पुनिलिखिय पत्र दक्खिनप्रमानि ॥४५॥
 अवसर अब आयउ भुम्मि लैन, श्रियमंत बेग आवहु ससैनँ ॥
 यह सुनत बज्जिजिततित निसँन, उमडिय अनीकँ सागर उफान ॥४६॥
 फहराय भंड हथिन फगकि, भहराय भज्जि भीरुँक भरकि ॥
 सज्जत भट बाहुँल कवच टोप, अतिकाय चरक्खन चढत तोप ॥४७॥
 खुरसान धार आयुध खनंकि, पाँवक प्रचंड भारत भनंकि ॥
 दक्खिन अनीकँ गज्जिय दुरंतँ, इहिँ रीति वीर सज्जिय अनंत ॥४८॥
 संबतत्रि अंक हय इक्क१७९३मान, इसमौंस विजयदसमी १० उफान
 संक्रमियँ सिताराधीस सैन, श्रियमंत मुख्य लागि भुम्मि लैना ॥४९॥
 अतिकाय वाजि फाँदत अकास, मिटिजात हुँग पद्धर मँवास ॥

१ श्रीमंत के हलकारे को ॥ ४० ॥ २ वृत्तान्त कहा ॥ ४१ ॥ ३ पत्र ॥ ४२ ॥ ४ जिस पीछे ५ गया ६ तहाँ ॥ ४३ ॥ ७ बादशाह ने निजामुलमुल्क को (यह विताव है, जिसका मतलब है मुल्क का इन्तजाम करने वाला) बुलाया ८ युद्ध में गँभीर ॥ ४४ ॥ ९ शीघ्र १० सलाम ११ करके ॥ ४५ ॥ १२ सेना सहित १३ नगारे १४ सेना ॥ ४६ ॥ १५ कायर १६ दस्माने १७ घड़ी तोपें चरखों पर चढ़ी ॥ ४७ ॥ १८ अग्नि १९ सेना २० दूर है अन्न जिसका ऐसी ॥ ४८ ॥ २१ आम्बिन सासर २२ चली ॥ ४९ ॥ २३ दुर्ग २४ लुटेरों के रहने के स्थान सीधे होगये

वि लियउ ठंकि खुरतार खेह, मंडिय कि भद आसार मेह । ५० ।
 केलकिलत संग कालिय कराल, खिलखिलत मलंगत खेत्रपाल ॥
 जुगिनि जमाति जय जयति जंपि, झपटत झुकंत बेताल झंपि । ५१ ।
 बकबकत संग बावन ५२ प्रमत्त, सँकसकत गिद्ध सिर होत छत्त ॥
 डमरूक डक डंइल डमंकि, ठहनाय हूर नूपुर ठमंकि ॥ ५२ ॥
 सजि चलिय संग भैरव त्रिसूल, फरकिय सिचान हिय असन फूल ॥
 आतापि ओघ ठंकत अकास, फेरंडे फलंगत गिलन ग्रास ॥ ५३ ॥
 इम चलिय संग पलचरै अनेक, कटकट बिरौव प्रेतन कितेक ॥
 लागि अतल बितल सुतलन लचक, मुरकत बराह दंतुलि मचक ५४
 ग्रावन खुरतालन भरत अग्नि, जिहि रँव समाधि प्रमथेसँ जग्नि ॥
 अकबकत सेतु सागर उमंगि, भुल्लत दिसान नर मद कि भंगि । ५५ ।
 तररकि भुम्भि छेकत तुँखार, दररकि देत पैबय दरार ॥
 रननंकि रौव कंकट करीन, छननंकि होत जल नंदन छीन । ५६ ।
 उडिजात उँपल चूरन अनंत, गडिजात तिमिर पूरन दिगंत ॥

१ जलधारा ॥ ५० ॥ २ कोलाहल करके ३ हंस्ताहुआ ४ 'जय हो, जय हो,
 यह कहकर ॥ ५१ ॥ ५ बहुत बोलते हुए (बक्याद करते हुए) बावन वीर
 (जहां जहां बावन की संख्या आवै तहां तहां बावन वीर जानना चाहिये) ६
 पंखों के शब्द का अनुकरण (नकल) है ७ बाघ विशेष ८ अप्सराओं के ९
 पायजेब (पदभूषण) बजे ॥ ५२ ॥ १० भोजन के कारण हृदय फूलकर सिचाण
 पक्षी उड़े ११ चील्हों के समूह से आकाश ढक गया और निवाले गिटने को १२
 गीदड़ कूदने लगे ॥ ५३ ॥ इसप्रकार १३ मांस खानेवाले अनेक पशु पक्षी साथ
 चले और कितने ही प्रेतों के दंतों का कटकट १४ शब्द हुआ ॥ ५४ ॥ १५ पत्थरों
 से और घोड़ों की खुरतालों से अग्नि झड़ने लगी जिसके १६ शब्द से
 १७ शिव की समाधि छूट गई. घबरा कर समुद्र १८ मर्यादा भूलकर ऐसा
 बहा जैसे १९ भाग के नशे में मनुष्य दिशा भूलजाता है ॥ ५५ ॥ तरारें ले कर
 २० घोड़े भूमि को फांदते हैं और २१ पर्वत फटकर दरारें (तेड़े) देते हैं, रण-
 कार करके २३ कवच की कड़ियों का २२ शब्द होता है २४ बड़े जलाशयों
 का पानी क्षीण होता है ॥ ५६ ॥ २५ अनेक पत्थर चूर्ण होकर उड़जाते हैं

इभरांज अंदुं अँचत अभंग, रँजु कि खेत्रफल सपन रंग ॥ ५७ ॥
 वहिचलिय धातु अँद्रिन अनेक, सलसलिय पंथ गज दान सेक ॥
 इम हलिय सेन दक्खिन अनंत, दिल्लीस मुलक दब्धत दुरंत ॥ ५८ ॥
 सुनि साह सेन सज्जिय सिताव, बल मुखप उभय रक्खिय नगाव ॥
 इक खानकमरदी निजवजीर, बलि संगनिजामनमुलक वार ॥ ५९ ॥
 दुवर चलिय सेन हरवल्ल हंकि, घनघोर घंट पक्खर घमंकि ॥
 कुलटा कँनीनि विधि तरल वाजि, उडुतमलंगि आगामि अँजि ६० ॥
 मनके रु पवनके जे सुमित्र, चलत रँस धाँव मंडन विचित्र ॥
 खंधन बिर्नम्भ चटुत खलीन, मखतूल वग्ग जैर जिलह लीन ॥ ६१ ॥
 विरचत निकम्मं नमि जेरबंध, खैह जात अपि तउ सँदस खंध ॥
 दल मध्य उलटपलटन दिखात, तिर्मि मच्छ मनहु अँनव तिरात ६२ ॥
 भुवकों ति प्रबल बत्थन भरंत, कामिनि गैर लगगत जानि कंत ॥
 सादिन सुख साधित सहज सँदय, फिरिजात छत्रकी छाँह मध्य ६३ ॥
 असवार चहत जिहि रूप दब्ध, नञ्जि रु दिखात सुहि रूप नठ्य ॥

और अंधरे से पूर्ण होकर दिशा दिशा गड़जाता (अदृश्य होजाता) है
 १ बड़े हाथी नहीं लूटनेवाले २ जंजीरों को खँचते हैं सो मानो ३ खेतों
 को मापने का ४ डोरी (जरीब) खँचते हैं ॥ ५७ ॥ ५ अनेक पर्वतों से ७ हा-
 थियों के मद के द खँचने से मार्ग ६ गीले होगये ॥ ५८ ॥ ९ सेना में १०
 कमरदीखी ११ फिर ॥ ५९ ॥ कुलटा के १२ नेत्रों की पुनली के समान चपल
 घोड़े १३ आगे आनेवाले शुद्ध के अर्थ उड़ते हैं ॥ ६० ॥ १४ चलने में रस (स्वाद)
 उत्पन्न करते हैं और १५ दौड़ने में आश्चर्य करते हैं १६ विशेष भुके कंधों वाले
 १७ लगामों को चाटते हैं वे घोड़े १८ रसम की बागें और १९ जरी की शांभा में
 लीन हैं ॥ ६१ ॥ स्वाभाविक भुके हुए कंधों से २० जेरबंद को निकम्मा करते
 हैं २१ आकाश में उड़कर जाते हैं ता भी कंधा २२ वैसा का वैसा ही भुका
 हुआ रहता है वे घोड़े २३ सेना में उलट पलट दिखाते हैं सो मानो २४ समुद्र में
 २५ बड़े मच्छ तिरते हैं ॥ ६२ ॥ २६ वे घोड़े भूमि को अपनी २७ बाधों (शुजा
 ओ) में भरते हैं सो मानो २९ पति २८ स्त्री के गले लगता है ३० सहज साध-
 न से ३० सवारों के सुख को साधते हैं और छत्र की छाया में फिर जाते हैं ॥ ६३ ॥
 सवार जिस ३१ मध्य; अथवा विशेष नञ्ज रूप को देखना चाहें वसी ३३ नहीं

रन अजिरे वजू जिनके रकाव, हरखात चैढाकन मन हिसाव ६४
 इम चलिय अव्वं थेइन थरक्क, हँकिग अनेक दन्धिन दँलक्क ॥
 चंचल लखि पच्छिन कगत चोट, जिन अगग अँवुं डक्खत अगोट ६५
 अति बीन पाय रोपत अडोल, लगि बहुगि डाँक बढिजात लोल ॥
 जँजीर लंब अँचत सजोग, सिर रचत भोर गुंजार सोर ॥ ६६ ॥
 आधोरन रक्खत बहु विमासि, हँकत तथापि उद्धत हुलामि ॥
 इम हलिय साह पुरेना अभंग, दक्खिन दल सम्मुह रचनदंग ॥ ६७ ॥
 सुनि इनहि आत दक्खिन दलसेँ, हुन बढिय विगागत साह देस ॥
 खटमास बट्ट आवत विताय, चक्कें सु अव दिल्लिय मिर चलाय ॥ ६८ ॥
 ग्वालंर लुट्टि बहु अरिन गंजि, अव चलिय अगग रसवीर रंजि ॥
 मग चुक्कि अगग कढिगयउ मिच्छेँ, इनआनिलई दिल्लियगवईच्छेँ ॥ ६९ ॥
 सक बंद अंक सत्रह १७९४ सुभायें, अष्टमिट बलच्छेँ मधुमौस आय
 दिल्लोपुर बाहिर पृथुँल दोर, अति रुचिरें सिल्पविधि ओरओर ७०

थित इक कालिया देवि धान, मेला तँहँ तद्दिन हो महान ॥
 बढि रहिय तत्थ लक्खन बनिज्ज, जिन्ह लखत होत धनदहिं अचिज्ज
 दक्खिन दल आय रु खगन खंडि, मेला वह लुट्टिय जुलम मंडि ॥
 कढि कढि तब विबल बनिजकार, तजिदव्य भजिग कालिंदि पार
 कोटिन धन दिल्लिय कहँर कुप्पि, लुट्टिय मरहइन कानि लुप्पि ॥
 बहु जलँज हीर मानिक बिथार, प्रतिमुल्ल लाल मरकंत अपार ७३
 इम महुँर हूँन रूपय अनंत, भूखन जराय कुंडल सुभंत ॥
 कौटीर तिलक आपीडँ केक, अरु तौडपत्र नूपुर अनेक ॥ ७४ ॥
 सिरपेच हार केयूर स्वच्छ, ऊर्मिकँ अँवाप कँटिमूत्र अच्छ ॥
 बहु मारि हँड लुट्टिय बिजाज, सन सूत्रमय रु रांकँव समाज ७५
 कौसेयँ पग्घ साटिन कलौप, नीसँर नँय थुरमा अमाप ॥
 अत्तार बिपँनि लुट्टिय अनेक, कँरटी रु बीति पुनि भक्षँकेक ७६
 हारँव हुव दिल्लिय हंत हंत, दँल कढिय तत्थ पुरतँ दुरंत ॥
 इत रचत लूट दक्खिन अनीकँ, श्रियमंत सज्ज चाहत सँमीक ७७

१ उस दिन बडामेला था लाखों व्यापारी, अथवा लाखों का व्यापार बढ रहा
 था २ जिनको देखने से ४ कुबेर को भी ५ आश्चर्य होता था ॥ ७१ ॥ ६ व्या-
 पारी ७ यमुना नदी के परले किनारे भाग गये ॥ ७२ ॥ ८ जुलम करनेवाला
 क्रोध करके ९ बहुत मोती हीरे और माणिकों का विस्तार, अत्यन्त मूल्य
 वाले लाल १० पन्ना ॥ ७३ ॥ ११ सुवर्ण की मोहरें और अनंत रुपये, जडाय
 के भूषण १२ श्रेष्ठ रीति के कर्ण भूषण १३ किरौट (मुकुट) कितने ही शिवतिल-
 क और १४ बूडामणि (मस्तक भूषण विशेष) १५ कर्णफूल (स्त्रियों के कानों का
 भूषण) अनेक नूपुर (चरणभूषणविशेष) ॥ ७४ ॥ १६ भुजबंध १७ अंगूठियाँ १८
 काटिमेखला अर्थात् करधनी (कणगति) १९ प्राप्त की (लूटी) फिर बजाजों की
 २० दुकानें लूटीं जिनमें सण के, सूत के और २१ ऊन वस्त्रों के समूह थे ॥ ७५ ॥
 २२ रेसमी पगड़ियों और साड़ियों के २३ समूह २४ ठंड को मिटानेवाले २५
 नवीन अपार थुरमे (दुशाले) अनेक अत्तारों के २६ बजार लूटे फिर २७ हाथी
 २८ घोड़े और कितने ही २९ खाने के पदार्थ लूटे ॥ ७६ ॥ दिल्ली में खेदकारक
 ३० हाहाकार शब्द हुआ तहां पुरसे ३१ दूर है अन्त जिसका ऐसी ३२ सेना
 निकली, इधर दक्षिण की ३३ सेना तो लूट कर रही थी और श्रीमन्त (दक्षि-
 ण का बजीर) सज्जित होकर ३४ युद्ध चाहता था ॥ ७७ ॥

यहै सुनिय कमरदीखाँ वजीर, बलि कहिय निजामनमुलक बीर॥
 अप्पन मग चुकि रु अगग आय, दिल्ली खल पँते लैन दाय ७८
 यह अखिख सुरे लै दल अभंग, पहुँचे अंधारहिँ जिम पतंग ॥
 उततै दल पतनसौहु आय, इततै नबाब दुव२हय उडाय ॥ ७९ ॥
 मरहठ लये लुटत प्रमत्त, प्रतिमल्ल मिच्छ दुहुँ२ओर पत्त ॥
 मचि समर घोर समसेर मार, बजि निनंद बंब अंबक बिथार।८०।
 धर धुकत धुजि धावन धसकि, कुंडैलि कपाल दरकिय कसकि ॥
 कटि परत भौंद रद अधर कंध, किलकिलत मुंड नच्चत कंबंध८१
 डमरुक मँडु डाइल डमंकि, घहरात डोल पखर घमंकि ॥
 बबकारि करत बावन५२बिलास, रच्चत जँह जुगिनिकेलि रास८२
 जिततितहि मत्थ उडि परत जत्थ, तुंबा कि तरल अवधूत हत्थ ॥
 चढि गगन टोप चमकहिँ अनेक, तुटि जँगर जात तननंकि तेर्का८३।
 सयै गिरत भिन्न बाहुलै समेत, अहि पंच५फन कि कंचुक उँपेत ॥
 जिरहनविच कटि दग फदकि जाँहिँ, मानहुँ भखदासनै जालि माँहिँ
 कटि कहिगिरंत कहँ मुच्छ कंदै, रंगे मृगनाभि कि दोज२चंद ॥

१ पुनि २ दिल्ली में प्राप्त हुए (गये) ३ दिल्ली को लेने की रीति से ॥ ७८ ॥ जैसे अंधरे पर
 ४ सूर्य पहुँचे तैसे पहुँचे ५ उधर दिल्ली शहर से भी सेना आई ॥ ७९ ॥ मर-
 हठों को लूट में ६ असावधान (गाफिल) पाये और दोनों ओर से यवन
 ७ शत्रु ८ प्राप्त हुए ९ तरवारों की मार से घोर युद्ध हुआ और नगारे ब-
 तासे बजकर १० शब्द का विस्तार हुआ ॥ ८० ॥ ११ घोड़ों आदि की दौड़
 से नीची बैठकर भूमि धुजी १२ शेषनाग का मस्तक हठकर फटा १३ विना
 मस्तक के क्रियावान धड़ नाचते हैं ॥ ८१ ॥ १४ कापालिकों का वाद्य विशेष
 १५ योगिनियें रासक्रीड़ा करती हैं ॥ ८२ ॥ १६ चपल अवधूत के हाथ से तूँचा
 गिरै तैसे १७ कवचों के ऊपर तण्कार शब्द करके १८ तरवारें लूटती हैं ॥ ८३ ॥
 २० बाहुत्राय (दस्ताना) सहित १६ हाथ कटकर गिरते हैं सो मानों कांचली
 २१ सहित पांच फण के सर्प हैं २२ लोहे की जालीवाले टोपों में नेत्र निकस
 कर फदकने हैं सो मानों २३ धीमरों की जाल में से मछी जाती है ॥ ८४ ॥
 फर्श पर टेढ़ी मूछों के २४ समूह कट कर गिरते हैं सो मानों २५ कस्तूरी में
 रंगे हुए द्वितीया के चन्द्रमा हैं

नागोद कटि कहूँ कढत गत्त, मोचातरुतैं जिम गर्भ पत्त ॥ ८५ ॥
 कंकट बिदारि प्रविसत कटार, बिल बीच पन्नग कि मच्छ बार ॥
 खंजर कढि पंजर पार जात, सोनित सँन्यो सुअति छवि सुहात ८६
 मानहुँ गँवात्त रंजदिन दिखान, कर पँटु क्रिया कि जावक चुवान
 दिपि गुरज मत्थ पारत दरार, कीर कि तरबूजन मुष्टि मार ॥ ८७ ॥
 चलै असिन होत गज कुंभ चीर, जगदीस भँत जुत कि कैरीर ॥
 सोनित तिरात धमनिनै समूह, जल अँरुन जानि अलंगई जूइ ८८
 सरधा सम छुटत बिसिख ब्रौत, मधु जाल छत मँथन बनात ॥
 खिचिजात सरसैन करन कानि, जमराज लपनै जमुहाँत जानि ८९
 मिलिजात कोटि लस्तकै मचकि, सुकुमार नारि लंक कि लचकि ॥
 तुरंगीर तुरि उडुत अमाप, केकीनैके कि चंदक कलाप ॥ ९० ॥

१ पेट का कवच (पेटी) कटकर शरीर निकला है सो मानों
 २ केश के घृच से भीतर का पत्ता निकलता है ॥ ८२ ॥ ३ कवच
 फाड़ कर कटार प्रवेश करते हैं सो मानों बिल में सर्प घुसता है किना ४
 पानी में मच्छ घुसता है ५ रुधिर से ७ भीगा हुआ खंजर (छुरीविशेष) ४
 अस्थिपंजर (धड़) के पार जाता है सो ऐसी अत्यन्त शोभा देता है ॥ ८६ ॥
 जैसे कि १० क्रियाचतुर नायिका अपना ९ रजस्वला होना दिखाने के लिये
 जावक (लाल रंग विशेष) से ११ टपकता हुआ हाथ ८ भरोखे से दिखाती
 है अर्थात् अपने जार को जावक का टपकता हुआ हाथ दिखाकर व्यंग्य से
 अपना रजस्वला होने का संकेत करके उस जार के आने का निषेध करती
 (रोकती) है ॥ ८७ ॥ १२ चपल तरवारों से हाथियों के कुभस्थलों की चीरं हो-
 ती हैं सो मानों जगदीश के १३ भात सहित १४ कलश की चीरं होती हैं
 १५ नाड़ियों (नसों) का समूह रक्त में तिरता है सो मानों १६ लाल पानी में
 १७ पानी के सपों का समूह तिरता है ॥ ८८ ॥ १८ मधुमक्खियों के समान
 तीरों के १९ समूह छूटते हैं सो मानों २० मस्तकों को सुवाल के छाते बनाते हैं
 २१ घनुष कानों पर्यन्त खिचता है सो मानों यमराज २२ मुख से २३ जंभाई
 (उबासी) लेता है ॥ ८९ ॥ घनुष की २४ सूठ मचक कर दोनों गोशे (नोकें)
 मिलजाती हैं सो मानों सुकुमार स्त्री की कमर लचकती है २५ भाथा तूटकर
 अमाप बाण उड़ते हैं सो मानों कितने ही २६ मयूरों के चंद्रों (चंद्रवों) के समूह

संधत सर धनु बिच यों सुहात, दह्या कि काल आनन दिखात ॥
 खग भरत फूल धारन खनंकि, तुटिपरत चाप चिँल्लन तनंकि ९१
 ढालनपर पय कटि ठहरि जात, कच्छप पर मंदर सम सुहात ॥
 छलिजात रुहिर घायन छछकि, छुटिजात प्रान कहूँ लोह छकि ९२
 जिन बंदन इकनारिन उछिष्ट, चुंबत शृगाल तिन उदित इष्ट ॥
 मनि कनक मंच निंदक अमान, ते सूर धूर सर्जों सयान ॥ ९३ ॥
 बहु बीर बैठि अछरि बिमान, तांडव उपेत सुनि गान तान ॥
 चित मुँदित डारि गलबाँह चाहि, रैव कबंध लरत पिकखत सिराहि ९४
 हिय तिरत अंत्र जुत निकसि हाल, मानहुँ सनाल लोहित मृनाल
 उर गिद्ध बैपा हित धसत आय, बैठे गृही कि बलभी बनाय ॥ ९५ ॥
 भट गिरत पाय अटकत रैकाव, घुम्मत घने कि उदत सराव ॥
 तुटिजात तंग प्रजरत पलान, कटि परत बाँजि गैल प्रोथें कान ॥ ९६ ॥
 कटिजात कुंते पखर बिदारि, बढिजात रुहिर जिमंजंन बारि ॥

उदते हैं ॥ ९० ॥ धनुष के बीच में संधान किया हुआ १ बाण ऐसी शोभा
 देता है मानों यमराज के २ मुख में दाढ़ दीखती है, तरवारों की धारों पर धारें
 खणक कर अग्नि कण उडते हैं ३ प्रत्यंचा तणक कर धनुष तूटते हैं ॥ ९१ ॥
 कितने ही चरण कट कर ढालों के ऊपर ठहर जाते हैं सो कमठपर ४ मंदरा-
 चल के समान शोभा देते हैं ५ रुधिर ॥ ९२ ॥ जिनके ६ मुख ७ एक
 स्त्री के ८ उच्छिष्ट थे उनके मुख ९ भाग्य उदय होने से गीदड़ चाटते हैं "यह
 इष्ट उदय होना शृगाल का विशेषण है" मणियों से जड़े हुए सुवर्ण के मंथों
 (पलंगों) की निन्दा करनेवाले थे वे वीर मान रहित १० धूल की शय्या पर
 सोते हैं ॥ ९३ ॥ ११ नृत्य सहित १२ प्रसन्नचित्त से १३ अपने धड़ को लड़ता हुआ देख
 कर प्रशंसा करते हैं ॥ ९४ ॥ तुरत का निकला हुआ हृदय अंत सहित गिरता है
 सो मानों नाल सहित १४ लाल कमल तिरता है १५ चरघी के लिये ग्रीध पेट में घुसते
 हैं सो मानों गृहस्थी १६ सबसे ऊपर का मकान बनाकर बैठा है "बलभी कूटागारे"
 इति शब्दार्थचिंतामणिः ॥ ९५ ॥ तिरते हुए धारों के चरण १७ पागड़ों में अटक जाते
 हैं सो मानों मंदिरों में धर्मों के ऊपर १८ आवकों (सरावणियों) के देवता ऊँचे
 झुकते हैं १९ जलते हैं २० घोड़ों के २१ गले २२ फुरणे और कान गिरते हैं
 ॥ ९६ ॥ पाखों को फोड़कर २३ भाले निकल जाते हैं और २४ जैसे फूहारे से पानी

कटि असिन केतु उद्धत अकास, मानहुँ मयूर गन भद्र मास ॥९७॥
 इम परत खगग बहु भटन अंग, भ्रमत कि पटारै तरु पर भुजंग ॥
 इम मचिय घोर आहव अनूप, बहु कटि दक्खिन भट हुव विरूप ॥९८॥
 उडि चलिय अंगि बढि ओर ओर, जमुना जल सुक्किय ताप जोर ॥
 संकुलि प मच्छ खल भलिसु मार, पन्नग कि आहिँ तुंडिक टिपार ॥९९॥
 यँहँ भयउ दैव दिल्लीस ओर, घन कटिय जंग मरदृष्ट घोर ॥

लूटहु समस्त लिन्नी छुराय, दक्खिन बिहाल किय प्रबल दाय ॥१००॥
 श्रियमंत भीत गति मति बिसारि, भज्यो सु क्योंनँ बंभन भिखारि
 इहिँ भजत भज्यो दक्खिन अनीकै, घन विकल कदा कहिये घर्नाक ॥१०१॥
 मूरखन मिच्चु सोधयो न भँत्थ, बनि काँदिसाँकँ भरि जियन बत्थ ।
 उदाव ताँव बिम्बल अनेक, खुचि मरिय भानुजौ गलनि केक ॥१०२॥

॥ दोहा ॥

मनतँ मूढ जुदे नहे, जियन मरन कँत जानि ॥

सँघन पंक गडि मरिय सव, अँककसुता बिच आनि ॥१०३॥

निकलै तैसे रुधिर निकलता है ? तरवारों से उढ़कर ध्वजा आकाश में
 उढ़ती है सो मानों भाद्रपद मास में मयूर उढ़ते हैं ॥ ६७ ॥ वीरों के शरीरों
 पर तरवारें ऐसी पड़ती हैं जैसे २ चन्दन के वृक्ष पर सर्प पड़े ३ उपमा रहित
 युद्ध ॥ ९८ ॥ ४ अग्नि ५ भरगये ७ मानों दिपारों में सर्पों के फण ६ हैं
 ॥ ९९ ॥ ८ प्रबल रीति से ॥ १०० ॥ ९ भय से युद्ध की गति और बुद्धि को
 १० भूलकर भागा सो ११ क्यों नहीं भागे १२ भिक्षा माँगने वाला ब्राह्मण
 था अर्थात् उसका भगना पदार्थ था १३ सेना ॥ १०१ ॥ उन मूर्खों ने यह नहीं
 सोचा कि मृत्यु तो १४ मस्तक पर है जिससे भगकर कहाँ जावेंगे परन्तु १५
 भयद्रुत होकर भागे (भयभीत होकर; अथवा क्या करूँ, कहाँ जाऊँ इस प्रकार
 घबराकर भागे) और १६ जीने को बाध (भुजों) में भरा १७ उस भाग-
 ने में अनेक विन्हल होकर कितने ही १८ जमुना नदी की अलख में (दल
 दल में) १९ गडकर मरगये ॥ १०२ ॥ वे मूर्ख मन से जुदे नहीं थे अर्थात् मन
 साथ चलने वाले थे और मन का धर्म डरने का है २० मरने जीने को मृत्यु
 जानकर (वेदान्त के मत से मरना जीना स्वप्नवत् है) सब २२ जमुना नदी
 के २१ गहरे कीचड़ में आकर गड मरे ॥ १०३ ॥ हे बुद्धिमानों! सुनो, यह

मनोहरम् ॥

सुनोरे सपाने त्रिशुननको तमासो जाहि,
वस्तुते विचारें ज्ञान ज्वलन प्रचारें हैं ॥
सिद्धको न साधन कहाँ मैं कोन सीति वहै,
कारनन काज ओ दुहूँरमैं धुर धारें हैं ॥
वाहि जे न जानैं याहि सत्य करि मानैं यातैं,
भूठे सुख दुख मानि वेद्यकों बिसारें हैं ॥
जानैं अनजानैं की परिच्छा पारबेकी जानि,
डारिवेकी ठोर धीर बीर देह डारें हैं ॥ १०४ ॥

॥ षट्पात् ॥

इम सेनहिं मरवाय भेरकि भजिजग द्विज कैतर ॥
अवसेसन सजि सन्थ सुरिग प्रतिमुख भय माछर ॥

तर १ वर २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

पिषिख सिंहकों स्पार पटकि उच्चार पलायउ ॥

किखिसौं गव्वन काज अनखि कोटापर आयउ ॥

चालीस ४० दिवस तोपन तगकि लरिरुप्पय दसलक्ख १०००००० लिप

संसार सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण का तमाशा है जिसको वेदान्त से विचारें तो ज्ञान की अग्नि इस को जलाता है, और सिद्ध जो परमेश्वर है उसका कोई साधन नहीं है अर्थात् जैसे इस जगत् का साधन तीनों गुण है जिस को मैं कैसे कहूँ. इस में गीता का भी प्रमाण है कि "यो बुद्धेः परतस्तु सः" वह किसी का नतो कारण है और न कार्य है और इन दोनों की धुर वो ही धारण करता है उस परमात्मा को जो नहीं जानते हैं वे इस संसार को सत्य मानते हैं इस कारण भूठे सुख और दुःख को मानकर जानने योग्य (परमात्मा) को भूलते हैं उस परमात्मा को जानने और नहीं जानने की परीक्षा करने की पहिचान यही है कि जहाँ शरीर छालने का स्थान होता है वहीं भीर और वीर डालते हैं ॥ १०४ ॥ १ चमक कर २ कायर ब्राह्मण भागा ३ पाकी के लोगों का साथ ४ पीछा मुड़ा ५ बिछा डालकर भागा ("लींछ पटक कर भागा" यह राजपुताना की खोकोक्ति है) और १ खोमड़ी (लुगती) से ७ गर्व करने के काम पर क्रोध करके

डरपात अल्प सत्वर दुमति द्विज वह दक्खिन संचरिये ॥ १०५ ॥
इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीप-
तिबुधसिंहचरित्रे उदयपुरागतसिताराधीशच्छत्रपतिसाहूमन्त्रिबाजे-
रावपेसवारूपस्य महाराणासनाधस्तादुपवेशनश्चाजेरायस्य महा-
राणादण्डादान २ भभोलावग्रामान्तिकबाजेरायजयसिंहमिलनो-
भयैकासनाधिवेशन ३ ज्ञातदिल्लीयुद्धसमयाभावजयसिंहमन्त्रबाजे-
रायपुनर्दक्षिणदेशगमन ४ श्रीमन्तपेसवामिलनहेतुपरिज्ञातयवनेन्द्रा-
प्रसादजयसिंहस्य दिल्ली प्रति ससैन्यबाजेरायपुनराकारणादिल्लीव-
हिःप्रदेशसम्वत्सराङ्गयवनजयमहाराष्ट्रपराजयकथन ६ अवशिष्टसै-
न्यसहितप्रत्यावृत्तदण्डितकोटामहाराजबाजेरावस्यदक्षिणगमनवर्ण-
नमेकचत्वारिंशो मयूखः ॥ ४१ ॥

आदित एकोनाशीत्यधिकद्विशततमः ॥ २७९ ॥

॥ षट्पात् ॥

इत दिल्लीस वजीर जित्ति संगरै मरहठ्ठन ॥

१ छोड़ों को शीघ्र डराता हुआ वह दुर्मति २ गया ॥ १०४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में बुन्दी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में, सितारा के राजा छत्रपति साहू के मन्त्रि बाजेराव पेसवा का उदयपुर आकर महाराणा की गद्दी नीचे बैठना १ महाराणा से बाजेराव का दंड लेना २ भभोलाव नामक ग्राम के समीप महाराणा जयसिंह से मिलना और दोनों का एक गद्दी पर बैठना ३ दिल्ली से युद्ध करने का समय नहीं जान कर जयसिंह की सलाह से बाजेराव का पीछा दक्षिण में जाना ४ श्रीमन्त बाजेराव पेसवा से मिलन के कारण बादशाह को अपने पर अप्रसन्न जानकर राजा जयसिंह का बाजेराव पेसवा को सेना सहित फिर दिल्ली पर बुलाना ५ दिल्ली शहर से बाहिर युद्ध हाकर यवनों का जय और मरहठों का पराजय होना ६ बची हुई सेना से पीछे आने बाजेराव का कोटा के महाराज से दंड लेकर दक्षिण में जान के वर्णन का इकतालीसवाँ ४१ मयूख हुआ और आदि से दो सौ उनासी २०६ मयूख हुए ॥
३ युद्ध में

बादशाहकी सभामें कलोजखांकी हँसी] ससेमराशि-दिषत्वारिंशमश्रुत्वा (१२५१)

हरखित गयउ हजूर साह बहु दियउ रीझ रन ॥
इक इक प्रति आदोब उचित सब लिय सलाम करि ॥
दूजे दिवस कलोजखान हुव त्यों तँहँ हाजरि ॥
याकोहु दैत बैभव अतुल लिय सब पृथक सलाम नैत ॥
हसि ताहि खानदोराँ कहिय बुद्धा बंदर बैर नचत ॥ १ ॥
॥ दोहा ॥

सुनि साह रु परिखद संकल, मुसकिँय आसँव मत्त ॥
अँट्टाट्टहु कतिकन करिय, त्रँपा न रक्खिय तैत्त ॥ २ ॥
खानकलोज नबाब यह, जथा यँवनी जीमँ ॥
जिहिँ अँगैँ गजसिंह जुत, भखे दँलावर भीमँ ॥ ३ ॥
जिहिँ अँक्खिय यह बुद्धि जो, रहिहँ साह तिहँार ॥
बेगहि बंदर नच्चिहँ, पुर दिल्लिय प्राकारँ ॥ ४ ॥
यह सुनि साह सिराहि कछु, पच्छो पारिय रोस ॥
पै पापिनँ बिगरयो समय, सो न लखँ अपसोसँ ॥
मोजदीनसौँ इक्से, भये पंच५ दिल्लोस ॥
मत्त कापिसायनँ मुदित, हिय इच्छित रँतही सँ ॥ ६ ॥

१ अदब के साथ (सलाम) २ दिया. तुलना रहित (बहुत) बैभव ३ जुदा जुदा ४ झुककर सलाम करके ५ श्रेष्ठ (अच्छा) नाचता है ॥ १ ॥ ६ सब सभा ७ मुसकराये (मंद हास्य से हसे) ८ मद्य में मस्त ९ कितनों ने उच्च स्वर से भा हास्य किया १० लज्जा ११ तहाँ ॥ २ ॥ १२ जिस प्रकार यावनी (फारसी) भाषा में १३ जीम अच्छर होवे तिस प्रकार अर्थात् बड़े पेटवाला (फारसी में जीम अच्छर ऐसा होता है) जिसने पहिले नरवर के राजा और कोटा के महाराव गजसिंह सहित १४ दिलावरखाँ और १५ कोटा के महाराव भीमसिंह को मारे थे ॥ ३ ॥ १६ जिसने कहा कि १७ तेरा बादशाह इस बुद्धि से रहैगा तो दिल्ली नगर के १८ कोट पर शीघ्र ही बंदर नचेंगे ॥ ४ ॥ १९ उन पापियों का २० चिन्ता है ॥ ५ ॥ २१ मद्य में मस्त होकर प्रसन्न रहते थे २२ वे (बादशाह) हृदय में मैथुन ही चाहते थे. अथवा 'हीम' शब्द यावनी भाषा के 'हिर्म' का अपभ्रंश है तो इसका अर्थ चाहना है सो मैथुन की अधिकता यताने के अर्थ भी सार्थ में एकार्थवाची दो शब्द दिये हैं ॥ ६ ॥

मनोहरम् ॥

गानमें गडे जे बालकानमें बडे जे बाह-
नीके बहकायें तें धुमंडन घनै लगे ॥
रघुपतकी रमनि रजीली जो निहारै ताहि,
बलन बुलाय ख्यात व्है व्है चाखनै लगे ॥
कथित कुरानको बिसारि बैठे बालिस,
भनै जो रीतिकी तो चुप झूठ भाखनै लगे ॥
दिल्लीके घराने उलटी करि डलाइसों ब,
बुलिके ठिकाने पंडे पायु राखनै लगे ॥ ७ ॥

दोहा-जुमों महज्जत जात नन, सुरा मत्त सठ साह ॥

रहैं सुधि न दिन रीति की, लहैं सुरत रस लाह ॥ ८ ॥

इक दिन काजिय दिय अरज, उचित महज्जत आन ॥

कोऊ बिधि बैठी सु चित, जैथ बिचारिय जान ॥ ९ ॥

षट्पात् ॥

तहिने रचि आपाने अधिक आसव बनि उद्धत ॥

संगहि लै संडे गन मत्त सब पत्त महज्जत ॥

बिरचि बिरचि गलबाँह साह जुत रबहि नमै सब ॥

यह को रीति अपुब्ब तरकि जंपिय काजी तब ॥

सुनि हसि रु एह अक्खिय सबन रे नहिं तू जानत रुचित ॥

१ बालकों (मूखों) में २ मद्य के बहकाये हुए ३ कुगन का कहना (उपदेश भूल गये) ४ मूखों
५ मूख कहने लगे कि चुप रहो ६ अब आप परमेश्वर की आज्ञा से विरुद्ध करके
७ वे योनि के स्थान में ८ नपुंसकों की ९ गुदा को रखने लगे अर्थात् स्त्रियों के
स्थान में नाजरो से गुदा मैथुन करने लगे ॥ ७ ॥ १० शुक वार के दिन; अथवा
बड़ी महज्जत में ११ मद्य में मत्त १२ दिन रात्रि की ॥ ८ ॥ १३ जहाँ (मसजिद
में) जाना विचारा ॥ ९ ॥ १४ उस दिन १५ पानगोष्ठी (मनवाला) रचकर १६
नाजरो अथवा हीजड़ों के समूह को साथ लेकर मस्त होकर मसजिद में १७
गये १८ बादशाह सहित सय १९ खुदा को शुक वहाँ २० क्रोध करके काजि
ने कहा कि यह कौनसी २० अपूर्व रीति है २२ सुन्दर

[दिल्लि में अंधेर मंजियोंकी पलटापलटी] सप्तमराशि द्वाचत्वारिंशमयूख (३२५३)

सामूके जनन आसिक भिलन आदिरीति सुनियत उचित ॥ १० ॥

दोहा ॥

कार्जा तबहि कुरानकी, अपनैँ सिर दिय उठि ॥

आयउ आलैँ सबन सह, रंचक साहहु रँहि ॥ ११ ॥

नीति रहित दिल्लिय नैँयर, इम मंजिग अंधेर ॥

कोऊ सुनत न काहुकी, घर घर हा रँव घेर ॥ १२ ॥

कटुर्क खानदोराँ कहिय, साह धुनिय हसि सीस ॥

यातैँ खानकलीज अब, रचत दुहुँनपर सीस ॥ १३ ॥

तिहिँ वजीर पलटाय लिय, खानकमरदी तत्त ॥

बहुरि सहादतखान प्रति, पठयो पूरव पैँत ॥ १४ ॥

खानसहादत हो यहै, दुखर पूरव देस ॥

हाजरि सूबा च्यारि४है, पूरवके जिहिँ पेसैँ ॥ १५ ॥

ता प्रति खानकलीजके, पत्ते सैँत्वर पत्त ॥

इहाँ समय कछु ओरभो, आवहु कोउ न अँत ॥ १६ ॥

॥ सोरठा ॥

लिपउ वजीर मिलाय, अप्पन तीन३हिँ इक्कहँ ॥

सेन सम्हारहु आय, इनहिँ खानदोरहिँ सहज ॥ १७ ॥

रहँ निरंकुस होय, पटकि जोर कछु साह पर ॥

सेनापति तुम सोय, हम वजीर अब इक्क हुव ॥ १८ ॥

॥ पट्टपात् ॥

हम तुम सम्मलि हँनहिँ खानदोराँ कपटी खल ॥

तब सेनापति तुमहिँ साह करिहै गिनि सबबल ॥

?मासूक लोगों से आशिकों का मिलना (प्रीति करनेवाले को आशक और जिस पर प्रीति की जावे उसको फारसी में मासूक कहते हैं) २५०॥ ३४४ मे४ क्रोध करके ॥ ११ ॥ ४५५ नगर ४५५ चवा (हुआ) ७ हाहाकार शब्द ॥ १२ ॥ ८ कटुए बचन ९ कलीजखाँ ॥ ११ ॥ १० कमरदीखाँ को ११ पत्र ॥ १४ ॥ १२ जिसके आधीन ॥ १५ ॥ १३ शीघ्र पत्र गये १४ यहाँ ॥ १९ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ सामिल होकर मारेंगे

सु सुनि सहादतखान सेन सज्जित पूरब सन ॥
 लागि सेनापति लोभ आय दिलिय चहि अप्पन ॥
 अठ सत ८०० तोप जिहि बसि अतुल दगतवेर कांसन दहत ॥
 लहि एह हेतु ताकैहँ खलक कैहर भाड़भुंजक कहत ॥ १९ ॥
 ॥ दोहा ॥

आय सहादतखान बह, मिलि कलीज सह मोद ॥
 इक वजीर रु अप्प व्है, विरच्यो कपट बिनोद ॥ २० ॥
 ॥ षट्पात् ॥

नादरसाह सु नाम तपत ईरान जवन इत ॥
 प्रबल सबहि प्रत्यंत जाहि मन्नत जित ही तित ॥
 गाजुद्दीज कलीज भाड़भुंजक जुत भाये ॥
 बुल्लन नादरसाह पत ईरान पठाये ॥
 आवहु निसंक सुरतान इत तिय दिलिय तुमकाँ चहत ॥
 सम्मुह चलाक कोउन सुभट मचत दंद दिन दिन महत २१
 ॥ पद्यतिका ॥

यह सुनिय बत पुर इस्पहान, अति बढिय सोर जैनपद इरान ॥
 प्रत्यंत मुख्य बुलवाय पंच, पहुँ रचिय साह नादर प्रपंच ॥ २२ ॥
 तामाचकुली नामक वजीर, बलि मिलिय अलीनिसुरत प्रवीर ॥
 सम्मन पुनि कम्मन कुतब सूर, गाजी हुसैन हाजी गरूर ॥ २३ ॥
 रुस्तम सलोम सेरन रहीम, कालन कमाल रोसन करीम ॥
 मारूफ मलिकमहमूद मीर, आतमतअली सय्यद सधीर ॥ २४ ॥

१ इस कारण से उसको २ संसार १ जुलम करनेवाला भड़भुंज्या कहता है ॥ १९ ॥ २० ॥ ४ म्लेच्छ देशों में (इस ग्रन्थ में आर्यावर्त के सिवाय सब देशों को म्लेच्छ देश माने हैं और अन्य आर्य ग्रंथों का भी यही मत है) ५ नादिरशाह को बुलाने के लिये ६ पत्र ७ हे सुलतान (बादशाह) ८ उपद्रव वा युद्ध ॥ २१ ॥ ९ ईरान देश में १० म्लेच्छ देश के ११ उस प्रभु नादिरशाह ने ॥ २२ ॥ १३ पुनि १३ निसुरतअली ॥ २१ ॥ २४ ॥

नादिरशाह को दिल्ली पर लाना] सप्तमराशि-दासत्वारिंशमयूख (३२४५)

दाऊद सेख इसहाकदीन, मँहँदी रु मुहुम्मद मौनदीन ॥

कदीन १ नदीन २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

अहमद नियाज मसुऊद आय, सादी कुरेस मीरन सुभाय ॥२५॥

गालिव हवीब लानन गुमान, पीरोज फतैनसियब पठान ॥

आरास इसन यूसफअलीहु, दरियावखान सुनि मोजदीहु ॥ २६ ॥

याकुबअली रु अम्मन इमाम, नाँसेर असद पुनि नूर नाम ॥

इत्यादि साह भट वर अत्रस्त, सैह सचिव किन्न इकत समस्त २७

सब भटन साह नादर सुभाय, दिय तब कलीज कैंगर दिखाय ॥

कहि अब न जोर मुगलन निकेत, दिल्लिय कटाच्छ मैम ओर देत २८

अवरंगजेब मिरजा मरंत, धर हिंदु धव न धारक धरंत ॥

सचिवन नबाब भट सानुकूल, मिटि गय रँसूल मजहब समूल २९

गायक हन्पाँहि आलम अजान, पुनि मोजदीन अति मद्य पान ॥

मिलि बहुरि हिंदु सय्यद बिमंद, फेरूक गहि मारयो पासि फंद ३०

मुगलेस दोष २ पुनि साल मध्य, जाहलन इने जे इन अबदय ॥

सय्यद अंधीन पुनि तप नसाय, मिरजा समुहुम्मद पष्ट पाय ॥३१॥

सय्येदहिँ मारि पुनि लोभ सीर, तूरानि मुहुम्मद भो वजीर ॥

जासौँ इक बंभेन पटकि जोर, हिंदुन कर बोखो नद हिलोर ३२

जिततित गिनीम दब्बत जमीन, कटकनै बढि रेवाँ अमल कीन ॥

॥ १५ ॥ ॥ २६ ॥ १ निर्भय १ वजीर सहित ॥ २७ ॥ ३ कलीजखान का पत्र ४

मुगलों के घर में ९ मेरी तरफ नजारे मारती है ॥ २८ ॥ ५ हिंदुस्थान की भूमि

वहीं धारक करने योग्य पति को धारती है; अथवा वह धरा किसी हिंदु को

पति बनाना चाहती है ७ पैगंबर का नाम है ॥ २९ ॥ ८ कलावंत ने ९ बहुत

मूर्ख १० फुरुकशियर बादशाह को, पासी का फंद डाल कर ॥ ३० ॥ ११

मूर्खों ने मार डाले १२ इनसे नहीं मारे जाने योग्य थे; अथवा वे बादशाह को

मारने वाले इन पिछलों से नहीं मारे गये ॥ ३१ ॥ १३ हुसन अली नामक

सय्यद को मारकर १४ दिया महादुर नामक ब्राह्मण ने ॥ ३२ ॥ १५ फौजों

ने १६ नर्मदा नदी तक

अब तत्थ कमरदी हुब वजीर, सम्मलि कलीज नय विन सर्गिर ३३
 रक्खै न खबरि सठ रति दीह, लुपियि सम्हारि नय लज्ज लाह
 चाकर चहंत मालिक मिटान, हठि इच्छत मालिक अनुगं हान ३४
 मिरजा सु मुहुम्मद तिन समेत, जा कहत जाहिकी मन्नि लेत ॥
 नहिं लाखत अंध किम बैद रु नेक, कहिये प्रमाद ऐसे कितेक ३५
 गनिकान गुंमर आसिक अनंत, हीसैन जिनां सु रत हंत हंत ॥
 अधिकार गायकन दिय अनीति, पैटु नरनसौं बं नहिं नेक प्रीति ३६
 यावनीभाषा ॥

मस्तदिलौ अजामै शराब दिल्ली च्यकुनद वस् बे रुवाब ॥
 सुहवत बदाँ वदाना दिलौन ताजीम तहम्मुल् मुक्खिलौन ३७
 गहदरुन गुजारदु शहर बाब शैताँश नबीनद रह सबाब ॥
 अफवाजि दखनु आमद बजोर बुजराय कलौ गरदाद कोर ३८
 किशु मुल्कक सारापासबाँन मरदमू बजमानेदर अमान ॥
 इनूसाफ अदलरफ्तह बज्योर अजखासु आम आमद बशोर ३९
 प्रायोदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

१ विना नीति का बदमाश ॥ ३३ ॥ २ चाकर का मारना ॥ ३४ ॥ ३ बुरा
 ॥ ३५ ॥ ४ घमंड ५ हृदय (दिल) से ६ मैथुन में ७ प्रीति युक्त है सो खेद का
 बात है ८ कलावंतों को ९ चतुर मनुष्यों से १० अब ॥ ३६ ॥

शराब (मद्य) के प्यालों से दिल मस्त है, दिल्ली क्या करे बहुत बेरोब है, बुरे
 लोगों की सोबत (संगति) अकलमंदों (बुद्धिमानों) के साथ है, भले मनुष्य
 भी उस बुरी सोबत का आदर करते हैं और उस सोबत को सहन करते हैं
 ॥ ३७ ॥ शैतान जो नकी का रस्ता नहीं देखता है वह शहर के दरवाजे को
 नहीं छोड़ता है दक्षिण (मरहटों) की सेना (फौजें) जोर में आ गई हैं और बड़े
 बड़े वजीर अंधे होगये हैं ॥ ३८ ॥ मुल्क का और मनुष्यों का कोई रखवाला
 (रक्षा करनेवाला) नहीं है और जमाने में कोई अमन (चैन) में नहीं है न्याय
 जुल्म से जाता रहा है "यहां अदल और इनसाफ, दोनों एकार्थवाची शब्द
 न्याय चलेजाने की अधिकता दिखाने के अर्थ लिखे हैं" और बड़े बड़े
 सब पुकार (आहि आहि) कर रहे हैं ॥ ३९ ॥

नादिरशाहको ईरानसे बुलाना] सप्तमराशि-दाचत्वारिंशमयूग (३२५७)

गोजा निझाज कलमान रैत, मैहगीन संग जड़ सैतत मत्त ॥
रेवा रुअटक बिच पृथुल राज, सब नैय बिहीन बिगरत समाज ॥४०॥
मालव लिय दक्खिन दलन आय, दिल्लीलग लुट्टिय दुसह दाय ॥
बिनुचेत मुगल वासर बितात, दल सजहु वहाँ न रोधक दिखात ४१
तामाचकुली यह सुनि वजीर, बुलिय सिराहि भुज ठोकि बीर ॥
जुलिकरनसिकंदर अग्य जाय, जित्तिय जमीन हिंदुनहराय ॥४२॥
तैमूर बहुरि गोरी पठान, हँथन सब जित्तिय हिंदवान ॥
बहु पुस्त पठानन रहिय राज, सो लिय बहोरि मुगलन सैमाज ४३
अग्य गुमाय दिल्लीय अनीति, भज्ज्यो जु हमायौ मुगल भीति ॥
आयो सु इहाँ पुग इस्पहान, सुरतान मदति दिन्ना भैमान ॥ ४४ ॥
ईरान कटकै तब जाय संग, लै दिपउ राज जुरि जाति जंग ॥
सुरतान हितुँ इम कैरन जोगि, दिल्ली सु हमायौ लिय बहोरि ४५
पुनि ता सुत अकबर पट्ट पाय, सो गिनत रहयो सिरपर सहाय ॥
ताकै सुत सुतके सुत बहोरि, अवरंग पट्ट लिय जंग जोरि ॥ ४६ ॥
ताकैहु तैनय अकबर सनाय, आयो सु सरन अत्थहि अधार्म ॥
पुनि मरिय अत्थ कछु रोग पाय, दिल्लीहि न तो देते मिलाय ॥४७॥
यौ मुगल चाहि घरके गुलाम, दिन्ना सु रक्खि नहि सकत धाम
तो अब जमीन अप्पन सम्हारि, बंधहि प्रपंच आयस बिथारि ॥४८॥
गोगैन सकै न जो ग्वाल रक्खि, अवरहि तब अप्पत स्वामि अक्खि
कैखि गन सेकैदिक जो करै न, तो मूक्रिया पेटुन उचित दैना ॥४९॥

१ प्रीति नहीं है २ चंद्रमुखी नायिकाओं के साथ (फारसी में चन्द्रमाका नाम महर है)
३ निरंतर ४ नर्मदा ५ बड़ा ६ नीति बिना ॥४०॥ ७ दिन ८ रोकनेवाला वहाँ नहीं दीखता
॥४१॥ ८ आगे ॥ ४२ ॥ १० अपने हाथों से ११ पीढ़ियों तक १२ समूह ने ॥४३॥ १३
मान सहित ॥ ४४ ॥ १४ सेना ईरान के बादशाह १५ से १६ हाथ जोड़ कर ॥४५॥
॥ ४६ ॥ उस औरंगजेब का १७ पुत्र १८ बिना स्थान होकर १९ यहाँ ॥ ४७ ॥ २०
दिया हुआ घर नहीं रख सकते हैं तो २१ हुक्म फैलाकर ॥४८॥ २२ गज २३ के समूह को
२४ किसी अन्य को सौंपता है २५ कर्षक लोग सींचने आदि खेती का कार्य नहीं
करे तो २६ भूमि की क्रिया में चतुर होवे उन कास्तकारों को देना उचित है

जो रक्खि सकहिँ तुम हुकम जोरि, औ हैं तो दिखिय दै बहोरि ॥
तामाचकुली यह कहियँ*तत्थ, सुनिसजिय साहनादर ॥ समर्थ ५०

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायण सप्तमगाथा बुन्दीप-
तिबुधसिंहचरित्रे खानदोरांकटुवचनहेतुयवनेन्द्रविरुद्धकलीजखाँखा-
नदोरांमरणोपायकरण १ मयपयवनेन्द्रमुहुम्मदशाहनपुंसकासक्त्या
दिनिमित्तनिन्दनदिल्लीप्रतीरानाधीशनादरशाहद्वानार्थकलीजखाँ-
पत्रप्रेषण ३ उक्तपत्रपठननादरशाहदिल्लीसमाक्रमणसैन्यसज्जनव-
र्णनं द्वाचत्वारिंशो मयूखः ॥ ४२ ॥

आदितोऽर्शात्यधिकद्विशततमः ॥ २८० ॥

॥ निःशाणी ॥

नादरसाह इरानके अब सेन सजाया ॥

लगा घाय निसानपैँ घन जानि घुगया ॥

उर अठ्ठाँ दिकपालकैँ नैटसाल खुभाया ॥

हाक नकीबौँ हल्लकौँ दरकुंच सुनाया ॥ १ ॥

जंगी डैरु डमंकिया ब्रंबक ब्रहकाया ॥

ईरानी भट उप्फने वैपु सज्ज बनाया ॥

टोप बकतर जालिकैँ रन ओप रचाया ॥

वेवे तुंगस बंधिकैँ कटि खग कसाया ॥ २ ॥

॥ ४९ ॥ * तहां ॥ समर्थ ॥ ५० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में बुन्दी के भूषति
बुधसिंह के चरित्र में खानदोरां के कटुवचन के कारण कलीजखाँ का बादशा-
ह के विरुद्ध होकर खानदोरां को मरवाने का उपाय करना १ मयवी बादशा-
ह मुहुम्मद शाह की नपुंसकों से आशक्त होने आदि की निन्दा ईरान के बाद-
शाह नादरशाह को दिल्ली पर बुलाने का कलीजखाँ का पत्र भेजना ३ उक्त
पत्र को पढ़कर नादरशाह के दिल्ली पर सेना सजने के बर्खन का बियालीसवाँ
४२ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ अस्ती २८० मयूख हुए ॥
१ नगाँ पर २ नहीं निकलै ऐसा साल खुभा ॥ १ ॥ तासे ३ बजे ४ शरीर
को ५ जाली (पालंग) ६ दो दो भाषे ७ कसर पर खग बांधे ॥ २ ॥

बे बे चाप बहादुरों फटकारि बजाया ॥
 तहिने देस इरानमें नर बाजि नमाया ॥
 के अफगान पठानके भुगलान मिलाया ॥
 बलखी कज्जलबास के छाँहैं छक छाया ॥ ३ ॥
 अरबी रूसी उजबकी हरखाय दकाया ॥
 खवसी खूमी खूबदी रन सज्ज सुहाया ॥
 आतसबाजी अफससी क्रम बाहँ कहाया ॥
 आरमनी सीधी इतैं आदेन उम्हाया ॥ ४ ॥
 फ्रांस इतालिहु उफ्फने समसेर सजाया ॥
 खंधारी जारी खरे बहलीम बुलाया ॥
 ओलंदेजी उज्जले कर मुच्छ मिलाया ॥
 रन तिब्बत तातारके दातार दिखाया ॥ ५ ॥
 बीर बुखारी काबिसी रसवीर रचाया ॥
 कायेनी अरु कासिदी लरने ति लुभाया ॥
 यूनानी रु यहूदिया सब संग सिधाया ॥
 गालीली अरु गिंगिनी धर लैन धकाया ॥ ६ ॥
 जहाके अरबी जिते मक्का मन लाया ॥
 काजिदके अरु काबली सह सेन सजाया ॥
 तुरान रु हीरातके मीरात मिलाया ॥
 तिगरीके रु तिमोरके छक जोर छलाया ॥ ७ ॥
 तत्ते तुरक त्रिपोलिके कँचे कसिआया ॥
 हल्ले इम लकखौं जवन दिल्ली करि जाया ॥

१ उस दिन २ भुगल ३ बलख देश के (यहाँ से लेकर सात के बन्द तक कहीं देशों
 और कहीं शहरों के नामों से वहाँ बसनेवालों के नाम हैं) ॥ ३ ॥ ४ प्रशंसा के
 बचन ॥ ४ ॥ ५ इटलीवाले ॥ ५ ॥ ६ ते (बे) ॥ ६ ॥ ७ यवनों के तीर्थ स्थान का
 नाम है सीर सय्यद का खिनाब है ॥ ७ ॥ १ ताते (चपल) १० खल्ल ११ स्त्री बनाकर

पंच निमाजी पूत जे बल धर्म बढाया ॥
 केन मुहुम्मद निजनबी रब केन रटाया ॥ ८ ॥
 के बुल्ले इसहाक ओ दायूद दिपाया ॥
 के याकुब हि सरोनको अकखै बल आया ॥
 अम्मीनादबके अरम मतमें बतलाया ॥
 के योथम आहस कहैं सलमान सुहाया ॥ ९ ॥
 के बोपस ओवेदको चितैं चित लाया ॥
 सुलेमान मतके किते हिंदवान हकाया ॥
 इत्यादिक अति गैबके चढि मिच्छ चलाया ॥
 नादरसाह सनाहके विनु देह दिपाया ॥ १० ॥
 चोला काल वनातका सुहि टोप सुहाया ॥
 कर दोऊन २ कुगनलै मन नैन लगाया ॥
 बेसरके स्पंदन बडे चढि बेग चलाया ॥
 हाक नकीचौ हल्लकें दल डंकडगाया ॥ ११ ॥
 उध बिडौली अखिके बहु मिच्छ बढाया ॥
 केके अरबी फारसी बुल्लैं बिकसाया ॥
 पंचक ५ टंकी चाप जे रक्खैं भुज भाया,
 चक्खैं बक्कर एक १ जे मगरूर न माया ॥ १२ ॥
 ताँजी पक्खर सज्जके बाँजी बल छाया ॥
 ईरानी अरबी किते जर जीन सजाया ॥

१ दिन में पाँच बार निमाज पहने से २ पवित्र ३ कितने ही ४ खुदा को ॥८॥ ५ कितने ही (यहाँ से दस के छन्द तक यवनों के पैगंबरों के अधवा कहीं कहीं तीर्थ स्थानों के नाम हैं जिनके मजहब पाँच यवन चलते) थे ॥९॥ ६ गर्भ वाले ७ बिना कवच ॥ १० ॥ ८ खच्चों के ९ बडे स्थ पर १० नेना को मोक्ष दिलाकर चलाया ॥ ११ ॥ ११ बिल्ली जैसा आँख लेत्र) वाले १२ कितने ही १३ प्रसन्न होकर (फुल्लेहूए) १४ यह कमान का ताकत देखने का एक प्रकार का तोल है, औ धनुष का बल पराबधि अठारह टंक का माना जाता है ॥ १२ ॥ १५ नवीन १६ घोड़ों

नादिरशाह का पानीपथ आना] सप्तमराशि-त्रिचत्वारिंशमशूख (३२६१)

बैडे हथिन भुंडकै धुजदंड झुकाया ॥

नादरसाह उछाह कैं सहसेन चलाया ॥ १३ ॥

सत्यलोक लग यौं रु यौं पाताल पचाया ॥

फट्टा रीढक सेसका फनमाल फिराया ॥

हल्ली जुगिगाने संगही थेई थरकाया ॥

फाल फलंगी डाकिनी कर ताल बजाया ॥ १४ ॥

काबल सीमा व्है कंटक अब अटक निर्राया ॥

हाक परी हिंदवानमें सब सोक अघाया ॥

लंघि अटक पंजाबका थाँनाँ घन घाया ॥

सूबा नायक साहका सब फोरि मिलाया ॥ १५ ॥

आन चलाया अप्पनाँ मुगलान निटाया ॥

सूर इरानी संचरे मगरूर मचाया ॥

यौं नादर अति बेगमाँ दिल्ली सिर आया ॥

पानीपथ किरनालपै भंडालाँ झुकाया ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

सोरें मचिगें दिल्ली सहर, जोर इरानिन जानि ॥

साह मुहुम्मद अब सुनी, मद्यप सच्ची मानि ॥ १७ ॥

॥ सोरठा ॥

ईरानपै सुनि आत, सठ प्रसन्न सबही सचिव ॥

सोक न तदपि समात, इक खानदोराँ उदर ॥ १८ ॥

॥ पट्टपात् ॥

कूरम प्रति जयनेर खानदोराँ पठये दल ॥

१ मेना सहित ॥ १३ ॥ २ इधर ३ पीठ की हड्डी ४ छलांगें भर कर कूदी ॥ १४ ॥ ५ सेना ६ अटक नदी को समीप थी ७ तम्र हुए (अरगवे) ॥ १५ ॥ ८ भंड खड़े किये "हिंजल भाषा में अत्यन्त ऊँचा करने को झुकाना कहते हैं" ॥ १६ ॥ ९ हाक १० मची ॥ १७ ॥ ११ ईरान के पति को ॥ १८ ॥ १२ जयपुर १३ पत्र

तू दुद्धर कछवाह साह तोहीसौं सबदल ॥
 आवत दैल ईरान रचहु दिल्लिय सहाय रन ॥
 हम तुम इकत होय भुम्मि करिहैं बास भुगगन ॥
 मम सीस भार आयउ अमित सो तोभन अब उत्तरहिं ॥
 सिर धरि कुरान करियत संपथ जां उपकृत यह बीसरहिं ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

तेगीही यह बेरहै, आवहु सैदल उछाह ॥
 तोहि दुरग रनथंभ अत्र, रीझि समप्पहिं साह ॥ २० ॥
 इम अनेक कँगर लिखे, गाह चमूर्ति सूर ॥
 सच्चे करिकैं संपथ सो, कुम्म गिनैं नहिं कूर ॥ २१ ॥
 मैं आवत तुम साह जुत, बाहिर कग्हु मुकाम ॥
 यौं लिखि लिखि दैल मुकल, कूरम कैलुख दुकाम ॥ २२ ॥

॥ पट्टात ॥

इम जवनन बिस्वासदै रु कूरम छज किन्नौ ॥
 अंतैहपुर निज अखिल उदयपुर मुकलि दिन्नौ ॥
 सावधान सह सत्थ गहो जैपुग कूरम पति ॥
 यह अचिज्ज लिखि आत हौं रु मरन न किन्ना मति ॥
 अवग्हु नगेस हिंदुव अखिल यह जयसिंह उदैत लिखि ॥
 कोऊ न गयउ दिल्लिय कैलह प्रवल कैल भाविय परखि ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

टारो इम कूरम किंतव, इत दिल्लीस अनार्क ॥
 सबल खानदोगाँ सजिय, सम्मुह चहत मर्माकै ॥ २४ ॥

१ सेना २ प्रम या रहित (अमाप) ३ तुलसि हां ४ सौगन ५ उपकार ॥ १९ ॥ ६ सेना सहित ॥ २० ॥ ७ पत्र ८ बादशाह के सेनापति के ९ अपथ (सौगन) ॥ २१ ॥ ११ पाप के बुरे कार्य से १० पत्र भेज ॥ २२ ॥ अपने १३ सब १२ जनाने को १४ आश्चर्य १५ लिखे हुए पत्र आते थे सो श्री १६ वृत्तान्त देख कर १७ युद्ध में १८ समय ॥ २१ ॥ १९ छली २० सेना २१ युद्ध में चाहता

बादशाहका नादिरशाहके सामने चढ़ना]सप्तमराशि-त्रिचत्वारिंशमयूख (३२६३)

इहिं अंतर परतापे वह, जेठो सालाम नंद ॥

दिल्ली आय रु दासभो, छली जवनपति छंदे ॥ २५ ॥

पानीपथ आयो समुक्ति, संडेन तजि अब साह ॥

सेनापतिके कथित सैम, रचिय कुंच रन राह ॥ २६ ॥

तोटकम् ॥

कटकेस चंमू सब सज्ज की, प्रातर्हार नकीवन हाक परी ॥

बल पाय निसानन घाय बजे, लखि जे घन भद्व नद लजे ॥ २७ ॥

खुरसानन फूल कूपान खिगे, चमकात चिनंगिन बाढ चिरे ॥

फननंकि हुतामने धारभरी, घननंकि बजी गज घंट धैरी ॥ २८ ॥

पखरैत पटैत घने उमहे, कमनैत कटैत न जात कहे ॥

बहु बाजिय ताजिय सज्ज बने, जैव जान मनो पवमाने जने ॥ २९ ॥

ककचैछद कन्न मनो कलिका, कच याल लखै भुजगावलिका ॥

सहनाईमुखे जिन प्रोथे सदा, पैय लालै मनो गनिका प्रेमदा ॥ ३० ॥

कैलि जितिन कंधै बंक कसै, कुलटा कि क्रियापटु लंक कसै

हुआ ॥ २४ ॥ १ इमा समय के भीतर २ प्रतापनिह ३ अधिकार

में ॥ २५ ॥ ४ नपुंसकों को छोड़कर ५ कहने से ॥ २६ ॥ इधर १ सेनापति

(खानदोरो) ने ७ सेना मज्जित की जहां ८ द्वारपालों की और छड़ीदारों

की हाक पड़ी, सेना को प्राप्त होकर; अथवा यत पूर्वक ९ नगरों पर घाई

बजी जिसको देखकर बादशह के सेव का शब्द लज्जित हुआ ॥ २७ ॥ खुरमायों

पर १० तारवारों के अग्निरूप उड़े और उन चिनगरियों के चमकते हुए बाढ

चिरे और झण्डार करती हुई धागाओं से ११ अग्नि झड़ी और हाथियों की

घंटा रुक १२ बाइयां बजी ॥ २८ ॥ बहुत से पाखोंवाले और १३ पटा फेंकनेवाले

वत्साह युक्त हुए १४ वनुष धारण करनेवाले और १५ तरवारों से काट करने

वाले कहे नहीं जा सकते १६ ताजिक देश के बहुत घाड़े सज्जित हुए जो १७ वेग

में मानों १८ पवन के पुत्र (इनुमान) हैं ॥ २९ ॥ जिनके कान मानों १९ केवड़ा

की वा कंतकी की कली है और केसवाली के कम २० मयों की पंक्ति के समान

न शोभायमान हैं २१ जिनके फुल्ले सदैव २२ सहनाई के मुख के समान फुल्ले

रहते हैं २३ जिनके पगों की २४ चपलता मानों गलिका २५ स्त्री के समान

है ॥ ३० ॥ २६ युद्ध जीतने को २७ कंधों का टेढ़ कसते हैं सो मानों २८ क्रिया

टरिजात उडात करी टकरी, सकरी बिसिखाने बने चकरी ॥३१॥
 विधुरे गजगाहन बीजित जे, जवके बल राहन बीजित जे ॥
 पखर जर जीन सजे सखरे, नचि मंडत चेरिनके नखरे ॥ ३२ ॥
 धारि धोरित बलित धाव धँपे, मनकी गति जे छिन माँहिँ मपे ॥
 छलि गात चलात धुनात छिँती, किले कोट पटी बिचवत्त किती ॥३३॥
 भटके मन भाय फिरे लटके, धँटके निपजे कि बँटा नटके ॥
 हुलसै करि विज्जुलिकी हँसना, रँयमै मनु तकिँपकी रसना ॥३४॥
 खुर राजत रँजत पत्त खरे, जिन पक्क मँहायस नाल जरे ॥
 लागि यौँ खुरसौँ खुरताल लसै, गहिँकँ खँवरभानु कि चंद यसै ॥३५॥
 चलै बोधितैरुच्छदसे चमकै, भपटात कनीनिधैँ ज्यौँ भमकै ॥
 असवार चँहँ सु करैँ अनुठी, मलपैँ बनि फाल गुलाल मुठी ॥३६॥

विषदग्धा कुलटा नायिका कमर कसती है जिनके छडान की टकर में १ हाथी दलजाते हैं और सकड़ी २ गलियों में चकरी के समान पलटते हैं ॥ ३१ ॥ फैले हुए गजगावों से जिनको ३ पवन (पंखा) होता है और वेग के चल से मार्गों में ४ पक्षियों को जीतते हैं ५ पाखरों और जरी के जीनों से १ सुंदर सजे हुए; यथवा फैले हुए जरी के जीनों से सुंदर सजे हुए जो नृत्य करके ७ लोंढियों के समान नखरे करते हैं ॥ ३२ ॥ ८ धोरित और बलित आदि घोड़े की पाँचों गतियों में ९ दौड़ते हैं जो चण मात्र में १० मन के चलने की गति को माप लेते हैं, शरीर को फुला कर ११ भूमि को धुजा कर चलाते हैं जिनकी पटी (शीघ्र दौड़) में १२ निश्चय ही कोढ़ क्या बात है अर्थात् जिससे आगे कोढ़ कुछ चाल नहीं है ॥ ३३ ॥ १३ धाट देश के निपजे हुए घोड़े वीरों के मन भाकिक झुक कर फिरते हैं सो मानों नट का १४ छाँकरा (पट्टा) फिरता है, विजुली की १५ हली करके प्रसन्न होते हैं और १६ वेग में मानों १७ नाकिक (न्याय शास्त्र पढ़े हुए) की जिह्वा है ॥ ३४ ॥ जिनके खुर १८ चाँदी के पत्रों से शोभायमान हैं जिनमें १९ बड़े पक्के लोहे (गजबेल तथा कोलाद) के नाल जड़े हैं वे खुरताल खुरों से काग कर ऐसी शोभा पाते हैं जैसे चंद्रमा को पकड़कर २० राहु खाता है ॥ ३५ ॥ २१ अगलना में २२ पीप-क वृक्ष के पत्ते के समान चरलते हैं और दौड़ाने में २३ नेत्र की पुतली के समान आनकते हैं २४ अनूठी (अर्ध) ॥ ३६ ॥

नादिरशाहों का हिंद में आना] सप्तमराशि-त्रिचत्वारिंशमयूख (३२३६)

परि संग कुरंगन जे पकरैं, छिति चौ४करमें पलटा छ६करैं ॥
बपुं जोर उभक्त प्रोथ बजैं, सफरी पलटान उडान सजैं ॥ ३७ ॥
रस लेह खलीन अधीन रहैं, गतिमें भरि बत्थन भुम्मि गहैं ॥
करि भूप बडैं नटकी न कला, चलिजात दिखात मनो चंपला ३८
प्रतिमेल्ल बनै नभ पच्छिनपै, बहुरैं उडि दोय २ बरच्छिनपै ॥
कुल जाति बनायुज आदि किते, जैवमें पवमान उडान जिते ३९
कुलटैं उलटैं उछटात करी, पलटैं मनु पातुरिकी पुंती ॥
इक लख १००००० तुरंगन या गतिके, कैरटी सु हजार १०००
भली भतिके ॥ ४० ॥

भरना तल डानन दान भरैं, कुपितांरुन पच्छिन चोट करैं ॥
अप लंगर अंचत अंड भरे, खिजि खून भरे रुकिजात खरे ॥ ४१ ॥
डग देत डरावत डांकनतैं, पलटैं खिजि छाहैं पताकनतैं ॥
त्रिपंदी पथ बद्ध तऊ तरकैं, बँमथून लगावत बहरकैं ॥ ४२ ॥

साथ होकर जो १ हरियों की पकड़ते हैं ३ चार हाथ के विस्तार वाली भूमि में छः प-
लटें करते हैं ४ शरीर के जोर से ५ चमकने में ६ कुरंगें वजते हैं ७ मच्छी के पलटने के स-
मान उडान संजते हैं ॥ ३७ ॥ ८ लगाम के चाटने के रस में आधीन होकर रहने हैं और
चलने में भूमि को बाधों में पकड़ते हैं ९ जिनके भूप लेने में नट की भी कला
नहीं बढती; अथवा हाथियों को फांदने में नट की कला भी नहीं बढती (नट
के फांदने की पूर्ण अवधि हाथी को फांदने की समझी जाती है) चले जाने में
मानों १० विजुली दीखते हैं ॥ ३८ ॥ आकाश में पक्षियों के ११ शत्रु (मुकाप-
ना करनेवाले) बनते हैं और दो बरछियों पर उड़ कर पीछे फिरते हैं, कुल में
कितने ही १२ बनायुज आदि देशों के उत्पन्न १३ वेग में १४ पवन के समान
उड़नेवाले ॥ ३९ ॥ १५ हाथियों को उड़ा कर १६ कुलांड लेकर उलटते हैं अ-
थवा कु (पृथ्वी) को लाटते हैं और हाथियों को उड़ा कर उलटते हैं और पलट-
ने में मानों बड़्या के १७ नेत्र की पुनजी पलटती है; अथवा नृत्य करते समय
धरया की पुत्री (लड़की) पलटती है १८ हाथी १९ भली भांति के ॥ ४० ॥ २०
क्रोध में लाल होकर पक्षियों पर चोट करते हैं २१ लाहे के जंजीर २२ घमंड
से भर कर ॥ ४१ ॥ २३ सांठमारों के क्रोध दिलानेवाले छोटे धावों से डराने
वाले २४ पंड देते हैं २५ ध्वजा की छाया से खिजकर पलटते हैं २६ डगबंदी
(पग बंधन) से पग धंवे हैं तो भी तड़कते हैं २७ सुंड के जलकणों को पादलों -

घन *बीत घुमावत मत्थ मुरै, फहरात निसानन जेब फुरै ॥
 फटकारत सुंड़िनतैं नभकों, सिर भौर भनंकत सोरभकों ॥ ४३ ॥
 बहु खावन रावतभ्रात बनै, जल अँचन काज अँगस्ति जनै ॥
 मखतूल कँलापक कंध कसे, लागि गत बरत्तनै नद लसे ॥ ४४ ॥
 मल जंगिय होदन सज्ज भये, बलमैं चर पौनहिँ पै पठये ॥
 कट सुंड़ि कलापक रंगि रचे, बहु चित्र चितेरनके बिरचे ॥ ४५ ॥

गिरचे१ बिरचे२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १

बहु अँदिन निंदत उच्चपनौ, मजबूत रूपै जमदूत मनौ ॥
 बलके सिरताज महाबलजे, सनि राहु तमोगुन सौमलजे ॥ ४६ ॥
 मदकाकन घुम्मत पैड मने, बल बाद हिमाचलसौ बदते ॥

मते१ दते२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

तुन मौन बडे तरु तोरत जे, मनतैं रवि केतु मरोरत जे ॥ ४७ ॥
 कनकोचल लड्डुव गोठ गिनै, रवि चंद मलीदेन रोट गिनै ॥

के लगाते हैं ॥ ४२ ॥ * बहुत अंकुश लगाने और हलने से मस्तक घुमा कर
 मुड़ते हैं जिन पर ध्वजा उड़ती शोभा देती है वे (हाथी) सुंड़ों से आकाश को
 फटकारते हैं जिनके मस्तक पर १ सुगंध के लिये अमर उड़ते हैं ॥ ४३ ॥ बहुत
 खाने में रावण के भाई (कुम्भकर्ण) २ जल पीने में अगस्ति के पुत्र (अगस्त्य)
 बनते हैं, कंधे में ३ रेसम के ४ कलावे कसे हुए शरीर में लगे हुए ५ रस्सों से
 बंधे हुए शोभायमान ॥ ४४ ॥ बल में मानों पवन पर ७ हलकारे भेजे हैं
 जिनके ८ कपोल और सुंड़ रंग के समूह से रचे हुए ॥ ४५ ॥ कितने ही हाथी
 ऊँचेपन में ९ पर्वतों की निंदा करते हैं और दृढ़ता में मानों जमदूत रूपते हैं
 वे हाथी १० सेना के शिरताज और बड़े बलवान जो सनैश्चर, राहु और तमो
 गुण के समान ११ काले हैं "तमोगुण का रंग काला है" ॥ ४६ ॥ घमंड के भरे
 हुए पैड पैड पर मद की झाँकों से घूमते हैं और बलवान पन का बाद हिमा
 चय से करते हैं, बड़े वृद्धों को तृण के १२ समान तोड़ते हैं और मन से सूर्य
 की ध्वजा को मरोड़ते हैं ॥ ४७ ॥ १३ सुमेरु पर्वत को लड्डुओं के गोले गिनते
 हैं और सूर्य चन्द्रमा को १४ अपने भोजन के रोट गिनते हैं "हाथी के भोजन
 का नाम डिंगल भाषा में मलीदा है" तारों पर कठिन किलकारी करके

किलकारत तारनपै कररे, चल सुंडि चलात घनै चररे ॥ ४८ ॥
 कटपै कुरुबिंद प्रकासकरै, मनि भौम भिरे जनु लगि गरै ॥
 करंत्यो हरिताल सुढाल कर्यो, गुरु जानि बिधुंतुद पासि परयो ४९
 चरखीनै चिकै न चटाइटपै, उडिजात अचानक आइटपै ॥
 कति बीरन कुतै लगै कटसौं, बलि निठि बहोस्त उब्वटसौं ॥ ५० ॥
 जनको नियराय रचै जबरी, बढि अचन बगधन की बबरी ॥
 जिन लंगर पाय धरै जितनै, जमकी इक रज्जुव बद्धबनै ॥ ५१ ॥
 सिरपै मनि हाँटक जात असरी, भरमाचलसौं भँ तती कि भिरी ॥
 इम इक्क हजार १००० बडे इभजे, निकसे सजि बद्धल के निभँ जे ५२
 तुरकान तयार भयो रनपै, फरके भुव खंड फँनी फनपै ॥
 खग उद्धत सद्यद सेख खिले, मिग्जा मुगलान पठान मिले ॥ ५३ ॥
 भुजदंड कमानन केक धरै, स लुलायै पखालन बेध करै ॥
 बहु बीर बँदूकन दाव रचै, वर सिस्त जुरै अणु नाहि बचै ॥ ५४ ॥

उनको पकड़ने के लिये १ चपल सुंड को चला कर बहुत २ चिरते हैं ॥ ४८ ॥
 १ कपोलों पर ४ हींगलू प्रकाश करता है सो १ मानों गल से लग कर
 शनैश्चर और ५ मंगल भिदे हैं "शनैश्चर का रंग काला और मंगल का रंग
 लाल है" इसीप्रकार ७ सुंडको हरताल से अंष्ट किया (रंगा) है सो मानों
 ८ बृहस्पति ९ राहु की पासी में पड़ा है "बृहस्पति का रंग पीला और
 राहु का रंग काला है" ॥ ४९ ॥ १० चरखियों (अग्नि क्रीड़ा विशेष) की चटा
 इट पर डिगते हा नहीं हैं और कभी आइट (चरण आदि लगने का सूक्ष्म
 शब्द) पर उडजाते हैं, कितने ही वीरों के ११ भाले १२ कपोलों पर लगते हैं
 और १३ बिना मार्ग जाते हुआँ को फिर कठिनाई से फेरते हैं ॥ ५० ॥ मनुष्यों
 को १४ समीप लेकर जबरी करते हैं और आगे बढ़कर खँच लेते हैं सो मानों
 बकरी को १५ सिंह खँचता है इन हाथियों के लंगरों (जंजीरों) पर चरण
 बरते हैं उतने ही यमराज की एक १६ रस्सी में बंधते हैं ॥ ५१ ॥ मस्तक
 के ऊपर मणियों की जड़ी हुई १७ सुवर्ण की सिरी (मस्तक शूषण) है सो
 मानों १८ सुमेरु पर्वत से १९ नक्षत्रों की पंक्ति भिदी है २० सदृश ॥ ५२ ॥
 २१ शेषनाग के फणों पर ॥ ५३ ॥ २२ महिष (भैंस) सहित २३ अष्ट सीध

करि केक त्रिभागनतैं खुरली, बढि धावन दाव बचातबली ॥
 तरवारिन वार करै कितने, घमकावत संगिन लच्छय घन ॥ ५५ ॥
 सब दिल्लिय मीर उमीरसजे, रनमें भट भीम रहीम रजे ॥
 प्रतिबासर पंच ५ निमाज पढैं, कलमाँ बिच गुप्त बयान कढैं ॥ ५६ ॥
 बिरचैं बहुनेक तजैं बदकाँ, मन चिंति रसूल मुहुम्मदकाँ ॥
 राँसि कंठ कुरानसिरीफ रहैं, बल उच्च रु डहिर्प कुच्च बहैं ॥ ५७ ॥
 लाखि मुच्छ न लंब सिखी जिनकी, बिधिछिन्निय रीति प्रतीपनकी ॥
 छबिके बंपु मुन्नर दंड छटे, प्रतिमैल्ल घुमावत कैंकि पटे ॥ ५८ ॥
 बंद केक कितेक तजैं कपटैं, रंब पीर बलीन अलीन रटैं ॥
 असि ढल्लन मल्ल अपुब्ब अरैं, कति बान बिहंगैन बेध करैं ॥ ५९ ॥
 खट ६ टंक कमानन खैंचतजे, अतुली पय लंगर अंचत जे ॥
 बंद खानकलीज सहादतसे, बलि मूढ वजीर मुहब्बतसे ॥ ६० ॥

जुड़ने पर ॥ ५४ ॥ १ कितने ही भालों से शस्त्राभ्यास करते हैं २ बराहियों से ३ निसानों को ॥ ५५ ॥ ४ प्रतिदिन कलमा में "लाइलाह इल्लिलाह मुहुम्मद रसूलुल्लिलाह" यह यवनों का कलमा है जिसके ५ छिपे हुए आशय निकालते हैं ॥ ५६ ॥ ५ यवनों के पैगंबर का नाम है ७ डोरी में लटकी हुई कुरान शरीफ जिनके कंठों में रहती है वे बड़े पल और ८ डाढ़ी के बड़े केशों को धारण करते हैं अर्थात् डाढ़ी के बाल नहीं कटवाते ॥ ५७ ॥ जिनके चोटी नहीं है और मूँछ लंबी नहीं हैं ६ मानों आयों से विरुद्धता की रीति को बिधि पूर्वक छीन ली है अर्थात् जिन रीतियों को आर्य लोग प्रतिकूल मानते हैं उनको यवन अपने अनुकूल मानते हैं, मुद्गर फेरने और दंड करने से शोभायमान जिनके १० शरीर ११ सन्मुख होकर युद्ध करने वाले मल्ल को ॥ १८ ॥ उन यवनों में कितने ही १२ दुष्ट और कितने ही कपट को छोड़ने वाले १३ खुदा को शुरु (उपदेशक) को १४ खुदा (ईश्वर) के भक्त और १५ अली "यह यवनों के पैगंबर का भाई और जमाई था जिसको खलीफा (उत्तराधिकारी) भी कहते हैं" को रटते हैं, कितने ही तरवार और ढाल से अपूर्व मल्ल युद्ध करते हैं और कितने ही बाणों से १६ पक्षियों का बंधन करते हैं ॥ ५९ ॥ १७ अपने समान दूसरे को नहीं समझनेवाला पैर में प्रतिज्ञा का लंगर पहनता है, जो जब उसको विजय करनेवाला मिलता है तब खोलता है १८ दुष्ट १९ पुनि, वजीर

भट सरतुमखाने चमूप भले, सजिकेँ दल दिलिलियतें निकले ॥
चहि फीलै मुहुम्मदसाह चढयो, बजि हक निरसानन ध्वान बढयो ॥६१॥
बल के हरवल्लनके बढतैं, कँरटी पुरतोरनके कढतैं ॥

गजढाल प्रलंब सु तुष्टिपरी, क्रमि मंडल मंडल कूक करी ॥६२॥
दिन मुँक उलूकन हूक दई, छिति व्योम भयानक खेह छई ॥
अपसोन उँपश्रुति पिठि पढी, कैचमुक्त रजोवँति दिष्टि कढी ॥६३॥
उनमत्त क्रमेलेक आत लख्यो, रु दिगंबर दंत दिखात लख्यो ॥
चिरमेहि लुँलाय मिले समुहे, छुटि व्याल कैराल बिढाल छुहे ॥६४॥
इम गौन कुसोन अनेक बनेँ, मन उद्धत बीरन जे न मनैं ॥
जिम वेद बिरंचनके सुखतैं, गन ज्यों गिरिजेसँ जटा रुखतैं ॥६५॥
जिम जान्हवि अँडकटाहकतैं, बरखा कि उँदीचि बँलाहकतैं ॥

टाहकतैं १ लाहकतैं २ अन्त्यानुपासः १ ॥

रचना कि गुँने त्रयउतैं बिकसी, टँतना इम दिल्लियतें निकसी ॥६६॥
हुव हाक नकीब हजारनकी, हलकार बढी प्रतिहारनकी ॥
मग डोरिनेँ मप्पत फोज चली, उरैमी जिम सागरतैं उकली ॥६७॥

कमरदीखां जैसे मूर्ख ॥ ६० ॥ १ सेनापति (सानदोरां) १ हाथी पर ३
नगरों का ४ शब्द ॥ ६१ ॥ ५ हाथियों के ६ शहर के द्वार से निकलते
ही ७ हाथी का लंबा निसान तूट पड़ा ८ चक्राकार (गोखंडुंडा) फिर कर
१ छुसे ने ॥ ६२ ॥ १० दिन में मूक (गूंगे) रहने वाले ११ भूमि और
लोकाश में १२ पीठ पर आकाश वाणी हुई कि शत्रुन बुरे होते हैं १३ खुलेहुए
कसों वाणी १४ रजस्वला स्त्री को देखी ॥ ६३ ॥ १५ मस्त ऊँट को सन्मुख
आता देखा १६ नग्न पुरुष को ईसता हुआ देखा १७ गधा और १८ महिष (भैंसा)
सामने आते मिले १९ भयंकर सर्प छूटा और उस पर बिछी कोषित हुई ॥ ६४ ॥
२० ब्रह्मा के मुख से वेद कहे जैसे २१ शिव की जटा से गण निकले जैसे ॥ ६५ ॥
२२ ब्रह्मांड से गंगा निकली जैसे २३ उत्तर दिशा के २४ मेघ से वर्षा निकले जैसे
२५ सत-रज-तम-इन तीनों गुणों से संसार की रचना निकली जैसे २६ तैसे
दिल्ली से सेना निकसी ॥ ६६ ॥ २७ द्वारवालों का २८ बड़े राजाओं की सवारी
निकलती है तब मार्ग के दोनों किनारों पर डोरियें लगाई जाती हैं २९ लहरें

उमड़ात डगात बली बलकों, धमकात धुजात रसातलकों ॥
 इक अकखहिं नादरकों गहिहैं, इक अकखहिं दूरनमें रहि हैं ॥६८॥
 इक अकखहिं जित्ति इरान लई, इक अकखहिं मंत्रिं न साहमई ।
 इक अकखहिं खानकलीज फँटयो, रु वजीर सँहादत पै पलटयो ॥
 इक अकखहिं अप्पन सेनपती, सब जित्तिहिं तोरि इरान तँती ॥
 इक अकखहिं जित्तिहिं नादरही, पति दिल्लिय बुद्धि प्रमादरही ॥७०॥
 इम चंड चलयो दल दिल्लियको, दूठ जानि हरामिनके हियको ॥
 क्रॉमि मारग सत्त७ मुकाम करे, पँथपानियसों बँ समीप परे ॥७१॥
 खट६ कोस इरान अनीकँ रहयो, क्रम तत्थ चैमूप मुकाम क०
 असवार हजार असी ८०००० उतरे, अरु बीस २०००० छबीनँ
 सज्ज अरे ॥ ७२ ॥

॥ दोहा ॥

दिल्लियपति अब उत्तरिय, परिय अनीक प्रैसाप्त ॥
 रँहसि खानदोराँ रचिय, बैदन इरानिन बात ॥ ७३ ॥

॥ निःशाणी ॥

दलईसँ खानदोराँ लिखि पत्र पठाया,
 ईरान ईस अगँ मुनसीन सुनाया ॥
 तुमँ तोरके तरारे चतुरंगँ चलाया,
 लाहोर आदि सूबा बदफैल फटाया ॥७४॥
 पंजाब पेसँ थाँनाँ निज आन नमाया,

॥ ६७ ॥ ६८ ॥ १ वजीर बादशाह के अनुकूल नहीं है २ जुदा (भिन्न) होगया है ३ सहादतखाँ भी "वै" का अर्थ कहीं 'परंतु' और कहीं 'भी' होता है, ॥ ६९ ॥ ४ पंक्ति. दिल्ली के पति की बुद्धि ५ पागलपन (झुल) में रही ॥ ७० ॥ ६ भयंकर ७ चलकर ८ पानीपथ से ९ अब ॥ ७१ ॥ १० सेना ११ सेनापति (खानदोराँ) ने १२ सेना की रात्रि समय की चौकी पर ॥ ७२ ॥ १३ सेना का पड़ाव पड़ा १४ एकान्त में (गुप्त) १५ कुछ ईरानियों से बार्ता रची ॥ ७३ ॥ १६ सेनापति खानदोराँ ने १७ प्रताप के ताप के उफान से १८ चलाई ॥ ७४ ॥ १९ आधीन

हिंदू सवे हरामी साने सुलगाया ॥
 दिल दोरें ओर ओरें बरजोर बनाया ॥
 गिनि इस्पहान बुद्धी पैर लोभ लुभाया ॥ ७५ ॥
 ओरत अनूप दिल्ली लखि दाव चलाया,
 जानी यह न कोऊ बर तौस बनाया ॥
 सैतानके सिखायें मंगरूर मचाया,
 दिल्लीससौं न संके दिल भरत दिखाया ॥ ७६ ॥
 सुलतानकी जमोपैं समसेर सजाया ॥
 कसमीरकी फते कै सुलतान लुटाया ॥
 दरियावको दगासौं लहि नाव लँघाया ॥
 पाया एकार सो "पै सुलतान पचाया ॥ ७७ ॥
 चाहो सुलाह जो तो करिजाहु पैयानों ॥
 जो जंगकी जरूरी तो देर नजानों ॥
 दिल्लीसकी गुलामी प्रतिरोज प्रमानों ॥
 सुलतान दर्रजमानें बर नायब मानों ॥ ७८ ॥
 इम पत्र खानदोराँ पठये ति^{१५} पँठाये ॥
 ईरान साह मंत्री उमराव बुलाये ॥
 एकांत लैं ईजाँके अहवाल सुनाये ॥
 भेजे ति खानदोराँ दैल खालि दिखाये ॥ ७९ ॥

१ छाती सं २ दिल बहाकर ३ पराई ॥ ७५ ॥ ४ उपमा रहित ५ उम (दिल्ली) ने नादिरशाह को पति बनाया है ६ घमंड ॥ ७६ ॥ ७ बादशाह को ८ तरवार ९ करके १० नदी (अटक) को ११ परन्तु ॥ ७७ ॥ १२ प्रयाण (गमन) १३ जमाने (समय) में १४ श्रेष्ठ अथवा ऊपर हाकिम समझो नायब लवन सामान्य रीतिसे तो मातहत का है परन्तु विशेष रीति से वह अन्य लोगों का हाकिम होने के कारण हाकिम के अर्थ में लिखा गया है ॥ ७८ ॥ १५ तब १६ पढ़ाये १७ उस जगह के, अथवा इनके; और यदि 'ज' पर अनुस्वार नहीं होवे तो तकलीफ (दुःख) का अर्थ होता है अर्थात् दुःख के हाल सुनाए १८ वृत्तान्त हाल) १९ खानदोराँ ने भेजा वह पत्र ॥ ७९ ॥

ईरान साह अकखी तामच खुलीसौं ॥
 तैहां वजार आनै अफवाजि खुलीसौं ॥
 एतो नहीं निहारे ततबीरं डुलीसौं ॥
 आला बजोर आये समसेर तुलीसौं ॥ ८० ॥
 हिंदू न एक आया सब सोर डरानै ॥
 तोहू बै लाख १००००० ताजी पखरैत पलानै ॥
 हाथी हजार १००० मत्ते घनरूप घुमानै ॥
 लकखौं सवार अच्छे बैर हूर लुभानै ॥ ८१ ॥
 तोपें हजार दो २००० पै नीसान फिरानै ॥
 छोहें लगे छवीना भट भीर भिरानै ॥
 लकखौं पपाद जंगी समसेर सजानै ॥
 खुदमोज खानदोरौं बर फोज खजानै ॥ ८२ ॥
 एतो कलीजखाँका नाहक फरेबैहै ॥
 गाफिल जरा न दिल्ली जैर जोर जेबैहै ॥
 सबही सुलाह मंडे करनाँ कि जंग नाँ ॥
 उनतो यहै कहाई हमकोँ दिरंग नाँ ॥ ८३ ॥
 ईरानसाह अकखी सबकोँ सुनायकै ॥
 उमराव बीर बोले मन मंत्र लायकै ॥
 निसुस्त अली रू हाजी काजी करीमसे ॥
 गाजीहुसैन रुस्तुम रोसन रहीमसे ॥ ८४ ॥
 बुले कलीजखाँपै अहवाल पठावै ॥
 पाँजी सु क्यौं बुलाये बैरजोर सुनावै ॥

१ हे वजीर! २ प्रसिद्ध फौज (सेना) से ३ देखे ४ उपाय ५ बड़े ६ जोर के
 (पक्ष के) साथ ॥ ८० ॥ ७ कोलाहल सुन कर ८ अब ९ घोड़े, पाखराँवाले
 १० झंडा अपसराओं पर लोभित हुए ॥ ८१ ॥ १ ध्वजा २ स्वेच्छाचारी
 (स्वमंत्र) ॥ ८२ ॥ ३ झूठ ४ धन और वल से ५ शोभायमान है ६ सुलाह (मंत्र) रखो
 ७ देर (विलम्ब) नहीं है ॥ ८३ ॥ ८ ॥ १ पहाल २ हँसी ३ जवरी (बलात्कार) से

आहिलू दंगाजना यो नाँकिस् न नाँकहैं ॥

हमहू हरांम तोपें कातिलू कँजाकहैं ॥ ८५ ॥

ईरानसाह औसैं लिखि पत्र पठाया ॥

आया कलीजखाँपैं इन मंत्र उपाया ॥

जुरि मेल खाँकमदीं दिल्ली वजीर जो ॥

दूजो सु भाइभुंजा जालम् सरीर जो ॥ ८६ ॥

मिलि तीन३ मंत्र कीनाँ अपनी जमीनहैं ॥

अरु साह पै मुहुम्मद अपने अधीनहैं ॥

इनसों व खानदोराँ दुसमन मरायकैं ॥

कछु दंडदैं रुपैये दैंहैं पठायकैं ॥ ८७ ॥

इम मंत्र मंडि पच्छो तँहँ पत्र पठायो ॥

डरिये हजूर नाँही हम काम बनायो ॥

सब रावरे रँजूहैं तुमसों न रारिहैं ॥

इक नाँ जु खानदोराँ फँदाहि मारिहैं ॥ ८८ ॥

तुम जंगकी कहावो न कबूल मामलै ॥

तब सज्ज खानदोराँ अैंहैं तँमामलै ॥

लमामलै१ तमामलै२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

हम रावरे भटोंसैं मिलि ताहि मारिहैं ॥

ईरानकी दुहाई बजँमाँ बिथारिहैं ॥ ८९ ॥

सुनि एह साह नादर बरजोर कहाई ॥

१ हे सृष्ट-दगा करनेवाला ३ निकम्मा ४ तेरे नाक है कि नहीं है ५ हे अधर्मी
६ कतल करनेवाले ७ लुंटेरे हैं अथवा 'कँजा' जबर के साथ स्वार्थ में 'क' प्रत्य-
य किया है तो मृत्यु का नाम है ॥ ८५ ॥ ८ नादिरशाह ने ९ कसरदीवाँ १० दुष्ट
॥ ८६ ॥ ११ अब ईरानियों से ॥ ८७ ॥ १२ आधीन है १३ एक खानदोराँ आधीन
नहीं है सो उसको कल ही मार डालेंगे (फारसी में आगामि दिन को फरदा
और दीराज कहते हैं) ॥ ८८ ॥ १४ मामला (दंड) अथवा कौज खरब लेना
मंजूर मत करो १५ सब को लेकर आवेगा १६ जमाने के साथ (जमाने में) ॥ ८९ ॥

*फर्दाहि खानदोराँ तुमसौ ब लगई ॥
 सुनि एह खानदोराँ सब सेन सजाई ॥
 दुहुँओर होत औसैं वह रति बिताई ॥ ९० ॥
 जाई १ ताई २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥
 अब प्रातकाल आया कृकवाकु कुकानैं ॥
 अरविदतैं उडे के अलि रति रुकानैं ॥
 परदार छोरि छाती नर जार पैलाया ॥
 गिरिराजकी गुफामैं तम तोम चलाया ॥ ९१ ॥
 दैर घंट देहरो मैं बर नाद बजाया ॥
 चहि भोग चक्र चक्री सुख मेल सजाया ॥
 तारेन मंद तेजी दबिबिब दुगया ॥
 मथान ग्वाल गेहों घनघोर घुगया ॥ ९२ ॥
 तजि पंथ चोर तक्के छिपनौं दरीन मैं ॥
 गहि मौन घूक बैठे तरु कोटरानैं मैं ॥
 उदयाद्विपैं अनूठी इक रोचि लखाई ॥
 चल चाँटकेर चौंके चहकानि मचाई ॥ ९३ ॥

॥ दोहा ॥

सेन खानदोराँ सजिय, स्वामिधरम धरि सीस ॥
 अनय सहादत मंडि इत, रचिग साहपर रीस ॥ ९४ ॥

॥ षट्पात् ॥

कहिय सहादत कजलैबास बेभव मम लुटत ॥
 देहु माह आदेसैं नरन नाहक सिर तुटत ॥

† हे खानदोराँ अब * कल ही तुम म लड़ाई है ॥ ९० ॥ ‡ मुरंग बाजे
 § हमकों से २ शत्रु के रुके हुए १ अमर १ पर शत्रुओं की जानी को छोड़ कर
 जार पुरुष ४ भगा ५ पर्वतों के राजा [सुमेरु] की गुफा में अंधेरे का समूह गया
 ॥ ९१ ॥ ७ शत्रु ८ बिलोना (दधिमंधना) ॥ ९२ ॥ ९ गुफाओं में १० वृक्षों के
 कोषों में ११ कान्ति १२ अपल चिह्नियाँ बोलों ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ १३ कजल के
 रहनेवाले; अथवा काले कपड़ों वाले (ईरानी) १४ हुकूम

बादशाहका नादिरशाहसे युद्ध] सप्तमराशि-त्रिचर्यारिंशमयूख (३२७१)

तब नय अकिखय साह पृथक लरनों न उचित अब ॥
इक होय अंकुगहि सजहिं तुम हम कलीज सब ॥
कहि तदपि भाड़भुंजक कुटिल सब कातर दिल्लीस दल ॥
पिखयो न जात हमतैं प्रबल बिरचत लूट इरान बल ॥ ९५ ॥
यह सुनि अकिखय साह पृथक लरि मगहु सहादत ॥
अधम सुनत दुनँ उठि भाड़भुंजक अति उद्धत ॥
चढि निज दल लै चलिय खानदोरों प्रति यों कहि ॥
दीजै हमहि सहाय चमूअधिगज विजय चहि ॥
इम अकिख जाय ईगन दल मिल्यो मूढ लवहुँ न लग्यो ॥
सब भेद साह नादर समुक्ति अधम सहादत उँचरयो ॥ ९६ ॥

॥ दोहा ॥

मूढ सहादत जो मिल्यो, चहि ईरान अधीस ॥
पच्छी यों कहि मुकली, अंतुल भार मम सीस ॥ ९७ ॥

॥ निःशानी ॥

सुनि एह खानदोरों चढि बेग चलाया ॥
बाँकों सहाय दैवे छक छोड़ै छकाया ॥
दिल्लीसकी चमूको अधिरोज बीर जो ॥
हरवल्ल व्है रु हंकयो धमचक्क धीर जो ॥ ९८ ॥
अच्छे सिपाइलैकैं अब अब उढाये ॥
मानों घटा उँदीची आसार मचाये ॥
धरनी धमकि धूजी सिंग फूटि सेसका ॥

१ नीति के बचन कहे २ जुदा खड़े होंवेंगे ३ कलीज खाँतो भी १ कायर ॥ ९५ ॥
७ शीघ्र उठ कर ८ अपनी सेना ९ हे सेनापति १० यह कहकर ११ क्षण भर
भी नहीं रुड़ा १२ महादत खाँ को नीच कहा ॥ ९६ ॥ १३ यह १४ महादत खाँ
को १५ क्रोध के छक [मद] में १६ सेना का पति युद्ध में धैर्य रखनेवाला ॥ ९८ ॥
१७ घटर की घटा ने १८ जलधारा

दिने चंद्रमा दिखानाँ दिपनाँ दिनेमैका ॥ ९९ ॥

दल भाग माग दह्हा बरकी वगहकी ॥

कमठस पिछि फई बत आह आह की ॥

काली तथा कँपाली आये उछाहसों ॥

बेनाल प्रेत नञ्च चतुरंगं चाहसों ॥ १०० ॥

गन भेन कंक गिह्री गोमंयु गँहके ॥

जंजार तोप जाली गज घंट ठहके ॥

बैठे हजार हथी बढि लैन विथारे ॥

तोजी तुंग तत्ते नभ लेन तगरे ॥ १०१ ॥

चढि वीर खानदोगाँ इम सेन चलाई ॥

ईगनकी अँनीपै अव बैंग उठाई ॥

उततैं हु सेन आयो सुनि याहि आतही ॥

पाताललों पुकारैं पहुँची प्रभातही ॥ १०२ ॥

सक बान अक सत्रह १७६५ बदि फगुन मासे ॥

रवि देखनै रुकानों तरवारि तमासे ॥

नमासे १ तमासे २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

दुहुँआंग तोप दग्गा धपि धम धोरनी ॥

कानैं विमान कारे अति गोज उष्कनी ॥ १०३ ॥

डगमगि मेदिनीके गिरि कूटें गिरानैं ॥

सरिनी तँड़ाग छिजे पसु पच्छि पिगानैं ॥

आकाम अच्छरीके मन गान मचायो ॥

डँक सु डाकिनीके गम गम गचायो ॥ १०४ ॥

१ चंद्रमा के समान २ सूर्य दीपन लगा ॥ ९९ ॥ ३ जाना ४ शिव
५ भेना में ॥ १०० ॥ ६ गोदह ७ प्रसन्न होकर बोले ८ पंक्ति फैलाई ९
साजिम देश के घोड़े ॥ १०१ ॥ १० सेना पर ११ घोड़ों की यागे उठाई १२
मर्जना बड़ी ॥ १०२ ॥ १३ भू से भूज का कितने ही १४ पर्यनों का शस्त्र गिर
१५ नदी १६ तालाब १७ पीड़ित

गोले गेरुग गंजें हत्थी न हलकैं ॥
 बारुद भार भूगैं संपां कि सलकैं ॥
 आवाज तोप उहूँ जिम संव सानुमाँ ॥
 ज्वाला कराल जगैं बढि चंद्र भानुसाँ ॥ १०५ ॥
 आकास तूटि भंडे उडिजात ओरसे ॥
 समसेर मेह नचैं नभ मत्त मोरसे ॥
 कट कूट काटि डारैं गोले अंरातिकी ॥
 मानों पिछानि पारैं गज भद्रजातिकी ॥ १०६ ॥
 हुसियार खानदोराँ समसेर चलाई ॥
 पहुमी सु रंगं पिक्खी लागि रत्त ललाई ॥
 फूटै कपाल भेजे तरवारि तरकैं ॥
 के कुतैं कंकटोंमें गत माल गरकैं ॥ १०७ ॥
 केने तुखारैं कट्टै असवार उलट्टै ॥
 कहैं कटार भूखे हिय कालिक चट्टै ॥
 नाँगोद वान फुट्टै नर कातर नट्टै ॥
 टंकार चाप वज्रैं चिल्ला सु चट्टै ॥ १०८ ॥
 घायल अचेत घुम्मैं लटके रकावसाँ ॥
 मानों गमार मत्ते सरसे सरावसाँ ॥
 कटि पिप्फरे कलेजे फँवि फाँक फुलावैं ॥
 बैसाख माँहिं केसूँ जिम जेवै वनावैं ॥ १०९ ॥

१ घमंड मिटाते हैं २ हाथियों के हलकों के ३ बिना विजली चमकती है. ४ पर्श-
 तों के शिखरों से ५ वज्र की आवाज होवे ऐसे ॥ १०५ ॥ ६ तरवार से भंडे
 तूट कर आकाश में उड़ते हैं सो मानों ७ वर्षा में मत्त मयूर आकाश में ना-
 चते हैं ८ हाथियों के गंडस्थल और कुंभस्थल ९ शत्रु की तोपें ॥ १०६ ॥ १०
 उक्त युद्ध की मृमि ११ कधिर लग कर लाल रंग की दीखी १२ भालें १३ कव-
 चों में जाकर १४ साल सहित घुसने हैं ॥ १०७ ॥ १५ घोड़े १६ कलेजा १७ पेट
 के कवचों (पेटियों) में तीर फूटने हैं १८ कापर मनुष्य आगने हैं १९ प्रत्यंचा खी-
 चते हैं ॥ १०८ ॥ २० शोभित २१ दाऊ धृज के फूज (केसले) २२ शोभा ॥ १०९ ॥

सुंढा करीन कट्टै जिम पन्नग कारै ॥
 भंभं भयान बजै भट भिन्न नगारे ॥
 आकास अंगि पत्ते सुरलोक उजारे ॥
 महारादि लोक वारे जनलोक सिधारे ॥ ११० ॥
 विनु चेत वीर बकै बहु दंत बजावै ॥
 घोरे अनेक घुम्मे मुख भग्ग हलावै ॥
 धाराल बाढ बजै अति वीर बकारै ॥
 समपेरको सिगहै मुख मार उचारै ॥ १११ ॥
 पंचासगोय ५२ भैरू ललकार लगावै ॥
 लैलै लल्लाम लोही चउसहिद ४ चढावै ॥
 के सीस ईस लैकै गल भेट भिगवै ॥
 के अच्छरी अनूठी बरमाल गिगवै ॥ ११२ ॥

पट्पात ॥

तीन३ पहर तरवारि खानदोगै बर बज्जिय ॥
 अनिय मोहि ईरान सबल दिल्लिय जय सज्जिय ॥
 रवि अत्यंत रन रुकिय घाय लग्गिय अहारह १८ ॥
 खेत सहादेत खान लखन हेरिय बहु बाग्ह ॥
 पापिय कहौन पायो तैदपि देख्यो सब ईरान दल ॥
 यह जानि भाड़भुंजक अधम दून पठायउ छुँद छल ॥ ११३ ॥
 ॥ दोहा ॥

खानमहादन दून दल, पठयो चमुपनि पास ॥
 मोहि डरानिन जितिकै, गाह दिय काराबास ॥ ११४ ॥
 अब प्रेमीम आगम आधिक, अरु तुम घायल अंग ॥

१ अयंकर २ वीरों के फौदहूए नगारे ३ अग्नि ४ पूग कर ५ जन लोक में
 गये ॥ ११० ॥ ६ तरवारों के ॥ १११ ॥ ७ सुन्दर ८ शिव ॥ ११२ ॥ ९ ओष्ट
 १० सूर्य अरु होते ११ सहःदलवां को देखने के लिये १२ सोभी १३ इस नीच
 ने छल से दूत भेजा ॥ ११३ ॥ १४ कंदखाने में ॥ ११४ ॥ १५ सन्ध्या समय का

कलिह कुरावहु मदति करि, जानहु दुर्गम जंग ॥ ११५ ॥

बदलि मूढ ईरान बिच, खल सु सहादतखान ॥

यह फरब कहि मुकलयो, बनि मठ बंदीवान ॥ ११६ ॥

सेनापति यह सुनि फिग्या, जय जस कछुक उबारि ॥

सोधि समर घायल भटन, चलयो नृजानन डारि ॥ ११७ ॥

षट्पात ॥

इत दिल्लीस वजीर खानदोरहिँ सुनि आवत ॥

मारन ताकहँ मूढ ईष्ट बहु व्याज उपावत ॥

कहिय साहसों जाय भजिग कातर सेनापति ॥

कजलबास लागि पिठि आत डारन इन आपति ॥

मैं अवहि दैन दलपति मदति तांपन बल गोकत तिनहिँ ॥

यह अनृत अखिख गोलन गजब गंजर बिथारिय को गिनहिँ ॥ ११८ ॥

॥ दोहा ॥

यह वजीर अति घोर किय, खंता कमरदी खान ॥

सेनसहित सेनेसकों, पित्रों तोपन प्रान ॥ ११९ ॥

हुव रहि खानदोरह चरन, गोलन उडिग गैने ॥

अति घायल हुव तदपि हुन आयउ डेगन अँने ॥ १२० ॥

॥ निःशरणी ॥

अति घाय खानदोगँ डम डेगन आया ॥

खूनी कलीजखाँकों सँवजार बुलाया ॥

मन मंत्रे नीति भंडी सबकोंहि सुनाया ॥

हौनाँ सु तो हुवा ज्यौँ हम ज्यौँन गुमाया ॥ १२१ ॥

१ दुर्गम ॥ ११५ ॥ २ अनकून ३ मिस (कल) ४ भागा ५ इंगानी

६ सेनापति (खानदोगँ) काँ ७ झुठ घोल कर-द निरंतर प्रहार ॥ ११८ ॥

८ अपराध (कसूर) ॥ ११९ ॥ १० गोलों से आकाश में उड़गये ११ स्थान में ॥ १२० ॥

१२ खून करने वाला (घातक) १३ वजीर सहित १४ नीति की सलाह ॥ १२१ ॥

अब तीन ३ मंत्र अक्खैं हम सो तुम कीजै ॥
 ईरानसों लगराई इक १ होन न दीजै ॥
 दिल्लीस हिंतु दूजैं २ नादर न मिलावो ॥
 तीजै ३ न ताहि दिल्ली तुम जाय दिखावो ॥ १२२ ॥
 मंगैं सु दै रूपैये प्रतिगोन कगवो ॥
 कीनी तुम्हैं जु मोसों क्यौं सो वैं कहावो ॥
 यौं अक्खि खानदोराँ बपु सद्य बिहायो ॥
 सुनि साह पै मुहम्मद अति सोक अघायो ॥ १२३ ॥
 अब खाँकलीजकौही सेनापति कीनौ ॥
 अर्थ भाड़भुंजकके अर्थ न दीनौ ॥
 इतकौहु साह नादर अकुलाय बिचारी ॥
 उमराव इक्क किनी मम सेन दुखारी ॥ १२४ ॥
 तबही कलीजखाँ पै लिखि पत्र पठाया ॥
 लै दंडके रूपैये हम गोन उपाया ॥
 सुनि सो कलीजखाँहू अति मोद बढाया ॥
 एकांत साह अगैं अब मंत्र बनाया ॥ १२५ ॥

॥ दोहा ॥

कहैं कलीज रु कमरदी साह अंग कर जोरि ॥
 सेनापति मान्यो समुक्ति, देहु लगन अब छोरि ॥ १२६ ॥
 इक्क कोटि १००००००० दम दम्मलै, नादर पच्छो जात ॥
 सोहे बत्त अब स्वीकगहु, लरैं न पुगहिँ ताँत ॥ १२७ ॥
 मन्नि साह यह मंत्र तब, नादर प्रति लिखवाय ॥
 दम्म कोटि लेजाहु घर, अरु नन मिलन उपाय ॥ १२८ ॥

१तीन मलाह कहना हूँ २ मे ॥ १२२ ॥ ३ उलटा गमन ४ अब ५ शाघ शरीर
 छोडा. बादशाह मुहम्मदभी ७ भर गया ॥ १२३ ॥ = यहाँ ९ सहादतवाँ
 के अर्थ सेनापति पुन नहीं दिया १०. घबरा कर ॥ १२४ ॥ ११ जाना विचारा
 है ॥ १२५ ॥ १२६ ॥ १२७ दंड के रूपये लेकर १३स्वीकार करो १४हे स्वामी! ॥ १२७ ॥

इक १ भाग अबही लहहु, इक १ जाय लाहोर ॥

इक १ गिनहु लंघत अटक, इम लीजे दम मोर ॥ १२९ ॥

यह सुनि नादरसाह अब, करन विचारिय कुच्च ॥

खानसहादत जानि यह, अधम जन्पो अघ उच्च ॥ १३० ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

खानसहादत एह विचारी, नाहिं अवर कोऊ भटभारी ॥

पान खानदोराँ जब देंहैं, सेनापति तब मांहि बनै हैं ॥ १३१ ॥

यहै विचारि वजीर मिलायो, मूढ सु ब्रथा चमूप मरायो ॥

साह कलीज क्रियउ सेनापति, पातैं जन्पो सहादत अबअति ॥ १३२ ॥

नादरपति इम बैन सुनाये, ब्रथा कलीज तुमहिं बहकाये ॥

दिखि गज दयो तुमको गर्व, क्यों नहिं लेत रु जान कहत अब ॥ १३३ ॥

खान कलीज मिलन मिस बुल्लहु, पुनि करि कैद खीज सिरखुल्लहु ॥

तब तुमरे बसि साह मुहुम्मद, व्हैहैं दुतहिं तजहिं साहस हद ॥ १३४ ॥

तब इन खानकलीज बुलायउ, करन मंत्रं वह सठ दुत आयउ ॥

तबहिं पकरि कारीविच डान्पो, अब नादर अति गँव्य मम्हान्पो ॥ १३५ ॥

अकिखय सुनहु कलीज कहावहु, दिलीमहिं यँहैं मिलन बुलावहु ॥

सिर कुरान धरि सपथै उचारत, एकासन बैठहिं हित सम्मत ॥ १३६ ॥

रत १ मत २ अन्त्यानुपासः १ ॥

तबहिं कलीज पत्र लिखि पोरिय, आवहु मिलन इनहु हित हेगिय ॥

यह सुनि तखत खान अरोहिय, चलत साह बहु बीगन गोहि ॥ १३७ ॥

अरोहिय १ नरोहिय २ अन्त्यानुपासः १ ॥

कोऊ कहत जाहु नन हजरत, कोऊ कहत अबहु दल बलवैत ॥

॥ १२८ ॥ १ अटक नदी उतरा तब २ इस प्रकार मुझसे दहलो ॥ १२९ ॥ ३० ॥

॥ १३१ ॥ १३२ ॥ ३ खुदा ने ॥ १३३ ॥ ४ बुलाओ ५ क्रोध ६ शीघ्र हो ७ हट

की सीमा छोड़ देंगा ॥ १३४ ॥ ८ कलीजवां को ९ सलाह करने को १०

शीघ्र १ कैद में २ गर्व ॥ १३५ ॥ १६ सौगन १४ एक गर्दा पर ॥ १३६ ॥ तखतवा

पर १५ चढ़ कर १६ रोका ॥ १३७ ॥ १७ सेना चलवान् है

हे हाजरि भट लखंख १००००० कंटारे, पैहो मिलि न भली फलप्यारे
 काहूकी न साह श्रुति कीनी, चलयो मिलन सेनहु नहिं लीनी॥
 संग सुलये पंचसत ५०० सादी, पानीपथ इम गयउ प्रमादी॥१३९॥
 पावकोस लग नादर पुँतह, गय सम्मुह बेसरँ रथ जुतह ॥
 इम ईरान अनीकँ गयो यह, डोढी लग आयउ सम्मुह वँह १४०
 जाय सभा बैठे इकआसन, भाई कहि हुव दुव ३ संभासन ॥
 तब नादर दिल्लीसहिँ अँखहिँ, सचिवहु सचिव मिले हित रक्खहिँ १४१
 तुम वजीर बुँलहु यँहँ यातँ, हँम वजीर रक्खहिँ हित तातँ ॥
 तब दिल्लीस पत्र लिखि निजँ कर, बुल्लयो स्वीयँ वजीर पापपर १४२
 यह कँगर नादर कर अप्पिय, नादर ताहि बुलावन अप्पिय ॥
 तब पचीस २५ असवार पाठाये, चंड ति कँगर लै रु चलाये १४३
 ते उद्धत आये दिल्ली दल, बदत वजीर वजीर कुँजे बल ॥
 यह सुनि खानकमरदी कपिगँ, तिन सह चलयो नाँहि कछु जंपिगँ १४४
 तबहि मंत्र अक्खिय उमरावन, जंग वजीर रचहु जावहु नन ॥

वन १ नन २ अन्त्यानुप्रासः ॥

पापी जन न सुलाई पिछानै, बिपँरीतहिँ अनुकूल बखानै ॥१४५॥
 कहिय वजीर लरहु जिन कोऊ, करिहँ साम साह हम दोऊ ॥
 इम कहि लै द्वै सत २०० असवारन, गो वजीर चित मंत्र बिचारन १४६
 सोहु नजरिकैदी किय नादर, दिल्ली दल सुनि भजिग महा दरँ ॥

नादर १ हादर २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

१ कटा (कतल) करनेवाले मिल कर भला फल नहीं २ पाओंगे ॥ १३८ ॥ ३ सवार ॥ १३९ ॥
 ४ पुत्र (यहाँ स्वार्थ में 'ह' प्रत्यय किया है) ५ खच्चरों के रथ जुताकर ६ सेना
 में ७ नादिरशाह ॥ १४० ॥ ८ एक गद्दी पर ९ वार्तालाप १० कहा,
 वजीर से वजीर मिलकर ॥ १४१ ॥ ११ तुम्हारे वजीर को बुलाओ १२ हमारा
 वजीर उससे स्नेह रखेगा १३ अपने हाथ से १४ अपने पापी वजीर को बुलाया
 ॥ १४२ ॥ १५ पत्र ॥ १४३ ॥ १६ सेना में उसे १७ धूजा १८ कुछ नहीं कह कर ॥ १४४ ॥
 १९ सलाह को नहीं पहचानते २० प्रतिकूल को अनुकूल कहते हैं ॥ १४५ ॥
 ॥ १४६ ॥ २१ बड़े भय से

नादरशाहका [दिल्ली लेना] सप्तमराशि-त्रिचत्वारिंशमयूख (३२=३)

अब प्रयान ईरान साह करि, आयउ पुर दिल्लिय उद्धत अरि १४७
सक सर अंक सत्त इक १७९५ *हायन, परि फग्गुन असित दस-
मि १० पलायन ॥

इम नादर दिल्लिय पुर आयउ, होय निरंकुस तोर चलायउ ॥१४८॥
साह मुहुम्मद खानसहादेत, बहुरि बजीर रु खाँकलीज बैत ॥

ए च्यारि४हि कैदी करिआनै, ईरानी दिल्लिय प्रविँसानै ॥ १४९ ॥

अप्प मुख्य महलन निवास किय, दल मिलान नगरी अंतर दिय ॥

तत्थ रहत निस दोय२ बिताई, पै सेना अनसन अकुलाई ॥ १५० ॥

कोउ न बनिक हट्ट पट खोलै, बैठे दुरि गेहन नन बोलै ॥

दल नादर प्रति अरज दई तब, अत्थ बनिक बैचैन अन्न अब १५१

तहँ किय अरज भट्ट बंदीजन, राजा जुगलकिसोर प्रीति पन ॥

दल इरान देहसति मन डोलत, याँत बनिक बजार न खोलत १५२

तब नादर पठई कहि जाहिर, बसहु जाइ मम दल पुग बाहिर ॥

तब आदेस अधीन कटक चढि बाहिर पुरके जान लग्यो बढि १५३

तिहिँ खिन पुर उद्घोसै बिथारयो, महलनमै नादर हनि डारयो ॥

वाको कटक भजत अब याँत, पथ रुक्कहु इन सबन निपाँत १५४

यह सुनि जनन जरे दरवाजे, बहु बंदूक रु पत्थर बाजे ॥

पहर दोय२ तैस सेन पचाई, अब नादर प्रति अरज रचाई ॥१५५॥

हुकम अधीन जात बाहिर हम, पुरजन जान न देत कुटिल क्रम ॥

बंदूकन आवन पुनि मारत, हम सु राँवरो कथित निहारत ॥१५६॥

॥ १४७ ॥ * संवत में १ शुक्ल पक्ष १ भगे १ प्रताप ॥ १४८ ॥ २ सहादतखाँ

३ इन चारों को सन्तोषदायक कैदी करके ४ प्रवेश हुए (घुसे) ॥ १४९ ॥ ५ सेना

का मुकाम ६ शहर के भीतर ७ तहाँ ८ भूख से ॥ १५० ॥ ९ सेना ने ॥ १५१ ॥

१० भय से ॥ १५२ ॥ ११ हुकम के अधीन ॥ १५३ ॥ १२ हाका फैलाया

१३ नादरशाह को मार डाला १४ मारें ॥ १५४ ॥ १५ उम (नादर) की सेना ने

॥ १५५ ॥ १६ पत्थरों से १७ आपका हुकम देखते हैं ॥ १५६ ॥

निज दैल अरज न मन्नी नादर, अप्पहि लखनै चलयो अन आदर
संके तेंदपि नाहिँ जन सारे, याहू पर पत्थर बहु मारे ॥ १५७ ॥

नादर कोहु सत्य तब भासी, कष्ट मुष्टि निज किरचि निकासी ॥
व्यजन ताह उच्ची करि बुल्लयो, ईरानिन यह सुनिखग तुल्लयो १५८
भयो कतल दिल्लियपुर भारी, लखन कटे बाल नर नारी ॥

स्वार्न बिडाल धेलु हय कुंजर, एंडक अंज रु महिख खर बेसर १५९
कटे कैहर कां गिनै अनंतन, प्रलय मच्यो त्रय जौम घोर पन ॥

यह सुनि खानकलीज अरज किय, तब नादर यह रुकि अभय
दिय ॥ १६० ॥

फगुन मास बिसैंद द्वादसि १२ दिन, इम पुरकतल कियउ ईरानिन
नादर दैत अभय अब जानिय, तब तस भटन कोस असि ठानिय १६१
रहि नादर दुव २ मास बितायउ, दिल्लिय पति सैन लिखित
लिखायउ ॥

हो मै साह जु हिंदवान पति, सो जित्यो नादर इगन पति ॥ १६२ ॥
वानपति १ रानपति २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

ज्यान माल बखसीस कियउ सब, सो मै लियउ अधीन उभय अब
इम लिखाय नादर दैल लिन्नो, कछु न मुहुम्मद आदर किन्नो ॥ १६३ ॥
छिन्नि बिभूति लई सब बैर बग, सत्रह १७ मन अनमोल जवाहर ॥

हीरा इक आयैत चतुरंगुल, जो बुंदीम भोज किय बाहुल ॥ १६४ ॥

१ अपर्णा २ सेना की ४ बादशाही लवाजमा लिये बिना ३ देखने को ४ तोभी नही डरे
॥ १५७ ॥ ६ काष्ठ (लकड़ी) की झूठ की तरवार का निकाल कर, उसको ऊँची करके
७ कतल वाला ॥ १६० ॥ ८ कुत्ते ९ बिल्ली, गाय, घोड़े १० हाथी ११ मेंढे १२ बकरे,
भैंसे, गधे १३ ग्वचर ॥ १६१ ॥ १४ उस जुलम में १५ तीन पहर तक १६ इम
(कतल) को रोक कर ॥ १६० ॥ १७ सदैव १८ नादर का दिया हुआ १९
तरवारों को म्यानो में कीं ॥ १६१ ॥ २० दिल्ली के बादशाह से ॥ १६२ ॥
२१ पत्र ॥ १६३ ॥ २२ अष्ट अष्ट ऐश्वर्य कीन लिया २३ चार अंगुल मांदा बुंदी
के पति भोज ने २४ भुजवंश किया था ॥ १६४ ॥

रानी रचन बिचार किया, जैपुर उपमिति जास ॥ १७४ ॥
 हे गनेस घंटी बिहित, ताके बाहिं तथ ॥
 दिस उत्तर १७ केदारतैं, लग्यो बमन अति अंत्य ॥ १७५ ॥
 बिच चत्वर तैं बांन रुक्यो, पहु पहु आलय पीठ ॥
 बिनु बुंदिय रुकिगो बहुमि, तुंग न भो नभ लांठ ॥ १७६ ॥
 निलय जोधं १९७२ इति नृप अनुज, व्यय बिस्तरि बैसु वारा ॥
 पुगैं पच्छिम ३५ कोस १ पर, कर्मन रच्यो कौसार ॥ १७७ ॥
 नाम जोधसागर १२ मर १६, निबसथैं रचित नवीन ॥
 बाग ३ महल ४ सर सेतु बिच, प्रभु मंदिर ५ दिग पीन ॥ १७८ ॥
 भूपति धावर गंग भो, जिहि पुर पूरब जत ॥
 बिरचे उषवन १ बापिका २, अपि हजारन अंत्य ॥ १७९ ॥
 कोटवाल नृपका कथित, रामचंद अभिधान ॥
 बिरचे बापी १ बाग २ जिहि, पुगबिच पच्छिम ३५ थान ॥ १८० ॥
 गजमुख भूप पुगोहितहु, पच्छिम ३५ दिस पुर पास ॥
 दधिमति देवीको सदन १, बिरच्यो बिभव बिलास ॥ १८१ ॥
 तथहि बैल १६ बापिका ३, छत्री ४ किय तिहि छीव ॥
 पुरके दक्षिण २१३ प्रांत पुनि, ऊंचे महल ५ अतीव ॥ १८२ ॥
 नृपदामी राधा तनैव, गंग नाम इक दास ॥
 नाल ताल नैवलकखके, सविध महल १ तिम तास ॥ १८३ ॥
 समय भूप बुधसिंह १९७१ के, परिकर जनन जितेक ॥

जिस को जयपुर का उपमान बनाने का विचार किया ॥ १७४ ॥ राजा जिन गणेश
 घाटी है धन ॥ १७५ ॥ बीच का चौक है प्रभु रामसिंह, प्रभु (विष्णु) के मंदिर
 का धाला ही बन सका ऊँचा नहीं हुआ = आकाश को घाटने वाला ॥ १७६ ॥
 १. बुधसिंह के छोटे भाई जोधसिंह ने घर (बुंदी) में रह कर १००० के समूह
 का सरच फैला कर १ सुन्दर २ नालाव रचा ॥ १७७ ॥ ३. आस १४ पाल के ऊपर
 १५ विष्णु भगवान का १६ बडामंदिर ॥ १७८ ॥ १. बाग १८ बावड़ी २ धन देकर ॥ १७९ ॥
 २. नाम ॥ १८० ॥ ३. बाग २२ जीव (मत्त, पागल) ने ॥ १८१ ॥ २३ पुत्र २४ नले
 में तलाक २५ ताल के नाम से बनाया ॥ १८२ ॥ २६ पास के मनुष्यों ने

बिरचे आउठान बहु, न बनें कबहु तितेक ॥ १८४ ॥

पिक्खहु नियंति उदकं पहु, ऐसे बिभव अपेतं ॥

सो बेघम तजि सहेनन, गो इम निस्सव निकेत ॥ १८५ ॥

अंतहपुंगके जननमें, हित पति संगति होन ॥

काहूनें कुलरीति करि, सद्धयो नहिं सद्गोनं ॥ १८६ ॥

इतिथ्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तगायणो सप्तमराशौ बुन्दीप-
तिबुधसिंहचरित्रे ससैन्यनादरशाहार्थावर्तपानीपथकरनालागमन १
खानदोरांम्वसहायजयपुरराजजयसिंहाकारणाव्याजदर्शनतदनागम-
न २ जयसिंहागमननिराशखानदोरांनादरशाहसंमुखसैन्यसज्जन ३ य-
वनेन्द्रमुहुम्मदमद्वितसंमुखप्रस्थितखानदोरांनादरशाहान्तिकपत्रप्रेष-
णाद्वारासंधिविग्रहाभिप्रायचोदन ४ भयभीतनादरशाहान्तिककली-
जखांप्रभृतिप्रेषणाद्वारायुद्धसन्नद्धीकरण ५ समरसमयमुहुम्मदवि-
रुद्धशहादतखांनादरशाहसंमिश्रणा ६ विजितेरानसैन्यागच्छतुखान-
दोरांवेगेधदिल्लीमहामात्यकमरदीखांतन्मारणा ७ गृहीतदण्डरूप्य-

१ आइटाण स्थान) ॥ १८४ ॥ २ भाग्यशेराजा के आगे आनेवाले कर्मों का फल ४ ऐसे-
बैभव को छोड़ कर ५ बैवम नामकपुर में शरीर छोड़कर ६ दरिद्री होकर घर से गया
॥ १८५ ॥ ७ जनाने के लोको में ८ पति के साथ स्नेह नहीं था ९ सती नहीं हुई ॥ १८६ ॥

अत्रिंशभास्कर महाचम्पू के उत्तगायण के सप्तम राशि में बुन्दी के क्षुपति बुध
सिंह के चरित्र में, नादरशाह का सेना लेकर हिन्दुस्थान में पानीपथ, करना-
ल में आना १ खानदोरां का अपनी सहायता पर जयपुर के राजा जयसिंह
को बुलाना और जयसिंह का बहाना करके नहीं जाना २ जयसिंह के आने
की आशा छोड़ कर खानदोरां का नादर के संमुख सेना सजना ३ बादशाह
मुहुम्मद को लेकर गये हुए सेनापति खानदोरां का नादरशाह के समीप पत्र-
भेज का युद्ध करने अथवा सुलह (सन्धि) करने का अभिप्राय पूछना ४ धरे हुए
नादरशाह के समीप कलीजखां आदि का पत्र भेज कर उसको युद्ध पर सन्नद्ध
करना ५ युद्ध के समय शहादतखां का मुहुम्मद से विरुद्ध होकर नादरशाह
से मिलना ६ ईरान की सेना को विजय करके आनेहुए खानदोरां को दिल्ली
के बजीर कमरदीखां का परस्पर के विरोध के कारण मारना ७ दंड के रुपये
लेकर जाने की इच्छावाले नादरशाह को समझा कर शहादतखां का सलाह

कजिगमिषुनादरशाहप्रबोधपूर्वकशहादतखांमन्त्रव्याजाहूतकलीज-
खांकीलन ८ संधिव्याजाहूतयवनेन्द्रमुहुम्मदमहामात्यकमरदीखां
कीलनानन्तरनादरदिल्ल्यागमन ९ विदितदिल्लीहत्याकोषितमास-
दयकारितमुहुम्मदविजयपत्रगृहीतदिल्लीसर्ववैभवनादरशाहेरानप्रति-
गमन १० दिल्लीशहादतखांविषभक्षणमरणदिल्लीराज्यनिर्वलीभवन
११ बुन्दीपतिबुधसिंहपरासुतावर्णनं त्रिचत्वारिंशो मयूखः ॥ ४३ ॥

आदित एकाशीत्यधिकद्विशततमः ॥ २८१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे श्रीमत्परमधार्मिक-सकलशुभगुणान्वित-शोदा
बारहठशाखाक-चारणकुलावंतसशाहपुराप्रतोलीपात्राऽनम्रसिंहपुत्रे
णा, उदयपुरमहाराणासज्जनसिंह-तदुत्तराधिकारिमहाराणाफतह-
सिंह-योधपुगधीशमहाराजयशवन्तसिंह-ईडरमहाराजप्रतापसिंहकृपा
पात्रशाहपुरानिवासि-योधपुगमहाराजाश्रितसुकविद्वारहठकृष्णसिंहे
नविरचितायामुदधिमन्थनीनामटीकायां सप्तमराश्यन्तर्गतबुधसिंह-
चरित्रस्य टीका समाप्तिमिता ॥

केमिसस बुलाकर कलीजखां को नादर की कैद में कराना ८ सन्धि के मि-
स से बादशाह मुहुम्मदशाह और वजीर कमरदीखां को बुलाकर कैद किये
पीछे नादरशाह का दिल्ली आना ९ दिल्ली में कतल किये पीछे दो मास पर्यन्त
रहकर मुहुम्मदशाह से विजय पत्र लिखा कर दिल्ली का सब वैभव लेकर
नादरशाह का पीछा ईरान में जाना १० दिल्ली में शहादतखां का विष खाकर
मरना और दिल्ली की बादशाहत का निर्धल होना ११ बुन्दी के राजा बुधसिंह
के मारने के वर्णन का तिपालीसवां ४३ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो
सौ इक्यासी २८१ मयूख हुए ॥

इतिश्री श्रीमान् परमधार्मिक, सकलशुभगुणान्वित, शोदा बारहठ शाखाके
चारणकुलावंतस शाहपुरा के पोळपात ऐसे अबनाहसिंह के पुत्र उदयपुर के महा-
राणा सज्जनसिंह और उनके उत्तराधिकारी महाराणा फतहसिंह, तथा जोध-
पुर के महाराजा यशवन्तसिंह और ईडर के महाराजा प्रतापसिंह के कृपापात्र
शाहपुरा निवासी और जोधपुर के महाराज के आश्रित सुकवि बारहठ
कृष्णसिंह की कीहुई उदधिमन्थनी नामक टीका में वंशभास्कर के सप्तम
राशि के अन्तर्गत बुधसिंह चरित्र की टीका समाप्त हुई ॥